कृषि की सफलता पर द्वितीय पंचवरीय योजना की सफलता निर्माट कृपि की उन्नति के लिए द्वितीय पंचवर्पीय योजना में राजकीय सहयोग ^{वक्ष} ऋण के रूप में :--— लागन की श्राधी रकम तो ४०००⁾ नये कथों के खोडने के लिए श्रधिक नहीं होगी। लागत की आधी रकम जो १०००) है क्यों की सरम्मन के लिए नहीं होगी। मशीन की लागत की श्राधी रहन परिवा भैद के लिए टेयदर य सम्यन्धित स्वरीद के लिए — लागन की आधीरकम ३००) प्रति एकड़ के हिमाब से रहट के लिये ट्रक या ट्रेक्टर मय ट्रांली की कोना नगरपालिका की कम्पोस्ट वितरक — दो हजार रुपये जहां समाई-स्वार के निवे प्रयम्य हो स्रोह रूपये ३६००) वह पंचादती की भैने बनाइ बनाने के mun ii हयप्रधा का प्रचन्न नहीं हो। न के रूप में :----- श्राड श्राने से एक स्प्रण प्रति सन तह हैं। ध्यमें बीत अवाहन के निय મલ વામ્પેટ સાર્ધાન - इ.स. ४ सीच तह एक रुपण पहिर्देश - बामन का एक चीनाई £ 75 35 बार्यतन कार्न हेलाने के विकास प्रमे स्वतिक पर का रूपण पनि रूप ्राचन पर घानवा प्राप्त है। -च (च) संभा घो मैं लगे तर रहि है। श्रूमारणान वे निर्देशकार प्रांत्रात लेकिन बहुद्द्रम रागा प्रांत लक्षी 6000 प्रवादा नहीं हाना आहि है । (य) दात्र व हो के लग ना ना ना दा दि है। शन विश्वत यह प्रवास प्रवास है । algebighter segligit je let, eine ta mit fid at ber delug ्र क्षणुष्टार्गा द्रार्थ के तम अन्य का राज्य का काल का अन्य करात के स्वत का स्वत का स्वत का स्वत का स्वत का स् the more profit to the contract of the second of the second the grant state, the state and the most state of the state of state of state of the state of the state of the

वाल व रोलर वियरिंग, स्टील वाल्स (रोलर स्पिंडल इनसर्ट्स एक्सल वोक्सेज

*

[रेल्वे लोकोमोटिव एण्ड वेगन्स]

के

.

निर्माताः

नेशनल इंजीनियरिंग इंडस्ट्रीज लिमिटेड

जयपुर (राजस्थान)

की

हार्दिक शुभ-कामनाएं

२-आयुर्वेद विभाग का अध्यांग आयुर्वेद के रूप में विस्तार । ह ३-जयपुर और उदयपुर में आयुर्वेदिक कालेजों का उन्न-म्नरीकरण के फल-स्वरूप २५० छात्र प्रतिवर्ष शिचा पा

१-३२५ नवीन ओपधालय

रहे हैं। ४-आयुर्वेद परीचा बोर्ड का निर्माण, जिसके आधीन भिष्णा-वार्य, भिष्य्वर, धात्री कल्पद और प्रत्याम्मरण पाटाकम

भी परीचाएं चाल हैं। भ-बोधपुर और भरतपुर में शासा रमायनशाला की स्थापनाएं। द्वीय पंचवर्षीय योजना में : भ-एक परोड़ एक लाख की योजना रसी गई है, जिनमें

आरोग्य वेन्छ स्थापित होंगे । २-रेन्ट की शत बतिशत महायता में जयपुर एवं उरसपुर है करिसी के अंतर्गत स्नायु, बाल-प्रजापात, वर्ष गेंग एवं है

शिखा प्रशिखण, रोग-नियन्त्रण व कमिरनरी स्थानों में

नंदरणी गेगो पर अनुसंधान होगा।



२-आयुर्वेद विभाग का अप्टांग आयुर्वेद के रूप में विस्तार। ३-अपपुर ऑर उदयपुर में आयुर्वेदिक कालेओं का उन्तर-स्तरीकरण के फल-स्वरूप २५० हात्र प्रतिवर्ष शिचा पा

१-३२५ नवीन औपधालय

रहे हैं।

४-आयुर्वेद परीचा बार्ड का निर्माण, जिमके आधीन भिषमा-तार्य, भिषम्बर, धात्री कतपद और प्रत्याम्मरण पाठ्यकम की परीचाण चाल हैं। ४-तोषपुर और भरतपुर में शास्त्रा रमायनशाला की स्थापनाएं। तृतीय पंचवपीय योजना में: १-एक परीड एक लाग की योजना रमी गई है, जिन्म शिक्षा परिचल, रोग-नियन्त्रण व कमिश्तरी स्थानों में शामित्र केन्द्र स्थापित होंगे। १-रेस्ट की शत प्रतिमत महायता में जयपुर एवं उदयपुर परिचली के श्रीगत स्माप, याल-प्रवादात, वर्म गेंग एवं

Transport Transport Serve Languages

मंद्रानी गेगो पर अनुसंधान होगा।



माननीय श्री मोहनलाल मुखाडिया मुस्र मत्रो, राजस्वार प्राथन, उद्दर्शन नगरोट, कृतीय मान्तिय संवितार

प्रयान मेपाइक रा॰ देवरात्र उराध्याय Atta titulia द्यापार्व श्रो पुरायोत्तन 'उत्तम' शी मारायण भी मयस वि

में राइस सरहत

१. शे राम निराम बाह ५. नी बाद हुमार 'गुहुमार'

३. थी जिस्सत तात 'जिसहर नेगी " प. यो कामा नाप निय



माननीय श्री मोहनलाल मुखाड्या मुख्य मधी, राजस्वान प्रथम, उद्दर्शन समारोह, मृतीय साहित्य सेनिनार



प्रकाशकीय

रा अस्यान का नाम माने के माथ ही घात्रों से संवयय मौर सहस्रुहान हो जाने के उपरान्त ो, वीरो के मुस्काते मुखमण्डन एवं माग की घू-पू रती ज्वाताम्रो मे घिरी, मधुर हास्य से युक्त र-बालाएँ हमारी भौतो के भागे विरक्ते लगती

। जिससे यह भ्रम हो जाता है कि यह केवल क्ति और साहम काही चेन्द्र या, परना हम यह न जाते हैं कि इन रैखाफों में फमिट रंग भरने

ानीबृद्धि ग्रीर प्रतिभा हीयी, जिसने इनको मरता प्रदान की। इसके साय-माय हमको यह ह्य भी दिनाहिचक स्वीकार करना ही होगाकि जतनी स्पाति इसने वीरता के क्षेत्र में ग्राजित की तनी प्रतिभाने के दोत्र मेनही नर पाया। कारण पष्ट है कि यहा के रोजा, महारोजा नवा सामन्त पपनी प्रशस्ति गायन के हेन् जिनने उत्पन्त रहे,

री मृष्टिवरसकें।

उतने साहित्यक वैभव को प्रकाश में नाने के निए ही। प्रपनी दीरता के बखान के लिए इन्होने देतन भोगी धनेक इतिहासकाः स्थिक किए धीर धगर इस्टब्सियों नो भी राज्याध्य दिया तो वह देवल इस ही लिए कि ये उनके माध्यम से भी धपने घटम इसके बावकृद जैन साध्यो, मनी भववा लोक. रवियो ने द्वारा यहां साहित्य की मरिता धजन गृति से प्रवहसान रही। सब वह समय सापदैंचा है कि इस सरिता-मजिल को हम हमारे मानस-सर मे एकत्रित कर भाव–भूमि वा सिवन करें। "सुज्ज

केला; नाम में इस मेथिनार साविनियर (स्मारिका)

का प्रकाशन हम इस धारा और विष्यान के साथ

इस रहे है कि इसके द्वारा राज्यवान में बढ़ी माएडी

उपाध्याय ने प्रान्त के विद्वान लेखकों, कवियों, नाटक-कारों एवं कहानीकारो की कृतियों का सम्पादन विया है। यदि यह प्रकाशन राजस्थान के प्राचीन एवं भर्ताचीन साहित्यिक वैभन्न की चैतन्य पाठक के भ्रमेतन मानस पर कृछ भी स्थान दिला सका तो हम ट्रमे सफल समस्रो ।

माहित्यिक गतिविधि की किचित् जानकारी स्थून रुप से माप तक पहुँचा सकें। इस स्मारिका मे हिन्दी जगत के प्रसिद्ध समानोनक डाक्टर देवराज

का प्रभाव है जो बिना हानि—नाम की भावना के साहित्यिक प्रकाशन के कार्य की अपने हाथ में ल सके। राजस्थान को छोडकर धनेक श्रान्तों में इस तरह के ट्रस्ट भीर प्रकाशन मण्डल हैं जो भपने २ प्रान्त के प्राचीन साहित्य को नए ढंग मे प्रकाशित कर, उसके गौरव को पून: संस्थापित कर रहे हैं

वैसे माज राजस्थान में इस सरह के प्रकाशको

भौर उदीयमान लेलकों की रचनामों के प्रकाशन द्वारा देश और समाज को प्रेराणा दे रहे हैं। हमारे प्राप्त में घन्य प्रान्तों की घपेशा किसी भी हाजन मे माहित्यक प्रक्रियनता न कभी यी घीर न घभी है। बल्कि हम यह बड़ें तो कोई प्रत्यक्ति नहीं होगी कि मस्कृत माहित्य में पूर्व संया बज भागा के साहित्यक मा को स्वीकार करने तक राजस्थान ने माहित्यिक क्षेत्र मे एकछत्र माधियस्य एका है मीर उस बात

नी हम स्वर्ण युग के नाम से सम्बोधित कर सकते

है। इस काल में साहित्य की प्रबन्ध (महाकाव्य

भौर लग्ड नाव्य) मुलक (रम तथा नीति) एवं गीति भारि सब विधायों में प्राकृत, समधान भीर डिगर भाषामे मर्जेनाकी गई है। परलु समी तक इस साहित्य के प्रकाशन की सम्बक्त व्यवस्था नहीं ही पाई है। माहित्य-महादर्ने बहुत समय में इस माहित्य

ने प्रवास्त्र ने विषये थे दिशार नर एका बा। इस न्सारिका के साध्यम से हम उस पर कृत्र कोशनी रानने का नव प्रश्लाकर रहे हैं धीर कर रस



२००<u>० विष</u>्

उपनिषदी ने इमे भपने जीवन नी ममुद्ध तथा नार्यक करने मा एक साधन बतनाया वा 'मास्मानं-विद्वि'। प्रोक मनिषियों ने वहा 'Know thyself' प्रामे चन कर तो नीतिकारों ने यहां तक कट

िया।

प्राप्टर्के मनं रहेरू दारात रहेरू भनेरित ।

प्राप्तानं मनतं रहेरू दारेरित भनेरियः।

पर्वाद् प्राप्ति कान के नियेष नकेरियः।

रही प्राप्ति कान के नियेष नकेरियः।

रही प्राप्ति कान केरियेष नहेरिये।

रही करनी पाहिये, पन वा नाग कर भी पत्ती की

रहा करनी पाहिये। पर जब प्राप्ता की रहा का

प्रत्न हो नो यहा पत्ती एक धन केथी बनिदान की

परवाह नहीं करनी चारिये। राजस्थान के गुभ-चिन्हों, नेतामी, विचारनो नया माहित्यता के मामने यह प्रस्त पपनी मारी जिटनतामों के माद उपस्तित होतर उत्तर माग रहा है कि हम पस्ते प्राचीन गौरर-माथा भीर परम्परा की रक्षा करने हुए, बनेमान ज्ञान-किशान की किरणों को मारसमाय कर अविध्य के निर्माण में कारस्थन के काम के पर्हे हैं।

राजणान के निये दम प्रान का एक विशेष मारत है। कहा जा करता है कि माचीन मारत का इतिहास एक तरह में बिहार का दिताल है, धारीर, कड़ छुन, बुद तथा बर्ज मान का इतिहास है। स्था सूर्योग भारत का दितहास मारत, प्रता, दुर्गदास के रक्त में राजस्थान की पत्नी पर निवा प्याह है। इस दाकस्थान के मारा की दिहरसना है

बहिये कि ऐतिहासिक, भौगीतिक तथा बाजनैतिक

परिस्थितियों ने वहाँ धन्य आनो का सम्बन्ध प्रयति-

सीन तथा उन्नायक नायों में बनाये रूमा, उनके

उन्पुक्त रहे वहाँ राजस्थान को मबने प्रत्न रह कर हो परना जीवन वापन करना पड़ा। उत्तराधिकार के रूप में हमे जो बुख भी बीरता, मर्तिक, प्रेम, मौडर्य की सम्पन्ति उपनब्ध भी जुले ही बाट-वाट

. - . द्वार नूनन ज्ञान-विज्ञान के मनय संचार के निये

कर रूम जीते गहे। इतना हो नहीं। मूर्कि बाहरी इनिया में मार्क्क छूट जाने के कारण जीवन का प्रशाह एक तरह से प्रवस्त्व दा प्रतः बहुत भी विद्यतिया भी प्रा गई भी। कहा ही है "वहता पानी निर्मेता, बंदा गंदा होया" हम दुनिया में

ही मनग नहीं थे। हम स्वयं ग्रात्म-विभाजित थे।

हमारे एक गरीर के मध्यर तिवने व्यक्तित्व उमर भागे ये भीर उनमें पारस्थारिक एकता हो ही गढ़ कोई मानस्थल नहीं था। भाग कर्न के मनीसानिक Multipulo personality की बातें करते हैं। बहुते हैं कि एक मनुष्य में एकाधिक भीर पर दिरोधी व्यक्तियों की महस्ति हो सन्ती है को जीवन को विवास कर दे भीर संयक्ति दिवस

में बायक हो। इन मनोरीशानिकों के निये

Multipule personality का उदाहरण

रानस्यान में बच्दा नहीं भिनगरना। जयपर.

जोधपुर, उरयपुर, कोश, कूँदी एक ही राजनवान-ध्यक्ति के भिन्न-भिन्न व्यक्तित्व नहीं तो धोर क्या है? राष्ट्र-वित्ता गांधीजी तथा भारतीय स्वानन्त्य संधाम के नायक सरदार एटेन की कृपा ने धाव यह संधिमित हर हो गई है। प्रथम ने सारे भारत को विरोधी सामन में हुक्ति दिनाई हिनीय ने राज-व्यान के बिक्दी वानों की समेट कर गान्नेशिन

मुझ में विशे कर एक माता के कर में उस्तित्त कर दिया। एक बृहद् संस्थान प्रस्ती क्रियुंत मह प्रक के मार मात्री मात्रा । इस ही क्रमा भागी दुनिया ही दमने कर पर मुख्य है। सब एन्यों मोर तथा उसके हुन्य प्रसारी की घोर ठवटती ज्ञान कर हैन पर है। हा, दुन्य संबाद और है पर के देन तो प्रक

को, ठीत भौर नहीं ढंग में सामने राना भी स्वात के नावों का महत्वपूर्ण मोग छैना । मुनभाने में सहायता देना ही होता है। नात. बादने हम द्वितास की सराउस करें। कहानी, बरन्याम, कविता संया प्रातीका के रेप इन्सिन वे स्केत को पत्रवाते । सममें, वि. इति-में राज्यान में इधर दन-बारह वर्षों में की हास हम से बदा मोदाता है ? इतिहास हम से बदा उपनि हुई है इनहा योदा सा माभाम 'स्वार-नेग' मान्य है को बाद ऐसा तो दिए मी मोशाहर की पंतियों में मिलेगा। क्याप्रमो के देणने के नाव है। नेपा-रागु है, मार्ग-प्रार्थन नामे बानी राजग्यान के तरुगु-टूरव की भारात्मक विर्ा पार्टिस है, बर्ष शान्स है, बोजनायें हैं। सब हमें काभी दत्तावलेला। दत्तावलेला कि हमारे ^{हा} माने क्यांचाकी बाद दिला रहे हैं पर एक ही पुरत की भारतामों का रल क्या है, वे क्यिस्टि बार रही हो रही है। हममें बाजे सम्मे स्वरूप की, में बदा सीत रहे हैं ? निद्या ही 'सुत्रन-देता' वे क्षीनक साँच को, इसारे Stull की, इसारी राप्रस्यान के मापुनिक साहित्य के विकास की माररण की, हमारी बाप्ता को परकारी मे मर्गर्हाण विचल नहीं हो सदा है। इसने ^{हिर्} रागरण होते बारी सन्ति बहुत ही बाय है। यह मधिर समय तथा थम की बरेशा है। हम भारी है गाहिल, जिल्हे सदको तकता के गुल में बोधने मोर से मही कह सकते हैं कि हमने मार्गि^{सीया} र्थः क्रांत्रा है । दर श्राप्रदेशिया, धर्म-सार्ग्या, सापती के सपर इस उद्देश्य की प्रानि के ^{तिहै} मर्थ-प्रकार, देशांकि के पान *सी* जाता। पेटल की है ह प्राप्ती प्राप्ति काचे प्राप्तिक प्रतिकारी है-बह शारत का बाहार दिया होते हुए और मुलत एक हम तो मातिय नतार्च के बाबार्य भी पुरतानमाजी तथा बाद बायुक्तों के धपुरीय है है। यह गेर नार का हिराना है जो शारी मानवण बारण ही 'सूपर वैता' में हिसी ल हिसी बार में वें बान बोन है। जब बारन पर शहर बारेगा, मंद्रप्रशासायका है। मर्गामण दण्या बद्या दुग्गा then stands buy it chip of the had चलरार्गात भारते प्राप्त निकास क्षिति कार्योत वेपान तरी बहा पार बारेगी हमारे हरा की हे जब हा बारत है। दिलेवर पर मारित्यदान में तर्गा । वर् हरूमा बनेव हेवा ३ का^रराम । अब अस इस समागरी है दिनकी सभी तरह अहै हो eryw with the great of the Better severy be-लको है सबता हुई बाहे जा सम हा पर बागुणा है endia dane, di minada zudadi. ब रह है रेडरक करणार ल 'सुबर देना' से बर्ग गर्दा क्ष मान् वृत्रमोदन है का क्षत्रहरू (क्षाराष्ट्र) है व्यापन । it's # " Sarrit Mt wes \$ | feirer an et artine un an tel \$1. mer-ब पूर्वत च नवा व र नामा वार्वामा अन्त्र Ber all neer wird Rien eren af Lieb क रेक जरार के मा केरण है हा दिस्स अस्पति militar mina de mir terra des de bret. ल्यम करते में सार्थ रूप स्था के ह

स्दन⊸ग्ना

बतना गरे - 'भाई, हम लोगों ने इतना ही दिन

है, हमारा इतित यही है।" प्रश्न की, समस

-देशात ज्ञाप्याच

ही है। हमारा प्राप्ता दिस्साम है। वि मध्य युग की

तरह ही भारत के भविष्य के इतिहास में राज-

क कहा क्रमांग अहुदक का प्रयोगक इ.ग.हैं. हर इसमा क्रारंड कांच्या है है, इस इस्स्टिंग्स क

सेमिनार ||

'एक दृष्टि में '

" सत्यं शिवं सुन्दरम्"

सर्गारण-गराप ं	i
तक परिषय	
जाजन्यान गाजिए सहाद्रणी सर्वातिक	vi
bloart	ix
TENTE # FUT	
a filmete	χı
मैंबाहर की धार में	
्रांटिक्य के शक्ति है। कार्यकार की स्टॉटिंडिक सेल्या	1111



राष्ट्रपति भवन नई दिली

दिसम्बर २६, १६६० पो० ८, १८८२ साके

भुमे यह जानकर प्रसन्ता हुई कि राजस्थान साहित्य जकारमी के तृतीय यानिक सेमिनार के जयसर पर जन्य रोगक कथा उपयोगी विषयों के साथ साथ राजस्थान के साहित्य पर भी विचार विनिमय होगा। में रस सेमिनार की सपसता चाहता है और राजस्थान की साहित्य जकारमी को जपनी युन कामनाएं भेजता है।

(17-37114





PRIME MINISTER'S SECRETARIATE
NEW DELHI

१८ फरवरी, १६६१ २६ थाय, १८८२ सक

जन्मकारण त्र संख्या होणाइ १ हि

प्रिय महोदय.

श्रापक्षा पत्र दिनाङ्क १२ परवरी १९६१ पाप्त हुआ।

राजस्थान साहित्य जकादमो के तृतीय वार्षिक सेमिनार के श्रवसर पर प्रधान मंत्रीजी श्रपनी राभ कामनार्ये भेजते हैं।

> भवरीय Sd|-(प्राराजाय साही) भवात संत्री जी ने तिजि सविष

त्रिय महोरव,

पत्र वे निर्म पत्रवाद । मेमिनार को सक्तता के निर्म पुत्र कामनाएँ । धाना तो वंकत नहीं । उत्तरहर करने के निर्म धामारों । मेमिनार को कार्यवाही प्रकाशित हो तो उने रेपना था। ।

हान्यवाद ।

विदेश मंत्रालय

नई दिली

timiney of II me atfaire महें हिल्ली

रा दरिवगराय 'बच्चन'

एम. ए., पी-एव. दो. (वैन्द्रब)

पारका पत्र निर्मा । मुझे प्रमानका है कि काजन्यान माहित्य सेनिनार "सामान्य जन कीर वर्गहर्गाकार" जैमा कोवक एक महत्वपूर्ण विषय सेकर का वर्ष माहित्य मदावर्ग, जनपुर के लगाकारत में हो कहा है और क्षम स्वकार पर " मुजन बेना " नाम से माव एक सीर्वि विकार का प्रभान भी कर को हैं। काजन्यान का माहित्य सजीवता से परिसूर्ण है भीर

रिवर का प्रकारित भी कर को है। राज्यमान का साहित्य सजीवता से परिपूर्ण है में मध्यप्रत, तिस्कोर भाव हमारे विवे मध्यप्त सामकारी सिद्ध हो सकता है। वै मार्क मध्येवन तथा प्रकारत को समानता पारता है।

भारता हर्-(था॰ ग्रेमानी)

कार शहरण्यात है रियाण के रित्तु व्यावस्था है से मित्राह बंद अस्य रहा की बीम री करना है और सामा में रेड मार्गर शहरा है से नावाययात से याओंकर दूस सेवासर है हैं^{दी} वर्षकर है। जारे पान्तु से रेटिन्स पूर्व से तर्थ ने यालाह सीन प्रेटाम सूरन कोर्श है अर्थ रूप के साम रूप से टेन्स क्या कार्यनाह तर्गत है

tré e

साहित्य सदावर्त में



महामान्य थी पुरुपोत्तमदाम टण्डन



माननीय श्री इरिमाउँ उपाध्याय दिन्हत्री, राज्यकार मरनार

साहित्य सदावर्तः एक परिचय

श्री कन्हैयालाल मिश्र, मन्त्री, साहित्य सहावर्त, जयपुर

मा नव समान के निए जान सर्वेपरि है। 'जान'
मी के ही मनुष्य का भादि कान में नेतृत्व किया है। इसी जान को दिवानों ने साहित्य का केन्द्र मानकर, साहित्य को 'जान रागित के मंदित को पत्ता है। इसने राष्ट्र है कि जान विकासोन्मुजी जीवन का प्रारम्भ से ही पोषक तत्त्व रहा है भीर रहेगा। इसे प्राप्त करने के लिए मनुष्य एकारी भीर सामूहिक करा। में प्रयत्न करता है। स्वी सामूहिक करा। में प्रयत्न करना है। स्वी सामूहिक करा। में जम्म का प्राप्त मान स्वी सामूहिक करा। में जम्म का प्राप्त में जम्म का प्राप्त मान स्वी सामूहिक करा। में जम्म का प्राप्त में जम्म का प्राप्त मान स्वी सामूहिक स्वत्य में स्वाप्त है।

साहित्य महावर्ष की स्थापना का श्रीय श्री समनावर प्रमान की है, जिल्हाने मन् १९३७ में अस्माध्यमी की पावन बेना में दो विद्यार्थियों के सिमुक्त निश्चल में इसदा थी गयेदी विद्यार्थियों के के इस श्रीतवादारे पुत्र में दिसी भी ज्ञार के कार्य को दिना प्राप्तिक साधन खुटाए पूर्ण करना समन्यत्र नहीं, तो दुलराम प्रदेश है और रमीनिए बावा गोविन्द्रास और प्राचार्य श्री पुग्पीनमा 'उनमा' का महत्योग, सहादत्र की प्रमान भीर उज्जति में निकाननी ने महत्व को स्वतः प्रहुण कर मेना है। मन १९४४ में संस्ता के जीवन में, भीपुग्पीनमा 'उनमा' की विद्यार्थीनना भीर उदार मनोकृति ने, नर्ग गिन

दोश्रास्त्रिक स्वक्य :---माहित्य मदावर्ग अवपूर हो नहीं व्यिषु राज्यान का एक बार्स्स निस्तुल तिशास मध्यान है। हिन्दों माहित्य मध्येनन (हिस्से दिस्स दिखानय) प्रयाग और यज्ञाक स्वा राज्यान दिस्स दिखानयों की हिन्दी प्रदेशायों के हैंयु सिक्सन प्रदान करना 'मदावर्त' का कार्य रहा है। मंदय में प्राने वाजा प्रयोक विवायों से स्वा में क्ष्मी पारि वाजा कर स्वा में देश कर कार पुरता-िमदाता है कि जैसे यह प्रदान के स्व में देश कर परिवार का संग रहा हो भीर पहें। कारण है कि भाज सात्रार्ज में विदाय का स्वा जा कर में है। इसमें सन्देह नहीं कि सदावर्त को कई मोड देशने पहें हैं। कितने ही कहुए, मीठे प्रमुक्त सदा- वर्ज के दिवास में मुपिशत है, तो भी सपने नहीं को वाजा के देशने पहें हैं। कितने ही कहुए, मीठे प्रमुक्त सदा- वर्ज के दिवास में मुपिशत है, तो भी सपने नहीं को जीवन में दर्ज कार्यों ने हमार्थ के जीवन में दर्ज पार्थिक (जो प्राज भी है) कठिनाइयों ने पित्रवार भने ही दर्ज हो करने में यह समस्यार्थ को महन्ता में नहीं हो किन्तु सुर्गीतः यह बना देशने पर समस्यार्थ को सुरान में नहीं हो मोर हमार्थ नहीं है भीर हमार्थ विद्याल है कि स्व स्व हो सुरानी है।

विधार्थी वर्ष को श्रीशीयुक-मुनिधाएं प्रधात करने के रिष्टिरोण में सन् १६४४ में वे नेन्द्र स्वादिन विशे गए । प्रथम नेन्द्र भागानियों का रास्ता (विधानयोग कामान्त्र) में, क्षिमी नेन्द्र 'पानी के दरीका' ये धीर दुनीय नेन्द्र 'पुरानी कानी' में रुपा गया। जिनहा स्वानत कम्याः श्रीक्मानान्त्र 'प्रमा', श्री पुरानिम 'जनव' धीर थी कार्न्यानान्त्र मिथ वे हाल होना रहा।

धिशाण के प्रति महावर्ग के महर्याणी प्रध्यापकों की शास्त्र में ही मान्यता कही है कि पुन्तिया साधार पर दिवादियों को पूर्ण हात प्रतात कही दिया का मन्त्रा कार्य पुनन्तों के प्रध्याजन्यस्थातन के मांच ही मांच महावर्ग है खान की द्वार की गीन दिखियों को अन्य दिशा, जिनके समाजन हैंदू



साहित्य सदावर्तः एक परिचय

श्री कन्हैयालाल मिश्र, मन्त्री, साहित्य सदावर्त, प्रयपुर

मानव समात्र के निए जान मर्तोपरि है। 'जान'
मोने ही मनुष्प का सादि कान ने नेहरू किया
है। इसी जान को विद्वानों ने साहित्य पा केट्र मानकर, बाहित्य को 'जान राधि के सीकत कोव की संज्ञा दी है। इमने राष्ट्र है कि जान विवासोन्मुजी जीवन का प्रारम्म में ही पोपक तत्व रहा है भीर रहेता। इने प्राप्त करने के लिए मनुष्प प्राप्ती भीर साहित करों से प्रयप्त करता है। यही सामृहित क्वल में स्वा के जन्म का भाषार— मृत कारण करता है।

साहित्य महावर्त की स्वापना का श्रीय भी वसनावर (कसन की है, जिलाने मह (१६३० मे जन्माध्यमी वी पावन वेला मे दो विद्याचियों के तिशुल विद्याल में इसना थी गरीय विद्याय था। पात के इस मीतित्वादी युग में विभी भी मनार के कार्य को विता प्राधिक साधन खुराए पूर्ण करना समस्यद नहीं, तो दुल्करतम पदस्य है और इमीनिए बाबा गोवित्यहास धीर प्राथार्थ भी पुग्योतम 'जनम' का महायोग, सहादम बी प्रमान भी उन्होंने में मिनवनन्ती ने महत्य को स्वतः प्रहाग कर मिना है। मन् १६५५ में सक्ष्य के जीवन में भी पुग्योतम 'जनम' की विद्यादीनिया और उद्धार मनीवृत्ति ने, नई गिन

दोशीहाक रेबरूप: -- माहित्य मदावर्ग व्यवुश हो तहीं धरिषु राज्यान का एक धार्सी विद्वस्त हित्सम् संस्थात है। हिन्दें महित्य मसेवत्र (हिन्दें दिरह विद्यानय) प्रयाग भीर पंजाब तथा प्रज्ञावत दिरह विद्यानयों की हिन्दी परीशायों के हेयू रिक्सम प्रदान करना 'मदावत' का कार्य रहा है। संस्थ मे माने वाना प्रदेश निवायों सेस्वा के सभी पारि बारिक सदस्यों से इस प्रकार पुनता-मिनता है नि असे वह प्रारम्भ मे ही इस परिदार का मं रहा हो मौर यही कारण है कि मात्र सदावते वे विवायियों को राजस्वान त्रर में पाया जा सकता है। इसमे सन्देह नहीं कि सदावर्ष को वई मोड़ देवते पढ़े हैं। दिवते ही कहुए, मोठे यनुम बदा वर्ष के दिवहान मे सुरक्षित हैं, को भी मपने बनाये को सदावर्ष ने कभी रोका नहीं। सदावर्ष के जीवन मे इन माधिक (जो मात्र भी है) कठिजाइयों ने शियितना भने हीना दी हो लिन्नु पूर्णत. जह बना देने मे यह ममसवार्ष कभी इतहार्य न हुई है औ

हमारा विश्वाम है कि न घव हो मसती है। विद्यार्थी वर्ष को वैधालिक-मुविधाएँ प्रश्नन करने के हिंदिगोल में सुद १६४६ में ३ केन्द्र क्यांपित विन्ये गए । प्रथम केन्द्र मोजानियों का रास्ता (विश्वानों के बाजार,) में, दिनीय केन्द्र प्यांने के देशीयां में धीर दूनीय केन्द्र 'पुरानी बन्ती' में रशा गया। जित्रका संभावन बन्द्रात. थी कम्पनाकर कमत, थी पुरशोनक 'जनमां धीर थी कार्रवानाक क्रिथ के द्यार होता हुए।

ियामा के प्रति महाकों के मत्योगी वाध्याकों की प्राव्य में हों मान्यता करें। है कि युक्तकीय प्राव्य कर कियाचिया को पूर्ण काल प्राप्त करें किया जा महत्ता महत्त्व कुलाते के व्यवस्व-व्यक्ताव के माब हो नाव महावते है काल कई जहार की प्रति कियाचे के बाद की जहते क्यांकर हैंदू



मानतीय श्री निरंजननाय प्रान्धः उपाध्यः। (राजस्यान विधान सभा)

मध्यम्, मायोजन समिति, दृषीय यादिक साहित्य सेनिवार १७. ,, डा॰ देवराज उपाध्याय १८. ,, स्व॰ प्रो॰ रामकृष्या शुक्त 'शितिमुख'

१६. ,, गुनाबराय एम० ए०

२०. ,, नित्यानन्द 'मृदुल' २१. ,, देवीगंकर तिवाडी

२२ , नबी बन्दा 'फनक'

२२ ,, नबी बक्त 'फलक' २३, ,, डॉ॰ मोतीनान

२४. .. गोपालप्रसाद 'नीरज'

२५. ,, गोरानप्रसाद व्याम

२६. " मेघराज 'मृतुल' २७. श्रीमती मुतीना देवी नम्यर

साहित्यासीचना (गोष्ठि) परिपद्गवैपणासक एवं भानीचनासक माहित्य को
प्रोत्साहन देने के रहिनोग्ण से दम परिपद् का गठन किया गया। सर् १६४४-४६ मे दमके प्राप्तिक बात मे निम्मादित पदायितारी एवं है भारीन्तर

भी प्रो० रामश्र्यण गुक्क 'शितिशृत'-मध्यस
 ,, टां० सरतानिक्त 'मरुग' — मंत्री
 ,, वपुरक्त 'वृतिया' — संयुत्त मत्री
 ,, वपुरक्त 'वृतिया' — संयुत्त मत्री
 ,, सरतमोहत रामी — प्रवार मत्री
 इस शीखि के प्रयत्नो के पत्रस्वरूप साहित्य

स्त्व साजिक स्थलन व पत्यवक्ष गाहिल धूल सानित हुमा स्वरूप उपयाय होने नगा। यह समामे है - ४ साल तक चनता रहा। इसे पिएट् के तत्वाक्षान में सन् १६४६ में एत विशेष समागिर ना मायोजन निया गया जिनमें सानु पुताबराय एमः एक ने हारा इतिहास होत्य सानीचर सक्त थी रासहणा पुत्र गिर्मिन्दुल का भाषायें पर में बिभूजित विशा गया। किन्तु बाद में नुस्द हिन्दर परितितियों और थी गिर्मिन्दुल जो की सानास्थान ने इस परिवर्द को गिर्मिन कर

सन् १६६६ में नदावर्त की सहयोगी

सरवा 'संगम समिति'' एवं नर्वश्री कपूर्यन्त 'कुनिता' पुरुतिसम 'उतम', रामनियास साह, बीर करत कुमार 'पुरुत्तमर' के सहस्यत्ने से दसकार में से पुत्तः जीवन संवार हुता। जिनके परिशाम स्वरूप स्वानेचना (गीडिंठ) परिष्यु फिर सन्नीय होकर कार्यरण हुई। संगम गमिति ने परने जनम मे साज तक कई महत्यपूर्ण कार्य निए है। 'संगम' मासिक पत्रिता का प्रकाशन सीर 'आव पूर्ति मासिक से साथ पूर्व प्रकाशन सीति की विशिष्ट परम्पार है सीकन कुछ साथियों को स्वय स्वनन की सान्नीयना मे भय होने नारा, फलावक्ष्य करता भी बढ़ी मीर इमीगे कुछ समस्वार माथियों सीर सी हिम्मतनाव (सन्ती) ने इस परिष्यु के कार्यकलारों को सीनिन

महिला हितकारिगो परिषद्-पात ने युगमे ही नहीं बरन भारतवर्ष मादिरात में ही नारी भौर पुरुष के मधिनार भीर कर्तथ्य क्षेत्र को ममान हर्षि से सनोजना बाया है। इतिहास साक्षी है। फिर भी जीवन-अम और ऐतिहासिक घटना बम ने नारीवर्ग को बुद्ध पिछड़ा दिया है, जिमहो ममुन्तन करना पुरुष वर्गका प्रथम धीर धनिवार्य वर्तिय है। इसी हिंदिरोग से सन् १९४४-४६ मे "महिना हिनकारिली परिषद्" को जन्म दिया गया। परिचर्तने नारी वर्गमे ऋन्तिहारी परि-वर्तन ला दिए, उद्यागराम स्वरूप पर्दान्यवा सा महिष्तार निया जा मरना है। जयार शहर ने जीवन में यह एक महत्वपूर्ण कार्य हुया है। नारी ने प्रति कृत्मिन विकारों और कारणायों की कई मानाचना वर, महभाव भौर वनेह, समान्या की भारता प्रतिराहत करते वादी इस परिवह की. बात की नगर निशामी स्मरण करते ही उनते हैं। नारी शिक्षण के साथ ही साथ हुए कार्य एव









उपर दारा से बाग

१. श्रो दामोदरलाल ब्याम प्रध्यक्ष, माह्न्य मदावर्त

२ श्रीमती इन्दुश्चाला मुखाडिया ज्यान्यक्षा, माहिन्य मदावर्त

३ श्री वन्हैयालाल मिश्र मन्त्री, माहित्य मदावर्त

ಸ್ವವ ಸಿ—

४. श्री रामिकशोर व्यास कृतपति, साहित्य सदावर्त



नोचे दारा से बारा

१. श्री रामनिवास शाह उपाचार्ष एव कोपाप्पन माहित्य मदावर्ष

२. ग्रामार्य श्री पुरुषोत्तम 'उत्तम' प्रयानार्गम्, माहिन्य महार्गन

 श्री हिम्मनलाल 'हिमकरनेगी' प्रर्थ मन्त्री, मास्न्य महार्मा







हमार्त, नुनार्त, निवारं, क्यारं मार्ट का पूर्ण जान इतात करता रम परिताद का कार्य एक है। स्थापनात सामा समाप्त कम्यास्त्र दोई की क्यान्य के एक रिस्ट क्यारं क्या स्थित की क्या नीमक रिसा स्था। "किंग्सियान एवं उद्योग

हामा हमिति" हाम देवर इस परिषठ का कार्य

हिल्लार विद्या नया । मात्र रमी जीमीत के द्वारा कई ब्राल्यांभतः महिल्लां भेरणम् मौर वीविका प्राप्त कर की हैं।

प्रकाराम निर्मात — नेगल और स्वास्त हंग्य का बादे गुण्युंगरे यह आसारित है, जिन बंग की ल्या में देशांत्रक कार्ति में स्वे परिपरित्या हंद्य की एनई जानक्या दीने रावस्तुति में हिल्ला हो, हिला किएत को छुन, कम्मा की जिल्ला की राज्य का में स्वास्त्र में हिला कार्य के स्वास्त्र में हे प्रकारता कार्यक्त प्रवास का गामाण्या की है। जावकार क्रमार्गल, जागा-कार्यो विभोध की जावकार क्रमार्गल, जागा-कार्यो विभोध की

graphs with a law will best best best befried.

Berlie elege an menne ble gebi belate a

हरण है थानर है। दरी मार्गि महाम्य दीन बाहुए नूर्वे बान्य दीन परणात्र पिता हुँगि है का रंग्न बर्ग पर्यापन है दो जाने पाण्यों का प्रशास कर है दो प्रभाव का पाण्यों का प्रशास कर बाहर पर कहा के बाहर है राज्या प्रमास की बोल पर हो के पूर्व पाण्यों है। साम दीन

क्षेत्रकार असी कृषा हैते जो प्रयापन को कृति हैता के पहुँच पराहै । अपने की इंग्लेड नेद्रांक समार्थ की निराम के अस्त कर्मा के मान्यार की असे मार्थ के समाप्त पर कर्मा के मान्यार की भी हमा जेन मार्थिकार पराहण के सम्बद्ध की पराहण की समाप्त

marin sa tra de se se se se a

war griff wir fich in an wie er grif

होगी। इस कार्य में हमें धावित कड़िनाई है। धर्मिक मात्रा में सामना करना पहेगा वह है

करेंगे। इसी संदर्भ से सकारमां में हम सह तिहेत करना चाहेंगे कि यह ऐसे सहलपूर्ण कामी के दि सन्दामों को पूर्ण सहमोग प्रदान करें।

व का बारण का वह एक सहस्वपूर्ण वरण में मानामां को पूर्ण सहस्रोत प्रसान वर है। समाज शिक्षा समिति—नए मानव का निर्माण वर देवा को नाम के देवा, बेर्डिंग एं गारोरित विकास के मान मान्त्रीक परम्हर्ण को प्रपत्नि के सिन्हर पर पहुँचाना रही गर्दन

को बनान के जिनार पर पहुँचाना करते वह भी मानिक में निवास कर पहुँचाना करते वह भी मानिक में निवास के मानिक में निवास के मानिक मा

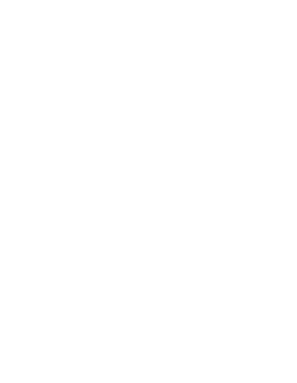
गानावास - विद्युत्ती जावियों की समारा है त वित्ता पार में तह कारण में हैं है है है है प्राप्त है है तो निवार का भूतिक किए है कहा है है हिन्तु जे ता जारा दिवत की नामल माहादत हो जाती ति हत पार्थी लगा करता हूं है पार्थी के माहित्य स्थान करता है है है है हम्म करता है

रिकान के मान मित्रों तो तिवचा ही सन की

रमें राज प्रतिसार कार से सिरती ।

मुच्य न इ. उपान सहोतानु हें हकता वा द्वारी हैं मुद्द है कोन दूरारा लगाइन्द्रेय वा दूर मार्डे मुद्द है कोन दूरारा लगाइन्स मार्थ की निर्मा मार्टे नर्प कोन की स्वाधित के दूरी होता प्राप्त करत मान्याची दूर मन सरदा नर्ग है है

र्वताच रेक्सलाक्ष्य क्षात्रकृत क्षात्रकृत रेडव १ वर्षालय राज्यक क्षात्रकृत क्षात्रकृत क्षात्रकृत १ वर्षात्रकृतिकाराम्यकृतिका स्थापन क्षात्रकृतिका है हैं।





निबन्ध-प्रतियोगिता प्रमुख है जिसमें १४७१
प्रतियोगी मान ते चुके हैं। किन्तु ७ वर्ष तक चने
सारहे इस कार्य को "विदर विद्यानय सायोग"
को एक पिकालि के परिशास दक्कर एकाएक बन्द कर देना पदा।

संस्था की प्राधिक स्थिति: - इम क्षेत्र में संस्था की दिवति मस्तगार्ग्य रही है। जो दुष्ठ प्राधिक मस्योग प्रव तक प्राप्त हुमा नह दिवारियों प्रोप्त सस्योगी तथा संस्थक व्यक्तियों में प्राप्त हुमा है। इसके प्रतिदिक्त राज्य के दिव्या विभाग, समाज बस्थाए बोर्ड, माहिला प्रकारमी एवं बेन्द्रीय समाज बस्थाए बोर्ड में भी प्राधिक सहायतार्थ् सम्य-मस्य दर प्राप्त हुई है।

सत्या को सब तक की सायरे०४४०६ ०० ह० तदा स्वय ११०४०६ ०० ह० है। वर्तमान से संका पर ६००० १०० ह० कर्जा है। त्यन्ट हो है ति स्त्या की पोजनामी को पूर्ण करने से साविक कठिलाई गतिरोध उत्तप्त करनी है। तो भी संका के कार्यकर्तामां ने पुर्टन नहीं देने हैं। येथे भीर हिमात के साथ प्रगति—यव पर स्वयंने वह वरण एको कराने कार्य हो है।

संस्था का वर्तमान स्वक्ष्य — सम्य के संस्था-निवसीमंत्रिया के प्रत्योग मध्या पविच्छ होतर सिक्षा विभाग द्वारा मान्या प्राप्त का प्राप्त है। तत ४ वर्षों में सच्या का ग्यान्त राज्यवात के तस्मान्य व्यक्तिये द्वारा निविक्त संवादन पर्मान्त द्वारा है। स्वाक्तिय द्वारा निविक्त संवादन पर्मान्ति द्वारा है। स्वाक्तिय समिति का गटन सम

रार हा ।
धी राम विश्वीर स्थान — हुपर्रात्त ,, दामीदर लाव स्थान — स्थ्यक्ष स्थान — स्थान स्थान हुमारिया — उत्पाध्यक्ष स्थान स्

.. पुरपोत्तम 'उत्तम'

,, हिम्मत लात 'हिमकरनेगी - प्रर्थमन्त्री ,, राम निवास शाह - कोपाध्यक्ष ,, चन्द्र कृमार 'सुकृमार' सदम्य .. निरंजननाथ प्राचार्य शदस्य ., सहदेव शर्मा सदस्य ,, क्म्पूरमन बाह सदस्य मुधी शकुन्तना धीवास्तद मदस्य श्री बहादर्शमह 'सहायक' सदस्य .. कैनाम तिवाडी 'विद्रोही' _ सदस्य यह हुए की बात है कि राजस्थान माहित्य ब्रक्तादमी (मंगम) उदयपुर ने रूस्याको संम्बन्धित कर प्रथमा भंग बना निया है। स्स्था इस सराहनीय प्रयाग के निए धनाइमी के धन्यक्ष श्री जनाईनराय मायर तथा संचानक हाँ। मोनीशान मेनारिया की

संस्था की भावी योजना - राष्ट्रभाषा हिन्दी के विस्तार-प्रस्तार हेतु "हिन्दी कानेज" की क्यारना करना तथा माहित्यक क्षेत्र में मेदा-कार्य करने के उद्देश्य में एक पूर्णत. माहित्यक विकास का प्रमानन करना, रामने कार्यकर्माओं के मानना में आने कर में आग रही पाराशायों को मुक्त कर है।

धन्यवाद देना प्रपना कर्नेब्य मानती है।

भैने नो 'हिन्दो नादेव' के स्टब्स् को साति वानेव वे कर में सामर्क प्रारम्भ ने संबादित करना मा दरा है, निन्दु मनस्यामों के उदिव समामानों नो स्वस्त्वा की सम्बाद्धों के नारता पूर्ण विकास कम मामें हम नहीं दे पाए है।

'सहावत' वे पाम घरना व है निजी स्वात धौर भवन नहीं है। यह भी प्रति में एन बापा छीं है। बिन्दु निकट में प्रेस में हो साव्य मरकार हाए मूर्नि प्रान कर भारत ?







उद्रघाटन के शब्द

उपस्थित देवियो भौर संग्रानी,

म मेमिनार के प्रायोजको ने इसका विचारखीय र्वे दिषय परिस्थिति के प्रत्यन्त प्रवुकून रखा है− "सामान्य जन भीर साहित्यवार" । धगर सबमुब कहा जाय तो यह मामान्य जन का यूग नही है, सामान्य जन को मान्य बनाने का दिन है। माज तक राजा लोग मान्य थे, राजा जिमको मान्य करे. वह मान्य बनता था। भ्रव सामान्य लोगो को मान्य बनाने का दिन मा गया है, स्वराज्य वा दिन मही है, लोक राज्य का दिव है। स्वराज्य हो पुका है, ग्रद कोशिश करके लोक राज्य बनाने का दिन भागगाहै। हम जिनके हाय में सारे राज्य को देने वाने हैं, उनको नैयार करने का काम दो वर्गों के हाथ में भा गया है-एक है राजनैतिक पूरण, जिसके हाथ में बाजकल सारी मता है भीर दूसरा है साहित्यवार, जिसके हाय में प्रेरणा देने का मधिवार है। इन दोनों के प्रशत में जो कुछ होगा वह होगा। साहित्यवार में भी दो पक्ष हो गये हैं-एक साहित्यवार वहता है, बया नीति भीर बया वर्म ? ये सब दातें प्रानी हो गई है, हम तो प्रवा कारंजन करेंगे, जिससे जीवन की धनिध्यति हो हम, जीवन मे दितनी बुद्ध रच्छाएं, भाराक्षाएं, बामनाएं होती है, उनको जागृत करेंगे। इन सब बासनाधो को जातून करने के जिए जिनने सीत प्रयत्न कर सकते हैं, वे करें। यही लोग पिर कहते है कि इस समाज के ग्रह है लेकिन ये दोनों कार्ने साय-साय नहीं वर सकती। या तो बाप रंजन बरें, या किर लोगों की उच्चामिताया या हीता-भिवाबाधी, दोनों में में एवं की बाइति का बदल

करें। दूसरा साहित्यकार है, उसमे मबके जिए स्वान है, सद समाज का कार्य उसके पास है, औरन नो है, सद समाज का कार्य अपने पास है, ओरन उसन भैसे हो? स्वान्तम्बी निये हो? उसका हास ज्यादा से ज्याद न हो, इसके निए जो प्रेरणा देती है, उस प्रेरणा को देने का काम माहित्यकार का है। इसके निए उसको प्रपने जीनन में सापना करती होगी। हमारी तरक न देखिये, हमारा पाहित्य कैसा है, उसरी सरक देनिये, यह कहने की नीवन मही प्रानी चाहिए। जिनना हमारा माहित्य उसा है, इसमें भी हमारा जीनन उदन बने, इसके निए हमें साथना करती चाहिए, इनना तो कम में नम हम

सरकार दो बान कर सकती है-जनता को मधर ज्ञान चौर राज्य के मधिकार । ये दोनी सनरनाक चीत्रे हैं। नीगों को योट के प्रधिकार मिने। यात्र दोट की सनाहै, मात्र मगर कोई बाम था सकता है तो वह बोट है। बोट जिसको बाहैवा वह धायेवा, जिमहो बाहेवा हटायेवा। टुमरा बक्षर कान है, वह भी सनग्नात है, अनमें न्या पढेंगे ? क्या नहीं पढेंगे ? यह धारते हाथ की बात है। बाप मो भे को पढ़ाने की मना दे चुके हैं। इसमें में क्या स्वाई होता, यह पता नहीं हो सकता। डिमोबेसी के बादने हैं "act of faith" जिन नोगों के हाथ सर्व सता देते वाते हैं, वे बीट धीर मक्षर जान बाने सब मूत बर रनको व्यर्षे नहीं करेंगे, ऐसे दिश्वाम से मारी सना इनके हाथ से देरी है। भारते प्रदेश की समस्या ही लें। क्ष प्रदेश में स्थापन ने बारने हिनाब ने उत्तरा दिन

तर रहते की वोशिश की। जैसे कभी वर्ष के दिन बढ जाते हैं, उमी तरह मध्यकान ने भपने हिसाब ने ज्यादादिन रहने की कोशिश की । इस मध्य-कान की जिल्द बाध देनी है, वर्तमान को मजबूत बनाना है भौर भदिष्य कात की स्वाई करना है। इमरी सारी परिस्थिति का धापनी धान्तरिक ज्ञान है भीर भारते पास दीर्थ हांग्र है, ऐने साहित्यकार हमें मिनें सो सब बाल्याल होगा । सेविन धगर सोग क्ट्रें कि घारके संत, घारके ऋषि, घारके धुनि महारमाधी ने मधाई के पाठ इतने पहादे हैं कि हम मब ऊद गये हैं। भाज हम स्प्रतंत्र हो गये तो बरो हैं कि सब जरा भोग विनाम का संदुष्तर करने दीजिये। भोग दिलाग मानस्य ना बीज है, इसरा कीन दिशोध करेगा ? मगर कह कम्याएकारी है, दिवयी गरी है। मेहिन या देगा गया है दि जो मीग जनता के भीग दिलान की जगा देते हैं, जा का ही बनियान निया जाता है, यह एवं ऐतिनामित तियम है। इस बार्ड मारियर इर स समने हि बाज बगर हम नोर भीत विशास जारा देंगे तो इक्षारी बाली बचुर हो जायारे र लेकिन जब तक क्षेत्रन नेहर देहते नहीं बादेगा, बीर कोई बनारा कारत कार होता नह तर ती देर चरेता, प्रार्थ बार से देखा कारेणा । मेरे देखा है कि लोगा के भारते स्ट्रिक साम्याम मात्रम प्राप्त साम दिवास सर् बना रेट्ट बाग है। मैं बामी द्वारा बन् werte git g wiet R errett fir det graft defen g ब्राइक से का बाद बर रहे हैं यह सार है, कर्ण हर great met bargen bereit & fen g i met men ्र क्षेत्रकात स्थापन सम्बद्ध स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन ge goe grad it teamer finde, ger ger ere parter \$4.5 million & ne miner feren mann a the Armer bance an acres or an gen und ? fret 2 mer mer er treis

प्रतिभा दर्गोपी। प्रेम सनाउन नियम है, इन्हें नये नये भन्तेपण होते रहते हैं। मुख के झारा रे प्राप्त होता है यह मजीब है। बीस्त ना ही मरए है। मारने की कवा हर एक को प्राच नी होती, जो मार सकता है यह भर भी तका है। मरने की कता भारते पास है, यह जीवन के ही सभी को प्राप्त होती है। मरने की इसरी कर ऐसी है, जैसी महात्माची के पान होती है. है गमनो है, जीवन में दूसरों की सेश करते की मौता सिरता है। मरने के बाद भी नेश करों ही मौरा मिने तो एक शारा के धन्दर महुन्त रूपा मीता है जिल्ला सारे जीवन में सरी जीवा है िनानी सारी जीवन में सेवा की, बह मरी के बारी की । इस तरह कार सतापत तिवय रहे हैं। इन गया युग मा गया है, इसने संग्रह प्रेम का कार्तनह होता चाहिए सब सोगों के प्रति ग्राप्तिक भार रेटा पाटिए। सब लोगो के प्रतिधारिक भा के मादर है-देश भारत बीर देश बारी गुणावार केर पारी दोनों की सेशा करें, घंट नती साते । ^{साद}ै न्यान माने । मापनी कांत्रण म नामाय मापनी रणा बर्गरण । जिस्ता प्राप्त कृते बारा है, है द्राप्त का, इसक दिल कुछ मैदान करता वर्ष प्रकृति है । पृथ्वते जाताने से चर्चा साथ महा सं रें gene mant al mat metural maceg : and all uplate states abut t दण दल झा पर करें के अन्त है-अन्दार बन्न मृत्यो रह है बारर के अरह है जीता अरे हैं। देरे क्षात्र के जागर के हुदन का लाग्ने स्ट्रीत अग्यवका है

मुन्दम मन्दिक करारक उत्तरपुत्र कुलुक्रान है

करके जो भी भावस्थक है, वह साहिए हैंना

माज तक साहित्य के विषय थे-प्रेम, धीर्म, गी

भौर भरए । चारों विषयों मे साहितसार ने का

*** * ** **** *

मब भाषाका सवान मा सकता है, भाषा ऐसी होनी चाहिए कि उसमे जीवन के मूल्य था आर्थे। मैं पूछनाहं कि जब हिन्दी बोरने वानो की संख्या, भीर भाषा बोतने वाली की संख्या से चार पाच गुनी है, दस गुनी है, तो भाषा क्यो न ऐसी हो कि जिसको जनतानो समभने मे दिक्कत मही हो । इस वास्ते राजस्थान के जो साहित्यकार साहित्य सूजन कर रहे हैं, उनकी हिन्दी ऐसी हो कि सब लोगों की समक्ष में ग्राजाये, तब सो लोग समभेंने कि प्रपनी बात है। प्रव पाडित्य पूर्ण भाषा मही चलेगी। मगर प्रापको जनताको सेवाकरनी है तो जनता समक सके ऐसी भाषा बोनें। राज-स्थानी में शब्दों की भरमार है, हिन्दी में ऐसे राजस्यानी दादर लायें जिन्हें लोग समभ सकें. ऐसी हिन्दी का भाविष्यार करना होगा। साथ ही देश की रक्षा कैमे हो, यह बताने वाना भी साहित्य हो । मैं पूछता हुँ कि हिन्दुस्तान की रसा के लिए क्यार करना चाहिए, इसके बारे मे एक भी विताद लिखी है ? धभी चीन मीर भारत के मधिकारियों की बात हुई, उसकी रियोर्ट भंग्रेजी में लिखी है। भभी तक राज्य हिन्दी का

नहीं है, नही तो भारत की रक्षा के लिए, सारे हिमानय की क्या हानत है, इसकी रिपोर्ट ग्रंग्रेजी मेन दी जाती।

साहित्यकारों से प्रार्थना है कि पिछारी हुई जनना कर एक भी धारमी पिछड़ा हुया धारके प्रदेश में रहता है धोर एक भी धारमी धरमानित होता है, तो धारकी नाक कर गई। मैं धौर प्रदेश की बान नहीं करता, राजस्थान में पिछडायन बहुत है धौर कियों की बया हातत है, केवच ११ महितारों दिखान सभा धौर लोक समा के निए हैं। उनके बारे में भी विचार करें।

मुक्ते धारके बीच मे माने का धरमर मिना, मैं हतार्य हुंधा । मुक्ते विरक्तात्त है पान जो जनना का दुन पुत्र हो गया है, जस्मा प्रतिष्ठा का कर कर सामान्य जन की तेवा करके समानदार लाने के निष् धाप प्रस्त करेंगे । मुक्ते धामा है जनता और सामान्य जनता की एननिष्ठ नेसा करने का बन नेकर धार में मिनार ने शांपिम नोटेंगे ।

२३-२-६१

—काका कालेलकर

"संचालक- की ओर से"

ब्यादरणीय काला साहब, साहित्यकार कपूर्यो, उपरिवत साउनों भीर महिलायों । एक अनत है मान साहित्यकार भीर जनता के बीच जिनती हिक्याये वधी हो गाँ हैं उनके निए उनस्यादित्य दिख्या है? रागते पहुंचे में यह अन्त भी वृद्धना काहम है कि बया सबयुक जनता और साहित्यकार के विवेदन की यावस्यकता है? जनता के कर का उनस्यादित्य साहित्यकार का है! इंटिस की हिंह से देना जाय तो इस स्वार की विमान है. बैहिन नान में कवि क्याएं गाने थे, राजा और महाराजामों ने पान बेटने थे, उनने मेंने हुए गाम वर्ष में जाम बर म्याप्ति हिस्से माने थे। मेरिन उनने बार सर्ट मी देशने है कि बब धरियों ने हाथ में बन पाना मों मेडिक वर्ष या नाहित्यारा मन्याय बन नर पूरी नया। भारत वर्ष ना हिन्दाम स्वाप्ति जन्म हाल है हि यह वस्त्र धर्मा हुंचा है और मोर्गो ने महुबन दिया हि यह धर्मा मान्य की धर्मिक मान्य करना है। इस्तिन्द्र नियम की त्रिपान बने घोर उसमें स्मानि ने भीम मांग कर पानन करे ताकि स्मार्थ की विस्ता न हो। हमारे सामल कान में यह मर्थाम भी रही है कि जब साहिएकबार पाना पानो राजा उसमें पानरी की उसमें पर किस पाना दो नागी है। यह करी यह न करो। यह दायित किसमा है? क्या उसमा है जो जनता के नाम पर उन्हां पोन्हा कर है है कीन कर रहा है जनमा वा पोन्हा कर है है कीन कर रहा है जनमा वा पोन्हा जन्मा की दिश्ल करने का मन्द नहीं है।

बंदर का बाबमण होते तथा है। दो हजार. इत्तर वर्ष पत्रंत्र भी यही या। उप प्रस्पत्र को क्षतिप्रदेश में मधुन्त स्था है। किल मात्र सर द पर रिना बढ़ गर्द है। साहित्यकार में भी पद दिला का गर्द है, सामना । वाले की बीज रत की, को पाने थी। भारताई म सायका errer eift & unt, et blettere er देश कर बिहा ने पर की असरे का बी और प्रका einer ein und bie feit fe unt m gerei रादा दिला कारा है। जान गुराते हैं हिन्दी में बता हेर नरहें दूसरा है। है जारने बहाई हे बच artig mat aff alla gart geraf & for gent abe un'ermune mafte un fig feie it mut fie on alter a read on on all alter al di me de gre seuf de fer dertet war bert be be be be beite beite bemein gua mar and a deport \$ 3, which calls a section The many is one in a constitution a graph at a service and a g came a president to 4 - 2 4 + 1 + 4 + 1 + 1 + 1 + 1 + 1 + 1

जो ऐसा बहुते हैं कि माहित्यकार मातर के हैं को स्पापित करे, उन व्यक्तियों ने उन महत्तों की ह को मुना या नही । हम नहीं जानते उसने बार का व्यवसाय भी बहुत गनता रहा, उसके बारए के ने धर्म और मोश की भोर नहीं देता, इमीर की बाइ काफी उत्यान और पतन देने गरे। केंग भाज भी मानव का गौरत देखना है हो सार्रिया के पाम ही जाना पड़ेगा । उसके बागे दी प्र^{कर है} माहित्यकार हो गये, एक तो वे जो दरता^{है है} परेगये भौर दूसरे वे जो सापना मेनी ग्री जो दरवारों में गने गये वे जीवन को, वर्ष हो गया संस्कृति भीर इतिहास को नहीं समभ ^{हरे।} नेक्नि किर भी ऐंगे साहिएकार पटे जो ^{हर्ना} शापना में लगे रहे, जनमें से महावृद्धि वातीरा^{न का} नाम गामने थाता है। उनकी महाइ इति को देखें ने बाद नगा। है कि साहित्यतार का धौरा की नरी हुमा है, राज्य उसको माता नरी दे नारका बिस दिन साम्य की स्थाता के उत्पत्त सान्तिकार ने सारित्य स्वता की, प्रमाति उत्तरा होत्त न्तर हो जाएगा। तृष् गेतर है को दण ^{नत} रिचते हैं, में सममता है कि नेतामां की हैं ^{हराती} ने प्राप्ता गता बाट रिया है। बसा प्राप्त मा बड़ा बार वि रेग दी या चर्ने की बात विभी 3 में पुष्ता बाला हो कि देश की, कर्म का बात कर दिली की की है। समारो पर प्राप्तना कारण हिं नावरे रह अपन बार कर्या भी बार सकता है सिंग्स मा^{राज्या} नम बार नमान प्राप्त वह दिला हुई बला व an ber mant I dieges mibildet at ang

-1-51

ar tuatent

राजस्थान की साहित्यिक संस्थायें

कुमारी कमला भाकड, जयपुर

"राजस्थान के साहित्य जगन मे साहित्यिक संस्थापो का महत्वपूर्ण स्थान है। सामुहिक रूप में साहित्व के धनसंधान, प्रचार, प्रकाशन एवं प्रांत के जन-मानस में साहित्यिक धर्भिक्वि उत्पन्न करने में संस्थाको का प्रशंसनीय योगदान रहा है। इतना ही नहीं साहित्य के निये पाठक तैयार करने में इन संस्थाप्रो ने जो दशना प्रकट की है साहित्य जगत को निश्चित ही माभार दिया है। साधन भौर वाताररण के सभाव में सनेक प्रतिभायें वृष्ठित हो जाती हैं किन्तु संस्थामी के सहयोग से प्रान्त की प्रतिभागें काफी मात्रा में कुंठित होने से बची हैं। हम यहा प्रान्त की कुछ महत्वपूर्ण संस्थामो के बारे मे संकेत देते हुए तिवेदन करेंगे कि मतीत की मुरक्षा, वर्तामान के परिष्कार भौर भविष्य के विकास के लिये जनता, राज्य धीर कम्पन्न सीगी के साय २ प्रान्त के साहित्यकारों की भी इन केन्द्रों को सद्भावनापूर्ण योग देने मे सत्पर रहना चाहिये ।

सानत भी प्रमुख संस्थामी में 'साहित्य मनवान उदरापुर', हिन्दी साहित्य मिर्मित भरतपुर, बागद स्टेस साहित्य परिचर हू' राष्ट्रप, बानतानित्य मुसार साहित्य वरिचर, बोपपुर, राजनवानी त्योच संस्थान सोतावती, हिन्दी विदय सारती भीताने, उत्तरवान साहित्य सामित दिगाऊ, भारतेनु समिति नोटा, मोर 'साहित्य सप्यत' गावदारा साहित्य मा मेलेन-स्मार वरिचय पर्या देते हुंग निवेदन बांचे कि पाव-पान करने में प्रमान देते हैं एनर्टर क्षमा दाचना करते हैं।

साहित्य संस्थान उदयपुर,-की स्थापना स॰ १६६ में प्राचीन साहित्य की प्रनुसंधान एवं प्रकाशन सवा भवीचीन माहित्य के सुजन भीर प्रवार की दृष्टि से हुई। तब मे यह संस्पान निरन्तर साहित्य मेवा में मंत्रम्त है। संस्थात के मन्तर्गत चनने बानी प्रवृतियो में प्रमुखतः प्राचीन साहित्य के धनुमंधान को महत्व देते हुए प्राचीन साहित्य-विभाग का गठन राजस्थान के प्राचीन साहित्य की प्रकाश मे नाने के उद्देश में किया है। इस निभाग के द्वारा मनेक प्राचीन विव भौर ग्रन्थों का परिकार भनेक प्रसिद्ध भीर मधिकारी विद्वानी के द्वारा माहित्य जगत को प्राप्त हुमा है। ईस्पान का दूसरा विभाग है राजस्यानी प्रामीन साहित्य । सन् १६४४ तक इस विभाग ने पुत्र बठारह हजार पाच सी गीता को संब्रहित किया है जिसमें १९४४ तक महाराखामा के गीत, चुडावनों के गीत, राजन्यानी दोहे भादि का सपादन किया जा चुका है। इसके माय ही 'पृथ्वीराज रामो' का मपारत भी इम विभाग का महत्वपूर्ण कार्य है।

संस्थान, सोर साहित्य, धारिवामी माहित्य धोर राज्यवानी नोर मीत बादि है संबद्ध धीर प्रशासन है दिये निरन्तर प्रत्यक्तीत रहा है। सेवाह सी कहारते रे माण, मावदी बतावते धीर शास्त्रवानी नोर रीतों के संबद्द इस दिसाय का प्रकारत है।

कश्योत प्राचीन साहित्य के साथ २ प्राचीनीत वाहित्य के प्रवासत के निये भी निरम्पर प्रयानसीत वहा है जिससे घोसाजी के निजयों का सबह और भी जनार्दन वाज नासक के 'प्राचार्य काम्मवर' (नाटन) का प्रकारत महत्वपूरी है। इसके साथ ही संख्य के भन्तर्गत घोष संस्थान का कार्य भी सहरद-पूर्ण किया है दिसमें दूर २ में घोष-स्तारक घोष के पात है। इसी दिसाय के प्रतार्गत घोष परिचा का कत्यान भी हमा था। साहित्यक धामनो की परस्पा भी संस्थान की पासी बजत है। जिसके धामनी प्रीप्तिय घोषा घोर प्रेमकर घाड़ि के हाल में धामनों की स्थारना की गई है जो निरस्तर इन दिहासे पर विकास विकास करने करने

हिन्दी गाहित्य गमिति अरतपुरः—गमिति वी स्वारण समय १८६६ में धारण प्राप्ता तस्म धीलदार को भी घीलपारी जगमात्र दाग जो दिवा-एव भीर भी तिरामा को घानी के बारत हुई दी। कीति के सम्मीत प्राप्ताण, बाक्याण, काल कीति, कारिए-मोर्टरी, वीद-नमाज, वार्चरे इस्ताल कीरि कृतिस्थान वर्गरे हैं।

स्थिति का पुरस्कारण कार्या सम्या है। दिकार ६० विकास देवसा की सरफार कारत हजार पुरस्त कमा एक हजार कार्या तीत पुरस्ति कीर माठ हजार कर्मात कार्य कार्य है। सभी ६६ की समय भी १६६० नहीं पुरस्ति पुरस्ति कर है। सभी कीर सीर भी १६६० नहीं पुरस्ति पुरस्ति कीर सीर्य सीर्य

 संस्था को माशीर्वाद दिया है। संस्था है को 'स्वर्ण जयन्ती' महोत्सव मनामा है जिसने रहा' इंप्युनन (उप-हाय्युपति) ने पंचार कर संस्था है माशीर्वाद हिया।

बागड़ प्रदेश साहित्य परिषद्, हु गरपुर — परिषद् की स्वापना सं० २००१ कार्ति हुन गरामी को हुई थी। तभी से संस्था बागड प्ररेग है

गाहित्व के प्रमार एवं प्रसार के निये प्रशनकी की बांगड भाषा भौर उसके साहित्य की उम^{्न} के ^{हिर्द} भी कार्येगीत है। गेरवा की प्रवृत्तियों में भव^{ती है} राष्ट्र भाषा महा विचातम, उद्यपुर क्षेत्रिक पा मारा प्रचार गमिति, और एवं बात शिक्षण करा मिरता विक्षण, राजस्यानी सोच विभाग, बा^{दा} नय एवं पुरतकात्त्व सौर प्राधीत कृत्तरितित करे का सदरात्रय प्रयुत्त है। सर्वे के सभाद मीर स^{त्यार} की कभी के कारण परिषद् योजनामी के में।^{तर} रिशाग करते में समर्थ नहीं हो। नहीं । ^{हर्य ही} भारत न होते ने नारण भी दुरिया में हैं। मन्त्रप्रान्तीय गुमारः माहित्य गरिगदः त्रोग्। यत रोग्या प्राप्त की जानी-मानी संस्ता^{है।} जरतीतर संगारिय के प्रति श्रीव उत्तव प्र^{त्} के प्रदेश में २६ जनवर्ग १६४४ की अंत्र्यु^{त है} रामारी राव मतनारित पुरस थी नेनीवड ^{हैर} भिन्तृत ने सात्रदर्भक नर्गरा प्रतिवाधिक स्विति के कह से इस संस्तुत की बहारता का की राज्य है वरिवाह काल भीर देख के जीवन में ब्रा^हिवन क्षांबर्णक प्रतास करते के विश्व विस्थान प्रतास तर्व है। बांद रिएजल केन्द्र, काषण्यस्य । पुरुष्दास्य । वर्ष मर्गार्थ रक्ष प्रदेशीया कवा क्षांस्थय स्वयन्त्रात की with the Rich State my time manufact to

रैरकाच अवस्थार बारस था। अनुवा वर्षा रहा ।

Es mistrat andre especial as sa desident

facts a tt

मे भीर हिन्दुनतान में तथा उसके बाहर, हैदराबाद हैहनी, बेंगलोर, बनकता भीर कामीतों का किति-बेंगल महत्त्व में हैं। परिषद् देश के विश्वम प्रतिब्द विद्यानी की बुदा भारने मधियेगतों की मध्यक्षता के द्वारा उनके ज्ञान में प्रान्त के जन-मानम को सामान्तित करती है।

राजस्थानो द्योघ संस्थान, चौपासनो — चौपासनी शिक्षा गमिति जोषप्र द्वारा राज-स्यानी साहित्य के शोध भौर प्रकाशन के महत्वपूर्ण कार्य के निये १४ धगस्त १६४४ को दोध संस्थान की स्थापना की गई थी। तब से यह शोध सस्थान प्रान्त के साहित्य वैभव को बद्धित करने में संलग्न रहा है। श्रेमासिक शोध पत्रिका 'परम्परा' के प्रकाशन के द्वारा संस्थान ने जो प्राचीन साहित्य भीर लोक साहित्य, रसज्ञ पाठवो के समक्ष प्रस्तृत क्या है, प्रशंसनीय है। 'परम्परा' द्वारा प्रकाशित प्रमुख प्रसासन है लोग गीत, गौरा हट जा, दिगन-कोष, जेठपेरा मोरठा, राजस्वानी बात संग्रह, रस राज धादि है। इसके प्रतिरिक्त कस्यान के द्वारा 'साहित्य मौर समाज' (श्री विजयदान देवा) 'साहित्य संगीत धौर कला (कोमन कोठारी) शीर्षक दो निबन्धों की पुस्तकों का भी प्रकाशन हमा है। संस्थान का महिनीय भीर प्रमंतनीय कार्य है 'बृहतु राजस्वानी बाब्द कोष' का प्रकाशन । इस राद्य कोष में संगभग एक लाख पच्चीस हजार सद होते। सब्द कोप चार भागों में प्रकाशित होता-जिसका प्रयम माग शीध ही पाटको के हाय मे क्याने वाला है। यह बार हजार पृथ्वों में दरोगा। बान्तक से हरदान का यह कार्य राज्यवानी भाषा का समरत्व भीर साहित्य के गौरक में कृद्धि करने क्षाना होया. इस कार्य से भी सीनासन नावन लगे हुये हैं।

शस्यात हश्तरिवित प्रत्यो, नोष-रोत्रो, दिसन

गीतो, राजस्थानी वातो, पुराने-वित्रो एवं डिगन के कवियों की जीवती के सेंग्रहों में भी संत्रत है। यब तक कमयाः पात्र सो इस्तरितित ग्रन्य, ५०० त्रोक-मीत, २००० डिगन गीत व छस्द, दो सो राजस्थानी बाते, एक सो बीम वित्र और एक सो वीवनिया संपश्ति कर चुका है।

हिन्दो विश्व भारती, बीकानेर:-भारती की स्थापना बीकानेर साहित्य सम्मनन द्वारा २६ जून १९५७ को हुई थी। तब मे जिस्त-भारती, बीकानेर के जीवन में साहित्यिक ग्रामिरिय उराप्त करने मे प्रयत्नशीन है। समिति के प्रनार्गत चनने वाची प्रवृत्तियां मे धनुसंघान विभाग, समाज बत्यास विभाग, धन्तर्राष्ट्रीय विभाग, पुस्तकावय व बाबनानय तथा प्रौड शिक्षण एवं प्रशिक्षण विभाग चनते हैं। ये विभाग मगन एवं कर्मठता ने साय प्राने नार्य में संतान रह जन-सेवा में तीन हैं। इसके साथ ही भारती की प्रमुख प्रवृति है नियमित रूप में होने वाली धतुसंधान एवं विचार गोष्ठिया । ये गोष्ठिया सत्ताह में दो बार रविवार मौर गुरुवार को होती है। जिसम विभिन्न विषयो पर प्रसिद्ध विद्यानों के भाषण तथा निवल्ध पाठ होने रहने हैं।

राजम्यान माहिस्य ममिति, बिमाऊ:--

मारतेन्दु समिति, कोटाः-

समिति की स्वापना भाज में नगमग ३५ वर्ष पूर्व कोटा नगर तथा हाडोती अदेश म हिन्दी प्रकार को मध्य मानकर सद् १६२६ में हुई थी। उमी शमय ने मुमिति, साहित्व ने प्रनार, प्रशासन एवं नरीन प्रतिमाधी की प्रीमाहन देने के कार्य मे र्मनन है। नाइको का समित्रय, क्षि कम्मेनन, निकाय प्रतियोगिता, बहानी गम्मेनन, राज्य मापा के स्थान पर लियी का अवार और मजारों की इतियों के होत दिशा की कारणा करना नवा द्रविद्र साहित्यसारी की अवस्थिय और साहित्यस पुणको को बाराजित करना गमिति की प्रमुख प्रवृति करी है। सामनी प्रवृत्तिमा नामा बाली mun ft efult eretun ? abe einenin-दिवारी ह के नाम में दूर बालीत तक वा नामांत करने है को दि रिएम वेग्रा की बाहरता करनी है। वर्गीय मुश्रीय के मारित्य का अवस्तित बादन e fed elele felid ma et umpetig p ; बारा है यो निष्ट ब्रांस्थ व हो सहस्त्र रंगारी व करियेत के काचा दशहरता रिजय की فقرتمد هيساطا فكاف entrus kasus, engres ---

सर्वत् भी स्थापका कारणा सुक्ता कारणा रूप विदेश को बार मारणा की प्राथमित से मूर्व में प्राथमित सेवार क्या है के विदेश कर पार्य स्थाप हुआ प्राप्त की बार प्राप्त है के की व रूपणा रहा प्राप्त की बार प्राप्त की के की व रूपणा रहा प्राप्त कारणा मारणा की की प्राप्त कर प्राप्त कारणा कारणा कारणा कारणा मार्ग की प्राप्त कारणा कारणा मार्ग मार्ग मार्ग साम की प्राप्त कारणा कारणा मार्ग मार्

a mengalagan pangalagan Propinsi

मभी विषयों पर सा मण्डन के पुस्तकान में भी दैतिक, स

करीय ४५ माने हैं मदल हैं। संस्था के के पुरक सदस्य थीं के जिए श्रम-तन

र प्रयान में सम्याः । उपयुक्तिः संस्थाः घतत्ररं, सुधात्ररं सर्वि

मिनि स्थावर का प इस भागि रा सम्बाद द्वाल के सा

बनाये रतने क निये भी देगी प्रस्तर की बनाय गति से बढ़

गाथपा कं कमी के दन में समसर्ग कहें निकेदन है कि साम : गरणात्त्र से सर्दि क

व्यक्ति स्टान वे ता है व बोन क्रमणक की । बनगरों रेगद्र हो तब

संग्राना का दिस्त्य संग्राना के द्वारत रूप संस्थात कार्तित स

कररात्र से करूप रहा उद्यक्ति प्रकार

B. W. B. Block

राजस्थान की साहित्यिक

	t
यान में—	
मेस्हत माहित्य प्रो॰ शरशम माचार्य 'विभिन्नम'	¥
भारत हो। हरिसम प्राचीम भारत प्रत्सियों प्राचार नामहित्य घोर उनसे मुख्य प्रवृत्तियों प्राच्या हो। हरिसंदर 'हरीन'	žε
f	২ ঙ
हैन-पारित्य भी मन्द्रकार नाहरा सामारा नाहरम् सीर राहरपानी कहायती हो परप्रा साम्मारा कहाम्	7.0
'भारता'' गय गीत पार रुपारकर क्लिये	3\$
रियास आर्तिया केन्यांच्या	.,
केल क्यांतिहरूषे पुरः प्राटकाण त्वामताचरः स्टारकाण कार्य मोर्गः । (प्रविचर)	41
त्र के प्रतिकारी के के किया है। स्वर्ग के के किया के क	4.
्रा सम्बद्धाः स्टब्स् सार्वेशसम्बद्धाः	41
to all all date of the	64
And the same to th	at
And the second of the second o	1,5
• *	· ·
The section of the se	

संस्कृत साहित्य

प्रो॰ हरिराम ग्राचार्य 'ग्रमिताभ' राम रा. संस्कृत विभाग, महाराजा कालेज, जाण्डर

आस्थान वी वीर प्रसावनी घरती में बहा एक प्रोर बिलदानी वीरो का बन्म हुम, वही स्वी भी निरंतर सब्धि हुई है। रे० वी सताब्दी के बाद प्राय: प्रत्येक सती में संस्कृत-माहित्य का सर्वेत होता रहा है। हम निरसंकीच कह नवते हैं कि राजस्थान में भी संस्कृत-माहित्य-चर्जन वी एक मुशीचे प्रंपरा रही है। इस प्रान्त की राजधानी यह ऐतिहासिक नगर जयपुर कुछ सतक पूर्व भारत भर में वाराण्यों के बाद सस्हत-निरायण का प्रमुख वेन्द्र माना जाता या भीर यहा उत्पर्ध हिंदानों की प्रदादा में शिक्षा प्राप्त करने के लिए मुद्रर देशों से जान-पिरामु खान भावे रहते थे।

मुख सीमाप्री तक यहा के राजामी वा सहयोग एवं माध्रम भी संस्तृत तेसता के लिए प्रेरणारपर स्तृत गया पांचु प्रतिम होने वे नारण राजस्थान के माध्रम राजा संस्तृत के माध्रम पंत्री के सबय वी -यदस्था वी मोर स्थान नहीं है पाये, दिर भी मि.स्तृत भाग से रस्ता वस्ती बाने परिनो वी वर्ड हस्तानितत रस्ताण भागों, मिरियो पीर के स्थाय जायश्यों मे बहे क्ल मे मुरसित रही है। राजस्थान में हरतिनितत मित्रों वे जान-भागर साहित्य-नंतार में सर्व विदित है। मोबनोर, बेलस्ति, नागों, ज्वा-रु सार्व के पंत्रमार विदेशी विदानों तब के लिए सावर्यण ने वेट रहे हैं। हस्तिनितत सित्ये वी सर्वा प्रतिस्ता में उपनित्य सीत्यों में हर है। सहरे सीत्र वीच ४० हमार प्रतिस्ता मेंहर है। उसके बार भीतन्तर वा स्वार है जहां दिशी यह वहते हुए हमे गर्व होता है कि "शिशुपास वध" के प्रशेता महाकवि माघ ने राजस्यान की भूमि को धारने जस्म से धार्तकृत किया था। भीत-मान (श्रीमान) नगर प्रापनी जन्मभूमि थी। पन: इस वह सदते हैं दि धाब से सगभग १३०० वर्ष पुर्व ही माथ ने बुश्त्वयी में परिगुणित होने बाते महाबाध्य को रचना करके राजस्यान में संस्कृत-माहित्य-गर्बन का प्रथम शंखनाइ कर दिया या। उनके बाद भी कई साहित्य सृष्टामी का सम्बन्ध राजस्यान के साथ जोड़ा जाता है किन्तु उनके विषय में पर्यात मतभेद है। लेकिन माथ के बाद "तित्रक्रमं अरी" नामक सुप्रसिद्ध द्वन्य के रक्षिता महार्शिव धनपान के स्वतस्थात-निशामी होने के गुनिश्चित प्रमाण हमे मिनते है। धतपान यद्या थारातवरी के तिवानी काळण तथा राजा भीत्र (११०० ई०) को सभा के पहिलों मे से मे । पर भोड एका दाए "दिवहमंडएँ" इत्य को समिन शरण कर दिये जाने पर समेन्त्र होकर वे मारवाद ाभ्य के मांबोर नामक स्थान में भाकर रहते लगे। तिक प्रतिरिक्त लगभग १०वीं गती में यहाँ मुप्रसिद्ध हिसामय जैनम्नियाँ यो नेसनी से मनेरानेक रंस्ट्रत प्रस्य प्रमुख हुए हैं भीर प्रत्येक युग से होते हि है। इनमें में निम्निनिसित मुख्य है।

१, 'बाध्यानुसानन' के रणियता मेबाइ निवासी mar t

 मृदिस्यात्र दार्शनिक जैनामार्थे हरिभद्रगृहि (विगीर)।

६. 'मरम्पशे-बापतर,' की उसकि से विम-दिन दिनदम् गृहि ।

प्र. १% वी हारी में 'रामीर महाशाद ने रच-दिला सम्बद्ध गुरि ।

इन्दे तथा साथ वर्ष जैत-विद्वारो के धीन प्राथ यात्र जैत प्रयानिशारी से मुस्तिन है, रिस्टे दिश्वि दिक्कों को सरहत आहा 2 रिक्ट रिया गया है। गाप के काद शतायात मे र्वत्य भारतात सार्गान्य का यात सामान्य गरिवार आस है हिर्देश में करी गांव का विषय है, एनके विषय . इ. इत्याद करा कथा वर सक्या है। हिस्सास्य emna at felos fert an gel face unt ber a megmanterangen un feme a the fire and with office territory along grand along a great teer as

terri marge

STEER FOR A PRINCE OF ** 2 4 5 gr ga+2 - ++ 52'q # 5

a 13-44 to 64 5-44 the factor grows a ferral growing to make the contract of the state of the to the fire general is serviced. The effects of the end of the end

होती है-(१) परंपरा का महु नयी विधामों की प्रतीष्ठा। इन युग में प्रायः ^{हा} प्रवनित साहिरय दौतियों पर विद्वानों ने हेर चनाई-टीका, काव्य, इतिहास, नीति, धर्म, र गवास्थान, तथा मनुबाद मोर गुन्दर रूप^र गये। राजस्थान प्रान्त के विभिन्न राग्वों के री माने २ क्षेत्र में सीमित रहतर भी नागत कारा पर निगा रहे। जयपुर इनकी प्रमुख बीडा-गर रही है, मन्य राज्यों (ताकानीत रजनामें) है। प्रायः यह शूंगता बनी रही है, उगरामं परिषय प्रस्तुत है।

सन् १००० से १६२० ई० के सम्बन्ध हरी में गराई माधीनिहती सामानीत रहे। वे र ने नेपक व नंगा और नोगा के अक थै। इं राज्यकात में जहां एक मोर गेंट मध्यी गर्म करा दारिक, पंक कुरमामास्त्री तथा दुर्गावनार विवेधी नितरर "गूर्वर्वतियो का शीराम" तिमा, श मते ते पञ्चापनीतायः सारणी अधिकते ^(श्राप) बुलगरर.'' नाम से संस्पूर्ण भारत का द^हरनाय वि स स पंत्र पुर्वादणका द्वितेशों ने, जो कोपंत्रेन^{े क} पे, निर्मातमार प्रेप में 'साम माम' में वह रे प्रतिय सप्रतिय महिल शहतून कारत के सर्वा tifra (borges) fereft, fang eba 121 क्याचीका ब्रोपपेदार हुया । इ.स. १ अवर्गी साज विदेश दुर्वाणवाद के सूक शक्तांबर साज विशे face and the County designing and minacimat giere mit wie beiter # Straten grand gar to begin t के लाक पर के हा रहत है B F B B F F W B SELECTIVE HE SE BEE SELECTIVE

रमती हैं। पंज ममुमूनन रचित-वेरो का विज्ञान भाषा, वैदिक कोश तथा इन्हिवबर काम्य मादि काको उपादेश एवं मुक्त किता हैं। वैद्यों के माई पंज हिरालस्थमत्री ने भी 'वस्तनपर्यकृरोत्तोय-नोल्लाय' प्रत्य किया। इनके साथ हो पंज शिवदत राभीच तथा भी वेयलरामत्री ज्योतियों के नाम भी उल्लेखनीय हैं।

साहित्य-लेखन की इस परंपरा मे दी व्यक्तियो के नाम विशेषतः उल्लेखनीय हैं जिनकी वरदा लेखनी कई दशकों की घयक साधना के बाद माज भी प्रनवरत गति से सुजन-पथ पर धप्रवर है, बान की दुईम्य दक्ति भी जिसे कृठित नहीं कर पाई है। वे महामना मुद्रती रचनाकार है-महामहोपा-ध्याय पंठ निरंधर दार्मा चत्र्वेदी तथा भट्ट श्री मधुरानाथ शास्त्री। पट्टिंगस्पर शर्मी मात्र भी राजस्थान के बॉरप्ठ साहित्यकारी में मधगण्य है भौर भारतीय दर्शन तथा संस्कृति के साथ २ वंदिक बाइमय के ब्रहितीय विद्वान हैं। बापके द्वारा निःखन 'प्रमेय-पारिजात', 'विषवा धर्म मीमाता' झाहि धनेक ग्रंथ विद्वासमाज के लिए वरदान तुल्य है। भट्ट मधुरानाय शास्त्री के नाम के साय छोटे-उड़े लगभग २० ग्रंथो की सूची ब्रानुस्यूत है, जिनमें में प्रत्येक उनवी पारगामी विद्वता वा परिवादक है। संस्कृत भाषा पर भट्टत्री का पूर्ण स्थिकार है भौर सरल सुबोध भाषा में प्रसादपूर्ण एवं सनित रहता करने में वे सिद्धहरत है। सस्कृत के प्राचीन छंदों हे प्रतिरिक्त उन्होने वजभाषा वे दोहा शीराई मादि प्राय: सभी सुद्दी पर, उर्दू भाषा के बजनो पर धौर लोक सैनी के शावनी मादि की सैनीपर गंतकृत में विषय साहित्य का सुकत किया है। रमगंगाधर, गाया समग्रती तथा कारम्बरी की विक्रतापूर्ण टांबामी के मतिरित साहित्य-बेंभर,

जयपुर सेमन, गोविद सेमन तथा भारत थेमर जे बियुद्ध माहिरिक नाध्यों के भाग जन्मदाता है। मा दिविद्वाम महिनी को एक पुरांतरकारी साहिरय सहार के पर में मामानित करेगा। संस्तृत-गाहिरय भज्ञार को श्रीसृद्धि में भाषका योगदान समूद्ध से धारके सुवोध्य पुत्र श्री नवानाय शास्त्रों, जो स्वा एक समर्थ सस्द्र न बित हैं, भट्टनो की देग परंतर को माज्ञा एकी, जो स्वा

दनके प्रतिसिक्त पण्डित मोतीलाव साहरं वेदिक साहित्य के प्यूर्व विदान में 1 मोता आप्यवाद के हम में तत्वा पत्रपत्र बाह्मण ने मायवाद के हम में उनदी प्रतिद्व है। उनदे ज्येष्ठ भाता पँ० दमानाव धारत्रों के युवा में स्मित्रत तथा नाम्यासम्बता का मुन्दर संगम मिनदा है। स्तृति पारितान, रामनीमा, प्रारेग्योग-प्रतिबद्द भाष्य धारि प्रतिद्व दंग है। श्रीहरि पारत्रों में प्रतिक्त सामने स्पायत है। अवपुर के संग्युत नामन से भी चंदमेगर दिश्लो, मामाय दिनेसे पारित मनेक दिन्नात्रान देशने, मामाय दिनेसे पारित मनेक दिन्नात्रान से भीवृद्धि से हैं। वैनावार्यों से मृति नित दिनय मी, पंठ मुन-लान में तथा प० चैनमुनदान में के नाम दिनोत्र स्मार्यों से हिंगे प्रतिक्ता में के नाम दिनोत्र

बोधार से भी दिवहेरताव देक ने ऐतिहासिक पंच "बार्च दिखानम्" दिला । यं- निग्यानस्य प्रावधी निर्मित्र "पावस्यिताच्या रामना" रामविद्या रामको निर्मित्र "पावस्यिताच्या रामना" रामविद्या राम निर्मित्र स्था सुरुष्ट रोग महित्र प्रावधी करी स्था वर्षा भावसा में मुन्तर सारित्य वा सर्वत हो रहा है। बोधारे से यं- विद्यास्य रामको में "इरियाना-मुण्य" जाकर सामित्य सामन दुस्य रूप्य दिला। उन्हों नेमानी स्थानस्य सामन दुस्य रूप्य दिला।

१. विशेष के निए द्रष्ट्य-भागास्वर रिमर्व इस्टीट्य ट्रव शाहूँ न रिमर्व इस्टीट्य ट्रवी रिपोर्ट स



अपभ्र'श साहित्य ऋौर उसकी मुख्य प्रवृत्तियाँ

लेखक—डॉ॰ हरीश, रुम. रु थी. क्लि, हिन्दी विभाग, महाराजा कार्त्रज, जयपुर

त्रियं साहित्य का परिवार दश विद्याल है। इस साहित्य का बहुत दश ग्रंग ग्रंभी जैन-मजैन भंडारों में सुरक्षित है। पद जैन भडारो की पर्याप्त द्योध हो रही है। मतः इस साहित्य की समृद्धि में उत्तरोत्तर वृद्धि होती जा रही है, नहीं तो शोध के सभाव में एक बार प्रसिद्ध अर्मन विद्वात पिशल को सहनापडाधाकि "झपछंदान। विपूल माहित्य स्त्रो गमा है।" वास्तव मे उस समय सम्यक् शोध की कठिनाइया चरम सीमा पर थी। साथ ही जैनी लोग भी घपने भंडारो को दिखाना घपना ग्रपमान समभते थे । सौभाग्यवदा धव ऐसी बात नही है । राजस्थान, गुजरात, दिल्ली, जयपुर, नागौर, बीवानेर तथा जैसलमेर के भड़ारों ने अपभ्रंदा की धनेवो कृतिया मिली भौर मिलती जा रही हैं। डा० हीरालान जैन ने बारंजा के जैन भंडार मे उपलब्ध धनेक धृतियों की मूचना देकर तथा उनमे से कुछ का सम्पादन करके भपभ्रांत भाषा मे विरचित साहित्य मी सम्पन्नता मी निभात निद्ध कर दिया है। प्रपन्नं या के इस धनापारण साहित्य की रक्षा करने का साराधीय जैन अंडोरी को है।

सत्त्रभी भाषा ने साहित्य ना उद्भव सप्ति विद्वानों ने कोची-नीवती स्वाम्यों में मैंन १००० तक निर्मातित विद्या है परणु वागतव में इस माहित्य ना सिहारजोचन स्वासे पर महागर हो जाता है कि उद्भवकार में उपनाय स्वताय महित्य नहीं होती। सन्दर्भाय साहित्य ने परियोजन ने तियु इसने इतिहास नो दो नानी में विस्ता विद्या जा तकता है। १. प्रारंभिक यात्र (सन् ५०० ईट से ६०० ई० तक)

२. स्वर्णनाल (सन् ८०० ई० से=१५०० ई० सक्)।

सदार्थाप, १ वी ने द वी शतान्दी का सरम्रं स गाहित्व ठीक ने उपन्यम नही हो जाया है। १ वन्हा तार्थर वह नही है कि इन कान में साहित्य रखना हुई हो नहीं घषितु इनके निय् एक जोवट पूर्ण शोध वी सरोशा है। ऐसी स्थिति में द वों ने १५ थी शतान्दी का उपनय्य साहित्य ही हगारे सम्मदन का स्थाप वन जाती है। यो तो सम्मद्रेण का स्थाप सारे देस में निला गया, वरन्तु विशेष का ने दशा-स्वन्त राजस्यान, पुजरान, माग्य भीर महाराष्ट्र में हो स्थिक हुण। इन माहित्य वा विभावन विभिन्न बदेशों की हरिंद्र में एक इर इन प्रकार दिया जा सन्तर है

- (१) राजस्थान, मानदा घोर गुजरात में दिर-चित्र मनध्येग माहित्य ।
 - (२) महाराष्ट्र में विरोचित भागभांश माहित्य ।
- (१) मगप तथा निधिता में विरक्षित साहित्य । (४) उनरीं बदेगों में विरक्षित झपस्रांत साहित्य ।

हम माने प्राप्त नेत्र में राज्यमान के साम्रांध साहित्य पर हों प्रकार हार्येन हैं भी तो स्त्रभंत साहित्य हैंद भी प्रत्यति तह रहा जाता हता है, पत्तु राज्यसन म हिर्देश्य प्रत्यानिक साम्रांध के स्वर्णकात भी नम्बन्ति है। स्वर्णकोत है कर् वी गतानी तर राजन्यान में मनश्री सी क्षिति रही इसी पर प्रमुख रूप से महा विचार

त का पटा है। १४ मी धनाब्दा सर राजस्थान न माहित्व रचना की हुप्टि से विद्यान प्रदेश

ाटे। घन: इस कात में रहरता तथा मात्रत इन्द्रप्र प्रतेश प्रदेश है गियों का साहित्व भी प्रा

ता है। प्रस्तानिय में मधियतर मत्रन्न वा के उन्हों वेदों के गणिय की पर्याहै जो इन अदेशों से

कर मार्टिय सुरुत करी की । इस समस्त

र्तराज को परिवर्ग स्वयं से से विस्तित साहित्व या जा गरवा है ।

के प्रबंध वाच्यों ने राम भीर कृष्ण के श्रीत ^{है} नाम्य ना माधार बना कर प्रबंध चार्च (रिवार) महाभारत और पुराल इन विवयों के भारत हैं रहें। ठीत इसी प्रवार भाभाया ने प्राहत करी गमन किया। इन प्रयंधी ने मनीतित क्यादेश भी नौतिर स्प में बाता है। ये ^{जन स्पार्}

व्यपभ्रांश के प्रयंध तथा खरड कान्ये 🤄

चर्च भारत स्ता

राजस्यात के अपभा रा वाम्यों में अने इत

तया संद बाज्य विद्यमान हैं। मंस्ट्रा होर हर्र

गमौटी मे देखने पर, इनमें नायक, वर्लन, लक्ष्य, तथा वैविध्य, रम मीर मन्य सभी बातो ना सम्यक निर्वाह मिलता है परस्तु थोडे-थोडे परिवर्तन के साय । यो मल मे इनके वर्णन क्रम, काव्य पद्धांतयो घटना विन्यास के झाधारभूत तत्वो मे पर्याप्त समानता है, परन्तु साहित्य की इस संक्रांतिकातीन स्थिति ने महाकाश्य को लडखडादिया। उसमे भीवनोत्पन्न सस्कृत की मुखना मे कम हो गया। संस्कृत वी ह्यामोन्मुख प्रकृति का प्रभाव पडे बिना नही रह सका भीर यही कारण है कि वही कथा रूढिया, बही काव्य रूढिया, वर्णन क्रम. परंपरित घटनाक्रम भीर क्या कातारतम्य वही बना रहा। फिर भी उन सबके भतिरिक्त इनमे धार्मिक्ता, प्रचार सयाजन समाज में सम्पर्क होते के कारए धरभ्र'दा के प्रवधों में लोक जीवन का मंहपर्स भौत्दर्य, भाष्यात्मिवता, कथात्मकता-कवित, सौन्दर्य प्रवाह सरलता और शृंखनावडता मादि गुए। विद्यमान है। धपभ्र स साहित्य पर योध करने वाले विद्वानों ने यद्यपि सपभ्रंश नाथ्यों की प्रबंधारमकता भीर साहित्यिक सौन्दर्यको सस्टतके काव्यो की धपेक्षादर्शन वह दरसदेह भी हिन्द से देखा है, परन्तु वास्तव में बात ऐसी नहीं है। इस साहित्य का सन्यन प्रभी तक ठीक से हो नही पाया है। सरकृत की परम्परायें तो उनमें धवस्य मुरक्षित है

मे ऐसे मृत्दर महाकाव्यो, खडकाव्यो, रोमोटिक-काञ्यों तथा मुस्तक काव्य ग्रंथो का मित्रनाहमारे प्राचीन साहित्व की स्रपूर्व सम्बद्धता का द्योतक है। वर्गान परम्परा काव्यात्मकता, छन्द, भनंकार, रस विसीभी हेप्टिमे ये काव्य कमजोर नहीं पडते। हाँ सस्कृत काव्यो में तुचना करने पर इनमें मपेशा-कृत दोप-दर्शन का भारोप भने ही लगाया जाता रहाहो। क्याग्रीर चरित ग्रंथो में स्वयंभूका पउम चरिउ, हरिवंदा पुरागा, महापुरागा । धनपान की भहिसयल कहा । ^२ हेमचंद्र रूत त्रियध्ठि शताका चरित, धवल दवि काहरियंश पुराख⁸ । मर्जन वृतियों में पृथ्वीरात रासों के मत्रभंदा के भंदा, रयपूके पद्दम या बन्दभद्र पुराण् ¥, यश-कोलिका पाण्डवपुरासा, हरिवश पुरासा ^{प्र}तथा श्रुतकोनि का हरिवंश पुराला, पुरादत का जयकुमार चरित्र, जनहर चरिउ , धीर विशे वा जंबूरवामी परिउ?, नयनदी वा सुदम्मा चरित्र ^६, बनकामर का करकंड वरित, सागरदमः वा जम्यू स्वामी परित है, प्राप्तत के मुत्राहताह धरिउ, बयभ्रांग के ब्रांश, देवचड के सननारमन "पीर वर्धमान मूरिका वर्धमान चरित, घाट्ड बाँद का पत्रमनिरि चरित्र), थीधर बिव वा पासनाह चरित्र, सुहुमान चरित्र, तया मुनावना परित १०, वृति निह रविन प्रदुशनु

परन्तु द वी से १३ वी शनाब्दी के इस संक्रांति कान

रे. देशिल प्रयभं साहित्य - टा. हरियंस कोटर, पू. ५३-४४ र जो. घी. एम. मंग्रदक धी हो. डी. दक्ता घोर गुली तथा हिन्दी के,विकास में घरभं स वा मोग पूर २३८ हा. तामवर्सान्ह ।

ही. दनात घोर गुरा तथा हिन्दी कृतिकास मध्यभं रा वा योग १० २२६. हा. नामवर्रामह । ३. दिगम्बर जैन मंदिर यहा तरह रायियों वा मंदार-जयपुर में सुरक्षित तथा इनाहाथाद युनिवर्मिटी स्टडीज साग है, गन् (६२४ में सो॰ होरानान देन वा निर्देशन ।

४. माभेर शास्त्र भण्डार जगपूर। ४. माभेश महित्य हा० बोद्दर, पूछ ११८-१२३

६. बही, पुरत १६०-१६६ ७. माभेर शास्त्र भण्डार-वेत सीच मंग्यान, उद्युष्ट ।

त. देशिये—प्रयक्ष रा प्रकार पुष्ठ २० देवेस्वृतार—प्रकारक वर्णी सन्यसाता, कार्णा । १. घरभ्रं रा प्रकार पृष्ठ २६-३० देवेस्वृतार एम ए. प्रकार वर्णी धन्यसाता, वार्णा ।

रिः सर्वेत्र सं तरास हुन । स्व निर्माण राज्य कार्यात । हासा । १०. वही ११. व्ययस्य समाहित्य, एटउ २८७-२०६ हा० बोद्धरः १२. वही, व्यविर भण्डारः जनपुरः

ति । सम्मदेव इत गोमिन्ताह चरिड, बाहुबली रेड, तथा यदाचीति का चडण्यहं चरिड । तथा गूना गुनोग चरिल, सम्मति नाथ चरिल तथा । यो गानाथी संस्थानतीदान का मुनांत सेखा रोग घोर भी मनेक महस्तात राजाये, एक को उत्तर मामधा के गाहित्य की गोस उत्तराय हुई है घोर जो महस्ता की मीड

स्याग्नदना की प्रशीत है। प्राप्त सेता की परस

रंड (प्रजूम्न परित) हरिभद्र विरवित मनश्कुमार

धनपाल की धनफ्रांश हेमचंद्र की घरभांत के हुए। है। अधार ये स्वयंभू के बाद तथा हेनचंद्र केहा हुए। धनपाल ने स्वयं की---

'सरमङ्बहुलद्ध सहावरेगा''' (सरस्वती गाँउ' महा है। धनवान का प्रसिद्ध प्रेष है ''अधिनवा कर'

'भिनियसत वहा' एक ब्यानारी पुत्र श्रीवर्ग की क्या है। इसको सीत भागों में बोटा जाकर' है। पहले भाग में उनकी सम्पत्ति का कांही .) नखशिखः— (१) ध्रप्यत दन दीहर पार्थीह,

तहमिल बन वाहर जाना, नहमिल बिरल करेंबिय द्यावींहै। जंबोस्य गुज्मेंतर पासई, मुल्लियसई लिभील परिवासई।

मुश्चित्रसई शिक्षीस परिवासई । पोतंतर प्रविभन्न पयासई, तं पिट्सित पिहिय परिहामई । विसन्न नियंव बिबु सोहिल्लव,

रेहइ झडाइड कडिल्नउ । रोमाविल बलि भगि विहाबइ,

रोमात्रील बाल भाग विहाय है। विय पिपीलि रिछोलिय नावड ।

रमणादाम निबंधगु सोहइ, क्रिकिण रणमम्मतु मणु सोहइ।

समवत्त्र वृद्धियमु विमु मज्मदः, मज्जदः करम मुद्दिठीह गिज्मदः । तिवलि तरंगदः नाहीम्मंडल्, मं भावता दृद्ध महाजसु ।

पीरगुन्नय निदिउइं यस्पद्रहरू. निश्मि दद्दं हारावलि यहुदं ।

मानद माला बोमल-—बाहउ, स्थगु-वृष्टय-वेऊर सरगहउ ै।

(विस्तार भय से हिन्दी सक्ष्तार्थ नहीं दिया जा सका)

(३) विरोधाभास छलंबार :—
 प्रसिर्व तिरिवत्त सदल वरंग वरगणावि,
 गृह्वि सविवार रजण मोहिनरङ्गावि ३।

धनहोन (मिनिरि) होते हुए भी वह श्रीमती (सिरिवस) थी। श्रीक मधी वाली न होते हुए भी वह सक्तन वराग (वर्रागना) प्रत्मेशपुरत प्रयो वाली थी। मुखा (पूर्ष) होते हुए भी विचारवान थी। निरंजन होने पर भी वह (रंजण सीह) प्रवाद प्रजनरहित माली वाली पत्यस्त सीहक लमती थी।

- (४) भाषा में सुभाषितों स्त्रीर लोकोवितयों की भरमार
- (१) कि घिउ हो ६ विरोलिए पाणिय (क्या पानी वामयन वरने से घो हो सक्ताहै)?
- (२) मएउन्टियं होति जिम दुनसर् सहता परिगावित तिह सोनसर (जैसे स्वेच्या ने दुःस माने हैं बैंगे ही सहसा गुज भी मा जाते हैं)।
- (३) महो घट हो जोन्ह कि मदन्तजर दूरि हुम'' (क्वा दूरी होने पर भी घंडमा की ज्योरका मैनी को जा मकती है) ?

दमी प्रवार के मनेक प्रवाहपूर्ण काश्यासक क्यनो का उत्तेख कियाजा सकता है। यह कृति निर्वेद (गांत रम) में समान कृष्टि है।

धनपाल द्वितीय-

ये ११ वी सनावी के बढि ये और माउवा से हुए। सहाराज भोज के सभावदित ये। धनवान संस्कृत, आहत तथा धार्मांस के प्रवाह पंडित ये।

बन्होंने घरघारा में प्रतिद्व पंच 'तितृत संबदी' निला। घनराच ने 'महादीर उन्ताह' है वह गीत

१. वहो प्रत्य, पू० ३२-३३ २ वहो, (११, ६.१२)

देखिय-पुरुषोत्तमदाग टच्टन मिननदन याय, पृष्ट ४०६-४११, नेयह का "पारिकालीत हिन्दो जैन माहित्य को प्राचीनतम इति, कत्यपुरीय महाबीर उत्तराष्ट्रपीर उत्तरी मात्रा गीर्थक नेया," तत् १६६०।

री राजस्यान में मांचीर सत्यपुर में निया। यह त्सर भाग्नंश का है परन्तु भाग्नंश की प्रशहात्म-त्वा इसमें देखी जा सकती है। धनपान पर स्वर्तन

हप में घन्य प्रकाश काला जायशा **।**

रयमः ---

राज्यकात के ब्राफ्ट इति स्वयं ने बनेक बाध्यकृतियों का राजन विचा । इस्तोने २६६ बहर्गरी

भे पद्माराता शिला है। द्वांस में राम क्या है, जो रुपियों में क्लिका है। जयपुर के बामेर भंडार में

इन बाज्यों के मतिस्तित मनेक मेर्नान राजस्यान के धपभांत साहित्य में जानंग्यही जिनमें बुद्ध प्रमुख इस प्रकार हैं:---

१. नभनंदी-मुदंसण चरित्र सं ॰ ११०० (व नाम्य) सनलविधि निधाननाम्य सं० १२०० l

२. सिंह पञ्चणा परित (प्रवास वितास **१२००** लगभग (संड काम्म)

३. हरिमद सनत्तुमार चरित्र गं० १३१६

४. नवमदेव शोमिगाह परितः ग्रं (४¹²⁾

जाहे कंठ रेहत्तव शिज्जिय, संत्र समुद्दे युड्ड श्लंबज्जिय। जाहे घहरराएं विद्वुभगुणु,

जित्तउ जेए।धरद कठिए।तसु । जाहे देसए। कंतिए जियिए।ध्यत, विकिट से प्रस्ट सताहल ।

सिप्पिहें ते परंदु मुत्ताहल । जाहे सास सुरहि मराउ पात्रइ,

आह् सास सुराह मराउ पात्र है. पत्राणु तेरा सन्ति विरुधावड ।

जाहे विमल मृह इ.द सयामए, गियवउग्ग खप्पर व महि भासद्र । (सदमग्र चरिउ पे)

कांति से विभिन्न होकर निर्मन मुक्ता सीवियों मे

छिर गये। जिसके मुखचंद्र के सामने ,चन्द्रमा एक सप्परकी भांति लगता है।)

सकल विधिनिधान काव्य

भाषा के अनुरणन और विविध वाद्यों की ध्वनिया देखिए---

इस कट बियट कियटर घट मुख
मुद्द र्थंद नक्षेत्र नहीं नहीं प्रमु
मुद्दे र्थंद नक्षेत्र नहीं नहीं प्रमु
मुद्दे र्थंद नक्षेत्र नहीं स्वीद इस्ताम
हुए हुए मट निर्देश किय किय प्रसाम
हुए हुए मुद्दुन मुद्दे किय किय
धरि धरि धरि रि धरि सूब सूब
सन्दु तम् नमु तम् विचे देते दरे दरे राहम्म विचिधितिस्ति विदि धरि हिरि साम्

र्भ भ भिन्ति विटिभिन्ति किटि भावहि टई टई टई टूर ट्रोग दुने दुने क्वाहि भि भि भि भी या संबोगहि र ऐने सदर वेषन मात्र कवि का सब्द स्थानकार

प्रदर्शित करने हैं। २. पण्डुम्प करित (प्रवृज्य करित ३) (मिह)

"मय मंद्र करिरिए जहि वेए क'हू, सर रेंद्र सरोरहू मनि मंसंद्र।

 नयनंदी राजस्थान (मानवा) के पारा नगर निवासी कवि हैं तथा संदग्छ परिट प्रयक्षता की प्रवक्तीयत होते हैं। दसकी तीन हस्तीवितत प्रतिया धामेर अग्झर में श्री कस्तूरवरद कामनीवाल की संरक्षता में विद्यमात है। मह काम्य रश्मीपयो का है तथा हमता रचनावाल कर १९०० है।

 यह भी धप्रवाशित वास्य है। कृति वी प्रति धामेर भव्हार में मुरक्षित है। देखि पन्ता ३४, १२-१३

३ यह काव्य प्रवासित है। १३ लेथियों में पूरा हुमा है। प्रतिया मानेर साम्त्र प्रकार 'जयपुर में हैं। देखिये प्रति संख्या (पृष्ठ १६१-१६२)। दनेते सिंद प्रीर निर्देशी नाम मिनते हैं। रचनावान १२ वी यात्रो वा प्रवीद है।



जाहे बंठ रेहसम ग्रिजिय, संग्र समृद्दे बुडडु एलिज्जिया। महरराएं विद्वुभयुगु,

त्रितंत्र जेलधरद्द कठिएनिल् । आहे दंसए। कंतिए जियशिष्मन,

मिष्पिहें ते पद्दु मुताहल । जाहे साम सुरहि मराउ पावड,

प्रत्मु तेम उब्बिं विष्धावद I जाहे बिमल मृह इ.द. समामए.

शिवउण रूपरंव महि भागदा

(गदमण परिज 1)

शृंखता की सुब्धि नहीं करता, तो उसके मनोहारी भौर गुर स्तनों के भार ने किंट प्रदेश धवस्य ही भग्न होता। जिसकी सुन्दर भुजायों को देख कर मुख्दर हाथ रूपी पत्नवो नी. मसोक कृत भी इन्छा

ं (यदि बद्धा उसकी रोमावली रूपी लोहे की

वरता है। जिसके स्दर माधुर्यको सुन वर कोकिया स्यामा हो गई। जिसने ४ठ की रेखामों ने शंस की सञ्जित कर समुद्र में दूदने को बाष्य कर दिया। जिसके होटी के रिलिस राग से पराजित होकर

विद्रम कठोर हो गया। जिसके दाटी की निर्मल वानि से विजित होक्द निर्मन मृत्रा सीरियो मे १. नयनेदो राजस्थान (मालवा) के घारा नगर निवासी कृति है तथा संदर्भण परिः

मपभेश की मप्रकाशित हति है। इसकी तीन हस्तितिसन प्रतिया मामेर भण्डार मे श्री वस्त्ररचन्द्र वागलीवाल को मंरक्षता में विद्यमान है । यह बाध्य १२ मंधियों का है तया इसका रचनाकान संव ११०० है। २. यह भी मप्रवाशित काय्य है। कृति की प्रति सामेर मण्डार में मुरक्षित है। देखि पन्ना ३५, १२-१३

रै यह काम्य सप्रकाशित है। १४ संघियों में पूरा हुमा है। प्रतिया सामेर सामत स्परार जयपुर में है। देशिये प्रति संत्या (पृष्ठ १३१-१३८)। इसने मिळ और निर्देशनी नाम मिलते हैं। रचनाबाल १२ दी हती का पूर्वाई है।

सप्दकी भांति लगता है।) सकल विधितिधान काइय

छिए गये। जिसके मूलचंद्र के सामने चन्द्रमा ए

भाषा के अनुरसान भीर विविध वाद्यो व ध्वनिया देखिए--

इए। कट ब्रियट कियटर घट गुप्र सुसुद भइ नावे बलुभि सि षु ग्डिइ भ्राभें धोग्दि द्वधाग्दि दुस्ट मट विटि क्रिय क्रिय क्रियात हष हप्पु सुनुगु नु क्रिय क्रिय थरि धरि धरि दि स्थान स

तपुतम् तम् तम् देते गरे मह सहस्मृ विरिरिविरिरि विरि यरि विरि सप्ति भं भ भिल्लि विटि भिल्लि किटि भारति टहे टहे टहे टहे हम हमे हमे समहि

भि भि भि वा वासबोगढि ^३

ऐने सध्य केवल मात्र कविका सध्य चमन्द्रा प्रदर्शित करते हैं। २ पग्डम्स वरित्र (प्रवृत्त परितः ३) (निह "सय संयुक्ति शिक्ष वेट् कंड,

बर देइ सरोस्ट मनि मंगेट्रा



जाहे कंठ रेहसय शिव्जिय, संस्र समुद्दे बुड्ड श्वंतिन्जिय।

.बाहे घहरराएं विद्वुभगुगु, जित्तव जेएाधरक्ष कठिएात्तलु ।

जाहे दंसए। कंतिए जियिएम्मल, मिथ्पिहें ते पद्द मृताहत ।

जाहे साम मुर्राह मराउ पादद.

जाह साम मुग्रह मएाउ पाद६. ·' पदला तेला चिल्ले विरुधाद६ I

जाहे विमल मृह इ.द. सथासए, ... लिवउल सप्परंत सहि भामद्रा

(सदमण परिउ 1)

 छिप गये। जिसके मुख्यंद्र के सामने,पन्द्रमाएक खप्परकी भौति समताहै।)

सकल विधिनिधान काव्य

भाषा के अनुरुएन और विविध वाद्यों की ध्वनिया देखिए---

दुस्ट मट विटि क्यि क्यि क्यि क्यात्र हम हम्पु सुनुतु सुक्यि क्यि धरिषरिषरिरि परि सुम नृप

सम् तम् तम् तम् देने यदे संदयसम्

विधिरविधिर विरि यरि विरि सप्ति भंभः भिन्नि विधि भिन्नि विधि भाषी द्वं द्वं द्वं दुवं दुव दुवे दुवे वर्षाद्वे भिन्नि भिन्नि वी त्री संबोगींद्वे वै

ऐसे सहद देशन मात विष का सहद कमनदार प्रतीसन करते हैं। २. पुण्डुच्छा वरिष्ठ (प्रणुक्त वरित्र) (मिन्न) "स्यस संदु कारिशा व्यक्ति वेश के हुं, कर देह सरोस्ट सनि मर्सदे।

१. नवर्तदी राजस्थान (मालवा) के पारा नगर निवासी बाँव हैं तथा संदर्गण परिज्ञ परभारों भी प्रवासित जृति है। दसवी तीन हस्तिसित ज्ञतिया पानेर मन्दार में भी वस्तूरचन्द वानारीवाल को संरक्षता में विद्यमान है। यह बाध्य १२ मीपयों वा है तथा रनवा रचतावाल ने० ११०० है।

२. यह भी मंत्रशासित कार्य है। कृति को प्रति मामेर मण्डार में मुस्तित है। देशिये पत्ता १५, १२-११

३ यह बाध्य प्रवत्तातित है। १४ विध्यों में पूरा हुमा है। प्रतिया मामिर भार प्रयुक्त में है। देतिये प्रति नेर्रया (यह १४१-१३०)। प्रमते निक्र मीर्रा मिलते हैं। रचनावात १५ वी शतो का पुर्वाई है।

जीत करते बाद दिलाह महीत. पम्याः सन्द्रमः पात्रभीरः। पट्ट गण, सरेण, विस्ता वराण,

बर हरती चीरो घलपण हक्षा ह

रंग हिल्ला संपत्ति हेन्सीय, गर्त दिन्दरीतृतित वीतरीय ।

मामान्याः रुत्तं गतः हराते. रिय बिरट बिर्गट बड़ बदरगाउ,

र्कत रिम्बर के इताकता ।

परवार समाप् अति श्वितशासी।

बनवरण जारिक समारी की मीतता ग्रारि सब कार्यक

स्वाधारी में वमशी दवतीय स्विति का कार्य करण

होता है। बर्ला बचा ही सोमांबर है। मोरन

मत्त्वा नाही की पीक्षा घटनी में बगर तह की वर्ष है) युक्त प्रद्राला में बारी-दिवल बर्ला की ना

< संधिरपाट मरिपुर (नेमनाम म^{रित})

मासिका हुआ है।

(सध्यम देव विस्थित)

होता, यु यु बर हार तोहता, बाली की न वर्ग

हरम को प्रशाहित करना, रोगा सपक्षा, मुन्दिर

सक समृद्धि का मनुभान लगाया जा सकता है। इन हे स्वरोधों का कलाय्ये पत्र ही देंग का है। इनये महापुराएं, दुराएं, स्वर्पक काव्य, क्षक काव्य, काव्य,

राजस्थान के स्वपंधे रा काटयों का कलायत्त राजस्थान के प्रपक्ष ता के प्रवस्य नाय्यों वा कलाया हिंद, धर्मवार, हारद-च्यन भाषा धादि सभी क्षों में पुष्ट है। ये वित बता के प्रति तस्वा प्रेय करने थे। यहाँ तक कि दर अंग विश्वों के दतना स्थिक प्रेम या कि समेश सर्जन विश्वों के प्रणों को भी दन विश्वों ने स्वयंने मेंद्रारों में मुरक्षित दस्ता है। बौद प्रवाद, सहन्त द्वान वा गरेश रस्ता है। बौद प्रवाद, सर्वन द्वान का गरेश रस्ता है। बौद प्रवाद तम प्रण्य दम बान के अस्तव उदाहरण है।

सारत्यान की सपक्ष देश काव्य पद्धतियों में दोहा-बीचार्य पद्धति की प्राचान्य मिना है। धपक्ष से काव्यों में तीडक, दोधक, प्रतिन्त, होना, दर्दुगिया, पद-दिया, सान, पुरस्ती, वहन, पत्ता, दृष्टा, साग्तापुन, पारामुनक, पश्मिटका, व्यवस्था पुत्रमायान प्रादि सनेत प्राप्त मिनते हैं। स्ती नही, प्रत्यों चौर वर्णन की काव्य पद्धतियों ने हिन्दी साहित्य के प्राप्तिक काव्य

रभी प्रचार बना पत्त से स्वासाबिक धर्मवारी, यह बचन की प्रदूषामात्मिकता, नादान्मकता तथा व्यन्तात्वता का प्रदूष्णन हटच्या है। वेजियों ने सी नही, फनेक धरेन कवियों ने भी राजस्थान नवा प्रकार के बहुद प्रदेश में से कम्प एकन की है। मत इनका क्लापश भावपक्ष में निर्वत नहीं है। चंद की चारण दौली में मपभ्रंत के मंत्रों से इस भाषा की क्षमता का परिचय मिनता है।

राजस्थानी खपश्च श काव्यों में काव्य रूप भादिकालीत हिन्दी जैन साहित्य मे जिस प्रकार पद्धतियों भीर काव्य रूपों में वैविध्य मिलता है ठीक उसी प्रकार राजस्थान के शपर्श्वा काव्यों में भी नाध्य रूपों ना र्वविषय मिल जाता है। चरित, राम, धान्यान, चर्चरी, वहा, संधि, लोब-क्या-काव्य बादि बनेक काव्य रूप मिनते हैं। सपभ्र श के इन काव्य रूपो का मूल इन पुरानी हिन्दी के काव्य-रूपो में हब्टि-गोसर होता है। यद्यदि इसमें से अनेक काव्य रूप द्मपभ्रं स में नहीं मिलते परन्तु उनमे प्रकारान्तर से इनका सम्बन्ध स्पप्ट हो जाता है । काम्य पद्धतियो में भी ब्राप्त दो दो दन वर्णन प्रदृतियों का विज्ञाल पुरानी हिन्दी को रचनामी के मूत में हैं। क्यक-काव्य, संधिकाध्य तथा चरित-काव्यो मे ये काव्य रूप राष्ट्र रूप्टच्य हैं। मुत्रतक काय्यों में नीति. स्तोत्र, स्तवन, दोहा, सम्भाग पादि धनेश नाध्य रूप मिल जाने हैं। इस तरह वैविष्य मनक बाध्य कप धपभ्रदा की इत कृतियों में देखने को मिलते हैं। काम्य रूपो का यह वैशिष्टय सपर्भाश की सपनी

राजन्यान के चयध हा की छिनेशामिकता राजन्यान की ब्याधं स्वरतार्ग बानी छीन-हानिकता का प्रतिसाद औ करती है। इन रक्ताधी के डारा ज्वानीन काला, नवाज बीर नव्यति है। बारी ज्यानी का एनिएनिक बार्ग बारा जा नवाजना है। बार्धां की का कीरण, क्यां हिसान, होंग

विगेषता है। पराती हिन्दी में जो मैंनको प्रकार के

बाध्य सप मिलते हैं उनमें बैदिया प्रान्त करते. की

प्रेरणा बराधारा के इस्ती काध्य करों ने दी है।

सहर-देश

कीर कीटार्च की मार्चकता कीर मोश-जीवन मे स्परित हो रही थी । समान विजय तर्क जात के राजा रस्पर्व तथा संस्कृत की सभी परेपराधों का

बरने का बरगह प्राप्त बर गहर । बद्धीर बर्गान की

में परम्पान कुम्बन के लिदिन भी परन्त विन्तर्गकर

पुरक्ष, बदानी लंदा बाद लायाजिक करकेती है। सीचे

में मार्च क्यारित कर, ब्राय्य स गारित्य ने वर्णन की

दिशांत भारत हा की इन रचनायों से लिएता है। मानी प्राप्त पानी का क्षितान मान्यांच ने गरीति

को सोरंगर पाडित्य प्रदर्शन तथा भग साध शालंबारिक रेल्लाको के बीत था । मारल देवी रता । भारा हे दारवीय देवरा में बारंड नियम

का बाहार था। यस के मात्र, शब्द शक्तियों में का गारित देशी आपा से शहर गाउँ से उपन्यत

माजात थे। प्रकृति विकास, नाम परिवण्ड में सर् विकास से बोधित का । मारह कर्यात्री की

पाराप्ति व पार प्रतीत महिताही रण या। भारत

द्वार्च प्रीम मोहाबिक शोहर श्रीता(रह सी श्रामी में पे हैं

हा रही थी। शहरश्यार में अबरे बैधन की मंधी

हैं परन्तु यहां हम प्रमुख रूप से तीन कवियो के मुक्तक वाज्यो को सोद्धरण प्रस्तृत कर रहे हैं। ये कवि राजस्यान के धपश्चंदा भाषा के मुक्तक बाध्यवारों से प्रतिनिधि वहे जा सवते हैं। ये निम्नोबित है :---

१. जोइन्द्र-परमप्पयान् (परमाश्म प्रवादा)

२. मनिरामसिह--पाहड दोहा र

१. देवसेन सावय धम्म दोहा

इसके श्रतिरिक्त जिनदत्त के उपदेश रसायन रास (संट ११००-३२) हेमचंद्र के प्राप्टत व्यावरण (१२००) के अपभ्र श के दोहे, सोमप्रभाषार्थ का

बुमारपान प्रतिबोध (सं० ११६५) तथा मेरनुहु के प्रबन्ध वितामिण(सँ० १३६१) बादि के बरभ्र त बरो को भी इस प्रसंग में दिस्मत नहीं विया जा सबता। साय ही धपभ्रंदा के हरिपेशा के क्यापाब्य धन्म परिचला मं० १०४४ धोर राजस्थान में विरुचित भगभंदा की झनेक गच कृतियों पर भी धपेशित

रूप ने विस्तार में लिखा जा सबता है। जिस पर हम यथावनर धन्यत्र विचार करेंगे। यह सब सम्पत्ति रामस्यान में उत्पन्न कवियों की निधि है। यहा

उदत सीनो विवयो के बाब्य कौराज के बित्यय कुने हुए बद्धरण प्रस्तुत कर रहे है। ये ग्रथ मुक्तक

पोधी पत्रो, निन्दा शुन्यध्यान, योगभावना शादि हैं। २. देखिये पाहुट दोहा, सम्पादन-हा॰ हीरालाल जैन बार्जा मोराज मन १६३३ । मुनि

रामसिह राजस्यान के थे। राहुनजो इनहां समय सन् १००० ई० मानते है। इनरे कर्प विषय-जगनुष्य, निरंजन गाधना, धारमा, पायन्द्र सन्द्रन, गुर महिमा, बाह्याद्रम्बर निदा मादि है। शे॰ होरालान केन इनशे राजपूताने का मातते हैं। माद हो देलिके-दिखी

बाय्य घारा, थी राहत माहत्यायन-विनाव महम इनाहाबाद मन् १८८८

रचनाबार का समय श्री राहलजी ने १००० ई० माना है। ये हेमचन्द्र के पहने हुए थे। दनका जन्म स्थान राहुलजो ने राजस्थान माना है। ओइन्दु जैन मुनि थे। इनके दोता बन्यों के बर्ष्य विषय ज्ञान, समाधि, धलाव निरंजन, धारमा परम नस्व, निरंजन योग, पंच,

१. देखिये परमप्पयामु-योगिन्दु-डा० द्यादिनाय नेमिनाय उपाध्ये द्वारा मन्पादित मन् १६३०

(२) घण्णाजिति स्थुम जाहि जिय घण्णाजि गरम म मेवि

बाज्य है तथा इनके वर्ण्य विषय माध्याहिमक, उपदेश

जोडन्द:-१. वरमध्ययाम् (वरमात्म प्रकाश) योगिन्द

प्रधान तथा शांत रग पर्ण है।

१. योगसार

परमप्पयास

मण्युति देउम चिति तहुं मध्या विमन्तु मुएवि (8 EX)

(निर्मल स्वभाव बाने उस परमारमा को छोडकर तीर्थ यात्रा, ग्रहमेवा तथा विशी भी

बन्य देवता को सोचना क्यर्य है)

(२) जस हरिए न्ही हियबहर तमू सुनि बंभ वियारि एक्वहि केम संमति बढ वे खंडा पहिचारि

(2.232) (जिनके हुइय में मृगनयनी मुंदरी निवास करती है वह बहाविचार की ने कर सकता है ? एक

ही स्थान में दो सनवार की रह सकती हैं?) (३) अ दिहासूरागमिता ते मन्यविता न दिह्छ

तें नारित वर यस्यु नरि प्रति अध्वरित नउ विद्ध (२.१३२)

مذة-خلاك

हुमीन ही की हैं। उपमुक्ति संस्थ होत होन्दर्भ ही हार्नहार होत होत्र नेत्र-बीटर है दरमा सा, नेतृत काम हात है गुरु हरी हत्त्वारमर्भ रहा संस्ट्र और सी संस्ट्रेसी हा की बहुबर प्रतिक प्रति का साम निर्देश क्षेत्र हा हो है है उद्योगी है जिल्हा है। المسائد والمتناجية المتناورة श्रद्धसार हे कर सर्वे बर्जी प्राप्त वर्णा का विद्याल ब्राव्हीं में सुर्वित रण । ब्राचा के ब्रावरीय ईवारी वे ब्रावरी दिवस الماسية والمحتم أوهما مع ويساد विज्ञान कीन्द्र सा । नम स्रोती क्षर मार्गा द हेर्स, काल म बहुद मंदर्ग में। उर्देश्यद मर्पद्रिम मंतु बिद होगर गुर्गाष होन्हे हैं। कारे का द्वारात प्राप्त कर गका । दर्शी वर्गीय की ही रही थी। सरक्षात्रहे हमी रेतरे र क्ष प्रकारण संबद्ध संबन्धित है। पान्यु ग्रिसिन्ड दुरसमित ने बरहु बरीर पूरित है पर साथ नुष्यों, अराज द्या कर सम्बर्ग कर सम्मान में सीवें रवार्त रवार्ष हर, इवाज व राजिय ने वर्णन है। الما الما المساعد

हैं परन्त यहां हम प्रमुख रूप से तीन विविधों के मक्तक काञ्यों को सोद्धरण प्रस्तुत कर रहे हैं। ये कवि राजस्थान के भगभांता भाषा के मस्तक

बाट्यकारों से प्रतिनिधि कड़े जा सबते हैं। ये निम्नांवित हैं:---

१. जोडन्द्र--परमप्पयासु (परमातम प्रकास) १ २. मृतिरामसिंह--पाहड दोहा?

१. देवसेन मावय धम्म दोहा

इसके श्रतिरिक्त जिनदत्त के उपदेश स्मायन रास (सं० ११००-३२) हेमचंद्र के प्रानृत व्याकरण (१२००) के धपन्न रा के दोहे. सोमप्रभाषार्थ का बुमारपान प्रतिबोध (सं० ११६५) तथा मेरतृह के प्रबन्ध वितामिण्(सं० १३६१) बादि के बरभ्र दा बंदो दो भी इस प्रसंग में विस्मत नहीं किया जा सकता।

साय ही धपभ्र दा के हरियेशा के कथाबाध्य धम्म परिवता मं० १०४४ घोर राजस्यान मे विरोधित मग्ध्रं स की झनेक गच कृतियों पर भी धपेक्षित रूप में दिस्तार में लिखा जा सबता है। जिस पर हम सथावनर घन्यत्र विचार करेंगे। यह सब सम्प्रति राजस्यान में उत्पन्न विवयों की निधि है। यहा

उनत तीनो कवियो के बाध्य बौदान के कतिएय चुने हुए ध्वरण प्रस्तृत वर रहे है। ये ग्रंथ सक्तक १. देखिये परमध्यमानु-योगिन्दु--हा० ब्रादिनाय नेमिनाय उपाध्ये द्वारा मम्पादित गत् १६३०

रपनाशार वा समय थी राहुलजी ने १००० ई॰ माना है। ये हेमचन्द्र के पट्ने हुए थे। सनका जन्म स्थान राहुलजी ने राजन्यान माना है। जोडन्दु जैन मुन्ति थे। इनक दोना पन्यों के वर्ष्य विषय शान, समाधि, धलख निरंजन, बात्मा परम नन्य, निरंजन बाग, पथ, पोधी पत्रो, निन्दा शून्यध्यान, योगभावना सादि हैं।

२. देखिये पाहुड दोहा, सम्पादक-हा॰ हीरालाल जैन बारीबा मोरोज मन् १६३३ । मुनि ेगालाल जैन इनको राजपुताने का मानते हैं। साथ ही देखिये- हिसी

काव्य है तथा इनके यर्ज विषय झाध्यारिमक. उपदेश प्रधान तथा दात रस पर्श हैं।

जोडन्द:-१. परमण्याम (परमात्म प्रकाश) मोगिन्द १. योगसार

परमध्ययास

(२) ग्रण्याजिति त्युम जाहिजिय ग्रण्याजि गरुम ਸ਼ ਸੇਤਿ

धण्लाजि देउ म चिति तृहुं सप्पाविमन्तु मुएवि (१ EX)

(निर्मल स्वभाव बाले उस परमारमा को छोडकर तीर्थ यात्रा, ग्रहमेवा तथा किसी भी भ्रम्य देवता को गोधना व्यर्थ है)

(२) जस हरिए न्यी हियबहए तम् एवि मंत्र वियारि एक्वर्डि केम संमति बढ वे मंडा पहियारि (177.1)

(जिसके हृदय में मुगतयनी मुंदरी निवास बरती है वह बहाविचार बेंगे कर सहता है ? एक ही स्थान में दो तलवार बेंगे रह शवती हैं ?)

(a) वै दिहासुरम्मानित ने मन्यवित न दिस्ठ तें बारील वड धम्म बरि धीम बोध्वरिम बड

निटंड (२.१३२)



(२) मणु यत्तगु ६ इल्वह तहिवि भोयहं पेरिउ जेल इंपल कज्जे कल्पयर मूल हो खंडिउ तेल (वही दोहा २१६)

(मनुष्य दुर्लम सन को प्राप्त वरके भी जिसने उसको भागो में लिप्त विया उसने ईंघन के लिए करुपुटा वा समुजोच्छेदन कर बावा, ऐसा समभो)

इस प्रवार जरत उदराओं से हम इन इतियों वा शिल्प समक्त सकते हैं। प्रपत्नेश की इन रचनायों वी मुख्य प्रवृत्तियों वा विरत्नेयां सदीर में इस प्रवार विया जा सवता है।

राजस्थान के ध्वपभ्रंश मुक्तक काव्य

उक्त मुक्तक रक्तामों मे माम्मारितक रक्ताएं मुख है। इतमे कवि ने संतार की नरवरता, मुक्ति का रवस्त, मार्क्त स्वाद कर्म-विषाह, मारक्तान, कर्म-विषाह, विषय निवृति भीर वैनय का मुक्तर कर्मन दिवा है। ऐसी रक्तामों में जो रह वा प्रमुख हिया है। ऐसी रक्तामों में जो रह वह प्रमुख हिया है। माम्मामित इचरों के साथ जैन कवियो ने माम्मामित उपरोग के साथ जैन कवियो ने माम्मामित उपरावार की ही मुर्चा मृत्य दिवा है। नीति भीर स्वावार की ही मृत्य जितना माम्मामित करा करा स्वावार के ही मृत्य जितना माम्मामित करा मार्कि साथ करा करा स्वावार के ही स्वावार करा ने नहीं। ऐसी रक्तामों में देवनेन का "वाश्य स्वया प्रमुख देश" भीर जितता मान्य मामाप्रकर ने नहीं। ऐसी रक्तामों में देवनेन का "वाश्य स्वया मामेर देश" भीर वितरस हिर्द का प्रावार करा है। स्वर स्वा

उपरेश स्थान रक्ताओं में हुमश स्थान त्योत, त्यतन सारम्यी रक्ताओं का साता है। स्वस्त्रेण के सीयरण, समय देवगृरिकृत विहृदण क्लोब क्या सर्वगृरिकृति ऐसी हो रक्तान् है। दिनदण कृति में क्यों भी स्परित सात क्या दृश्ति है।

द्मप्रभाग में रची कुछ उपदेश प्रधान रचनाएं बौद्धो धौर सिद्धो की भी मिनती हैं। जिनमे नेवन बौद्ध धर्म के सिद्धान्तों का प्रतिपादन है। बौद्धों ने इन मक्तक रचनामों में बर्मबाण्ड रुढिवादी दृष्टिकीए तथा बाह्यादम्बर की लंब निन्दा की है। इन्हीं बौद्धो में दोहाकोश, चर्यारद तथा नश्मीर दर्गन पर तिले कुछ भौवो के मिद्रान्त भी मिनते हैं। जिनमे वई फटकर पदो में विषय वैविष्य, मानो की तीजना तथा प्रभिव्यवना की शमता मिनती है। इस प्रकार जैन भजैन दोनो सपभ्रांस प्रधान कार्यो. मे उपटेश प्रधान, धर्म प्रधान, नीति तथा सदीचार प्रधान भावनाए ही मिनती हैं। ये सब उपदेश जनता की सदाचारी बनाने के निए जनना की ही भाषा मे लिये गये थे। इत. जैन वृतियों ने झपर्यं । भाषा को ही झपनाया । क्योंकि झपन्नं शायन समय जन साधारण की क्षेत्रचान की भाषा थी।

जैत बढियो ने जितने भी नाय्य निमे हैं उन सभी से धर्म शालधारा के रूप में विद्यमान है। उदाहरणार्थं चरित बाध्यो की ही में इतमे बया-श्मकता, प्रेमास्यान, मोच गापाएं तो रहती ही हैं, इंडियो ने उनमें स्थानीय रंग, समात्र भी परम्पराएं, देव हवा सोह क्वानको की रंगीतियो द्वारा मरम इता द्वाचा है। धर्म उनके मूच में है। प्रेराणा के रूप में यह धर्म इत रचनामी में विद्यमान है। नहीं बड़ी तो यह धर्म रचनायों की प्रतमृति तक बन जाता है। वर्ष-विशव, पुतर्जन्म धादि जैन दर्शन की दिदिय धाराधी का जब समात्र में प्रकार करने के निए जैन कवि काच्यों में सनेक स्थलों में उपरेक्ष इतमा दीम परना है। उपरेग सीर जैन दर्गन के दे तथा उने वृति से प्रचारण बना देते हैं। ही। कोल्ट के क्यांतर की रचता का बाचार वेतियों के हर्र-दिएक का सिद्धान प्रतित होता है। हमी की ल्डि बरने के लिए जैन वृद्धि प्रतिश्व के प्रतिकृत

ध्या-देश ك فيما في فا ديد كذار إلى كن أنه وسيادا بيده إبدا यर प्रश्लिकाः का रागम सेमा है। स्वयांस चैन कवियों ने महानुपूर्ति यौर हरेन देन ऊ का बगारा है। मा: जाने मा

Ÿ \$ 7 1

٠,

घ व माना के हुन महाकारती, बाराकार

पुलक बाची के लिए की तो तथा पुरत ह

पर भराम बाना है। इनमें कोर करियों का यह भी नहीं दिया जा गहा है। स्पाप्त से हि

मारे मारेन राजामाति मनियो का माहित्य म

भेदारी में बाद पता है। हात्राचार हे बाहा

साराम्य के स्पूर्णकारीम्युक्त कार्यकृत के निम् वे हुनार

राप प्रतापा को बहुत करें। यु जारण निर्मा की है। हमाचा प्राप्ते विशेष पापन है कि वे चा कर alu b, al sit biglich af milit bigli nem

गाणित को रेक्स की छिन्नीत प्रापः धर्म प्रवार है। थेन मेसर पहल प्रवास्त्र है निर कति। बार्स्स का गरे हैं।

का का तक कारण मान कर कावादित है हरी करा रा गवता, ही, यर करा जा गवता है बाम स के मुलक कार की प्रमुख हि प्रमानक हाते हैं। भी जीत कवि से गामक के मही है। मंत्रीन में हमने सातस्थान में निस्त

की जीवा कर उसे कोक्सा में और भीड़ दी से।

राजार स रहाबाद लंबा के एक लिएको की क्यारता

की है तथा पर रिवासी की कर्ज में दिश्य क्यांसी

हें प्रकार कर रक्ताची में पूर्व करी प्राप्त बाग बन्दर कामा है। ये देवर प्रवाद कारत ही

महित्र राज्य रवनाराती का मानिक ग्रहर अकल

िक के का है। इसकू जिस की है कार्य पर्व में

कीर बारा के कापार पर बागा है।

Example 2 41 44. 1

जैन-साहित्य

लेखक—श्री धगरचन्द नाहटा

राजस्यानी जैन साहित्य बहुत विद्याल एवं विविध है। विद्याल इतना कि परिमाण में भेरी धारणा के बदमार चारणो के साहित्य ने भी बाजी मार लेगा। उसनी मौलिक विशेषताएं भी कम नहीं हैं। उसनी सबसे प्रयम विशेषता यह है कि वह जन भाषा में लिखा है। भतः वह सरल है। चारणों धादि ने जिस प्रवार सब्दों को लोड-सरोड कर भारते ग्रंथो की भाषा को दक्त बना लिया है वैसा जैन विद्वानो ने नहीं विया है। इसीलिए वह बहत घधिक लोगो द्वारा भगमता से समभा जा सकता है। उसकी इसरी विशेषता है जीवन को उच्च-स्तर पर लेजाने बाले प्राणुवान साहित्य की प्रचरता। जैन मृतियो का जीवन निवृत्ति-प्रधान था । वे किसी राजामो भादि के माधित नहीं थे. जिससे कि उन्हें बढ़ावर चाटुवारी वर्णत वरने वी सादश्यवता होती। युद्ध में प्रोत्साहित बरना भी उनका धर्म नहीं था और शंवार रसीत्रादक साहित्य द्वारा जनता मो विनासिताको भीर भग्नसर करनाभी उनके धाधार-विरुद्ध था । मत. उन्होंने जनता के उपयोगी भीर उनके जीवन को जेंचे उठाने बाद साहित्य का ही निर्माण किया । चारणी का साहित्य की रस्स प्रधान है भीर उसके बाद भागार रस का स्थान भागा है। मिति रचनारंभी उनदी कुछ प्राप्त है। पर जैन साहित्य मैनियना धौर धर्म प्रधान है धौर शान्त रम भी मुख्यता तो सर्वेत पाई जानी है। जैन विद्वानी का उद्देश्य जन-जीवन में बाध्यारियक जातृति पुत्रता या । नैतिक भीर भतिपूर्ण जीवत ही यत्ना चरम ल्या का । उन्होते बापने इस उहेदद

के लिए बचाननी की विशेष हप में मपनाया। तरवज्ञान मुखा एवं कठिन विषय है 1 साधारण जनता की वहाँ तक पहुंच नहीं भौर न उसमें उनकी हिच बरम हो सहता है। उनको तो हत्यान्तों के द्वारा धर्म का मर्म समभावा जाव, सभी उनके हृदय को बहुधर्म छुसकता है। कथा—कहानी सबसे धधिक लोग-प्रिय होने के बारण उनके द्वारा धार्मिक तत्वो का प्रचार पीछता ने हो सकता है। इस बात को ध्यान में रखते हुए उन्होंने दान, शीन, तम धौर भावना एवं इसी प्रकार के बन्य थानिक वत-नियमा का सहारम्य प्रगट करने वाले कथानको को धर्म-प्रचार का माध्यम बनाया । इनके परकान् जैन सीर्पंदरों एवं घादायों के हुलुदर्शनायक एवं ऐतिहासिक बाध्यो का सम्बर बाता है । इससे जनता वे सामने महापुरपो के जीवन-धादा सहज कर से उपस्थित होते हैं। इन दोनो प्रकार के माहित्य मे अनता को अपने जीवन को सधारने से एवं नैतिक तथा धार्मिक मादशों ने परिपूर्ण करने में बड़ी प्रेरणा हिली। राबस्याती-जैत-साहित्य व महत्र्व के सम्बन्ध में हो बार्ने उन्तेलनीय है-प्रयम : भाषा-विज्ञान बो इंटिट में उनका महत्त्व है, द्विनीय : १३ की में १५ दी राजारी तह के बैनेतर रायम्यानी स्वतन्त्र प्रत्य उपनस्थ नहीं है। उनहीं पूर्ति स्वन-व्याती-देत्-साहित्य करता है। धारश्रोध से राज-स्वानी भाषा वे दिवास के सूच शास्त्राती जैत साहित्य इस्स हैं। झाल होते हैं, स्टाबि जब में रावस्थानी भ्रम्बाओ दल्यों का निर्माण ब्राध्य हमानद ने



शलावबोध, हेम ब्याकरण् भाषा टीका, सारस्वत रालावबोधः

२. छंदुः-—रिंगल - शिरोमिंग, दूहाचित्रका, राजस्थानी गीतो वा छत्द प्रन्य, वृत्त रत्नाकर बाला-बबोख ।

२. श्रलंकार:— वाग्मट्टालंबार बालावबोध, विद्यमुख्यंडन बालावबोध, रसिकप्रिया बालावबोध।

४. काव्य टीकाएं.---मर्तृहरिशतक, भाषा-टीकावय, समह शतक, लघुस्तव बानावबीय, क्सिन

टाकावय, घमरू दातक, लघुस्तव बावावदोध, क्सिन रुवमणी देति की ६ टीकाएं, घूर्तास्यान क्यामार, कादस्वरी क्यासार ।

४. पैस्क:—माधवनिदान टब्बा, सिप्तरात कलिवा टब्बाइय, पय्यायस्य टब्बा, श्रीयजीवन टब्बा, शक्तोबी टब्बा, कुटबर प्रयोगी के संग्रह तो राज-स्थानी भाषा में हजारी पत्र प्राप्त हैं।

६. गिशित:-- सीनावती भाषा चौराई, गर्गित सार चौषाई ।

 उयोतिप —लयुजातक वचितवा, जातक वर्मपद्वति बालावबोध, विवाहपद्यत बालावबोध, युवन दीवच बालावबोध, चमत्वार बिलामिग् बाला-

वबोध, मुहून विन्तामीण बानावबोध, विवाहपश्त भाषा, गरिगुत साठीसी, पंत्रीम नयन कोर्सार, मुकन दीविका कोर्सार, मंत्रपुरक्त कोर्यार, वर्षयनाकन सम्बद्ध

सन्भासः। दीरकःकरा—राजन्यानी दोहो सादि से सह प्रभीतिव संस्कायी सन्यन्त सहस्वपूर्णं चन्य है। दस्त्री रचना सं० १६४० से हीस्वनदा नासव सदस्दर रचनीय देन स्ति नेची हैं। यससंस्था १००० के

रकता सं० १६४७ में हीरकत्या नामक खरतर रफारीय जेन मति ने की है। पद्मतंत्रमा १००० के नयसम है। इसे सार्धभार्य मिलावाच नवाब ने हुब-राभी विदेवन के साथ सहस्रावाद से प्रवालित और वर दिया है।

मीति:—पाएषयगीतिरुवा, पंषाव्यान— बोपाई। मललाक अनसीहरवनी यह कारसी प्रवर्थ भीति प्रकाश के नाम में मुहस्योत संवामतिह रिवत उत्तरण हुमा है जो बहुत ही महस्वपूर्ण है। पंषाक्ष्मत का गढ़ से अनुवाह भी मिना है। जोपहुर

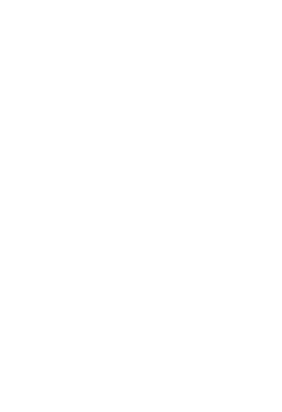
से 'परस्परा' मासिक में यह प्रशासित हो रहा है। एक बोहा सार भी प्राप्त है जो बहुत सुन्दर है। ६. ऐतिहासिक:—मुंहणीत नैसानी की स्यान तो राजस्थान के इतिहास के लिए प्रनमोन प्रन्य है।

तो राजस्थान के इतिहास के लिए प्रनमीन पर्य है।
यह सर्व विदित है। पुरुषोन जेमानी जैन प्रावक
थे। इन्होंने मारवाद के प्रामंग के सम्बन्ध में एक और
भी महत्वपूर्ण पंध निला है, जिसकी प्रति उनके
बधन वृद्धरान जो के भनीने कुपरान जो प्रमुगोत
के पास है। सार्व पक्ष प्रमाग से साना
प्रावक है। तीरांगी की स्वान वा चुछ मंग प्रव स्व में पंज पासर्पांगी प्रामीगा ने दो भागों में
प्रसाधित दिया है। प्रामी प्रवक्त एक गुग्दर
मंगरता प्रावस्थान पुरान्तर मंदिर से एसा है।
स्वान मारगांत भी करवी प्रमार से मारवारी में
सिवता सम्मादन भी करवी प्रमार से मारवारी ने

बति जिसिन मेरे सबह में है। जिने मैंने 'सारनीय विद्या' में जनावित बर दिया है। राजेंग्ने की क्यान सौर बेतावित्वी जैन मिनवां ब्राग्न किस्त क्रान है। जोपपुर के गांवों की जरन संबंधी हसीकत जायुर के बीताव्यों के पान है, जिसकी क्रिनियित मेरे

संदर् से है। बारसेर वे भीत उद्यक्तियों ने नगर से बेरामध्येय जितनपुरमूरि एक्ति एट्टोल-बेगा-बनी मैंने देशों थी। नुबाल संगी, साध्यक्षित क्षेत्रक अस्ति स्थाद मार्च क्षेत्रक अस्ति स्थाद मार्च क्षेत्रक प्रतिकृति के स्थाद में दिख्य एट्टिंग्डिंग्ड सो नही, पर संस्थानकार ने भागार से एट्टिंग्डिंग्ड एट्टिंग्डिंग्ड है। सर्वेश्वरूप प्रतिकृति से मीचा-ने से इंटिंग्ड में वह में मी सी मीचा-

ए दिया है। वेनावारी, भावतर, तांची, देश नगर बार्गन नदेशे दे- प्रथम भाग प्रवासित हो खुवा है। हिनोस सह गया है। शीक्ष ही प्रवासित होता।



है जिनमे तीन धपूर्ण है। उनमें भी विविध विषयों मा वर्णन बहुत ही मनोहर है। इनना परिपय में बतान्य तेल होता राजवान भारती में प्रतायित वर पूर्ण हां। मुनि जिनविवयती से १७ भी सतान्ती के मुक्ति पूर्णन्य रिचत वर्षक-विस्तित नामक प्रत्य नी एक धपूर्ण प्रति प्राप्त हुई है। एक संस्कृत मे हैं। पर प्रावंधिक वर्णन राज-

स्पानी गय मे हो दिया है, जो बहुत हो महत्त्वपूर्ण है। प्रत्य बी पूर्ण प्रति प्राप्त होने पर इसका महत्व भनी भार्ति हो बिदित हो सकेता। पछ मे दुष्तान वर्षात, सीत-लाग भर्णन भारि स्वनाएं प्राप्त है। नगर-देश वर्णनासका परवद स्वनाएं भी बिदानों

वी प्रनेक मिनती है।

(१८) सम्बाद:—गम्बादमंग्रव जैन रवनायों
में बहुत सो वा सम्बन्ध जैन धर्म से नही है। दनवे विदेशों ने प्रपत्ती मूम एवं विद्यासा का परिवय प्रमुख कर में दिया है। मोनी वर्गातिया सम्बाद, जीभ-दात मस्बाद, धाव-नात सम्बाद, उद्यान-वर्ष सम्बाद, धोवन-तरा सम्बाद, सोवल-वाजन सम्बाद

मारि रषनाए' उस्तेस सोम्य है।
. (१६) देव-देवियों के छंद.—सोहमान्य कर्र सरा, सानित्वर मारि बह, तित्तृह मारि देवो की वहुतिकर सन्द, जैन प्रतियो झारा रविन बहुत से विनने हैं। उन देवी-देवतामों का जैन-पूर्व से कोई

सम्बन्ध नहीं है। समर्थेद जी, बाहुजी, बूरवजी और समर्थानह जो स्मार्थ ने शृतिकष्य भी वह स्वतार् सिनती है। (२०) लोकवार्योंचे संबन्धी सम्बन्ध-न्योद मार्थिय ने मस्साम से उन दिशानों की सेवा सहुद्रम गारिय ने मस्साम से उन दिशानों की सेवा सहुद्रम

(२०) सावधानीचे संस्थानी प्रायाः—नीत मारिया ने मस्साम में जैन निहानों की मेहा बहुत्तस है। शैनकों नोत बार्माची को उन्होंने घनने दन्तों से महित की है। एवं २ सोतवार्ती ने सहस्या से संबंध दें सोता भावों से उनने बहुत ने दनन उपनम्प है। बहुन भी लोक वार्ताएँ तो यदि थे : धपनाते तो विस्मृति के पर्भ मे बभी की विभीन ह जाती। यहा राजस्यानी भाषा में रिवत फुटब सोक वार्तामा की मूची दी जा रही है—

प्रबंड परित्र वर्ता विजयमपुर, स्पनन्त्र वर्षुर मंजरी ,, मतिमार गोरा बादल ,, हेमरस्त, सस्पोदय पन्दनमलयागिरि ,, भद्रमेत, धेमहर्ष, जिनहर्ष

मुधितहंम, यद्योवर्धन. ढोला मार ,, तुरान साभ नदबत्तीमो घोराई ,, सिंह नुदालगणि जिनहर्ष पनहरवी बलाराम ,, बीरबन्द

पवास्थान ,, बन्द्वरात्र, होरवना प्रियमेनक ,, समयगुरूर, मानसागर भोत-वरित्र ,, मानदेर, सारग, हेमानन्द करानधीर।

(देवें ना. प्र. पविषा में प्रशानित मेरा नेता) विष्ठम परिद्र —महाराजा विष्ठम की दान-शीनता, पराष्ट्रम एवं बुद्धिवार्चुमें नोत माहित्य में मावने सथिव प्रशानित है। सारनीय प्रयोक भारा में विष्णम मंदीनीत करायों का प्रयुर्त माहित्य

उपनाय है। सर-टुर्नर भाषा से भी नरीव ४१ रक्ताएँ प्राप्त हो चुत्ती है। यहां उनवें बोदी सी राजपानी रक्तामी ना सब्बेन दिया दा रहा है। दियेत जानने ने निए से दिक्सारिय संबंधी जैन सारिय (दिवस स्मृति दस्य में) देनना चारिये। इन्य नाम

इत्य नाम वर्त्ता नाम विक्रम चौराई, हेनागद, मुनिमान यव दश्द चौराई, दिन्दम<u>म</u>द, मध्यीदम्लस, नायप्रवेत

मिहानन दर्भामी, मनदचन्द्र, हानचन्द्र, दिनदनपूर्व, हीरहचन्द्र, दिनदचन्द्र

स्यत-नेपा

वर होंद्र बा रश ही बारो होगा । तागरी प्रवर्णना THE HO IN KE O HALL

Military with the	स्वत-नेपा
मापरा पोर बोलाई, राजगीत, समप्ताप सर्पत्र ।	
सीम करण सम्मा	
सरेत क्या ग्रह्मणी विशिष्य साथ सह है :	में इस १८३३ में २१०४ तक में की है। इ
The second secon	7771 9100 2
Canal Company of the	Callet of this plan many a
कर्मक मा कर्मक कारोबाद, गार्थन	किया जा पुरा है। देशे सामग्री, एकासी समायम स्वयं सहय है।
र्म क्र _{िम्मर्ग} र स्थितिकार्य	रामायण स्वयं मुख्य है । बीर भी और रह बार मोनोपाणी दिवसी यह गण्या
attention of the state	सोनोपयोगी निषयों पर पुरुष साहित्य अहत अन यशिया बारा निषयों पर पुरुष साहित्य अहत
the act and a second of	अन सरिया द्वारा निया निया है। अनिशेष कार्द भी ऐसा निया करा हुन।
7 7 7	कोई भी ऐगा विषय नहीं जिन वह जैन (शतका स्वनाः सामाहित न मिले
" (C) (C) (C) (C) (C) (C) (C)	स्वनाः धापारित न विते ।
कानक बरियात की दर्द करने कानक बरियानक की शहर का का कामान का कर करों के की करने	राताबारी ३.
कारत वर्ष के बार प्रावनगर वर्षा	के लिए प्रत रचनामा की विश्वित कर वर देखि का रचा भी कारणे होता.
राका दिनातु की बान, प्राप्तक में सहारा कार्य	वर ही द्वारता ही काली होता । नात है अवस्थान विद्या संक्ष्या होता । नात है अवस्थान
req.	परिशासिक रेस साम १० वर्गा

इत मध्यवर्ती ४०० वर्षों में श्रेन विद्वानों ने निरंतर राजस्पानी में रचना की है मीर वे छोटी—मोटी राजिषिक सस्या में हैं। पद्य-साहित्य के साथ र इस समय की गढ़ा रचनाएं भी प्रदुर हैं। जबकि १७ वी राजारों से पहले को जैलेतर गण राजस्यानी रचना स्वतन्त्र कप से एक भी प्राप्त नहीं है,। केवल सचनदात सीपी की वचनिका में गण के थोड़े से उदा-हरए। मिसते हैं। जबकि इन ४०० वर्षों में क्रीब ४०-

६० पेपी के बहुन्बहै बाताबबीप राजस्थानी गढ़ में जैन विद्वानों के द्वारा निर्मित प्राप्त है। सरतरमञ्ज्ञीय विद्वान मेश्नुन्दर धरेने ने ही २० वंदो पर गढ़ में बाताबरीय-मारा टीमा निर्मी है। जित्रवा परिमाल ३०-४० हजार स्त्रीक के करीब कहोगा। चारण धारि विद्याद्वी होता होगा। है। गढ़-के ममस से प्रारम्बहमा जतीत होना है। गढ़-

(२) पहनायों ही संख्या पर हरिट कानने से भी जैनेतर राजस्वानी साहित्य के देव रूप सो बहुत ही पोड़े हैं। पुटलर घोड़ एवं दिशन गीत ही, से पिछ है जबहित राजस्वानी जैन संबो, राज साहि बड़े दे एगों की संख्या संस्था है। दोड़े थीर दिस्त गीत हमारों की संख्या में मिनने हैं। जनहां स्वान जैन दिहानों के स्वबन, सन्भाय, गीत, भाग, यह

मादि लघु कृतियों ने लेती हैं, जिनकी संस्या हजारो

वार्तीयें तो प्रधिकांच १८ की दाताब्दी में ही लिखी

गई है 1

पर 🖣 ।

(१) परियों भी संस्था और उनने प्रीवड़ मारिय में परिसाण में सुनता मरने पर भी जैन मारिय मा पनदा बहुत भारी नजर माता है। जैनेतर राज्यानी साहिय नियोगामी में होंहों से पीन निर्माणकों से प्रीव हैने पर बड़े र स्वतन्त दव निर्माणकों सह बोड़े में एवं जाने हैं और उनने में भी निर्माणके ने उप्लेखनीय स्नान को मार्ग होटी २०-३० रचनामों ने मधिक नहीं तिस्त्री। राज्यपानी भागा वा सबसे बड़ा मन्य "बा भागकर" है। जबकि जैन कविमां में ऐने बहुन से कित हो गये हैं जिन्होंने बड़े र राग ही बड़ते सेस्त्रा में जिल्हों है। सहा बुख प्रपान वियो का ही निर्देश विया जा रहा हैं:—

(१) कविवर समयसुन्दर:--माप राजग्यान के महावृद्धि हैं। प्राकृत, सरकृत भाषा में भनेकी रचनाएं नियने के साथ राजस्थानी में भी प्रदुर रच-नाए निर्माण की हैं। फुटकर स्तदन, सन्भाय, गीत भादि दी संस्था सो ६०० के लगभग प्राप्त है। बैसे सीताराम चौराई राजस्यानी का जैन-रामा-यस्य है। यह प्रत्य ३७०० दलोक प्रमाण है। इसके श्रतिरिक्त साम्ब प्रयुमन चौपाई, बार प्रत्येक बुधराम भीनावती राम, ननदमयन्तीराम, प्रियमेनर राम, पुष्यसार घोपाई, बल्बलधीरी शम, रायुक्तय राम, वस्तुपाल रास, बादक्वा बीगाई, शुन्तक नुमार प्रबन्ध, चपक श्रीष्ठ चीताई, गौतमपुन्छा चीपाई, धनदत्ता चीराई, माधवदना, पुत्रा ऋषिराम, शीपता चौराई, देशी प्रबन्ध, दानादि चौदानिया एवं शमा धनीसी, बर्मधनीसी, पुचधनीसी, दुःशावदर्गात छुनीसी, सर्वेबाद्यनीसी, बातीयलाद्यनीसी बादि मादि राजस्यानी में बहुत से पथ है। बुख रण-

(६) जिनहरी—रनका रीधार्ड नाम जम-साज मा। बहु साज्यानी में बहे मारी वर्ष हैं। उन्होंने दुवंदी जीवन में साज्यानी माने मोरे रोधे में साज बले जाने कर हुजरणी निर्धात क्या में ५० वे बरोब राज एवं में हम लगत मारि हुइ-बर पहराही भी हैं। इसमें में वर्ष एन टी बहे ने बच्च हैं। साबी लग्न स्वन्यों ना वर्षामाल

नाएं तो हमारे द्वारा प्रशासित भी हो चुरी है।

डिंगल साहित्य

हाँ० मोतीलाल मेनारिया, संचाहक राजस्थान साहित्य झरारमी, पर्यपुर

भारतीय साहित्य मे राजस्थानी साहित्य (जो हिंगल साहित्य के नाम से प्रमिद्ध है) का स्थान कितने महत्व काहै यह बात साहित्य-प्रेमियो मे दिनी नही है। राजस्यानी भाषा के साहित्य मे जो भाव स्पृति भौर उद्देग है वह बेवल राजस्थान के निए ही नही बरन सारे भारतवर्ष के लिए गौरव को वस्तु है। बीर-रम की कदिता तो इतनी उच्च-कोटिकी बन पड़ी है कि उस तरह की कविता संसार के भन्य विसी साहित्य में मिलना दर्लभ है। विविसम्राट्रवीन्द्रनाय ठाव्र को एक बार जब वीर रस की ये कविताएं सुनाई गई तब वे मंत्र-मृष्य ने हो गये धौर बोने-"भक्ति रम का काव्य तो भारतवर्ष के प्रत्येक साहित्य में किसी न किसी कोटि मे पाया जाता है। राधाकृष्ण की लेकर हर एक प्रान्त में मंद या ऊरंची कोटि का साहित्य पदा किया है। लेकिन राजस्थान ने घपने रक्त मे जो साहित्य निर्माण किया है उसको जोड का साहित्य घौर कही भी नही मिलना ।"

गाजवान के विषयों ने ध्यानी क्षतिग्री हो प्रवाद की भाषाओं में नियों है, विगत धौर विजन । विगन राजपान की बोत्त्राक की भाग राजक्वानी का वार्तिश्वक कर है और नियन को धौरता धीयक भाषान, धीयक वार्त्य करान्न वहां धौरता धीयक ग्रुल-विशिष्ट है। इसकी उत्पत्ति घपन्न'श मे हुई है।

पानन्यानी मापा का नाम हिंगल वयों भीर कब यहां इस विषय में मित्र र विदानों के मित्र र मत हैं। पहना मन है कि "हिंगन" तार का ममनी भये पनियमन प्रवत्ता गंवार या। वज भाषा परि-माजित थी सोर माहित्य-सारक के नियमों का मन् सरण करती था। पर हिंगल हम सम्बन्ध में स्वर्तन थी। इसनिए हमका नाम हिंगल पदा। हुनरे मन के विद्वानों का बहुता है कि हम मापा का ग्रास्मिक नाम 'क्यान्न' पर बार में पित्र सार ते कुक मिनाने के नियत हार 'हिंगन' कर दिया गया। '

तीमरे मत मे हिगल म 'र' वर्ग बहुत प्रमुख होता है [यहां तर यह हिगल की एक विशेषता हो जा तकती है] 'र' वर्ग की एक प्रभावता की ध्यान मे रख कर ही विगल के साध्य पर कम माथा बा नाम दियन रक्ता गया है। जिम प्रकार विद्वारी-लकार प्रधान भावा है उमी तरह हिगल भी कहार सम्ब प्रधान भावा है। घेषामन—दिगत, हिम्म +पा के बता है। दिस का धर्म करक की धर्मत तथा गल बा मने से तार्म्य है। उसक की धर्मत तथा गल का मने से तार्म्य है। उसक की धर्मत राम प्रधान का माहान करनी है तथा बहु कीरों की उन्मारित करने वानी है। उसक की रहन है देवन मारोंद का बारा है। होने के भे किया है

tie एस. पी टेगीटरी Journal of the Assac society of Rengal Vol X,No. 10, Page 376
 tie हरमाप्त दिवेदी (Instancement report on the operation in search of 3550 of Bards Chronicks, P. 15.

रै भी गत्ररात्र योभा [शादरी-प्रचारिती पत्रिश, भाग १४, पुरु १२२]

(३) चेगह जिनसमुद्र मृहिः—हन्तो भ राजनाती दे बहुत से राम, राजन बादि बनाए है हिन्तहर परिकार १०-६० हजार ग्रांको के क्योंक है या। वर्ष राज बहुई विते है। (हेर्ने समापानी विश्वेष कामा, काल है)।

भी बनाई है। 'किसन रकसरी बेर्न' ब मीजिये, इस पर माना बारता प्रतीप जैनेतर नी एक ही जानका है पर अन विकास कार ह (४) मेरानंधी सीनमचती — जना भगानी ६-० टीकाएं माना हो युकी है, जिनमें ते ही टीक वी संख्य मारा में भी है। इसी प्रकार हिं

हर की का | का एक ही क्या दन हमार प्रोक र्यासाम है को राज्यवानी बा गरते बहा राज है। घोर संस्टूत के जैनेपर सकीयोगी एवी पर थ क्तारी क्षेत्र देवनाकी की कियाने में परिवास है वैन विकास में राजापानी भाषा में टीवान हिन नाम प्रोको में कविक का ही होता। है। वहातस्तामः-मन्त्रत हे पहेंद्दि एन्ड. (१) बाल्यी दूर हे बागावहीय माना दीना म्पन वान, महातीन, नातन्त्र मानत्त्रकार

देवन एक हो साम होता वर्गाय है। पर भेन याचा बारा रिवच राजावारी शिवन देण प्रकार केन्द्र दिवानों के की बारगांच नाम माता है। महेरिद्यान की तो काकार, यहर राज बर्गाटन हो जाते हैं हो। रायण राजाबारी बेंब हुरान, महमीरमाम की तीन टीकार् हरारे अंग म काल है। हिन्दी देवों में 'दिनक दिला' बर दिस्त्यार को सीर नेस्ट्रांस के नम्प्रिक्त

र का गरिकाम है। हैव साम आह विश्वास A R and MI WATER WAY THE THE BUILD WATER काल बनार है क्यूबर है। दर दन्ते से ल रामकानी होना उत्ताप है। योन सामना En ant to Bay My Bandl antina be पत्ती को बचा रंगी का श्रीत भी भी तिहान का हरकारामा का बंदन कहा परवार है। क्वन ही है। जैन रामस्याती भागा है महत प्रचीर tern d'avery de source delecter जैनेन्द्र कामोन्द्र कीम तदेव नामों को जानाथ सबस्य रायत कराह है। एकरन्तु न हो सरका है। र्रेतपा देव वर्ष्यो आग विकास हो है। सीवर हर का बहर का वं जनके करणा का र क विश्वपुर एक को अनि कारी जन्म वर्ग है। दर्ग and align and declaring as well a प्रदार तथाने सदस्य बांबानेत हे राव है। the taylor for married . If महरूपी व्यवस्थात इंच केली समा के ए to be a fee bet a widing a प्र¹रप्र⁴ प्रामाध्ये हैं, स्वर्धि हम हम हम हो हाथ हैंच कोत्पन्न देव हुँचेंग करिया साम की प्रांत बीतनी के संगत कार्यानत की की हैंगा te send bemere 4 and मार्चात संस्थान मही है।

trem tree the elas lamines and e and the second second and the मानम् व्यक्तः मान्याम् वर्षम् वृत्ताः वृत्ताः वर्ष LIE MANEY GLAS WINSON स करता पत्र सामह जुद हुनात राज्य राज्यामा to making on a timber to have on they gray transfer the graying po April de aprime Agrees & traverse en are more as de leg or a president

the section of the se A ex sur sx Trees a and the area was do by ٠,

आभाण शतकम् और राजस्थानी कहावतों की परम्परा

लेखक-इा० करहैयालाल सहल, पिलानी

र्विस्वान की सम्यता धीर संस्कृति की सममने मे जैन विद्वानी के ग्रंथों से बड़ी सहायता मिलती है। सं०१६६ के पौप मास में श्रीधन-विजय गणि ने 'साभाण शतकम्' नामक ग्रन्य की रचना राजनगर के समीप ऊठमापुर नामक नगर मे वी घी । इसकी धनेक वहावतें ऐसी है जो राजस्थानी सोकोत्तियो का सनुदाद जान पडती है। तुलना के लिए यहा बुछ वहावतें उद्भृत की आ रही हैं:---र्वतः प्रदक्षिणावन : प्रथमा भवता भन ॥४॥ पन्धकारं कत तेन निमील्य नयने निने ॥१०॥ गनानिधिर्यया पर्व बाह्यमीर्न च बाब्यने ॥२१॥ पानीयस्य सनिजीचैः ॥३॥॥ रप्टायाः को निजाम्बायाः धाविनीत्वं प्रवाशयेतु ॥२ अ। पुरुद्धमित शतो सतिकाधतप्रपि बरस्यक्षरात्रीवे दर्पसम्बन्धेन किम ॥१०१॥ सरलं यदा म स्यात् ॥२८॥ भूपतिः बुद्देश्लीति प्रजायाः ना गतिस्तदा 🖣 ॥३८॥ राजा मित्रं न बग्दवित् ॥३६॥ सूर्वं प्रति स्वः शिष्नं

तस्को निषेत्रने 7 ॥४४ धभो नानस्य मरर्थस्य मस्तके मौलिबन्धनम् ॥४४॥ ऐहिक समतासीस्यं त्यवत्वा कः पारनीक्षकम बटिरथं तनुत्रं यहददरस्यं समीहते ।।५१॥ नन्ये नट्याः प्रवताया वदनाच्यादनं यदा ॥६६॥

गवादीनां यदा पादा हस्तियारे महल्दे ॥३३॥ दर्शने भक्षणे बहुब्लिबन्ता पूपक् पूपम् ॥६४॥ विशाहे विहिते सम्बद्धसार्था कि प्रयोजनम् ॥५६॥ धर्मधेनोस्तवा दस्ता न विजीववा हि भीधनैशहरै। भवित्रध्यं भवत्येव ॥१२॥ उप्यने बाह्यं धान्य, सूचने ताहरां अनै. ॥६६॥

पाइ प्रमारमां कार्यं बावन्त्रन्यादनाशकम् ।१०२। मत् १८६२ के रायण एशियारिक सीमाइटी के जर्नेत में श्री सावचंद्र विद्या प्राप्तर ने 'Marwari Weather Proverbs' series etti! इमी प्रकार Adums Archibald ने करिया मारवारी कहारतों को धरेशी धनुबाद के नाय

पारको के सहस्र क्या । ³

स्वच्छवि पतिष्यति ॥४२॥

यत्त्वर्गं वर्णनादाय दवा

^{1.} Journal of the Royal Asiatic Society 1892 (pp. 253-257).

^{2.} The Western Ramutana States by Adums Arch bald. (pp. 90-97).

-योव हमातहर विक्ता, बन्दार

"भाव-लता"

हैंददाराजी में परपन्न सुन्दर सुमनप्रद लेखिलाओं । सुम सुद्धि से विशाल इस प न चरो. भीर चरों सो उसको मत । अरे, उसके करा चराने के इस्सुक स्ट्रूस प्राणी। एस पर बड़ते एउसी पुररे निर्देशता से कृषणते सकोच न करेंगे । पुरुषे पुरानो का

जानन हो ने ने के दिन हो है। उड़ने वाले हो सुन पर चड़ने भीर सुन्हरी

न्त्र कर है कर के कार्य है। क्रिक्स क्षानन्त्र होने बारों करते ही कड़ते हैं है

प्रांती होते बन प्रारावे पास प्राते हैं। मार सहित प्रक्रार नीचे आने वाले समायन की इत्ता में पाई क्यांत्रने कामी से ईरवर पुरहारी सवा रहा करें।

डिंगल साहित्य

डॉ॰ मोतीलाल मेनारिया, संचाएक राजस्थान साहित्य सकाइमी, पद्यपुर

भारतीय साहित्य में राजस्थानी साहित्य (जो हिंगल साहित्य के नाम से प्रमिद्ध है) का स्थान कितने महत्व का है यह बात साहित्य-प्रेमियों से द्विरी नहीं है। राजस्थानी भाषा के साहित्य में जो भाव स्फृति भीर उद्देग है वह वेयन राजस्थान के निए ही नही बरन सारे भारतवर्ष के लिए शीरव की वस्त है। बीर-रस की कविता सो इतनी उच्च-कोटि को बन पड़ी है कि उस तरह की कविता मेंसार के ब्रन्य किसी साहित्य में मिलना इर्लभ है। विवि सम्राट रवीन्द्रनाय ठाकुर की एक बार जब थीर रस की ये कविताएं सुनाई गई तब वे संध-मृग्य में हो गये और बोने-"भक्ति रम का काव्य तो भारतवर्ष के प्रत्येक साहित्य में किसी न किसी कोटि मे पाया जाता है। राधाकृष्या की लेकर हर एक प्रान्त में मंद या ऊंची कोटि का साहित्य पैदा किया है। लेकिन राजस्थान ने प्रपने रक में जो साहित्य निर्माण किया है उसको जोड का साहित्य घोर वही भी नही मिलता ।"

गाजवान वे विषयों ने घपनी विवाह है। प्रवाह वी भाषाओं से निक्षी है, दिगन कोट विगत । दिगन राज्यान वी बोत्रयाव वी भाषा राज्यानी वा नाहित्वित कप है और विगन वी मोदा संबिद मार्थान, संबिद नाहित्य संग्रह सोट्य संबिद सोट-

गुगा-विभिन्ट है। इसकी उत्पत्ति ग्रपश्चंश में हर्द है।

राजस्थानी भाषा ना नाम दिगल नवीं धौर नव पदा इस विषय में भिन्न २ विदानों से भिन्न २ मत हैं। यहना मन है कि "दिगल" धारद वा समली सर्थ धानियमन धरवा गंबाह था। इज भाषा थरि-माजित थी धौर साहित्य-साहन के नियमों का सनु-सरण करती थी। यर दिगल इस सम्बन्ध में स्वतंत्र थी। इसिलए इसका सम्बन्ध परिम्म वा प्रारम्भिक के विदानों ना बहुना है कि इस मागा ना प्रारम्भिक नाम "द्राव्य" या पर बाद में यिगन साहर से तुक्त विसानों के लिए साहर 'सिमान' कर दिया गया। रे

सीमरे मत में हिरान में 'ह' बगाँ बहुन प्रमुख्त होता है [महां तह मह हिरान की एक विशेषता कहाँ जा कहती हैं] 'ह' वर्ग की ऐस प्रभानता की ध्यान में एत कर ही जिसन के बाम्य पर एम माखा का नाम हिरान राज्या गया है। जिस प्रकार विद्याग्ति स्वार प्रधान भाषा है उभी तहन हिरान भी हकार सम्ब प्रधान भाषा है। बोधायत—दिगत, हिम्मन की कता है। दिस का धर्म दमक की क्वीन तथा गय का गये से साम्य दमक की क्वीन तथा गय का गये से साम्य देन हम की क्वीन तथा गय का गये से साम्य देन हम की क्वीन उपलित करने वार्था है। दमक की एस के दरना मारोह का सामाह करनी है जया कह की थे के दरना मारोह

रे. दोंद्र एल. पी.टेमीटरी [Journal of the Assatic society of Bengal Vol X, No. 10, Page 376

R. হাঁও চ্যোদার হিবলৈ (Parl amentary report on the operation in search of MSo of Bardio Chronoles, P. 15)

रै. यो गबराव योभा [नागरी-प्रवारित्ये पत्रिका, भाग १४, पु० १२२.)

٠.,

4

बदन गई है। मात्र की मान्यता है कि किसी भी
प्रभोभन से जो करिया की जानी है उसने वह स्त
पमस्कार भीर बन करवािन हो मा सकता जो स्वाटन
पुताय करिया करने वाले किया भी रिकास में
मितता हैं। यह कपन ठीक भी है; भीर सावद यही
कारण है कि साम्याधित किया की किया से
मास्तानुसूति भीर मास्त-विस्मृति की सथ्य स्वय
हमें नहीं दिखाई पराते हैं। पारण मारों में स्वान्त.
मुसाय प्रभार कि भीर हम हमें हमें कुर कि स्वार्य से
की संस्या एक तरह से मा हो के करावर है।

भाषा—दियल बनिता वी भाषा प्रधान कर से स्वार वी पाई नाती है। बीर गाया काल के बाय संग्रेस की भाषा बहुत सरक्त कर है। लेकिन दनके बाय संग्रेस की भाषा बहुत सरक्त है। वो किन दनके बाद के प्रयो तबा पुटकर बनितायों वी भाषा बहुत सुदत संग्रेस तथा पूर्व के कि प्रधान के प्रधान के प्रधान के सभी बनियों से समान कर में पाई जाती है, वह है। समस्य कर में पाई जाती है, वह है। सम्यो की मन—माने दंग से लो ह—मरोह ह पाई मन—माने दंग से वी पाई है कि सात जनके पून कर के पहिचानने में भी भाषी विद्याला साता सामना करना परता है। उदाहरणाई—

হাত্র	शुद्ध रूप
दुविद्य	वृधिष्ठिर
पथ	पार्व
वेसा	वेत्या
भोग्य	भदन
₽f ●	द श्य
े देवरी	दिल्मी

हरंद:--डिगल में सबने झधिक प्रयोग दोहा, द्यप्य का हमा है। ध्रुप्य पद्धति का भनुकरण बहुत पीछेतक होता रहा है। धायुनिक काल में भी उसका प्रभाव ज्यो का स्था देखा जाता है। इसका मुख्य कारण यह है कि दिगन कविता में बीर रम का प्राचान्य है. जिसका निक्रपण इन छन्दों में प्रधिक सफतता के साथ हो सकता है। दोहा, छप्पय के प्रतिरिक्त मन्दाकान्ता, मुक्तादाम, भूतज्ञप्रयात, पद्धरी धौर तोमर धादि छन्द भी प्रयुक्त हए हैं। फुटकर रचनामों में गीत छद का प्रयोग भी बहुत हमा है, जो डिगन माहित्य की साम विभेगता मानी जाती है। धप्पय को डिगन में 'कवित्त' मीर दोहा को 'दुक्की' कहते हैं । हिन्दी में दोहा छद एक ही प्रवार का होता है पर दिगम में इसके दूही, सोरिटियो दृहो, बड़ा दृहा और नु'बेरी दृहो नार भेड माने गये हैं।

सालकार-दिशन में स्थितिकार बार्गिक्यन स्थान विश्वा है। सन्दर्भ दिग्र विश्वा है से सन्दर्भ दिग्र विश्वा है से सन्दर्भ दिग्र को निवा है सो स्थानिय हो से स्थानिय हो से स्थानिय हो से सहाय होते है। दनहीं कुटकर रचनायों से सन्दर्भ हो से उरमा, उपक्रात, करण सादि सादय कुटक सन्दर्भ हो अपना है। सेविक सादय कुटक सन्दर्भ हो अपने हैं से परकर भाष भार करते की प्रश्नित दिग्न विश्वा से से सेविक से साथ दिग्न हों से सेविक सेविक

When a peat turns round and addresses homself to another person, when the expression of his empirious is tinged also by that desire of emiling an expression up on another mind, then it wasses to be party and become elegitivene.

बा गांचारण नियम यह है कि किया होई के प्रथम विव उन्हें न मुने। दिगन विशा में बारण है हार का बाराम जिंग कर्न में हवा हो उसके एक हार में राजवार दिलाई देती है तो जबी मा इन्दिर इपर का प्रारंभ भी उसी कारी है होता दूसरे पहुतू में उसकी बीर पानी है। को में ही की वर्षात् । येथा--में नायक एवं मायिका साली मही रमारे । देते हैं क्षेत्र में प्रचीसात कौर पूर्णत है । स्पर्

धनका परमन घोटा, होइ वह बाबर हथा। रोधे कोई दिसाय, करती महका करतह u ---दरगात्री

हिंदा है बह है बयग-मगाई। इसे हम हिन्दी में

श्रद्धात्रसम्बद्धाः भेदावर सक्ते है। यससम्बद्धाः

रम - दियत राज्य में बीर रम का प्राचान है। श्रीतरा, याच साहि साम रही का भी

निकाण निकार है यह बाजाहत बहुर सम र रियान परिचा का तीन भीचार आह. कोर सह ही

ने बान-बोन है। दिया में ना बोर रगवा एवं तरह सकार है। इस्तान पारिया विकित साहार कारिकाल कार्याद सामाप्ता है। हो दिवस की बोर रह का कहिए। १४व को निवी निवी हार्ग । इसका

52.71

कीर शासिट्यों की मीतिक मानगर्भ की की उन्हों दे भारती रचनाओं में सा उतारा है जो दिन माहित्य की दियन के करियों की मार्च दे। है। डियान काम्य में बोर रग की प्रयाना देन का कुछ सोगों ने बह दिन्तर्थ दिशाम है कि तिन भाषा बीर रस के निये जिल्ली चारुल है उ^{ली}

गये हुए बीर नायक की अनुपत्कित में उनकी की

पानी की घर पर क्या दशा है। मेदिन दिना के

भौगार मादि माय रहा के दिए मही है. मेरिक वर्ग रिवार भगायक है बोर रंग के सार्गाण (गे

रणो की भी माधिक मेजियतित दिवन करिता है

रोद्र---

" विळकुळियो बदन जेम प्रकरती, मड्यहि धतुर पुग्गच सर सन्यि।। श्रिमन दशम प्राउध छेदगा काजि, वेलिख प्रग्गी मूठि ड्रिट बन्धि।।"

योभत्म—

वांपिया उर नायरां अनुभवारियो, गाजति नीसाले गटहै। ऊजळिया घारा उत्यदियो,

परनाळे जळ महिर पर्छ ॥

दोप वर्शन—नाध्य में मुख्य मर्थ नी प्रतीति को हानि पर्वचाने यानी यहनु को दोप कहने हैं। दिगम से दोप ग्यारह द्वार के माने गये हैं। मंद, ध्यक्त, हीन, निर्माण, पायक्तो, जातविषद्ध मयन, नाव छेद प्यक्त, बहरी व मर्मगक।

मंद्गिप्त इतिहास

हिंगल साहित्य को भाषा के जमागत विकास की हिंग्ड में भीर उसकी साहित्यक प्रीडता को स्थात में रखकर ६०० क्यों का इतिहास विभाजन किया जाय तो वह तीत भागों में विभक्त हो सकता है—

- (१) स॰ १००० से १४०० सब बारम्भ बाव
- (२) ग॰ १४०० में १८०० तक मध्य बात
- (१) से० १६०० में १६६७ तक उत्तर काप

ब्हारम्भ बाल (मं॰ १०००-१५००)

हिमल ने सादि नाल ही सामदी हुन सुद साता से उपनाय होती है सीर जो है वह भी हुन महिम्म सीद सम्प्रदेशित है। इस समय हिमल के बहुत से नहियों सी प्राप्ता हिनी साहित्य के हरिन हाम सेलानी ने साने दीर राया नाल ने नहियों में भी ही है। यर इस सम्बन्ध में उन्तेन देशा साम नाया है। इनका मुख्य नाश्य है दियल भाषा से उनकी मतभित्रता। शिंगन भाषा में ही नुद्ध ऐसी विमेयता है कि वह बहुत पीने की होते हुए भी बहुत प्राचीन दिलाई पड़नी है। बंधामाकर के मरवेक प्रशास हम बनन के प्रयाध उद्याहरण है। ये धंन साध्युनिक नाव में नियं होने पड़ में मामा में बई सामादियों पढ़ने के सतीत होने हैं।

इस काज के मुख्य कवियों का सक्षिप्त परिचय दिया जाता है। इस विषय में नवीन शोध ग्रंपा से सहायता ती गई है।

१. दलपत विजय—हनका निता मुमाण-रामी नामक एक यथ प्रतिब्र है। ये मेताइ के काता गुमाण (दूसरे) के ममकाबीत माने जाते हैं। कता ब्राता है ये जाति के भार थे। मगरफर नाहरा ने जो के मिला है जाने मनुवार गुमाण में में क ८०० में ६०० तक कात्म दिया था। मना मही नमस बन-पत विजय का टर्स्ता है। थी नाहरा के मनुवार दल्यन विजय जाति के भार नहीं बंधि तपायक्य के बोई जैन सामु में जिहाने सल १०३० में १०६० की वी विन्ती ममस मुखान रामी की एका सी थी। उक्त क्यन माथा को देगते हुए हीर ही है।

२ नरपति नाग्ट्र—रवर्ष वानि, कम निर्वि सादि वे विषय में निरिष्ण कम में हुए, भी साद नहीं हो सदा है। वॉर्ड एर्ट्र एका, कोई माट बोर कोई स्थान वाहाण कहता है। उनते दर्भ दीमा देव सभी वा त्यान हिन्दी नाशिया में बड़े महाब का माना बाता है। इसने रचना वान वे सम्बन्ध में वहुँ समिद्र है। एक्सी भाषा को देन कर नो उने १६ वा सानाही से न्हों का मानने को में नहीं का नाशि हा औरोप विषय सम्बन्ध माना ने स्थानित कम के र्यवस्था नरपत्त हुए (40 दिश्य) मेर कार्य का स्वस्थान मानाही हुए। मीनाही वि

सप्रत-वेश

महादूर्गार नाप्त इत रामी का निर्माण कात में १३१८ के मान पान ठररता है।

बीनादेश रामी एक बर्गुना मक शाम्य है जो

(४) जल्हण:-ये बार बारा वे कार्य हा

चार की राज्यानी, क्षिण करूर शापारण तथा

क्या भाग समिक्तर सनैज्यित है। स्ट भंग तो इत्या है कि बायद कोई संद ही ऐसा निक्त

जी रुद्ध रिक्को ।

ये। इनका निसा हुमा कोई प्राय ग्रंभी तक की ३१६ रहसे में सम्बन्ध हमा है। इसकी मारा बोच-

में ह्या ही नहीं !

मिता । सेविन प्रसिद्ध है कि प्राचीरात्र राते है

तिमातिसित होहे के बार वाजी धेत है. ही

द्यादि द्वारा सवि वति यन, वनि हुरी हारात्री

- चंद नाम का कोई कवि पृथ्वीराज के राज्य वर्ण

उली का निगा हमा है :--

१. पृथ्वीराज:—ये बीशनेर राजवंत में में ये। इतका जम्म विक से० १६०६ के मार्गतीय में इमा या। सम्राट् प्रकर के प्रतिद मेनायति महा-राजा रायसिंह इनके बारे भाई थे। पृथ्वीराज बडे बीर, स्वदेशाभिमानी एवं स्पष्ट भागी थे। ये सहूदय विव होने के साथ ही संस्कृत साहित्य, इर्रात, ज्योतिय, संद शास्त्र, संगीत शास्त्र आदि वई विषयों में भी यारंसत थे। इनको स्वत्य 'वेती कृष्ण क्वमणी दी' विमान साहित्य में प्रगार रस का सर्वेतिष्ट प्रंय माना जाता है।

हममें श्री कृपण के साथ रुवसणी के विवाह की क्या का वर्णन है और भाव, भाषा, मापुर्व, सीम सौर विषय सभी दिख्यों से यह सपने पह बङ्ग का सप्रीत के । इनके "स्वाद रावडत," 'बन्दे-रावडत,' और गंड्रानहरी नामक बीन पंच सौर भी हैं। इनके सिवाय दनके एसे दो एन्द सौर बहे वाने है—प्रेम दीपिया, सौर श्री कृष्णु कविमाणी

2. दिरवरदास — देशना जन्म मारशाह राज्य के बादेग नायक गांव में मंठ १४६४ में हुया था। ये जाति के बारण थे वे उच्छ कोटि वे जात थे। सम्मे तथा में वे देशवा की तरं पूर्व जाते थे। सोग दरें "तिवा की सर्देशवा" कह कर रत्ना सम्मान करने थे। दनके पंची के नाम ये है—हिर राग, धोटा हिर राग, बाद की ताम ये है—हिर राग, धोटा हिर राग, बाद की ताम ये है—हिर राग, धोटा हिर राग, बाद की ताम ये है—हिर राग, धीटा हिर राग, बाद की ताम ये है—हिर राग, बाद की ताम की ताम ये हैं की ताम की ताम की ताम ये हो ताम से ताम विकास की ताम की ताम विकास की

रे. दुरसाजी—ये धारा गांव के कारण दे । रत्या जन्म सक १४१२ में तथा देशकरात १७१२ मे हुमा। ये राष्ट्रीय निव ये। महाराखा प्रतार नी प्रमाना मे निस्ती हुई इन्हों शिक्टबहुत्सरी का एक-एक दोहा प्रपने डंग का प्रमतित है। ये पकते कृपा पात्र ये। सन्दर के प्राप्तित होकर भी इन्होंने कभी एक राज्द भी उनकी प्रमाना में ने निस्ता। यह एक ऐसी बात है जो इस्सानों को मन्याप्त बारखी में ऊ'सा उठा देती हैं। इन्हों विदेशा है

सक्बर समद सपाह, तिह इबा हिन्दु सुरक । मेवाडो तिला मोह, पोयल कुल प्रताप सी ।।

४. मुह्एगोतनैसासी—ये जोपपुर के महा-राजा जसकतिसह (सपम) के दीरान ये। इनका रचना कान १७२० के सममय है। इन्होंने दिगच यस में एक इतिहास चन्य निकाहै जो "मुह्म्मोन नैसासी रचना" के नाम में प्रतिक्ष है।

 सान—इनके बंग, माता-पिना के संबंध में बोई जानकारी नहीं है। इन्होंने "दाब दिनाग" नामका एक एक बनाया दिमकी समाप्ति १७३० में हुई थी। इतिहास क्षेत्र काम दोनो हुन्दि से बढ़ एन्य महस्वार्ग है।

रसके धतिरिक्त मध्य बात वे धन्य बिब बारर, शीघर, मूत्रो, शिवराम, दयानदाम, हरिदाम, बीर भाल बनावी व बरलीदान घादि हुए है।

उत्तर काच (म॰ १८८०--१११७)

वलीमधी धाताओं के प्रारम्य में मान मान दिवन माहित्य वा उत्तर बान भी प्रारम्य होता है। भागा और दिवय रोती की हुएती है। को क्यान की सम्मानुर्धी परित्येत हुए हैं। बोक्यान की सम्मानुर्धी और सम्भागा, दिवन वर भागा। प्रमान समाने मोर्गी और तर वाभी वा क्यान हुए बुध हुएतु मीता, एम महित्या दशा मान बैटिक और रोहित्या हुएतु में है। हुएतु की हुएतु की हुएतु की

पारसी तथा बज भागा के प्रकार पंति हैं है राज्यानी और धन-भाषा मिश्रित इस दिवन बा नाम माप ही साथ इतिहास के एक बर्ड की शहर दे। क्ल दिहारा ने "कविम दिवार" स्था है, जो ठीक

बुन्द, गिरधर विदिश्य की भातिही संवीरण के ही दरीत होता है। इस बाद में बाबीदास मादि दी मिलिकार थे। एक करियों ने ही विएवं दियन में करिया की है

मुर्यमन-पे बु'दी के राज्य दरशरी विद वे। दर क्षानपूर्वक देवने से इनकी भाषा पर उक्त दो इनहा जन्म चारहो की मिथना याना के ट्र^ह भे

भारतमें का प्रभार हरात दिसाई परता है।

लक्षीतर के ब्रासित थे । इस्तेरि "ब्रायश्य" सामक

एक प्राय कराया जिसका दूसरा नाम 'पानित-

कप्रता भी है। इंग्लर निर्माण में १ १०० में मान

क्त तन्त्रका है। इत दत्त के प्राचार वर गायी ग्रंथ

हिल्ल बक्त के कहरदार की मा सब है है।

शोरी साच-ये बीकोर के महाराजा

बीर मध्यशातीन टियन में योडामा मन्तर है।

हित कुत्र में विश् संठ १८७२ में हमा। गु^{हेंदर ने}

का पता नगता है। बोरीशम संस्ता, सिरा

सं रिवाह निये में पर इनके नोई सन्ता नहीं हैं

ये बड़े दिवागी, मधर, गुनुत भित्राच एवं व्यवत

ब्रहात के पुरूष में । सहदान कवि होते के मिल्हर

मूर्यमन एक तक्य कोटि के विशास भी थे। पर

बग भारतर, बार्चत विशाय, संशा महत्र परे

tt titt fra s dan an an an erst ti

संत-साहित्य

नेखक-श्री रामनाथ 'बमलाकर', राजन्थान मार्बजनिक सम्वर्ग विभाग, जन्नद्र ।

ग्रंत मानव जाति के ऐमे जगमगाते रत्न हैं जिनके मन, बाली और कर्म के दिव्य प्रकाश से मानवता वा पथ भानोवित होता भाषा है। सन्तो ने अपने नि:स्वार्थ जीवन के आदर्श से ममाज के हदय में सोई हुई परमार्थ-परक भावना को जाएत भौर विवसित किया है। उनके सात्विक विचारों ने भानव-प्रवित्यो नो ऊंचा टठा कर परोपकार भौर नि.श्रीयस की घोर उन्मृतः किया है। सन्ती की लोश हितैपिएरी प्रवृत्ति से मनुष्य को "बहजन हिताय बहुजन गुलाय" जीने का संदेश मिला है। सन्त साहित्य की सुधा ने ईंप्यां, ह्रेच और मारकाट से भरे लोक में एक धली किक शास्ति के सम्दर्भ कानन की सृष्टि की है, जहां भटकी हुई, प्रताहित और सतप्त भारमध्यो को जीने का सदल मिलना है। तुलसीदासजी के दाइदों से सन्त आस के बक्ष की भाति दूसरो के लिए ही पत्रता-पूलता है। सल्बा मन्त संसार को देता ही देता है। ससार से कुछ सता नही है। महान्या गुन्दरदायत्री ने सन्त की देन वे महत्व का प्रतिपादन कितना धन्तरा किया है.-

साबो उपरेश हेत, अबी र सील हेत, ममता गृहांड हेत, हमति हरत है। समता गृहांड हेत, हमति हरत है। समरा रिकार हैत के स्वीत हेत हैत स्वीत होती हैत स्वीत स्वीत हैत स्वीत हैत स्वीत हैत स्वीत हैत स्वीत हैत स्वात स्वीत हैत स्वात स्वीत हैत स्वात स्वीत स्वात हैत स्वात स्वीत स्वात हैत सहस्त स्वात स्वात स्वीत सहस्त स्वात स्वीत स्वात हैता स्वात स्वीत स्वात हैता स्वात स

सभार के प्रतन् ते सन् की घोर, प्रत्यकार में प्रवास की घोर तथा मृत्यु में प्रमरता की घोर ने जाने वाली सन्त परम्पा भारत के पति प्राक्षित वान में बनी घाती है। सतवाणी के उदाहरण सर्व प्रयम वेदिक साहित्य में उपलय्ध होते हैं। ज्यान केद के वितयय क्यांत्र मास्त्रणी मूत्ती की घोटी हिया जाय तो गेय सारा ज्यांदेर सन्तो की बाणी ही हैं। सामवेद तो ज्यांदेर में के ही मननो का जुलाय है, दिनवी एक वियोय दग में सायगाटियों ने क्यर नियं दना रंगी घो।

वेदों में 'एवो बढ़ा दिनीयो नास्ति' मर्पान् एवेदवरवाद का प्रतिपादन हुमा है। उपामना के लिए उपामक एक ही बढ़ा के भिन्न-भिन्न कप पमन्द कर महत्ते हैं:—

> एवं सर्वित्रा बहुषा वदन्ति । ग्राप्तियम मार्तारस्वानं ग्राहु ॥

वेरी वे घरवान् मलवात्ती वा दूसरा आविष्यंव भगवान बुद वी गायाची से तथा तीसरा आधिर्याद दक्षिण वे चीव चीर वैभाग कर्मा से सिन्दान है। वेदवार्ती, बुदवाती चीर वीराण वें। तामन वाली ही वह मुक्त्रवरी है जिनसे से बार को नारी चारतीय भनवारती वी सनन वाली प्रसूत हुई।

दलर पारत को सन्वर्गात के जावस्वात की देत विशेष महस्त्राण है। की ता प्रक्रवात का करीत करने बीरता, की कीर वरावत के लिए बर दिस्मात है हो, बर्ट तन नेट्रिय का स्वत की पुरत काला के हुआ है। हुनि राजिंग, काला

गरमवासी से पवित्र दिया था। इतही द^{ार्थ} द्यादवान, रुख्यदेशी, बमनशी, पाजिद्य जी, स्वामी नवीरराम की बाली के जोड़ की मानी बन्ते हैं। राज्याम, बरगाराम, राज्यो बाई, दया बाई, द्रार्मन दारूरपात ने प्रेमतात की को बर्चतता की हैं वा बन्धे ने रावस्थात की मरुएनि में बदली बाली में

रिर्हाण मृति के बादरर की बारगतरत बराई है।

मनि रामसिंह

श्रीर के कप्यास में पूर्ण श्रीत निले हैं । सुनिजी का एक देव पारव कील प्रकृतित हो पता है।

इंडबी भाषा बसाहा बर्पांट बाधारा है जो हिसी के हुई अपोधि में एवं है। इन्हें दोनों से सप्तिपत्ते

um fafent ribnt fi gibre fa uming !

र्दिशाली हरणीत हुई श्रीत्य प्राप्त सशाबाद सम्य ॥

et efect et et uring ? --

भैत हति रामिति ने ११ भी शतान्दी में जन्म

रन में तिला अनुभूतियों हैं। इनकी भागा भी की उदार और जानगर है।

मर्म को बेघने बाती गुडमातिगुडम हट्टि होर का

बहुत कंची घौर बहुत गहरी है। शके बच्चे है

माने जियान प्रमु में को हि हुएवं के बार है

निवास करता है मितन न होते के बारण पर

अब सनि मीन स देनिये, परग्र मिने ब बारें।

एक मेन मंगति करे, यह दुल महान प्राहेत

बरा बरो बेंगे मिरे है तारी मेरा की री

को कित्रती 'तातावेती' है---

ज्युंहम सोरें स्पृत् जीरे, हम सोरे पे तू नाहि तोरे ॥ हम बिसरें पै तुंन बिसारें. हम बिगरें पै तुं न बिगारे।। हम भूने तुं झानि मिलावे, हम बिह्नु रें तूं भंगि लगावे ॥ तुम्ह भावें सो हम पै नाही, दाइ दरसन देह ग्रमाई।! दाइ सर्वतोभावन प्रभु की धारण मे रहे-त साहिब मैं सेदक तेरा.

भावै सिरि दै गूली मेरा। भावे करवत सिर पर सारि. भावे लेकर गाइन सारि। किन्तु ऐसी चारएगगति में किनना धानन्द है, दादू ही इसका उत्तर देंगे :---

प्रेम लहर की पालकी झातम बेसे झाइ । रादू खेले पीव सी, यह मुख बच्चा न जाइ।।

रञ्जद जी

संत दार दयाल ने शिष्य राज्य ने दी संबो वीरवना की "बाणी" और 'सर्वनी"। सहया से दनकी साखियां ५४२० भीर संग २४ है। इतनी बडी गप्या मे शायद विकी भी धन्य सन्त ने सालिया मही बही । एउडडरी ने बदिल, सबैदे, धरिन्त मादि मनेव रान्दों में रचना की है। इनकी रचना मधिकतर राजस्थाती मे है और श्रत्यन्त ही सरस है। इनकी कुछ सालिया और पट बट्टन इस है। सासियां उच्च बोटि वी हैं।

राम का रग रज्यब पर नहरा कहा। प्रश्न के देव मे उनकी रहता कीर उनका सर्वस्य समर्पता tair !-

साम रंगीन के रत सानी।

परम परुप संगि प्राण हमारी मगत गलित मदमाती। साम्यो नेह नाम निर्मंत मुंगिनत न सोली साती ॥ रगमग नहीं घडिंग होई बौठी, सिर धरि करवत काती।

सब विधि मुखी राम ज्यूं, रावै यह रम रीति मुहानी ॥ जन रज्जब धन ध्यान तिहारी. बेर बेर इति जाती ।

वयमाञी

बयनात्री नराले के निवासी तथा दादू दयाच के प्रधान शिष्यों में से पे। इनका कठ बड़ा सुरीला या । इनकी ग्रुट भक्ति बड़ी गहरी यी । साहित्य की इंप्टिमे पद्य रचनाएं उत्कृष्ट कोटि की नहीं है किन्तु भगवान के घरणों में सर्वस्वार्थण की भावना इनको बहन बड़ी थी। बयनाजी ने दुंडाडी में सीचे-सादेशस्त्रो मेसस्य काऊ चा निरूपण भीर मानिश के बिरह का बड़ा सबीव विश्रण किया है :-हरि धावे हो बब देशों भागण स्टारे ह कोई सो दिन होई रैजा दिन चरणां घारै॥

+ तारा विलालां मोहि बिहावें रेलि निरामी। बिरहर्णी विभाग वर्रे हरि दरमन की प्यामी ॥

प्रेम के स्थारार में निरंका कौश करता पहता है। निरदेने परभी प्रीतम निप बाये तो भी बचनात्री की राय में यह कौशा "महंगा" ही है। बचना इहि स्पीरार में टीटा मनहेन सारिए। सिर साटे में हरि मिने, तब लग महरा जागि ॥

द:बिरबी

रत पटात के हरव में करता का बीट तम उसरा बद हिंदर दिनी जेरन में हिस्सी दा लिकार करने काने में ३ जीर कमान सीप कर दलका लिन्नीली राहरवार जेंगा सरहर प्राप्त हुमा।
होते परित्न एत में मोरा मेंगी पर प्रवाद हुन्दुल् तत कारण दक्ता की। दक्ती भागा में मोर हे प्रवाद है। बारणा मोर देत की मोरामा र दावी दक्तां माना भागायों है। देत की लियन लक्ष्मी दो एक देति।
हो दी दी है।
हो से दी है।
हो ती ते है।
हो ती ती है।
हो ती ती है।
हे पूर्व लगाव कि बादा बायकी।
हिता दा लगाव की को प्रवाद की।
हिता दा लगा की को प्रवाद की।

हरत दर प्रशिक्षण करते रहता^हेते ।

तत जीव---देस की घोर सदयसा। बारकी

'नव परिणीता से'-

तुम ऋाई तो

तुम पार्ड तो देहरी द्वारे ग्रुज गई शहनाई, कुहुन-कुहुक कोकिल कंठो ने भ्वर गागर दुलकाई। कन्दिपन इस रुप सुरा को चन कर पादिनियां बोराई, मिणिल छु परालो प्रतकों में अन्य-रुतक क्षां सार्पित छु परालो प्रतकों में अन्य-रुतक क्षां सार्पा राप्ता है। तिद्वल स्विन्ति सी पतकों में मादकता ने तो प्रंगडाई, अवा कुमुम में चरणों को छू प्रागन को मादी सुम्बाई। प्रस्काई तो हरियान ने सत्य-रुत्ति हुम्हानें निर्पाई, स्वान उदावी को छुवा को छेट गई नटएट पूरवाई, मुने मन को परती परती छित प्रावासों में प्रंपुराई। वरती में प्रावासों में प्रंपुराई । वरती में भीगी-भीगों से मूनी प्रंपिता फिर कन्दाई, सहदी रचे तथे हार्यों फिर टग्टर होलक परगई। वंतना स्वन्तई, क्षेते प्रावासों विद्या हुनके परो प्रजित्व एताई। क्षेत्रता स्वन्तई विद्या हुनके परो प्रजित्व स्वार हो।

कु. हेम _{एम}. ए

हुम जहात्र में बाम तिहारो तुम तकि मनत न जाऊं। मो तुम हरिजूमारि निकासो भीर टोरनही पाऊं॥ वरणवान प्रमुसरण तिहारी, जानत सब संसार। पेरी हंसी सो हंसी तुम्हारी, तुमहुदेनु विवार॥

सहयो बार्ड व दशाबार्ड चराणुडामयी की रिप्पाणुंची। इत दोनों सत कविवरियों ने भी सेत साहित्य की थीड़िंड की है। इर सहिसा, बैराग उपसायन, शुभिरत झादि सनेत झंसी पर दनकी मुन्दर रेक्नाएं है। रातनाह के सावनाव जी १० वी राजाधी में एक असिंद संत हुए हैं जिल्होंने हरिएस, वर्णविद्या, हरियोचा निकर्णक परमाण पुरुषर सबद और जीव सममीतरी इन्यों की रकता की दी 1

मल में सनको परिच करने बानी बागी के समय रचनावार इन संतों के चरगों में खदावनि सर्पेग करने हुए में सह पातन प्रमय नमल करना हु।

पूर्वी ऋंचल का प्राचीन काव्य

(एन्डन) १२ पान वीर्य मोनुस्य विवार्यमेव इन विवदी, भी महाराष्ट्रमार नागीय, भी गर

साहित्य में इस प्रवार की पुस्तकेंबहुत ही कम मिलती हैं।

२. बलअट्र फे शिखनल पर मनीराम की टीका—हिन्दी संतार प्रायः यही जानता रहा कि बनप्रद पर सबये प्रवम टीना गोपान निव द्वारा संट १८६१ विच मे हुई। विन्तु हमारी सोज मे मिनी पढ़ टीवा सिद्ध करती है कि गोपान निव में टीवा में सगमग ४० वर्ष पहले हो सब १८५२ में मनीराम निव द्वारा इस पन्य-पल वी टीवा की जा बत्ती पी-

भष्टादम व्यालीम में संवत मगतिर मास । इप्ए। पक्ष पार्चे मृतियि मोमवार परगास ॥

विसनीराम की इस टीका को ही दलभद्र

के तिस्तरण यर प्रयम टीक्स मानना चाहिए।

1. वयन विचान—िरुपी संनार में यह माना
जार रहा कि देव वर्षि सनाटक प्रयुक्त थे।
हिन्दी माहित्य के प्रयाः सभी एतिहासी ये एती बात
वा समर्थन किया गया है। दिन्तु बलावर्सात्वही
के माश्रित कवि भोगीनात की रत पुनक से सिद्ध होता है कि देव विव बाज्यपुरम बाह्मस्स होता है,

कास्यय गोत दिवेदि कुल कान्यकुरत कमनीय । देवदल कवि जगत में भये देव रमणीय।।

У. प्रेम इतनागर—राज्युमार स्तत्यात के व्याधिक देवीयल का निज्ञा यह उन्य प्रेम को व्याध्या इतने गुन्दर और वीजातिक इस में करता है। कि देवलर आरखें बहित होता बहता है। माध्यारणकरा का प्रकार के प्रेम भी हिन्दी नारित में तीन हो। मिलते। 'जबील' वा 'तेर-निराल' भी कुछ इसी प्रधार का इस है। मिलते वा 'तेर में हरहर वा मुनदर सीर मोधारण विजेवल है के के हो में देवल हो है के हो के ही ही ही ही ही है। हमारे प्रेम करता है। हमारे प्रकार करता है। मिला प्रकारण हमारों के में हमारे प्रकारण हमारों है। हमारे प्रकारण हमारों हमारे प्रकारण हमारे हमारे प्रकारण हमारे प्रकारण हमारे हमारे प्रकारण हमारे हमारे हमारे प्रकारण हमारे ह

'प्रेम को निरुप', 'भीत हंस मादि को प्रेम' तथा धन्य मनेक उदाहरए। इच्टब्य हैं।

१ विचित्र रामायण् — बनदेव वैश्य (संदेन-वान) छुन यह रामायण् वास्तव मे निवित्र है। बानकाष्ट तथा उत्तरकाष्ट के दार्गित प्रमंगों के निवार कर रोप क्या का विभागत १४ पंत्रों में किया गया है। इस क्या ने काध्य और क्या दोनों की प्रतिमा मिनती है। स्वान—स्थान पर केशव का भी स्मरण् हो माता है। प्रदृति वर्णन इस बाज्य में एक मीर विशेषता है। गुढ काम्य की हिट ये यह पुत्तक एक उच्च स्थान की मीध्यारिस्त्री है।

६. राधाममञ्च-पार्वती मंगव, जानवी मंगव तथा रिम्मणी मंगर के नाम तो मुने जारे हैं दिन्तु मलब के विव पुनीई समनारावण ने साथा मंगव उपस्थित वर्षने साथा थीर वृष्ण वा विचाह भी विधि विधान में क्या दिया है। इन पुनतक में बल्दना वा धर्छन प्रयोग है धीर वह वी विवाह पद्धति वा गुरन तथा नजीर विवण चिर दूधाजानी वरसाई। पुनन वी मुंडन दुरन गाई। ध्याव

पूरी तरकारी पानरि भारी और मुहारी भान बनी है बाधों मन प्यारी मान नुस्हारी बेनी कारी मान बनी है भारि को स्वारीय रिनक हो समझ सकेंने हैं

अ. सिरवर निलाम—स्वीत उपवराय निलाम यह एक ऐंगा मुख्य भवत है जिसन साम न कारण की बागो के साद-साथ उद्दृति का तब सर्वाद किया की उद्दित्त किया रहा है। ऐसा सम्बन्ध हैने नहता है जैने बहिने पर्वेग, सरीता, हुए, यह जाति सभी की मेन्या अध्यत कर दी हो। यह जमन द्वारा हो। इस की नी साथी का एक हमा है। इंड स्वाद है। स्वाद कर हमा है। इंड स्वाद हो। हमा की नी साथी का एक हमा है। इंड स्वाद है।

पूर्वी ऋंचल का प्राचीन काव्य

रेयर-- ३० मोनीनान मुप्त, रम. ए., मी. ही., बी. रुच. खी., रम. मार. ए. रह., रम. ही. व ("पर्न) हें क्रान बोन्द में न्यूट विवार्टमेंट हम हिस्सी, भी महाराज्युमार कार्यन, रेप्त

रीरम्पान के पूर्वी बांचन में में 'सत्त्य प्रदेश' को मन्मितित कर छा हूँ। विराद राजस्यान बनने में पूर्व मतरह, मरतपुर, मौतपुर भीर करौती षार रियानतों में निमित 'मास्य प्रदेश' नाम का रह संघ का, कुछ ही दिनों परवार यह संघ राज-बनात का एतं संग चन गया। सैने सपने योग का रिचय प्रणी प्रदेश के इस्तिनितित साहित्य की िला और मन १०४० में मन १६०० के बीच बिए रणकार पर बाता ब्यान केन्द्रित स्था। रामके बरी साधित थी, बिन्तु उसने बुध ही सोव का उपक्षेत्र कर गका, सौर वर्गा का एक संशिक्त विवसम्बर्भ प्राप्तिक कर काहै।

मों इसे मिरेक्सी के बाधार पर करा जा ररा है दि इस बांस के साहित्यकार प्राय: कार्या किक दे। इस्त्य संकृति सी वेतत भोगी के धीत होते. गुननहार बार्ट ने कहे थे जान पान्छ रा. १ वे ^{दे}रारो चराहे हैं । यह बाच मानकी परेसी रेंद *करी देशांचेद अ*द्या देसदे दिकास में कालाओं र् कृत राष रहा रहिनाराची में प्रमुखना करणाहे, क्षेत्र क्रान्त्वर के क्रान्ति आहे, क्रेन इंगान बीद (१ इन्तान), बमानद बान, बार्मुनदान कार के का काम सकत वहुद रहात), राव्यक्र सकता कार १ करणा काले का क्यान प्रापः सावन यात के के वे बाक कुछ करने देव, कारणहे, में छ, the and american the free are Contract to the party party

estimate the second

परिवार के लोग स्वयं भी की है मस्तपुर के महाराज बल्देवलिंह, बनार हे रू बस्तावरसिंह भीर विनयसिंह, मशाहर है ए मलीबस्त, करोनी के राजपुनार रागा है भरतपुर की महारानी अगुपतीर मारे !! साहित्यवार थे। दुग राजायो को रहता ! यारे में यह बहा जा सबता है कि शांश है" राजामीं द्वारा होता बहुत बड़ित है. अस है उनके बाधित विद्यों ने उन स्वाह्यों के लिये माने धाश्रमदाता के नाम वर काण है हमारा यह मनुमान उन रनतामो की उन्ह^{ान है} नारण ही है और इने हथ धनुनार नार है हैं पारते हैं बयोकि राजायों में भी एक मने कर्त पुरा ही सकते हैं और पुराकों में की वार्रा !! है उनकी उदेशा भी नहीं की बाजा^{हर हो} मो राजा ने साथ करी वा नगी है ^(इ.स.) मरेग के राजाओं ने क्या त्या करता करता है के मोर बहुत ध्यात हिसा। जीवा^{रात हुँह}ैं

उसने से भुष्य गुरुषकों का उनेत कर रहा है। रै संपंधा भक्ति सम समा^{कता ज} मुख्यम के समय में लिखान क्षा^{त हरू है} बर दला न वेररवार्यका सम्बद्ध पुरस्कार बहुत कर सका-

त्रदे इव पुरस्कार नदेवत्रद^{्धाः} सरे रहेशा सन्त अध्यक्त मन्त्र जना । वार् नवपा भान द्रांग हत है है। " Cerrent mer mar gen un aret."

माहित्य में इस प्रकार की पुस्तकें बहुत ही कम मिलती हैं।

२. यलमद्र के शिखनाव पर मनीशम की टीवा—िह्नी संनार प्रायः यहाँ जानना रहा कि बनमड पर मबने प्रथम टीवा गोरान विद्वारा गोरान के द्वारा गोरान के दिखा गोरान के दिखा गोरान के दिखा गोरान के तिया में के दिखा है कि गोरान कवि की टीवा में समाम ४० वर्ष पहुने हो मन १८४२ में मनीशम विद्वारा इस ग्रम्थ-दरन की टीवा की जा सुरी थी-

भप्टाइस व्यालीम से मंत्रत सगसिर मास । इप्पापक्ष पार्चे मृतिथि सोमवार परनास ॥

वित मनीराम वो इस टीवा को हो बलभद्र के शिखनस पर प्रथम टीवा मानना चाहिए।

३. बयत विवास—हिन्दी सनार में यह माना जाता रहा है कि देव विवि तनाव्य बाह्य में । हिन्दी माहित्य के प्राय. तभी रितहमों में रही बात वा नमर्थन दिया गया है। दिन्दू बत्तावर्राहित्यों के माहित विव भीगीनाल भी रत मुस्तर में विद्व होता है कि देव विव बायपुरूत वाद्यागु थे, तबाव्य तहां मानाव्य त्यां व्याप्त वाद्यागु थे, तबाव्य तहां मानाव्य त्यां वाद्यागु विवाद वाद्यागु थे, तबाव्य तहीं ।

नास्यप गोत दिवेदिशुत नात्मगुरत नमतीय। देवदल नदि जगत में भये देव रमलीय।।

भ. प्रेम रतनागर—राष्ट्रकुमार स्वत्यात के साधित देवोदान का तिला सह स्वत्य प्रेम को स्वास्त्य रावे के कुनर सीर वैद्यानिक दगमें करता है। कि ते तिवह सामवर्ध चित्र होना पडता है। सामयायावार का प्रवाद के बाँच भी हिस्सी सामित में कि तिला के भी ती जो कि ती मिला के मिला करता है। स्वत्यों स्वत्य करता में मिला करता है। इससी स्वत्य करता है। स्वत्यों स्वत्य करता स्वत्य करता है। स्वत्यों स्वत्य स्वत्य करता स्वत्य स्वत्य स्वत्य स्वत्य करता है। स्वत्य स्वत्

'प्रेम को निरूप', 'मीन हंस आदि को प्रेम' सपा धन्य अनेक उदाहरला हष्टच्य हैं।

१ विचित्र रामायगु—चनदेव वेटम (तरेटन-वान) इन यह रामायगु बास्तव में विचित्र है। बारताण्ड तथा उत्तरकार के दार्गितर प्रभागों को तिलान कर गेव वया का विमातन १५ मंत्रों में विचा गया है। इस तत्म में काम्य मोर वया दोनों को प्रतिमा मिनती है। स्वात-स्थान पर केयव का मी स्वरुग हो माना है। प्रवृति वर्णान रास वाच्य वी एक मोर विगयता है। युट काम्य की इंटि में यह पुनक एक उच्च स्थान की मिथरगिश्मी है।

६. राधामगन्न--पार्वती मंगन, जानगी संगर तथा रिस्तणी संगर के नाम तो मुने जाने हैं हिन्दु सारम के नीन पुजीर रामनारामण ने रामा सान उत्तरियत नरने राभा और इन्छान्त विचाद भी विधि तथान से न्यारिया है। इस गुम्मक में नरना ना सह्युन प्रधोग है और जब नी विचाद स्थात ना पूर्वत तथा नजीर विन्युम किर सुधामनी नरवाई। बुटुन नी मूं उन बुटुन नगाई।

Cच व १

पूरी तरवारी पानरि आसे और मुशसी भान पनी | बापो भन प्यासे माग नुस्तारी देनी वानी जान बती | भारि को स्थानीय समिक ही समझ सकति |

७. शिरवर विलाग-स्वीत उपवराम नितित सह एक ऐसा मुप्तर पान है हिमने साम ने स्थाय की बसने से मान ने स्थाय की बसने ने साम ने स्थाय की बसने ने साम न्याय प्रहात का एक महीन किया मिल की बसने किया मिल की बसने किया मिल की बसने किया की बसने की बिता की बसने की बिता की बसने की बिता की बसने की बिता की बसने की बीता की बसने की बीता की साम ने बसने की बीताओं की एक स्वास की बीताओं की एक स्वास की बीताओं की एक स्वास की बीताओं की प्रहास की बीता की प्रहास की प्रहास की बीता की प्रहास की प्रहास की बीता की प्रहास की प्रहास की बीता की प्रहास की प्रहास की प्रहास की प्रहास की बीता की प्रहास की

G-11-4-11

पीन राग रंग रिनंत निरोमित, नामर नत्पार नंद निरोर । विरक्षत पटन पीन पट मंघन, पंचन चटन पनन चर्नु मीर । द राम-करणु नाटक, हनुमान नाट

 शाम-करना नाटक, हनुमान नाटक, क्याररावन क्या क्या-च्ये तीन उपयोग प्राप्त निवा भारत के बन्दे । इनको क्ये तो नाटक क्या के व्यक्त होता है किन्दु उनमें को गर्किया कोर तीत पाँ नाती है जमने क्यापर कर हम इन्हें नाव को गर्मिता कर क्यान दे गरते हैं।

हरते नात को मार्चन्या पर प्यान देनको है। परि इतको प्रध्य-स्थय के नात्क मात्र में तो कोई धर्मुचन बात्र तहीं होती। इत नात्को पर शंक्षा के नात्कों को साधा है और हिली में एक सुप्तर उपने हैं। हिली के नात्क नाहियं पर काम करके नोत्ति हिहाकों का इन सेर्ट मी प्यान अगा करिया

8 साम द्याम—दंग पुरुष की नीत लंदाय भी पह लक्षी है। ताम नावम निदय में लाए देव साम देव की निर्माय दिल्ला है। योच प्रधान के नार में, योच दिल्ला है। योच प्रधान के नार में, योच दिल्ला है। योच प्रधान हुए दी प्राप्त दिखा तर है, तर्मार्गक प्रधान देव कि निर्माय कर है, तर्मार्गक प्रधान हुए दी प्रमुद्ध है। तर्माय कर है, तर्मायक प्रधान हुए दी प्रधान योच प्रधान कर है। तर्मायक प्रधान कि नार्मिक प्रधान योच कर कर कर के स्थान दिलाव प्रधान देवार में वर्षा है। प्रधान है जिस्स पर स्थापन स्थापन के प्रधान के स्थापन स्थापन कर स्थापन स्यापन स्थापन स्थापन

केन्द्र कुल रिकार करिन हाकी विज्ञान है। जब सकता करिका करिन अधिक अधिक स्थापित

का बहुमान नाटक।
तीत उपसाम इत्तर हो है ताप हो समे बांतु प्रायः सभी मार्गः ।
दनको येत तो नाटक ।
जात ने तो नाटक ।
जात प्राया कर हम ।
जार प्राया पर हम ।
नार प्राया ते तो ।
जी । इन नाटको प्राया ।
हम दे भीर दिनो में एक ।
हम दे भीर दिनो में एक ।
हम द्वार वह हम ।
जार प्राया कर हम ।
जार कर हम |
जार कर हम

सद्वार महत्त पत से जानियां कर दिया ।

हैं रे. भाषा-भूषण की टीशा—मान देंगा की वह टीशाम के नाम मिता है। के पते कर की, पहार महि की, पता कहि की हैंगे, विश्व किया कर कर की हैंगे, पता कर कर की हैंगे, विश्व किया कर कर की टिल्का कर कर की टिल्का को है हैंगे के क्षेत्र की टिल्का को देंगा के क्षेत्र की टिल्का को देंगा के क्षेत्र की टिल्का को देंगा के किया की टिल्का को देंगा के किया की टिल्का क

इतिहास प्रधान ये दोनों बीर बाग्य दा है

विशेषता है। 'मुजान परित' प्रशादित हो हैं।

है मीर 'प्रजाप रामो' रामस्मान पुरात्त्व मंदिर प्राप

मेरे संपारत में प्रकाशित होते को है। इर रेप

काम्मों में उन्य कोटि की बोस्ता के दर्तत ती हैं?

र्पके क्रिक्टिंग तथु सर्गाय, संस्टर क्रिक्ट क्रम्ब क्रिक्ट प्रकृति हो है है

ind Mr. Sixwa F. 199

राजस्थानी लोकगीत

लेखिका—लक्ष्मोकुमारी चृडावत

ल्होंक साहित्य जन-जीवन का दर्गेण है। जन मानत की धावांडाधों, मावनायों तथा क्लनयां का स्पष्ट प्रतिकित्य लोक साहित्य ने जपनायाता रहता है। जन समाज ने धाने हृदय के समस्त एस धौर पीडा को उदेश कर लोक साहित्य में भर दिया है।

कोटि-कोटि मानव ने सपनी महसूर्यत थीर स्रिप्तयक्ति को गरू-पारि दे लीक साहित्य की प्रता की। जन मानत ने बढ़ी कहा जो जन-जीवन मे हैं। सपनी बामनामां को दिरामा नहीं, रूप्याओं को दनाया नहीं और न नि मान्य की साहब्द स्वापा। जो महसूर्य किया उने दिना मिनक के सपनता में गाइर कहा। मानता की दुर्वनताओं को भी साहब के साल स्वीकार किया। हरूप का पार्य कभी नहीं साना का स्वीकार किया। दूर्य का पार्य कभी नहीं साना । स्वीतिय लेक साहित्य के सीति स्व देशता मा रहा है। यहां भोक साहित्य की प्रतिविद्य देशता मा रहा है। यहां भोक साहित्य की

यों तो दिरव भर वे मानव वे मनोभाव रप्तामें, पावासामें योर वाभागों एवं हो होनी है। राग, दिराग, पूछा और सेम मभी में है। मिनने पर सभी वी साथें मोहाधु ने सबत हूर है तथा निरुद्धने पर सभी ने सबत दीते हैं। उसक पर मानदिव होना पूर्व दुस्त से हिल्ल होना भी मानव बीदन वा संग्रही है। मिन्न र देश एवं प्रदेश वा नोक साहिय, मोबसानस दी हुस्स माहबाधी वे नुबद सीदे पर मोबसानस दी हुस्स माहबाधी वे नुबद सीदे पर वेश भिन्न र क्यों से सोनवा है। जैना वि अरर बहा परा है क्रियंस साहिय उन-केश का दर्गण है। जन-जीवन के कर्मच्य जीवन में जो परिमिश्वियों माती हैं, उनमें उत्तम्न निजाइयों मावार-विचार प्रदृष्टि तरत मुनिष्मामां तथा दुर्वित-पामां की मुत्रुष्टि और मिश्चिति तोक साहित्य मं स्वत. समाविष्ट होती रहती है। प्रत्येन प्रदेश की भोगोलिक स्पिति, वहां की रहन-सहन, ऐतिहा-निक तथा मार्गिक परम्पामं, बहां के नोक जीवन में विचाय प्रमुख्य साहित्य हों के नोक जीवन रहती है।

राजस्थान की धानी विशिष्ट ऐतिहानिक परम्परायें रही हैं। वातान्त्रियों तक पुरुष तनवार की धार से और स्त्रियां जौहर की ज्याना ने नेत्रती रही। यहां के जन साहित्य में भोज, बीरता भीर बलिदान की भावनायों का सर्वोत्तरी होता उचित्र ही है। जन जातियों में भीत भारता विशिष्ट स्थान रखते हैं। मुगलो के संगातार बाजमणों से मेबाइ की रक्षा करने में इनका महत्त्वपूर्ण योग रहा है। इन्होंने प्रानी भारतायों को नोज साहित्य में दाद वा रूप दिया है। यद होता है। भीव नीरों वी वर्ष कर रहे हैं। भीतनिया सैनदा की सहायता पटुँबाडी है। वे छुटै हुए तीरो की बुन बुनकर, मोनियों में पत्वर भर-भरहर भीतरीरी हो ने बाहर देती रहती है। ऐसे हमय उनने हृदय पटन पर स्थित हो बाते हैं। उन स्वमुधे की बाद दिना भीतिया भीतों को या बाक्र उपमारित करती ग्हर्ना है। प्राप्तानी दिवार के मन्तात बहाइर भीतों की भीतरिया जब मत्ती से नाड़ी हैं, हुएव TET 3571 7 --

द्रंगरिया से पात रंगीना भीत जी मांगने सरे में । पटेल, तुम मारे आयोगे । ही ही रंगीवा मीव जी..... तुम मारै वाशीते । इस समय तो तुम्हारे निर मीनबी की हुटी मानडी बनेगी हवा में भीने सा रही है। तुम्हता ! सिरदार्थ से द्वा सैन ऊंपा है। पर हमारे हाप से युद्ध में बारे आये। हो रंगीना भीनजी -- · · देशने नहीं, यह राखानी का देश मेनाह है। क रंगीने भीन, यहां माउडा में की मन्दार कारते पर जीवे र जनके मुरोले हैं भीर सीवे बीची है। हमें तो मेबार के पहाड़ों में से बनी। पार्वत्य मागर भरा है। पटेन, राजा बनने को बाती है। प्रदेश के नाथ २ मेजाइ के पहाड़ों से उनका चंत को सोह दो, धरना प्राती संशा सेरीका परागराणा मोत, जिर चन पहाडों के साथ-नाथ सम्भानी । इसी में तुम्हारा कायश है । सात को बीरता की बाद की ने मारे ह के नात्रव में तुम हमारे हाव से मारे बाफ्नो। ETTENNI I JAN ... A

यक्ति जमा कर सो थी। ये सूर शतीर कर

मानविये ग्होने मांसर सारे,

थीरस्थली राजस्थान लोक साहित्य मे पग पग पर उल्लट प्रेम की गायामी मीर गीतो का मिलना नितान्त स्वामायिक है। यहां के जन साहित्य का दावा है:—

"मारू यारे देश मे, नीपजे तीन रत्न, एक ढोनो, दूनो मालएा, तीजो क्यूमल रंग।"

इस देश में तो तीन रत्न पैदाहोने हैं—सब्दा प्रेमी, प्रेमियाधीर तीसराकपूमन रंग जो बीरत्व भीर प्रेम का प्रतीक है।

मूमन के मारक सीन्दर्य भी मुगनिय में समूचा राजस्मान महरू उठा था। वस्तर म के मुनुम सी मूमन की प्राय करने को मनेल हरण विकल हो उठे। महेल के बीराव भीर सीर्य पर पर की उत प्रमूच मुन्दर्य का हरण थी मारा मूमन भीर महेंद्र की महाय गास को की टि कोंठों ने गाया। बिना कहें हुए सदियों से राजस्थान धाव भी उसी स्नेह भीर उमंग से गाति है। सुनने काना भाइक स्वित में ही कीर बसाबार है। मुनने वाना भाइक हरण विराय नेने वाता है।

बाळी रे बाळी बाबळिया री रेक्सी रे हां भी बाळीशे बांग्ळ से बसमें बोबळी ग्हारी बरमा री मूमन हाने नी मानीजा रेटेस ग्हारी मूमन मायनियों रे मेट मूं हो जी बहियां तो राज्या मूमन देशहा ग्हारी जग मीठी मूनन होने नी मानीजा रेटेस सीतहती मूमन रो सहय नारेळ ज्यूं हां भी बेगहना मावेशी रा बातन प्रमुं नारी जग स्टानी मूमन होने नी समराहों रेटेस नाहरती मूमन रो साहा री भार कहा हांभी से मांबहरूसा रंग भीजी री रतनाळिश म्हारी प्रमरत मर मूमन हाले नी रमीना रे देम होठहना मूमन रा रेगिमयां तार ज्यूं हा जो रे दातहना मजळदंती रा दाहम बीज ज्यूं म्हारी हरियाळी ए मूमन हाने नी रितिया रे देम पेटहली मूमन रो भीयिळये री पान ज्यूं हाजी रे हिवहती भूमन रो भीच जानियो म्हारी नाहुकडो मूमन हो नी समरागी रे देम जायहनी मूमन हो हो देशिया गं प्रम ज्यूं होंगी सायळही मगीती पीडी पानळी म्हारी माडेबी मूमन होने नी समरागी रे देन बीर रे मूमनडी ए भोडवाणे रे देन में हाजी रे मागी रे मूमन ने रागी महंद रे म्हारी जेतागा री मूमन होने नी समरागी रहेत।

प्रकृति देवी इस प्रदेश से विशेष प्रसन्त नहीं रही । एक भीर बाजुरापय मनन्त मरु नागर दूसरे छोर पर मधावनी की पश्चीनी पहाडियां । यहां का जन जीवन कठोर थमसाध्य रहा है। यहां के पुरुष वर्ग को व्यवसाय के निभिन्त और यद की चाकरी में विरोध कर बाहर ही रहता पड़ा। पीछे ने विर-हिल्यों ने प्रवासी पति की बाद में, उन्हें उत्रायम देते शीघ घर था जाने की विनती करते हुए न जाने दितना माहित्य एक दाना । दीर्चरान सद विद्योगानि में जनते हुए दारते मातन की समन्त मधर स्मृति और विष्टु पीता को नोक्गीनों में भर कर बगुत और दिल की बुंटे वे पीती रहीं और रिवाडी दरी। इसी सवाद सौर मार्विक सूच ने द्या के मोक्टीतों को महिक्छ बना दिया और उनमें हरूप को विमोदित करने की शन्ति भर ही । विर-हिन्हीं को स्वध्न ब्रान्त है । किटना नृत्दर बीर स्वध्न भारित विकास है जनवर---

स्वन-ग्ला

पीर का घनत्व

—श्रीनती रेगा वर्मा रामयुडी, रामणाः, रिप

यह पास की साली पड़ी देसहें मीन हैं

जैसे कि इनको बाल हो ने सामिण-मुग की भौका हो मह-सदन में भर बाई बांते हैं

घीर नीगे मारवेट मे धूँचनी-धानिमी हो वैगे पाव हो चाने मेर

कि जाने कीन 'हासर' है

वंता भी होते हो ? पोदा भी विक्ती ही होती ^ह मीर पान के कमरे में मध्यपन, मध्यपन की श्वनियाँ हैं

'मानी' का यस्त्व क्या होता है एक बान है स्टिन् प्रनर है नेपार है भीता

witters and it? 77 47 77 7 mar of mile fee for it

ure their dientit

13 for gary 4x 1

10 p (*** *** **

उनामें देण्या भंगरजी ने मापताजी दिस्पै पचरंग ए जी पान 'ধীনবৰ চুৰী দদার

ंड्रडरी हो मोडम्यो मीरी रा पांव रो जी

पनो हो <mark>मा</mark>दो सस्य सुनवस्तो जी म्हास राज ।

क्तां से मीमी प्याची प्रेम दो औ

ः दान मोषद्रभी भैदर जी री मणदी जी ोर्ड येळी ठमायो ए जी ए सेन

ोर्ध है भारत गुहरो कुल हियो जी

रेपरी बाधी अंबरती टाल में जी

ार्ट नित्र चरकी चयतहरू

पटा स्थारया पास्की केल हैं औ

रता हुन है को भी संबंधी बार सका औ कर्त कोरदा क्षण साहकर हिरान

र्लास्ट कारी बीवनराष्ट्र सी जी हर प्रथम सरह संदी वर्ता और

a figur unt met fri que क नदा कारण स्मृत् सर्दे औ mot diret me di

a tierfemane gere ne dere wer at er niege

राजस्थानी साहित्य : परम्परा और प्रगति

थी रावत सारस्वत, रुंबाइक, मरुवाही, मींरामार्ग, मनीपार्क, जयपुर।

राजस्थानी साहित्य की परम्परा का बादि सुत्र मगभग एक हजार वर्ष पहिले के उस अधकार युगीत काल में छिपा हमाहै जब भपश्च शों से देश भाषामी का जन्म हो रहा या। तस्वालीन कतिएय जैन ग्रंथों में प्राचीन राजस्थनी के फुटकर दहे प्राप्त हए हैं। चौदहवी रातान्दी तक प्रारम्भ के चार पांच सी वर्षों में राजस्थान, गुजरात भीर मालवा के विशाल भू भागों मे बोनी जाने वानी इस झनामदेवा लोक भाषा की विशेष उल्वेखनीय सामग्री सभी प्राप्त नहीं हो सकी है। पर पंद्रहवी से उल्लीसवी के मध्य तक की खार-पाच शताब्दियो में गुजरात, बाठियाबाट, मारबाट, मेबाट, हुंढाट बादि विभिन्न प्रदेशों में इस भाषा के विभिन्न रूपों मे विद्याल साहिस्य की सुष्टि हुई। गुजरात धीर राजस्यान की भाषाये इस संयुक्त परिवार से मोलहबी शताब्दी में ही पूपव होती प्रारम्भ हो गई यी और मनेक प्रकार के साम्य के रहते हुए भी मात्र गुजराती और राजस्यानी दो प्रयक्त भाषाय है। राजस्थानी का यह समृद्ध परिवार अप्रायक्ष रूप में वजमहल, पंजाब दौर सिथ की भाषाची पर भी धपना स्पष्ट प्रभाव छोडता धावा है। राज्यवान के देशी राज्यों ने घडेओं की दासना रदीकार कर राजनैतिक हथ्दि से निरिक्तता प्राप्त की तभी से राजस्यानी साहित्य की झधोरानि प्रारम्भ हुई, अब राजामी की न तो बीट गीन सुनाने बाने बारलो दी बारायदेश यो और न बन्धि साहित्य को पहले-मुनने के ही शंतकार उनमें एह नदे थे। बंदे को वे सम्पूर्व में उनकी बारनीयना उन्हें खेंच

रही थी और पूरे पारचात्य सम्यता में रंगे हुए वे साहित्य भौर कला को प्रथम देने की भएने पूर्वजो की परम्परा भी त्याग रहे थे। राजस्यानी भाषा धौर साहित्य का यह सुपुष्ति कान सवन् ११३० तक प्रायः देइमी दर्घीतक घनता रहा। धनजान देशो और भाषामो की स्रोज करने वाने योरोपीय विद्वान संस्कृत साहित्य के चमत्कारों से धार्वापत होकर भारत की सोर भाने गुरू हुए। उसी समय कर्नल टॉड के 'राजस्थान इतिहाम' मे प्रेरित होकर देश-विदेश के पुरानत्व वैता राजस्यान की भोर भी मुके। इसी समय में राजस्वानी के पुनर्जागराम का काल प्रारम्भ होता है, जो एक द्योर रागा शाना चौर प्रनार को बाने कर भारतीय राष्ट्रीयता के पुतर्गस्यापन के प्रयानी भीर दूसरी मोर मंद्रेजी के स्वात पर हिन्दी की प्रतिकारित करने के बान्दोलन से सनद्व होकर ब्राप्ती परिधि के दिस्तार में धनेक दोत्रों के स्पतितयों की सर्मिनत कर चका या।

प्रस्थानी नाहित्य वा नमृद्धिवात भाग से प्रस्ता पानन के नमारानार वर्गता प्राथा है। जिस समय मध्य एथिया ने उटकर पानी हुई स्स्तामी प्रतिन्दा एवं के सार ने प्रमुक्त वर्षों भागार ने नाशादित हो 'पर्य पूर्व' करणी हुंचा पी वी, इन नमय प्रत्यान के राज्या कुनो के प्रतिन्दा उत्तरा नावता बाने करा बोर्ड इस्ती प्रतिन्दा करणा नावता बाने करा स्त्री के क्षत्र क वारणा न्यारी वा वीरस्य का महित्य था। दर्श नहीं वह क्षत्रप ने हुन्देश उनने निए युव मोर दान में बोरता दिशाने के निये प्रवासीन भी एटा था। जिन्न का यह मुक्तिया नाहिया में एटा था। जिन्न का यह मुक्तिया नाहिया भी परमारा से प्रमाणित होते हों। भी माने भार में एक मिनन प्रमोण था। राज्य मनता मनता परि विभाग और मनेवार साम मनता मनता परि विभाग और मनेवार साम भी था। जिन्न का यह माहिया बीर भीर सोज की देश प्रमाण भी माने मिनन में प्रमाणित होता है से प्रमाण भी साम मिनन में प्रमाण में प्रमाण मानित मिनन मिनन मानित स्वाम मिनन के पुरो में बीर रम का माहित माना मिनन प्रमाण कर यहां था।

यम के गीत मुनने की कामना रमजाया भीर

सलंबार धीर बीच घंचीं वा निर्माण भी हिसारा राजनीति के प्रभाव से प्रधा स्पृण के साहित्य का सुजन बार्च राजन्यार धीर हुगा के उपात्रमां भीर मान भंदारी को समाव का

विषय सम्मितित थे । ग्रंपों की टीकार ही

गई जिनमें योड़ी गय सवा शेष प्य वे दी। इ

साहित्य का सुबन कार्य राज्यकार की दुरिया के उपायमां भीर मान भंगारी को सामन कर भा रहा था। साम हो राज्यका के दूरिये को के संस्ताल का कार्य भी का भावारी हाए कि जा रहा था। येन दिवानों के उसी रवल के कर राज्यका हमाविका चंद बीर किंव भगेर कर कितनेर राज्य के जिस २ इहून में सध्यापक बनकर एर वहीं जरोने राजस्वातों के विवर्धों की नहीं पीध (प्यत्र की। उनकी सिध्य परम्परा में साज भी धेनेक सब्दे करि हैं। बीकानेर से यह वह नहर रोष्ट्र में के स्वे के से लोक भाषा ने राष्ट्र में हिंदी हैं। बीकानेर से यह वह नहर रोष्ट्र में हिंदी के से लोक भाषा ने राष्ट्र में तहने में स्वात्र के पीतों की वाहिनी के एसे पर में पहिंचे भी सम्मान मिल पुना था। किर भी एन में पहिंचे भी सम्मान मिल पुना था। किर भी एन सिहम में प्रत्य निर्माण में प्रत्य निर्माण में प्रत्य निर्माण में प्रत्य पुना भी भेषात्र 'पुनुत' को सैनागी' में प्रारम्भ हुमा बिसने राष्ट्रमान के प्रति तनरार्थि आहल की। मुद्दुन में प्रेरित होकर समेक देशों के वितर्धालयां की स्वति तनरार्थि आहल की। मुद्दुन में प्रत्य मनेक देशों के वितर्धालयां में स्वत्य स्वतर्धालयां की स्वति तनरार्थि आहल की। मुद्दुन में प्रेरित होकर समेक देशों के वितर्धालयां में स्वतर्धालयां से स्वतर्धालयां स्वतर्धालयां से स्वतर्धालया

राजम्यान हा इतिहास या तो उनके बाद धाने वाने

^दईवियो ने लोक जीवन, किसान झादिको झपने

गय्य गाविषय बनावा ।

दम प्रापृतिकता से पूपन एडनर प्राप्तेन राज-प्रयोग ना प्रवाह भी भंद नित से बनता रहा। रोहे, गीर घोर एयय बादि यहं नियं जाते रहे। एम प्राप्तेनता वो नया बाता पहिनाने बाते राज-प्रयोग से प्रयम पायनार बाटडों से विश्व बिटानि है । बाटडों ना जो सन्यर भारतीय विद्याने हाथ ह्या जाने राज्यानी विद्याने उच्चाह हर बना। ह्या से प्रयान किर उपर जोपपुर में नाराव्यानिह ने मुन्दर प्रवाह हो। नाराव्यानिह में नवीत धोर पूरान न वा ध्यानन स्विम्यण है। उनती पीम प्राप्तिन बाध्य प्राप्ति न जीन पर धारत के पीठ विने हो रेक्टान में रीति दिसान की स्वाहत को सोनकर दिनाया। भानावार के रघुनार्थानत हाडा ने मपनी निरानी ही सदा मे मित मुन्दर रम-नाएं प्रमृद्ध की। हाम्य रम के भी दुख किया माने माएं प्रिमने विस्तेश की रचनायों का व्यंथ नरा-हतीय है। 'उन्ताद' मोर सुमनेत ओगी की रमनार्थों मे उनके राजनैतिक जीवन का जोग मुनरित हुया। मनोहर गर्मा के प्रमृत्त के मनेत कार्यों मे ठेड राजनित की मनित यो प्रमृत्त करायों मे ठेड राजन्यानी जीवन की मानियाँ प्रमृत्त करायों नमी।

बहानीवारों से नूसियराज पुरोहित, मुर्गीयर व्यास, श्रीताय ओसी, सोभागिसड, रातीयरमी दुनारी, सामीदर प्रमाद सादि सतेव नाम उल्लेखतीय हैं। सनूमधान के रोज में श्री नरोलयदाण क्वायी, सीता-राम लावी, स्वरूपन नाहरा, हां भोनीवान सेवा-रिया, बन्देसवाय सहत, मनोहर साम् प्रमृति विहानो ने राजस्वानी में विसेयराधों को हिस्सी जन्न के नामने प्रस्तुत दिन्ती।

यात राजस्थानी का शेष पहुंचे में कई छुन।
यर्थिक विश्वन है। राजस्थानी का प्रनोमन
रसने दूर एने वाने विदानों को भी स्पेत करियों
में पननी भी साविकत कर रहा है। राजस्थानी का
कृत को पतार्थी भी साविकत कर रहा है। राजस्थानी
में एक स्थान्ति के कहा के स्वाम्य प्रमासी
में एक स्थान्ति के कहा कर रहेगा। राजस्थानी
में एक स्थान्ति के स्वाम्य है। उन प्रशास
भाराधी और सम्हति को संस्थान्ति है में सोर
कुन का भागन जा एए है और बाँद बांग्ली की स्थाना
सोशा क्षात् कर अहता है। जिस्ता

आधुनिक राजस्थानी पद्य की प्रवृत्तियाँ

श्री भुरतिराम सावरिया, बोभपुर

परिस्थितियों के कारण राजस्थाने को देत है निरसर और संपन्न का गुन्दर ममन्त्रम राजन्यान वि की साली मान्युतिक विशिव्यता है। एक मोर संविधान में माग्य बौरह राजीय भाषामी है भी स्पान नहीं मिन सका है। किन्तु बारी ही प्रशेषी क्तो शक्रमान ने बगरिका बरिवानो द्वारा भारतिय के इस युग में भारती गौरस्मातीन बस्तरपूर क्क्नला का दीवर निरुत्तर प्राथित रुगा है. राजुरित के निये मानी भागा का बंधार के बरा शहरी और गाहित्य निर्माण के श्रेष में भी राजस्यात ने भागी विर विदिश उद्यारण का ए बर बदली बता है। हिंदी माहित्य के बादिकान

चय दिमा है। इत्तरा मंद दुश हीरे हुरे थे थे (बीर मारा कात) का सरफा गारा ही गाटिय

प्रवृत्तियों पर ही प्रकाश कानना है इसितये हमारा मालोज्य कान विगत ४० वर्ष मर्यात् प्रयम महायुद्ध की समाप्ति के बाद का ही है।

(१) बीर काव्य प्रवृत्तिः—

"राजस्थात की चल्पा चल्पा भूमि धर्मापीनी है।" (कर्नल टाड) ऐसी चीर प्रमुता भूमि में वीर--पुजा का विरोध महत्व है। राजस्यान में शायद ही कोई ऐसा बीर, जभार या सती हुई है, जिनकी पुष्प स्मृति में एकाध सन्दर गीत की रचना नही हुई हो. एकाथ दोहा नही लिखा गया हो । समय राजस्यानी साहित्य इस प्रकार बीर साहित्य की मलट सात है. जिसने बाधनिक नेता एं मदन मोहन मानवीय घौर महाइवि रवीन्द्रनाय पर मपनी ममिट छाप छोड ही 19 मपनी इस शानदार परम्पराको राजस्थान का ब्राप्टनिक कवि पूर्ण उत्तरदायित्व से निभागे जा रहा है। साहित्य मे 'रजवट' की प्रेरणा देने बाने महाकृदि शुरजमल मिश्रए के पद चिन्ही पर चलते हुये धनैवानेक चरित्र धौर प्रशस्ति ग्रंबो का निर्माण क्या गया है। स्व॰ हिंगलाज्दान बविया बृत 'मृगया महेन्द्र' एक ऐसा ही उल्लब्ट बाध्य संय है जिसमें विविने

घपने माथयदाता ठाकुर मेर्ससह द्वारा ततवार ने किये गये सिंह की शिकार का मुन्दर वर्णन किया है:-सिंज सारदूळ हायळ सबळ, औप क्वल माथै जही । कड़वाय मैरा हूंता विना, पन्नय पर तडित पडी ।।

सोन्याएत के स्व० वेचारीतिह बारहठ ने प्रवास नरित, राजिंतह बरित, दुर्गातात वरित, क्ठी राती मादि मनेत वरित-साम्यो हारा दत अनुति को पुट्ट बताया है। श्री बनोहर रात्ती वृत 'मरावती को मात्रा' भीर श्री नारामणीत्व माटी विचित्रत 'दुर्गातात' जैसे प्रवास्ति-सत्याँ द्वारा सेवस्त्रय ने स्त्री रस्त्या को मात्रे बनाया है। जाति भेद भोर स्वर्ण रहित प्रवास स्वामित्रक दुर्गात्म की प्रमासित वर्षि ने मामुनित युक्त-संद से हम स्वार गायी है-

वि ने मापुनिक पुक्त-पंद में सु प्रशाद गायी।
धीरन न दती धारे हियो
के सामरा बारो जन दरमात प्रवेध माही,
बिधियो न दिन्हों के स्वत्य माही,
बीधयो न दिन्हों के सेन मन-पर—
नो केंथे दिन समीधा पंद नराम नहीं?
दोवधा कुछ बारा दुर्माराम ?
दोवधा कुछ बारा दुर्माराम होवधा न स्वत्य मेंस्य माध्य स्वत्य स्वत्य माध्य स्वत्य स्वत

⁽व) में तो उनको (शबस्थानो बीर गीनो को) मंत माहित्य में भी उन्हरूट सममता है। "मुफे शितिमोहन सेन महायद में हिन्दी कास्य का प्रामान मिना था, पर प्राप्त जो मेंने याथी है वह बिलकुल नयोन वस्तु है। """प्राप्त मुमें माहित्य का एक नयोन मार्ग मिना है।

महावि सूरक्रमल के प्रमुख कार प्रत्य ये हैं - (१) केशआस्वार. (२) कीर सनगर्ट (३) कलकल विलास भीर (४) एंडोमप्रव ।

षागोत-पानसा-पुर्वादास । हव पाडिया-युद्ध में घोडों को कांट निराया । बाडवा-काटने । बाडाळी-नलदार

महार्षां मित्रात विस्थित 'बीर गामर्ग' की एगरा को धी नाइरान सहियारिया ने बीर,

रस मेरता मामी मामीर---

थ्या ही मृश्या बार्चन विद्या है.=

भाषी एँ कोई नाई, सीधी सेहत करा।

दे रेड्न्सरे पासला देवे सात बाहा।

गरी भोरत मारासी पंच हाळी ॥

र्धरतामी, तमा कायरो मादि के हरमणत गुरम यो का बाली 'बीर रामई' में बड़ा ही विरादवर्गन राहे । होतो का पुरसामक सम्मयन कीर काम परम्या का शबक दिवस है । बीरता में क्षेत्र-

बीर के रामुमि में प्रत्यात करते की क्षिता है " शर्वाणयः के कोई का इस देश में सहाकृति

सरत-देश

सच्य में रस वर मीर पानी करती है कि दिगा बेरा यस पारा कर और हाय में कीर भे सरवादि स सेवर मात्रमुमि के हेतु युद्ध में कूर परे:

न्योताप्तर हैं हो

यन जाता है:---

यीरता का धानाच करने बाना दही की

समय परिवर्तन के साथ झहिसक कीरण का देगे

रेण परिया पर परस्यो, झारध नियो न हेन।

जिन हैंदा पट उत्तरते बाहे बदार के हा

(रेपन वेगमूमा से ही संध्यित देश तिना

जनकी इस वेदाभूषा पर किमी ही मोर करक

सीरों में प्राप्तान, हांचा हरान हानाणी । किम हाले बुळरान, हरना हाळा हा हिविया ।। निर्मेद पह नजरांण, मुक्त करणी मरानी विचा ।। निर्मेद पह नजरांण, मुक्त करणी मरानी विचा ।। सकरों किम चाण, पाण ध्वांचारों फता।। सकळ बदावें मीन, दान परम जिलारों दियों। रळणों पंगत राह, कार्बे किम तोने कता।। भीर तह प्रवार एक बार पुनः हमारे नेको के सम्मुख महाराणा प्रवार और प्राचीरान राठीड के पश्चे में उपनियत हरव को नाकर चिवित कर दिया है।

बन्दैयानान सेठिया ने "धानळ घोर योचळ" मे इसी इत्य को हमारे मामने नई प्राया घोर नई धेनता के गांच स्वाभिमान के प्रदीव स्वय्य इस प्रकार जनाया है"—

पीमळ, के विस्ता बादळ गे,

भी रोतें पूर उपाळी ने ।

विभा री हारळ सह लेदे,

बा हून मनी रूर समाठी ने ॥

मरती रो पाणी विदे,

स्मी चारत री चून बग्गो कोनी ।

हूनर री कृत्या निर्दे,

स्मी पांची री मान मृणी कोनी ॥

मा हार्यों में तनकार चक्रों,

तुरा गीड वे' वे है रजपूती। स्थाता रे बदनै बैरधारे, ग्यापा में रेवेची सूती॥

(२) राष्ट्रीय धारा —एक प्रांतीय रूप के भभाव में जन जागरम्ण की वेना में राजस्थान पिद्दडारहा। उसकी समूह भावता की प्रेरणा न मिल सबी भौर उमनी शक्ति सूप्त तथा विशृंखल रही। देशी राज्य इस मार्गमे बाधक बने। जनता दो पाटो के बीच में घन की भाति शिमकर भी भाह न भर सक्ती थी। ऐसे समय में भिन्न २ राज्यो में स्वादित प्रजामंडलो भीर प्रजापरिपदों ने मंजीवनी मा बार्च किया। राष्ट्रीयता की वह उन्मत सहर जिसमें सारा देश प्रवाहित हो रहा या, शाजम्थान ने धनेक बनिदानों से सङ्ग्रिय योग दिया। फलस्यमप जब मारा देश स्वतन्त्र हमा तो राजम्यान की दशीस रियासतो का विभीनीकरण होकर एक प्रान्त की रूप धारण करना, समड भारत की एक क्रांतिकारी षटना थी । स्वतन्त्रता-धान्दोतन के साथ एक भागा का महत्व भी राष्ट्रीय नेतायो घोर जनता ने समभा। परिणाम स्वस्य हिन्दी का राष्ट्रीय स्वस्य दिक्सिय हमा। पर राजस्थान के नेतामों को यह भाषने में तिक भी देरे न समी कि यहां की अनता के पास पहचने का माध्यम हिन्दी नहीं है। वह सी राज-स्थानी है और इसीलिये यहा के ब्राइगम्य नैतामी में सर्वे थी माण्डियकात वर्मा, अयनारायण व्याम, हीराशाल ग्राम्बी प्रमृति कवि हृदय राजनैतिक नेनामों ने राजस्थानी भाषा में बोज व गावर जन-जीवन में चेतना पूरी। मेशह ने हिमाती नी उदबोदिन करने हये थी वर्मा ने साराः---

वे कुरमी पर घू इस्तार्म, वे दादी पर घूँ बुतानाय,

⁽१) रग ऐतिहानिक मान्यता वो कि पृत्वीराज राटोड ने महारागा प्रवार को यज विन्ता था, वर्ष रित्रामवारों ने रित्राम विरद्ध टहण्या है। (थ) महारागा प्रवार पु॰ ११०-१११ (वेंं) डा॰ एग॰ घार॰ गामी: (द) Mewar and Mughal Emperora-by Dr. Gopinson Sharma.

ष्ट्रं पर्यो स्कै गराम करें, िला बे नहीं बठावें जरा हाय, भारा मीबां पर मीज उड़े. दारा रोबी पर है रागरंग, पळनर पूर्वां तेन वे वो धपरी. गळगै यात्रागळ-मी माग. पांच गीयां में सब नही, वे शेव हदावे है परशाह.

पर द्वा बद्धारी द्वारी होग्यो, बडी में न है धानीशात । नार न भार उत्तरे,

रुषां पर मार मोग रिजाग । बरावे हम इत्ररी बहु बरमान्य ।

राज्यार के पुण्यूर्व पुरुव मन्त्री थी हीसावात बारको नै 'लक्कार' सं भाग्यकारी ब्रोह निरिक्य, यह बागर गाँत कारी जनवेदिनी में दाला हांचते हुदे S71:---

तकरीर की टीकरी कोई बरा, पुरुराष देश रिशानो प्रश् es y c free tour yo. KE KIN & KIN KING MEI germente kie kmi, करते कर कराच दिल्हारा परा,

दिस का अहरता को दूर अहरतू \$7 4 25 44 Marie 324 3

बार्द उपा को का मान्य राष्ट्रास्ताता स्रोप्त स्त्रां न है में या न है ने राज्यात के बार ये के बहुब नहें और a contra constituta de la constitución de la constitución de la constitución de la constitución de la constitu

at our de door 21 kararary netariter on a tel

र का उठ र र भेट सदरर पर रूप के अवरर भूगत बार्कर को सुर ४० छ है। er år dik miller og gar i far brorg of faur fyrra g

मौरोतन री माथी माई, उपली है बर्र हो है भारत शोधी बंधेजों, थे बार्त हाते हैं गीरा धवरावा हो है, गौरा धरराया,

दमन करण स मारम बाग्राम गीरा घरराया ।

महात्मा गांधी की महानता भीर पाने व कार्य का बारहरू केरारीमिह में इस प्रकार वि विया है :--

फीबां रोरे किरंग री, तोरे वर तरगा. गांधी ! सें सीधो गत्रद, भारत से पुत्रतः तो भी उद्यस्तत उत्तरत ने इन प्रशास:---

बारता चैम करेता, बहुर हैंगी कांगी बन्दी. रिम गांधी सी देग, भवी भरीती, भ^{र्माना}ः (२) प्रगतिवादी धारा---र⁻िव वर्ग धीर मस की क्षांति से चलान वहिलावों ते वल

प्रगतिकारी शालियों को बन मिना हे सं^{त्}रों शोबित और पीड़ित इंचर और मन्द्र (में वर्ष) उनते ब्राह्मध्य देशमा की बे^{रहाई है} काम्य प्रतिमा जनकी दयक्षीत काम का वि^रत्त न लवा सर्गाउन अपर प्राप्ते वर्ग्यकारी को बंग म स । 'कनसहरत्तर' की 'हर्गदन'त हैं में रीहरूकरा की । हिंदापना की मार्गत करात है जा रंगतरात्त्री अर्थीत् वर्षः प्रतिवरं दर अवार हे

fe 41 2 -धपनार मत् जाल बार्यक्षा दर्शनगर है। द^ण कुण बाल बर्डा रहा मार्चा गाँ।

t be to to the feet government

Q44-1-11

रे मा वा मोळी हॅमी जिका के मस्ती वेळा मार्थ है। रे मा नागण काळी कहर जिका बाओं मे स्मरत नार्थ है। रण पुंभाषार रे मानळ वे इक जोत जगे है जगमगती, मंबार पोर मासी प्रकट, मा पुंभागर पक बक करती। मार्थ है जर मे माण तियां

गड नोटा यंगनां ने हहती ।।

विक्रिट ना मंद्रा नदा करते हुये भी मागेमीनान 'रुग्वार' भगवान घोर निव ने निवानो घोर मबदूरी में रवानेय द्या का नारण पुरते हैं.—
या नमतरिया रा हाय हेन मूं जिल्ला जब से मूह 'मूनां मरिय ?
निराता ! रगुरो म्यानो' थे,
अहुर की ! वे हरजाणो थे,
से मरी नमाई साई
यर्गा थे पर उरजार'
नहीं जम नार्य पर से क्यांज्य परिया

प्रगतिवारी प्रत्य विवयों में सर्वथी भीम पक्स, इक भट्टम देपावन, प्रमक्तर रावळ, वार्तासह भाटी, विभवेश, मूर्ववावर पारीक पारि प्रमुक्त है। थी भीम पक्सा 'दिवने ही बोट' में दीपक से साम्य-प्रशास सार्वने की प्रार्थना वरता है:—

से दिवारे पी जोता ! स्रति दी मूं पहिला मूं सपट उटा है । सर्ग हैय मूं सना भगेटा महना पी जोटी पहुंचा है । जना सोस नियत्ता पी नीटा महना में मूल मुं पीठता है वारी वाणी नींद तोड पूँचेतो सब वरानी रहनें। से दिवनें री जोत ! सबै पूँएक सरोसी जपती रहनें॥

(४) प्रकृति काज्य आरा.—प्रदृति ने साला प्रसर्व जन वरट दिया है। धाने मण्डे धारामार्ग को पारर जनने प्रात्मा धंग र त्रीवकर, वरदान स्वरूप उत्तक सामने र प्रदृत्त है। उत्तमार्गे के तरे होरह-हारों को पहिल, नई सजना धौर नवे धानस्वन ने, अब यह इस परा पर उत्तरी तो निज्यां का 'जैज-द्वारों प्रदृति देवी का स्वायत करने को प्रसृत्त हुमा:-

म्हारं मुस्पर रो है माजी मुग दुन मानी मेडदमी, वे निना³ मरे पिए दिखा नरे. है नरही छानी मेडदमा ने से समूपी ने जीएो मीक्सी सेन जगन मे सेडक्सो, में मिट जानी दिला सनर रे बेना एक जगन में मेडहसी।

प्रहात हाम्य हो इस प्रधारा में एक से एक बहरर हाम्य संग्रुट व भूतन प्रशासित हुये है। वंतिह हो बाद्धों और 'पू'^क वर्षों मोर प्रीम्य ना स्वासारित विराद है। 'पू' में स्वीयत सिंग्लामां वो महित करने में बहित मापन सब्द माहै। वह स्वाद हो। माने पत्र पूर्व के साथ संग्रुट में मान है, पर माने दियों नुस्कार वें। उसमा के बारण मेन्य रामनियों को नियने नहीं देती:—

साप गर्में दिला मोद में एवं रैं लॉमी लाइ।

म्यानी-धर्म बनलाना गृल्यो मुलमाना । २. सेज्यानी-भोजको, धर्मा दृश ।
 निर्मा-प्यामा । ४. मू-प्रमियो मे चलने बालो गृष्ट धौर गर्म हवा ।

योगी में तोशी मनी 277-371 पूषा किसहे त्याह ॥ हिर भी भू की महिर वस्त भीर उनके मन्द्रविनों द्वारा कवि ने मनूर्व कं मनार मनस्य को महत करते हुँचे भी कवि को है। राष्ट्र संदों में संबन-गुन्दरी हर में बाता ही है बसीन में दूसे ही की बस्तात कार्यक्तामें झारा कृति में बाग को बारी बारी है.— बना निया है। 'सिम्म' में संबन्ध रीत को बाते बाबत में जितने ा ५ पि

वीबाज्याम बारक्टियाँ, योगू जीवात पाय मत पूर्ण बाजो विश्वीत गुरुपर गरुमी साम र मुका विक दिवनी सम्बद्ध सीट निरसारा माई मी गंगार धरवती हमी धीमी बार,

बागवान की बीर बांगे नगावे रामगानी हेरत कर्त का कार्या करता है। उसके निके कार के हार बचा बादन है, बस्सा है-पर होतर रागी जा रही है :—

^{मारे} पुरं चीना, बंदी बार्किना । द्रांचर हेत् बाराह्य घर २ व्यासहिता ।।

वर्षः, प्राचानकार व माप्कवार थी मात्राम

President ferme gere enter be te mer biet finen nett ein en f. कित हे उन मुल्या मं बाह ने बहुत्यु बार्गत क

فيطرع فاسترعفكم فيدرون ويداء का रहाता १४ ४० गरिका है। कारहरा की प्रधान the learning to

ter and the late teration to the Trip the set with the th

to be comed to be at the strong An grange & evilence make & the end of terminal state of

agentina de la compania de la confessa de la confes

म रतपाता स प्रदा बर्गा र सरकाल ब 144- 44 241- fa 112 -

Margenny - Car Hayer 5.48 47.48 M. 5.4. 4.5.9.566.4

HI MER STRIFTS A SESSER A A P To destroy to a some for the

पुंचकता नैया गुरमी गार ।

नार मुहिरानी सांबळ होर

भारते नीता पर मोट्रे हुँ। प्रांत्यों के कर क म ना भी बहि में बाह बाह से ही

टमक मूं माई मेच्यो बांड उबाळ भोले हुत्रो वार.

भूकारों भवते से ध्वनतात p

पाले विष्युत्ता हो संबाह * स छ इन्द्रा स संसार ।

वर मुहस्र से बान की

"CIMATT OF REITER

बरदार के यह बड़ी सराइट की अहर

र्मध्या ही गई है कीर गांव की की

भीर मौनिकता है। राजस्थान के कगा-कगा मे उनकी झारमीयता है :---रोही रोही महत्रतो, खेती मोटा बार । चितौडे में बाज नहीं छै लीले से धनवार ॥ र सीसोइयां रो देसहती धान भेज प्रम-सनेमहली 3 धरती शी रगत विवासा मे जीवन शे द्वाज धरेसहती ॥

(x) अक्ति-नीति प्रवृत्ति - राजस्थानी के प्राचीन कीर बाब्य की भाति यह प्रवृत्ति भी बडी समृद्ध रही है। मीरा और दादू के इस प्रदेश मे भत्तो श्रीर सन्तो वा सार्गदर्शन जनता को बराबर मिलता रहा है। यह उन्हीं के स्थापक प्रभाव का परिलाम है कि भक्ति भीर नीति के गीत भीर दोहे बगलित संस्या में बाज भी यहां की ब्रिशिशत जनता वे मृख से दान २ मे सूने जासवाते है। बहुत लम्बे समय तथ ये समाज से नैतिब-मौतिब शिक्षा के माध्यम रहे हैं। परन्तु बदलते हुये इस यात्रिक युग में नैतिक शिक्षा का महत्व और भी बढ़ रहा है। राजस्यान ने इस सम्बन्ध में पहल की। नये पूर्व के नये भावो तथा उपमानों को लंबर ये मंत क्वि धडा धौर समम दा पाठ सिला एटे है। महाराज चन्रसिंह इसमें प्रस्त है .---

रैमन धुणुही में उठ जालो ई रो नहीं है ठोड टिकारगी. रै मन छण ही में उठ जालो ।

ऐसा प्रतीत होता है मानो जान की राम-मोट-

रिया में में प्रसाद बाटने हुए बबीर बीन रहे ही।

मन की गर्म्भारता और दिखनेपन की निकार भीर पोरटकाई की उपमा कितनी पहती है :---

बारड तो कहती फिरे. हरबीन हकताक। जारी हाँ व्हीने कहै. हिये निपाकी राजा।

इस परम्परा में सर्वश्री अमृतलाल माचर की 'मारवाडी गीत रामायरा', मनोहर शर्मा की 'घरा बली की भारमा', भोमराज के 'मुंघा मोती', मांगे-सान बनुवेंदी की 'महभारती', उदयराज तज्जन इत 'धडमार' तथा महर्षि कान्त इत 'ग्रुणवंती' मादि सन्दर प्रत्य हैं. जिनमे समात्र सभार, मौर बद्बोधन भादि पर जहा एक भोर श्रेष्ट मुक्तियां है तो दूसरी भक्ति-गंगा में निमंत्रित करने की प्रवन शक्ति । 'घुडसार' मे उदयरात्र अन्त्रवत सामयिक चेतावती देते हैं ---

भाग नियो नह भेक उत्तम ग्रुण भंगरेव रो । भौगरा गद्धा भनेक सिरदारो सीजो समऋ ॥

भोमराज 'मंगल' दर्जन भौर काटे की तुलना बरते हये बहते हैं -बपड़ो देवें पाइ. मंगळ बाटो बाह री। दर्बन करें बिगाब, भाषों छुने मंगळा ॥

नीति सम्बन्धी थी मोधेतात चतुर्वेदी की शति का स्थास्त्राहन की जिथे ---

तक्टीनद का वैक है, सबो क्यामे तेत्र । घाने २ ग्रह है वर्र, सेहर है नारेळ ॥

ध्याय ध्यते धारा स सारक धौर सुधारक दानी शक्तियों का प्रधिनायक हाता है। तीरी में बने चार तो बानदायन व साथ भर जाते हैं, पर स्याय-नाग वे बार झाडीवन नहां भरते । इसरी बार बास्य टोका मनुष्य म भाषुनकृत परिवर्तन ना देती है। राज्ञांचानी में जारम्थ में ही स्थान का विनाप्त स्वान रहा है, जिसमें न केंचन छाद यति का धमन्तार दवश दर्व राजी दें ही रहना है पर मुख्या प्रापा

१. रोही-जंगम् । २. मीर्ने रो धमदार-महारामा द्रनाव । ३. मटेनहर्ना-नदेशा ।

..,,

मोही में तोही मनी

E 1 4 CH 7 . "

्ये प्रमें ही वो बरमात बीरक की धरते धांकत में तिसारे धर

हिर को भूत को क्योर तस्त कौर उपके

समन-नेना पूषा किसहै जार ॥

र्मा की 'धरती री धून' इस दिशा में बढ़ी लोकैप्रिय ही है। श्री मनोहर शर्मा के 'बूर्जा' के अतिरिक्त ी सर्वशंबर की 'जीव समभीतरी' भीर 'ग्रलमाळा' भी सफलता प्राप्त की है। बहुना नहीं होगाकि अधोर कवियो वाष्यान भावपित वरने मे भारत सिद्ध लोक नत्यवार श्रो देवोतात मामर दा बडा । य रहा है। लोजगीतो पर ग्राधारित उनके गीत ।।स्य रंगमंच पर बडी सफनता ने प्रदर्शित किये ाये हैं। श्रीमनोहर प्रभावर घौर चन्द्रसिंह राठौड वोदित गीतवार है। हमारे ये गीतवार हमे बरबम सचीन गीतो वी भोर खोच ले जाने हैं, जो भारतीय (तिहास की विश्मत बहियों की जोडने में बढे ही पामप्रद रहे। १६,००० हिंगल गीनो के विद्यान संब्रह के बाद भी अनेक संस्थाए और साहित्यकार इस कार्यको पर्स्सा मही कर सके है। राजस्थान की सम्यता. सस्वति झीर इतिहास को समभने के लिये दनका वैद्यानिक प्रध्ययन प्रावस्यक है।

प्रमतिवाद को छोडकर विविध बादों के पबढ़े में महीं का की कही पढ़ा है। छायाबाद, प्रसादन-बाद और प्रतीववाद की एकाच रचना को छोड़ कर यहां विशेष प्रमति नहीं हुई है। नारासणाहित की फोआ में छायाबाद की हुए भनक है को आ सकती है। प्रोण गणविष्ट अवारी की करिता गीननवपन्ने से कार्य प्रतीववादी प्रवृत्ति का उदाहरण है।

(७) अनुवाद प्रशृतिः---

(म) संस्कृत सै:—राज्यवानी में प्रतुताद व टीवामी की परम्परा १४ की जनाती में निरंतर करों मार्ग्हों है। परनु मापुनित काल म प्रतुताद प्रवृत्ति वा प्रारंभ महाराज चतुर्सिंह की भगवद् गीता समस्तोत्री गंगाजली टीवा भौर भागीरथी. टिप्पणी में होता है। फिर तो धडाधड मनुबाद होने लगे। भगवदगीता के चार झीर झनवाद सर्वधी हीरानान गास्त्री, रामकर्ण श्रामोपा, मागेनान चनवेंदी भौर विमनेश ने विथे हैं। दर्गासप्तशनी' भौर 'महिस्त स्तेत्र' के गुन्दर मनुदाद श्री गिरघारीचाच शास्त्री ने विये हैं। महाकवि कानिदास हा 'मेथ-दत' के धव तक प्रशस्ति चार धनुतादों नी मुद्दि-भरि प्रचंता सर्वत्र हुई है। ब्रत्साइन हैं सर्वे थी नारायणसिंह भाटी मनोहर शर्मा मनोहर प्रभार र व मांगेतान चनवेंदी । 'रघवंता' धौर 'तमारमंभव' वे मनुबाद क्रमण: श्री मन्द्रनिह ग्रीरश्री विगोर कल्पनावात कर रहे हैं। भन्दिर के 'श्रंगार शतक' के धनुवाद का कार्य भी मनीतर प्रभावर ने पुरा रिया है।

धन्त प्राधीत भाषायों में पानी के 'धम्मपद' भ्रोद प्राकृत के 'याचा गत्त्रपत्ती' के मृत्दर प्रतुवाद समग्र थी मनोहर रामा भ्रोद चन्द्रमित राग्नेड ने किये हैं।

- (व) हिंदी में —िरवारित की 'परावती', तुरसी की 'कितारवी', रमगात के गर्वेचे' तथा प्रदान के कित्रच 'परी' और जबसंकर नगार की 'कामपनी' के बहुतार कनात मर्थे थी गीमात कपण कप्ता, सोमदन दो, मंग्यनिह मौर देशवार बारण ने प्रपृत्त कि है।
- (स) इतर भाराधों से —सहावित दर्शन्त-ताब देशोर को 'धोटाइनो' का गुन्तर त्यादुवार समनाव क्यान ने दिला है। चार्च से वे 'धि'त्या प्रमुख्य के विकास से एक जनसंख्यात साव-ना सीची के विकास से एक जनसंख्यात साव-

रे. राजस्थान भारती पूठ ७० वर्ष ३ चंद्र २ दिश्य गोतों ने विषय में दर बदरोबसाद स्थान दिया नहुते हैं, 'बियान ने गोत शुद ना टान्स्स संस्कृत माहित्य में भी नहीं है, भारत नी मान भारामी नो तो बात हो नया ? गाहित्य गेलार नो दिशत को बार बस्य देन हैं।'

में हुमकरों धौर तीकीतियों का भयोग एक धीर धरन-वेना क्या बात की महित्व का छोतर तो है ही, वहां हैंगरी कोर स्वास्त प्रमार सावने में उनका बड़ा वालाविकता तो यह है कि बीरा। भीर देन होन हाय है। देने तो नोति-क्रूने होट्टों में गायारराज्या को एक ही सम्बुट में बंधकर यहां साहित्र रीतं भीवा काम होता ही है, पर महुक कवियों को यह का मनोरंजन हिंसा गया है। बीर रन के जुला रीताम क्यांना कर बारी है। माल व असरात के निये नहीं एक बोर रीड, भरानक बाहि रहे है मान्त्र क्षावाचा का बाध है। भेरत व जनस्मात प्या व अस्त हर अवस्थान का नाम का नाम का नाम का नाम के नाम की का निर्म काम निका गना है तो श्वेगार, हमन बीर हन मुत मानतहरू देवारी को कटाश-कामा में कौर रमों के द्वारा इत प्रेनास्थानों को मोह पर्वार कारोंक कारा किरने में बचाने का प्रधान किया है। दनश भागत रा बाळ गढ़ा हिहद के मनात क्या गया है। मापुनिक पुत्र में इन बाला। है इतिम वर एक मुक्ता काम है। समग्रेती संवता रमाति मान कवि हैं भी मेचराम 'मुहुन', दिला' म बार बाहुक का बरे देन बर बागीने बाग बा-जिनाली' बिना समर ही गाँही हुलेला र दो रहे ही कायरा, मारा रहे कर मेल ह काने बोट्डर पनि में बहती है :-राहर है राजा हिरी, मात्र में बारे सेम स बोगो स्नामान, नाप, सान वे सभी व्यासी सम्मन राज्या हुए बहिमा वर 'बनगर बरामान् मनशार बनाची है जात्र, ये बृशी पैर शे बर बन्ने # tq xtit ecit for रागोदात्र ही जाने पर भी प्र'बादत को बंध है। में जो है और बहु एक विवाही को विवाही करें है

Fig karr s ;-

वर्मा की 'घरती री धून' इस दिशा मे बडी लोकैश्रिय रही है। थी मनोहर सर्मा के 'बूर्जा' के भतिरिक्त श्री सुर्यशंकर की 'जीव समस्रोतरी' भौर 'गुणुमाळा' ने भी सफलता प्राप्त की है। यहना नही होगा कि इस धोर विद्यो का ध्यान धार्वात करने में भारत प्रसिद्ध लोक नृत्यकार श्री देवी त्राल मामर का बडा हाय रहा है। लोबगीतो पर भाषारित उनके गीत नाट्य रंगमंच पर बड़ी सक्तता से प्रदक्षित किये गये हैं। श्री मनोहर प्रभावर श्रीर चन्द्रसिंह राठौड नवोदित गीतवार है। हमारे थे गीतवार हमे बरबस प्राचीन गीतो भी भोर खीच ने जाते हैं, जो भारतीय इतिहास की विरमृत कहियों को जोडने में बढ़े ही साभप्रद रहे। १८,८०८ हिंगन गीनो के विज्ञान संग्रह के बाद भी अनेक संस्थाएं और साहित्यकार इस कार्यको पूर्णनही वद सके है। राजस्थान की सम्बता, संस्तृति धौर इतिहास को समभने के लिये रनका वैज्ञानिक प्रध्ययन प्रावस्यक है।

प्रपतिवार का प्रारक्त विविध कारों के पढ़े में यहीं वा कवि नहीं पटा है। प्रायावाद, प्रायत-बाद भीर प्रतीववाद की प्रवाद पत्ना की प्रीरक्त कर यहाँ विशेष प्रतीव नहीं हुई है। नायवप्रतिवह की लाकों में प्रायावाद की कुछ अनक देशों वा यक्ती है। प्रीरु गएपविष्य अदार्थ की कविता मिनवपर्यों से बाद्ध प्रतीववादी प्रकृति का

(७) अनुवाद प्रदृति:--

(च) संश्कृत से.—सारण्याती में चतुनार व टीनामो नो परम्परा १४ नी जनाव्ही में दिश्तर वनी मारही है। परमु माष्ट्रीय नान म महनार प्रवृक्ति का प्रारंभ महाराज चतुर्रावह की भगवर् गीता समस्तोती, मगाजली टीवा भौर भागीरयी. टिप्पणी मे होता है। फिर सो धडायड मन्त्राद होने लगे । भगवदगीता के चार भौर भनवाद सर्वधी हीरावात शास्त्री, रामकर्ण प्रायोग, मांगेवाव चनवेंदी घौर विमनेश ने विये हैं। दुर्गा सप्तशनी' भौर 'महिम्त स्तेत्र' के गुन्दर भनुवाद थी गिरधारीचान द्यास्त्री ने विये हैं। महास्त्रि कानिदास का 'मेथ-दुत' के बद तक प्रताशित चार बनुवादों नी भूरि-भूरि प्रशंसा गर्वत्र हुई है। धनुशास्त्र हैं गर्देशी नारायणमिह भाटी, मनोहर शर्मा, मनोहर प्रभावर व मांगेतात चतुर्वेदी । 'रघतंत्र' घौर 'तुमारमभत्र' वे मनुबाद क्रमण: श्री पर्वापत मौर श्री विशोर बन्यनाबांत कर रहे हैं। भईहरि के 'शूंगार शतक' वे धनुबाद का कार्य भी मनोद्रर प्रभाकर ने पूरा शिया है।

बन्ध प्राचीन भागायों में पानी ने 'शम्मपर' स्रोर प्राइत ने 'शापा मध्याती' ने मुख्य सद्वार बन्ध स्वी मनोहर सभी स्रोर चन्द्रमिह राडोड ने निसे हैं।

- (द) हिन्दी से विचारित की 'पदावती', पुत्रमी की 'वितिवादती', रामपात के मजैये' तथा मुस्सात के वित्तव 'परी' और जयगबर प्रमाद की 'पास्मती' के अनुवाद जनताः मजैयो गीमात कुम्म कन्या, सीमात को मारतीत और रेपत्रपात पास्म के प्रमृत किये हैं।
- (स) इतर भाषामाँ में —महार्शन रहीयः नाव देशार की 'फीटांचती' का सुन्तर प्रादृत्ता समनाव स्थान ने क्या है। यह में के 'फिटहा'

राज्यवान भारती पूर्व ७७ वर्ष ३ चंद्र २ चिरान गीतों के विषय में पूर्व वदगंप्रतार गारि-रिया बहुते हैं, "दिगत के गीत एह वा जायेत गीरत माहित्य में भी तरी है, जारत की प्राय भाषायों को तो बात हो बचा र माहित्य सनाह को चिरात को यह प्रताय देत हैं।"

written in a country church rard का 'दोक्तोत' के नाम में भी क्रियानिट पोहान सजन-देना ने बहुवार क्या है। जबकि वसर भीतम की स्वास्ती है हो हुन्तर बहुतार को बनोहर सभी व भी समस्-पड़ी पाकरी पुक्त पछी वर पड़ी दंगात कर युरे है। इस्ती कामण भीड़ रामविदि का ह उत्तासन प्रस्तान की हरिए में नीचे चित्रे. जनक-मुना है स्नान जैय रो निस्ता । साद ह महेत्रा महुराम के साम उन्हें कि दोनी में से बिस्सी माहि जान न कर काले हरियों की जनस्वीनाम' की स्वार्ट की जास्त्री है। पड़मार को क्लिक्सा है। हिं होनों से से किसी से बामरा के ता प्रक पानरी मान बहुई को करे भी बाराहुरा: एर प्यान न देवर भाराहुरा: पर एक बरम की में देगू'टी कोई मन त्याम करे शं हर हिंत है। बिसारी की मीळी हु जा में समितिह मा कार करते Anale Her n are no in the Four of Night भीतामामा के लाग्य में जीने बळ में इन बर्गे। Has flore the transfer of And the Property of Land Interest to a manual transfer of Land Interest to the एवं यस सत्वापुर करती पात्र से सेसकले (मा)_{रह हर}ी पान द्वारी ही मुख में मोतों करी पुत्र कोई बन Tora Learning of Highly देश निकालो मित्यो दंड वर रामगिरि मार्ग्यः

बढें गयन तर होते पुष्प बळा बनह महिनो हो छन्। (य होत्तर क्षाप्टरः

उदू साहित्य

ग्रज मोहम्मद इपितखार ग्रली शमीम श्रवीशक, राज्य केन्द्रीय मुझराष्ट्रय, उपप्युर ।

श्रह बात बिल्क्न जाहिए है कि हर भरव के लिये जवान धौर हर जवान के लिये धदब लाजिम व मलजूम चीज हैं। राजस्थान नाम है इन्हीन खुद मुखतियार रियामतो के रक्बे भीर माबिका भुवे भजमेर मेरवाडा के रबबे के मजमूए का। इस बात काभी बाप साहिबान को इत्म है कि हर खद मस्तियार रियासत काजो कडीम हो याजदीद क्सि न किसी तरह मगलिया सानदान के बादगाही में ताल्वक रहा है चौर धनमेर तो बाहाने वक्त वा जियारत गाह भी था धौर बराहेरास्त राही दरबार से मुताल्लिक भी । तिहाजा उर्द जिसकी रबनदा दिल्ली से हुई या दवनन से या पुजाब से, गाही राजधानी में राइज होने के रिस्त से राजस्यान में कुछ दूर मही रही। मुक्ते इसी जवान के घदव नी बाबत कुछ धर्ज बहुता है। धलबत्ता नामृतासिब न होगा धगर पहुने यह धर्ज बरदू कि खबात की तहबीबात बरने वालों ने धपनी बोशियों धौर द्यांनथीन का मेंदान या दिल्ली का बताकर हजरत भगीर खुनरों को उर्दुका बादा भारभ माना है या याहणहानी सप्तर को जिसको उर्दुए स्थानता कहा जाताचा। स्वाजा हमननिज्ञामी भरतम ने मजीद त्रापीह करते हुए हजरत महबूद दलाही सुचनान निजापुरीन धोनिया के हक्स ने सभीर शुमरी सौर रामदेव को दगना गुरुगोद बरार देवर नाजिक दारी को इस महत का संगे वितयाद करार दिया है। दरहत बानों ने हजरत स्वामा सैयद मोहन्मद रैमू दराज बन्दा नवाज के जनाने तक दसका मात्र निवास है यानी हैरवी बौदासी सही ।

में विचा गोंके तरदोर वह सबता हूं कि राज-स्थान के रेसिसताव धोर कोहिस्तान में उर्दू के सान मोनी तच्या करने की जैंगी चाहिये में स्तत नहीं को गंधी। वनी मुगर्वित या धौर है कि उर्दू का चौरा क्यी मरत्रमीन में क्षरता साबित होता था हो जाये। इतनिये कि हब्दल बावा माहद मंगूक के दारा पीर क्यानगरिक वहास अवसेरी सा स्त्री के जारा में क्यानगरिक वहास मुत्रवादुरवारिकी व्यास हमोज्दीन नागीरी की माहरी ज्यान कारांगी यो धौर पुत्रमा में माहरी वाहमालिक ये। निहाता यह बुदुर्ग हिम बका में यहां वाचों में दुस्सा ममक सरे। यहां जिंग की रहनेता है।

रम दिनी बदर मध्यो नमहोद में मेरा सबनाद सह है कि पास्त्रमात जिस तरह जबात है जारे में पहन दा महत्वम हानित बद महता है, उसी तरह स्ववा उद्दें मारित्य भी बहुत पुराता है। जिसके सहुद में निर्माण क्ष्मी सहुद में सारिकात स्ववाद दिलता है। सार्थ में स्वृत में सारिकात स्ववाद दिलता है। सार्थ में स्वृत में सारिकात रावधार उद्दें सार्य क्षमाद में एक नत्वेतनत दिया था। इस नत्वेतनत में निरास भी दुमारा भी भी सह बी। इसी दिलासों में एक मार्थान सीरा का उद्दें तरहना भी वा नो स्वार्थ में दर्श निका हुन्य का । इस दिलास के हानित बाने दर निका हुन्य का । इस दिलास के हानित बाने

होर बुनाहम हे बाहर साने बाने को हरनोम है हि कियों राज्यामाने ने बाद न दी बन्ति जनकी महत्त- वेता रामाना तम करा हि पर होता प्रतिहेत राज है। प्रताम कानेतर में हातो स्ताम किसा नात परते पार दुनी है, जिनमें उर्र --- -होर कामारम् इतन्त्रम् कामा ह गार गण बीर गण के नहीं मीदर है। ह मार्ड्स क्रिं। क्यो निवडा बारिस्सावे मनर बड़ी भीर छोटो माबिस हिस्स ब्लाह को क्षण को बोहरू कि पुनानों विद्याला मार्रजा निया जाये तो बहुत बहा सरमातः व के तह का वह करता दुलगा है। सब कह ही मनजा है। तकरोसने सीसा है देवता तद्व साहर है, ध्योत् को योग है मोर गररोवन तैनार है भीर तविराधे भीए । का रह मही हत्त्रीत हा वालुह है सा रह भी तीवार होने बाता है और भागान है ल विश्व को जा करें है। साको उत्तर में साबी, का काम जारी है। वार है है। से स्टून कर दिया के सरसाव कारत हुन की कर करने या सामय का नाहिर है। ति तिक भी पह उहाँ क वो मान है। मान को उन्ने वसारोगारण म कोर दमरा वस्तरीयास्त्रा क्यर है। उत्तर हैंने एक क्योग सायर मित्री प्रकार प्रति ॥ हु। का पता विकास है, जो बोह तको बोह के हरता थे। वह की गई के सावर सेवें। हो हात्।

करिका है। सका क्षेत्रा कर्ण -

दभी तरह दिल्ली, लखनऊ, मूं भी० घोर दीगर पुरुष्तात के कसीर राजस्थान में पाने जाते हैं। जूं जाना पुन्तता गया धीर जूं ज्वान मास्त होती गयी, र जस्यान से पाये जी राम प्राप्त के साथा के से पसी सासान में सासान जूं में दनने सेगे। जूँ परव की सम ने बसी सिफन यह ही है धीर होनी चाहिये कि वह सासान जवान में माम केहम हो धीर हम हासत में सम्ता रंग कामम रेव । जुनीचे राजस्थान के सम्द पुरोने साथम के एक-एक हो—दो धेर इन बात के सबूत में मुलाहिना फराशाई:—

- (१) मीर वाजिद मनी शयुफना कहते हैं :--रंजी गम बट जायेंगे दो चार दिन वी बात है यह भी दिन कट जायेंगे दो चार दिन वी बात है
 - (२) मोनाता तस्तीम फरमाते हैं— नया भरोसा है जिन्दगानी का दिन सगर से निया तो रात नही सपना सपना परा है नयो रोना कोई दम से यह कायनात नहीं
- (१) मीर हैरा हमन ज़बी व यता— जो उस गुन के बही नमें वा वर्ष निकस धादा वमन में घात पुंड गुन्धों वा इनना सा निवल धादा रहोंबे बीनसाह ने उन पे जाहिर वी मेरी बाजन बसाने गुरुद्दें में गुरुमा सरना निवल धादा
 - (४) पंडित शिवनाय नेचविनयं मोरे पुरा है उनते नेच,
 याम मोरे पुरा नही होता।
 सार्थायों नव वा पनाना नाय है
 वितया देता यह जयाना नाय है
 (३) साहब्याया सहय छपी सौ दीतनपण से तोता है पन से मारा है,
 साहब्याया सहय हमारा है।

(६) मिर्चा माइल---वलाह दुरमती है बड़ी झाबक के साप जाता विश्वी के दर ये किसी झारजू के साप इसवाइयां उठाई झोर महुषा न निकला दिल के सिवा विश्वी को जब राजदा बताया

(७) प्रस्तर मिर्जा प्रकार— गायद के भेडदे कि हवा इनको लग गयी दीवाना काम करने लगा होशियार का पाई बहार प्राए, सुती क्या बहार की धन्त्राम जानते हैं जो होगा बहार की

(६) मामूक हुनेत सनहर— सर मैंने तो निया नाचा परेशां होकर तुम परीमां न करो मुझको परीमां होकर दिन में पैकां तो को साते हैं मेहमां होकर दिन से सरमात निकतने नहीं पैका होकर

उद्गे साहित्य के हिस्साए नाम पर एक प्रवास यह किया जाता है कि इसके पुत्रकते नामाने की इसकी दुन बूटे साथे जाते हैं या नामाने की केरान में विदेशी प्रवासन नवद माते हैं। इस ऐत्यास्त स्मार सह कि हिल्लुनाती पुत्र क्या भीर जिल्लुनाती हिस्सी प्राप्त मेंने देंगे बांच्य क्या भीर जिल्लुनाती हिस्सी प्राप्त मेंने देंगे बांच्य क्या में ही इसमानें भीर बाहित्यान में दर्जु माहित्य नामी हो व्यवह के क्या कर है। विद्यास मार्ग को को के महत्र में हम प्राप्त बाह्यान हुनेन काना मार्गुम संग्वमार, जुनार कानेंग्र बाह्यान हुनेन काना मार्गुम संग्वमार, जीर जानाना व्यवहार ही की उन्होंने तुन्वमारन और जानानाना पर दिनों की। बहुने हैं—



सृजन-चेतना |||

"ग्ररसिकेषु कवित्व निवेदनम्— ज्ञिरसिमालिल,मालिल,मालिल।"

—"ন্বনুৱি"

F7			
स्कल का मान	एक में ऐसा दीव जना दो कार्या		
स्यान्त्रीरात्रः सीत्रः	[" 4147 47 p	7, 4,	
	41 / At Prove 22	म राष्ट्र	
^{मेरा रहन} - नेरी माग	गीग विस्ति है मारत मा	रा भगतः	
منه واله لترين	1	ा <i>उ</i> रोप	
**	पाँच विस्टानी प	₽.	
द [ि] त कोह स्वाम	1 571 500	£2 ⁵ 4	
हात दुवरे बचेग	री महासातक का प्रचास सार्वे कर गरी	बारण	
17 17 8 7 1	माठ गाम का रंग	नेरन	
2. E. and An alike	ली का के द्वा ''या का देख	agia.	
बाज रूप देशस्त्र	मी करते के बार हरेका पर	म े इच	
^-	रंग रुपा का कमान	गम्बोन	į
وق بهاه ديد على مس	रमार पुर्वा विकासी रमात्र एक सारत	- 1	f
7 - 4	्र गण्य बाग्य सांस्टर	प्रशास प्रशास	
to be becal as as as as a	TTY made in	#g sp.A Transit	
ing only aliends	सर्वे अस्ति अस्ति । वेदर्भ		
£000	भेरतः विश्वतः को चीत्रीः भीरतः असे असत	र्व लेख	
	Fr sm:	#TTCH	
	the leady willy	that is it	
		M 5 TO E W	

TT. . TT

माननीय श्री हरिभाऊ उपाध्याय, वित्त मंत्री, राजस्थान, जयपुर

प्रमुराग कहे मधु है, रसने-बैराग्य कहे हरजा. हटजा। प्रमुराग विराग थे इन्द्र रिद्रडा-भ्रम कहता है बहुजा, बहुजा। प्रजान की चाह यही जग मे-मुख साधन से चगडा, लगजा। पर जान पुकार कहे मन मे-प्रभु के रग मे रगजा, रगजा।

प्रेम बहे मे रस देता, यागीस है मियती सादर है। फल-फूजों मे रस है फरना, जीवन मियता है मागर से। तन मे तन मन जब मियता है, तब भ्रेम उसे मद बहुने हैं। पर जब मन मे मन जुड़ना है, तब भ्रादर, सापर, मापर में। जब नारों नर बा जोड़ा है, रस भ्रेम पुहार बरमता है। भगवान बा ध्यान रहे उनमें, मगवान की मादर सारर में।

गीतो या इतना मान, ध्यान से सुन तेते, भावो का इतना मान, हृदय मे गुन तेते । मपनो का इतना मान, सुग्य उन पर होते. महयों का इतना मान, विवासों में नोते !

कोई मोतो को कमी साद कर गा लेता. भावों को कोई भाव कदाचित हो देता: सम्मोहन में मपने सपने हो रह जाते. कसमहस सपर में उत्तर परा तरु साप^{रो}ं

चतुप्पदियाँ !

तम कोई तम न रहासीर त्यी त्यी तकी। एक तुम्ही तुम रहे कि सब कोई तुई न रही। मेरी हर तौन हर तबर में समे हो जैते। सुमने जीते, हो तुम्ही मेरी विश्वणी तरही।

जापूर्व का की किरमा में सबत को बीधा । कृष्य-कामा में बाले के बामत को बीधा । काम सुरुष्टारी है कि बाग-प्रमुख से स्वरणों में । बीज-कोरी से बाद सकते किरत को बीधा !

नगरन बतना नाहै भी ध्यन से सभी। नगन्दी दन ना नगहैं सिहें नजन से सभी। भीत साद ना महिल्ला है जनदरह । जनना नेत्र साम है जनदर्द के समी।

''ਸੀਰ''

थी ताराप्रकाश जोशी

फूलो की सौरभ का बंदी बनकर मै बीमार हो गया। बगिया वालो ! मुभे छोडदो कौटो का चुम्बन करने दो !!

> बंद किया है मेरे तन को शोश महल के दालानों ने। मन पर पहरेदार बिठाए शूगारों ने मुस्कानों ने।।

फिर भी मैं बेचैन बहुत हैं मुख के सारे उपकरणों से। सब परदे हटवा दो मुक्तको पोड़ा के दर्शन करने दो।।

> घरती ने जाया है मुभको पास इसी से रज कमा के हैं। बुटियाओं ने पाला मुभको पास उन्हीं की घडकन के हैं॥

युगो युगो मे मेरे मन मे मान बहुत मेरी मिट्टी का। सोने की मूरत हटवादो मिट्टी कापूजन करने दो।।

> मेरे मीतो ने मेघो नो भाज शितिज पर हो मन टोनो। उन्हें भुमहने दो फिरने दो उन्हें मस्मने में मन रोनो॥

मैं इस सारी दुनियाँ का है यह मारी दुनियों मेरी है। काल मुने जन जन के मन की माही का कोर्नान करने दो।।

मेरा स्वप्न : तेरी माया

• श्री शान भारित

मेरे द्वार रूप उम दिन या भीत मौगने माया. मैने मपने स्नेट्रस्पर्ध मे उत्तमें प्राण जगाया. मेरे स्वप्न स्वप्न को महर्च, तिवं, मुन्दरम् योगा— सुभरो क्यों भीहेगी तेरी भूवनमोहती माया ?

मरी हो तामा में ज्योतित तेरे चौद नितारें मुस्त को हैने ही दान दिए धनल उत्तियारें, धन्यर को व्यापकता दी है, मागर को गहराई— मुम्मे ही करना-त्रत निक्त गए मधन कत्ररारें, हैने ही उमें दिन पूनी की घौद मुझे मीपी घी— धद कम मान करेगी मुझ्मे तेरी क्षेपन-नामा है

मेरी मान्या का मनाज समीज भूपन में गुनित,

पुक्या, तेर कीम कीम में मेरा जीवन मुनारित.

किया पूर्वका पात कामना की देखाएँ सीमूल्ल पुक्या, तेर काम जन्म की प्रीयो कामू विविध, महित कामूलियों की साथ सम्बद्ध में गुमहोल्ल हुने ते जाते किया पर देखना महिल्लाह हो भागा ?

होता कारता कारवात कर,--व्यक्तिकेशमा वार्गिते, यह कारवा ते विशायाता की, सहय वया आसी ते, आहार्युति व लिशित वावततात हैद्या करता है--कीर प्रात्त करते वाल की बच्च क्या वार्गिते जारवा कर भी देता का सरहासक पी सुनिय-लुके हुन करते दोना बच्च विस्ता जरहा दुक्साय ह बहुत लम्बी जीवन की राह। एक दुर्घटना की है चाह। चला तो संग न कोई बाँह, च्कातो मिलीन झोतल छोह बहुत सोचा, पर धनी न बात सह न पाता मस्तक भाषात लौट कर जाने कान उपाय जिन्दगी सरिता का पर्याय हमा जीवन जैसे निरुपाय न जाना जीने का ध्रमिप्राय कहाँ जाना है, मुभे न ज्ञान पन्य काही इनना ग्रहसान चला ग्राया है इतनी दूर किन्तुग्रद थक कर चकनाचूर नहीं बुद्ध मिल जाय विश्राम जेल, घ्रस्पताल, पागल धाम सभ्यता के ये घाशादीप निम्महायो के ग्रधिक समीप रग्ए। मानवता के विद्याम हरेगे निश्चय मेरा त्रास

× × ×
प्रस्पतालों की सज्जा जान
पच्य, येच्या, परिचयां मान
हेट रिश्तत, पर च्याकुल प्राला
टुःल से नहीं यहां भी धाला
हुंग का धनोभून धाकार
जियर देखों है हाहाबार
करना में बोसिन यह मन
कह उटा नाधी परिवर्गन

जेल का जीवन यन्त्र समान शयन, भोजन, श्रम मे श्रवसान गरिगत ही मानव की पहिचान निराला इसका वर्ण विधान प्रिट के ग्रागे बस दीवार ¹ लौह मम चेतन का शुंग।र जहाँ भय, सशय का व्यापार चला करता नित नये प्रकार क्हलाता है पडयन्त्र, मारम-मुख मूल यहाँ का मन्त्र एकरमता से कृष्ठित मन कह उठा लागों परिवर्तन पागलों की दुनिया ही भिन्न व्यक्ति में है समस्टि विभिन्नन न घपना घीर पराया जान न सुष-दुष में वैगी पहिचान तिरोहित यहाँ भेद वा भाव दिन्तृतन वा मन मे धलगाव भुताने घाषा था सन्ताप नही रहने देते चुपचाप मुने बेमुधियों में है प्यार यहाँ करने इसका उपचार ग्लानि से व्याकुल-विच्युत मन कह उटा माम्रो परिवर्नन कही आर्फे क्या कर उपाय चेतना है जैसे हत-प्राय लगाडू वयों न मानिरो दौर क्मिनिए क्हें स्पर्धे पछताव

वर्श चिर शान्ति, विगत ग्रवमाद गमी मिट जाने दुग विपाद रद वने बस्सा स्वय उस धीर धीतमा नाम मजिल का होत नित्त यह स्वर रैना धनमेन न पानी अनिया जिसकी मेन 'मृनी । यह सेज नहीं, इमसान यहाँ सा धाना एक विधान उने नीत देता पुरसाय मी माते जो माने मार मती प्रत्यों का करी प्रदेश प्राप्त कामे का महदेश" प्रता होते. होया समितान एमा प्रजीवन साधान कौत भोतेस यह विभाग वर्ग पानी पर पूर्ण विस्तान रूप कर हो दा हर _{पीन} हार का भारत की दुर्ग करता nene vir onege gja Wage De tier ferrie are he gut take his ** *** * * * * * * Contractor of

गीत

गास्तिनान बगाग

पता नहीं कीनमी पड़ी थी-मेरे गीत कि जब जनमें थे. बचान में मब तक बेचारे साम-सकारे रीते माने

नायर जम दिन मात्रम हो धो-सक्त मंधेरे में मिनती है. या फिर अनती योगहरी धी-माने बैमी ही अपनी है।

तता नहीं, पर युरी पत्ती धी-सायद पीडा पान नहीं भी. सावन में तो सब होति-में पानुन, नान भिमीत पाने।

निम्हं नमीन मधी चाने हो-में मेनित पर जा बहुत है हमें तहत पित्र को घरत के न महित्र पर जा बहुत है।

्रतियां भरता सम्बद्धान्ते, भेरे प्राप्ता की अपूर्व के त्रीपार जर प्रगा करणा पुरुषा अप्राप्ता करणा प्रो० प्रकारा 'आतुर' महाराणा कानेज, उदयपुर

एक बूँद अमृत की मुभेः पिपासा है, प्यासा है, इमलिये पुकारा करता है।

जाने कब पतवार लहर में सो जाये. मरघट जले न कब मन के विश्वासों का ?

जाने किस क्षरण मुर्का जाये प्राण कृसुम, जाने कर लुट जाय, काफिला सामो का ?

जाने किस क्षण भीद सपन को ग्राजायै ? सपना जाने किस क्षण स्वयं बिगर जाये ?

जाने किस क्षण प्रयश जाये नयन-मदिर, प्याला है. टमलिये निहारा करता है। एक बूँद, ग्रमृत की सुभे पिपासा है।

प्यासा है, इसलिये पुत्रारा करता है। चलते−चलते मिले न जाने कब मंजिल ?

किमे पता, मजिल तक चरण न चल पाये किमे पता, कब बौराये मन की ममता

जाने किस क्षण मन की मुख्या छ र जाये।

जाने कब श्रुंगार ग्रद्धिकर हो जाये? मन को करुए। पुकार कृत्य में यो जाये। जाने किस पत्रभूर वा भीता कप सूट ने,

रूपातुर जिन्दगी सेवारा करता है। एक बूंद, धर्मृत की मुझे पिपासा है, प्यासा है, इसलिये पुकारा करता है।

प्यामा है, इनालय युवारा करता है। ध्यान-प्रतिष्वनियों को राहों पर स्तर का पंगी,

जाने बब यक कर स्लय सा गुममुम हो जावे ? जाने कब सोमान्त-गगन को परिधि लाघ कर, मेरे मन का राज्येंस, जिर कभो न पाये।

जाते वस पर्य पर श्रविसारा छा जासे ? विमे पता, बल मुसद् विरागहम देख न पासे ? जाते विम सदसी सा दुवडा भीट घेर ले,

रह-रह धपना पंप हुगरा करता है। एक दूर प्रमृत को मुझे रियामा है, प्यामा ह, दम्मिने पुरास करता है।

हास तुमने वखेरा

ठ श्री विष्णु खन्ना हान तुमने बसेरा तिनक सा मण्ड चौद ने पी निया मुस्कराने सगा ।

गात ए कर तुम्हारा गिली चौंदनी, गीत मुनकर तुम्हारे बनी रागनी, कोक्ता ने वहीं भूत में मुन लिये ग्यर, बनी कंठ की भाग्य में यह पनी,

रीन मंगीत की सीन सी पार ने, रह गया तट विचारा ठगा का ठगा।"

कारम के कुंज की तुम धमर गत्य हो। भार के ताल में हो कमल सी जिती। पीत की कल्पना की धुमें प्रेरणा जिस्तों यह सफत है जिसे तुम मिती।

> राग्द के भेद मीनिक विनिधित हुए। सुद्र भारतुम्य दिसरी सन्नाने समा ।

याद नुमही हिया या हिसी प्याह में, हशान निर्माण का की हि कारण बना, धारण जिस नवन के सदन में हुया, का पी हाल की था गई मुद्देगा,

> दर्शना का गुम्रवसर जिसे मित गया. भक्त कर करदना गुनगुधने समा ।***

मपुरि इके ना निमा की गयी, क्या तेका चढ़ा ता प्रजाना हुमा, कृष मुक्तादारी ते जोरे भीद जब कृषकराकत प्रणा > दिस्तिक को द्वार,

> काज की मान की मानिया की भूगी को महे कीत कोई निमार मार्ग है

रूप अंदर्भ क्षार स्थान का प्रापृष्ट भाग के वंश रिया बुरस्का जाता ह

"त्योंहार के पल"

थो चन्द्रकुमार 'मुकुमार'

त्योहार मधन ग्रमराई का, बजना केवल शहनाई का, मासों मे मोरभ घोन गया--भौका बुछ ऐसा ग्राया या पुरवाई का।

यह जीवन की क्षराभगुरता मुस्कानो मे-मधुरीले सपने सजा रही है ग्रमचाहे। नयनों मे धुलता जाता है काजल हम का-यो गीत तुम्हारे मेरे ध्रव तक ग्रनस्याहे। प्राकर कोई कोयल चुपके में कानों मे-यह बोल गई है जीवन की परिभाषा मी। "दो पुम्बन ग्रौर मिलन को प्यामी पनघट पर-यह गागर धभी इबोई भोगो धाना-मो ।" नो तुमने भी लजवन्ती पलक उठाई है-यह निमिप गीत की गरिमा ने मिल झाया है। दन काली कजरारी धलकों को चूम चूम-

लामो यह हाथ तुम्हारा, लिखदू गीन नया-यह मेहदी रची हयेली फूल मूंध लेगे। केवल दो प्रक्षर लिखे घौर फिर उलकः गए-दोनो पागल ये जैसे कूल गूंध लेते।

लग रहा पदन धातुर होकर बोराया है।

इर दूल वगारी वाई वा. मिलना भर या परछोई का, यो चिर-तृष्णा नेवर बोई--वेदटिया ग्रामा था वेदल पहुनाई का।

यह चाद उसभता बादन की मनुहारों मे-यह मदिरा पीकर ग्रामा है बाताम कही ? यह ग्रांख मिचोनी बादिलया की मुरमुट मे पर तुम हो जाने क्यो ग्रव तक भी पाम नहीं ?

यह फिर कोई बोला है विहय दूर लेकिन~ ऐसा लगता है जैसे मभी मकेला है। 'पीऊ' 'पीऊ' की टेर दर्द के कण्टों मै-लगता जीवन भर घगारों से सेला है।

षायल हिरगों के नयनों ने फिर देला है~ धाजाय न बोई पारिधि फिर मूनेपन में। दे जाय न कोई ऐसी पीर बहुत मीटी-धन जाय न विष मीरा के फिर तन्मय तन में। इन गीतो की मोगन्य तुम्हारी विम्मृति ने मेरे जोदन को स्मृतियों को देखाँ है।

हरताल छन्द लय जैसे मेरा प्रयुता है-पर मेरे गीत, तुम्हार स्वर में एका है। या बुहना सदा इकाई का, घट जाना पुनः दहाई ना,

सच जीवन वो गीधूनी नह-इसता याया है स्पता सदा जुलाई हा ।

"यूँ ही प्यास जीत जाती है" • भी मंगल सक्सेना •

कोर्ड कितना हो बहलाए या कोर्ड भी ना मपनाए

> पूरी दिवस गुजर जाता है। पूरी रात बोत जाती है।

मुचिया साम नहीं देती हैं, विद मीमात नहीं देती हैं, मात्र मना दिन तो दाता है, पान मनावों को गाया है, जोने को गों जीते हैं, हैंग-जीन कर पीन कीते हैं।

रावे स्रोत स्थिती सेने धी शालां से स्थिता स्रोते

> उत्तर तम् आधा है इ.स. तम् सेंग्जामे है।

प्राप्त के प्राप्त करता है. प्राप्त के प्रदेश के प्राप्त है. प्रप्त के की प्राप्त करता है. मलकों का हर नता पराय: मेरे मान सरीवर से मन! तेरे हंस भुगेमे जन बन!!

नेकिन क्तिना हो महनाई इस में भर मुग में बोराई

में ही दिया हुएन गा। है यें ही झोल भीय जाते हैं।

भावता का शहबर कहर। उम पर मागा हुमा है पहरा कोई इब नहीं चाता है येति-नोति के बंध बाता है उस महोतानों साथ पुरारे प्याय कुमारी सबस हुएरे.

विकित सारवपु है यह मेता विज—देव का क्षम मान्नेश

> र्ष ही हुइच हार जाता है। या ही प्यास जीता जाती है।

मांग मत वरदान

खोजता जा, हार मत हिम्मत कभी मिल जायगा इंसान ? कर प्रतीक्षा, सितम सह. पर पत्यरो मे मांग मत वरदान ।

जिन्दगी को मत भ्रमो मे बाल भावरण को छोड, वस्तु सभाल सत्य को मत स्वप्न मे भुंठला मत फमानो में हकीकत टाल

कर समर्पण देकर के ध्राराध्य, मन बन, जान कर ध्रजान, सोजता जा, हार मन हिम्मन कभी मिल जायगा इसान ।

देख इन कठ-पुतलियो को देख धर्म जिनका मानना झादेश बाठ के तन में दवे शायद कही हो बिसी स्पिक्तित्व के झवदीय

ध्यतिये बेहोत कही को लगा भावाज, कर धाह्वान, स्पेत्रना जा, हार मन हिम्मन कभी मिल जायगा इसान ।

'गीत '

श्री गंगाराम 'पधिक'

पाहे जितना दर्द जमाना दे मुक्तको-फिर भी जैमा था-वैमा-का-चेमा है! तन ना पोला तो हर रोज बदलता है, पर मन की समबीर नहीं बदली जाती; जीने के लानच में, मरते के इर-में-घरमानों की पीर नहीं बदली जाती;

मत दो मेरा साथ-भकेला चलने दो-तुम क्या सममोगे-मैं क्या है, कैसा है?

काली राते भीर कटीली राहे हैं, लेकिन मजिल तो जानी पहचानी है. भूल सममती भाई है दुनियाँ जिसको-कदम-चदम पर बाुत वही दोहरानी है,

तूफानों में सहना-मेरी मादत है-माने बाने क्य का नवा-मेरिना है ! पासमान से मेरा कोर्द मेल नहीं, बाद-सिनारों से किर को मन कह्याई: माटो के करा-कार से बो सक्बाई है-इसको धनदेखा करके कीं मुख्याई.

प्यार करों या नकरन का जिप करनायों-नामों का मौरम है-गृह नये-ना है!

प्राण तुम लौटे नहीं हो

—धीमती शारदा गुणा

प्राण! तुम नौडे नहीं हो-में हडीने नमन मेरे-ग्रार पर उठ मुक्त गमें है।

तुम नहीं हो पास मेरे-ग्रन्थ सा सब नृष्ट्र स्मा है। भाज सीमा गीत सन ना-पान बात्तक सा जसा है।

> नीट पापी प्रान्त मेरे-भीत की पात्राज दे हो। मृत जिसे चैनुध क्ष्में मैं पात्र तेमा साज दे दो। पाना तुम गीरे जाते हो-गात्र माजीत पात्र मेरे-गात्र पर धा रहनाई है। महा पर दे पह सबे है।

बाद गित्त की गांग (वहर तान घर प्रापत जाताद) भार तेन घा तथा तथाव साम कर गोंति क्यार ह

> त्व पर वह संग्री है. यह रेल्वर हे तर बहा। सर हे वा विश्व वर्गाः सरका है पर बहा।

The second section of the second seco

"प्राण तुम"

--श्री दवाकृद्श 'विजय'

पतक में छिपालूँ, हृदय में बसालूँ, ग्रगर प्राप्त तुम, स्वप्न में भी मिलो तो। तुम्हें खोजते जन्म हारे अनेको, कहां तक कहो स्वांस के पग पखालूँ। वरप्प भी यके उन्न को सीडियोग पर, वहां सक डगर को बुहालूँ, निहालूँ। तुम्हें विस्त, करुगा-मुमन कह रहा है, पद्मा बर्मों चमन किन्तु बोरान मेरा? तपन से बचालूँ,

प्रगर बांह को डाल पर तुम खिलो तो ? प्रगर प्राग्ग तुम स्वय्न मे भी मिलो तो ?

(?)

पकी बंगुनियां, तार दोले पट्टे है, पुत्र स्तेह भी, धारती में बचा जो, रूपा बंठ है, धांतुष्मों की भादी है, बुताऊं तुम्हें किन दक्षों में बतायों। वर्ष के माब के भी मंदेगे, स्तर कि सुतुमने तमी है हटीनी। उपा की मनाकूं, निता को समालूं,

धगर तुम मिलन के दुधारे बलो तो ? धगर शास तुम स्वय्न में भी मिलो तो !

"मुझको मेरे सिरजन पर ऋभिमान है"

• श्री बीर सक्सेना •

तुन्हें गर्व है यपने छितिया रूप पर,
मुफ्तकों मेरे दरपन पर घिममान है;
इतनी कच्ची नीद नहीं मोता है मैं,
पेरो को हस्की घाहट में जग जाऊं,
मैं वह बादल नहीं, इन्ट्र के इंगित पर,
तज कर घपना घहम बरसने सग जाऊं,
तुम को घपनों गुरुता पर विस्वात है,
मुफ्तकों मेरे बचपन पर घिममान है;

तुम संघ्या के घर पहुनाई करते हो,
में उगते मूरज को मध्ये महाता है;
तुम संहित कर देते जिन प्रतिमामों को,
में उनको गिहासन पर चिठनाता है,
तुम श्रद्धा को प्रपानित करके गुन हो,
मुक्तों मेरी घर्षन पर घरिमान है,

तुम बतते बो गुबरे उनने बिन्हों पर, में बनने को नई सक्तीरें सीच रहा, साम समाते किरते तुम कुतवारी में-में इसको सामू के बन में मीच रहा, तुम गरिमा माने हो सदा पुरानत को-समती मेरे सिरवन पर समिसान है-

भूस मताती है मदशे ही प्यार की, उसे सम्ब कहते को हमें दुगाता है, यहां कही माता बाता है सन्यायां, जो सदके मत का विश्वास दुगाता है, तुम धमाम्यता कहाँ मेरी कमती की, समसी हम भीते पत पर धरिमात है!

प्राण तुम लौटे नहीं हो

मान्। तुम भीटे नही हो-में हडीन नपन मेरे-—थीम शर पर उठ मुक्त गये है। मी रोपाम की-रंग मामद की मार्थ पान मोदा गोन मन ना-पान बानह मा तथा है। वीर पाषी प्राप्त केरे-गोर को सामात्र है थे। गुन दिन बेगुप बन् म पात्र तेमा गात दे हो। मान । तुम भी होनी होन गार गरी है पात हरे-मात्र पर मा रह गरे है। म हिरो र अपन मेरby from the time free शह पर १३ घर गवे?। 3.78 78 35 74 75 474 574 85 5.78 8475 TT TE TE HITTIP RE SURE P POT REEL tre pur la contre. " . " ; T. An.

एक कहानी

लो कहता है एक कहानी, शायद तुम्हे पसन्द श्रा जाये, मुभे बहुत ग्रच्छो लगती है तिनका-तिनका पकड चोंच में मनो मनी ही नये नोड़ के नए सुजन का नया-नया संतोष मिला था । ग्रीर ग्रचानक. कर हवा के षातो-प्रतिघातो ने चाहा पक्षी की याशा-प्रभिलाया धौर नये निर्माली की क्षमता को तहम-नहस कर हाने। किन्तु नोड का सजग सिपाही एक एक निनका ला-लाकर नये सुजन को बलिवेदी पर फिर जा बैटा फिर भंभाने उदा दिया

निम्मीम गगन मे

एक एक तिनके को नन्हे पंछी की महती गुरुता का गहरा, बहुत बहुन गहरा उपहाम उद्याने । ਸੀਰ 1 बावला पंछी फिर तैमार हो गया। बाध शीश पर कफन मृजन को प्रसब पीर सहने को । (मौर) नाग दे मोके फिर भागे दहराने कया पुरानो । (दुहाराई भी) विन्त मृजन का पृत्य मदा विलता ही गाया। भीर बचा चलती ही माई, चली जा रही, शायद तुम्हे पमन्द मा आये मुने बहुत बच्दी सम्त्री है

री विरतनाथ सचदेव

"मैं अपनी दिल्ली का अकवर"

^{बहुने} को परनों पात्ना का एक एक मगर पर डाला वेक्नि घर तक मम्म न माया में नावर है या कि पनावर

हुए दिन हमी गोन में बीने वासिर रिमने पुने परा है हम दिन भटना हमी भरम में गोती का बचार करा ह तिम पर दिसे दुनि पूची

वर्धा हाय वह और व बाई राष माना बन्ने में मेरी विकास कर मूर्ग सुराई

the clien the clien 11 8 SET ME 41'S FOUR & Rid doord . which the desired Traffer or the fire Bary Jeewse Stary ** 780 3 87 880 3

in proper to being Secretary and Secretary

मंचा प्रमा धर्चन कर्भ काह गारे कर बेचन एक बाबच [ाम]

• 4

नितने भीत पत्र भर ह गैर रही धात्राज गहर पर हें इंटर है नार हिनास दिवामें रागों हुई है केंग्री बड़ो हाम सम्मा है स्मास

त्रमा की बेदकी जात कर धन्तर-हो सरमाम् सुरश्ह To at one we had "" frig erfere friet

mere de me galee à an de à les wearts training of the first to Charle to a graph ***

एक कहानी

लो कहता हूँ एक कहानी, शायद सुम्हें पसन्द या जाये, मुभे बहुत ग्रच्छो लगती है तिनका-तिनका पकड चोच में यभी-प्रभी ही नये नीड के नए सजन का नया-नया संतोप मिला चा । घोर ग्रवानक, करू हवा के षातों प्रतिघातों ने चाहा पशी की ग्रासा-ग्रमिलाक भौर नमें निर्माणी की क्षमता को तहस-नहस कर डाने। किन्त्र नोड का सजग सिपाही एक एक निनका ला-लाकर नये सजन की बलिवेदी पर फिर जाबैटा पिर मंमाने उद्या दिया

निस्सीम गुगन मे

एक एक तिनके को नन्हे पंछी की महती गुरुता का गहरा, बहुत बहुत गहरा उपहाम उदाने । मीत । बावला पंछी फिर तैयार हो गया। बाघ शीश पर कफन सजन की प्रसव पीर सहने को। (ग्रीर) नाग के मोके फिर घाये दृहराने क्या पुरानो । (दुहाराई भी) बिन्त् सबन का प्रत मदा विलता ही माया। धौर क्या चलती ही धाई. चली जा रही, शायद तुम्हे पमन्द या जाये

मुने बहुत भच्छी लगती है

री विश्वनाथ मच**े**रे

"में ऐसा दीप जलाता हूं."

इं॰ रामगोपान दार्मा 'दिनेश'

तुम दीप जनाते रोजः रोज बुक्त जाते हैं। मैंऐसा दीप जनाता हैं, जो मौपी मेंभी जनाकरे।

विषयण नहीं नुमको यस पर. तुमको मिता का सान गरी। हर ताया में रक जाते हो। गट्ट नके कभी तुबान नहीं। ऐसा यस कनाता हैं। जिसपर भिजा भी जात करें। ऐसा दोर जाएगा है। जा स्टिसि में भी जना करें।

तुम भ्रतिगुएम प्राप्त की, भ्रा भरतारा म बहुता है। हर भूता और के साथ मार भ्राचनारा होते भ्राप्त है।

है साचि प्रविद् तना हैं विक्या प्रदेश भग तना करें।

A AND A ST ARREST.

मागर को गोगा भी तिगहे. चरगो को बांधन पार्ट हैं। जिस एक दोर को दिन्स उसीति, नोहार मोठ से सार्ट हैं।

में बनको सेह मुझाई. जोपरदेखीका भ^{ना करे}

में ऐसा दीत जनाना है। जो भौती में भी जना वरें।

जनस्वतंत्र्योतिवनायोऽत्य पुरं भा भरता व सरी तुस्र सेन्वीत्र्यो कृतिरावी सामक्ष्यक्रमानसादीक्षी

ष्ट्रभाष्ट्रस्थात् । विश्व विश्व

र्वे एक बाद कराता है। कांद्राप्ता से बा करा करें

रूमानी चाँद

प्रो० 'शलभ'

विषारों के नजे में चूर ! खोजे हुये नये सूत्र के उन्माद मे खोया सा, नई ध्वीन, नये श्रायामों की श्रासक्ति का मारा सा. नये सजन-शिल्प की वीधियों में. व्रवसादमयी प्रमादकता मे प्रमत्त.

उस एंग्लो केयोलिक चर्च के सँभाते फाटक मे घपनी इस असरी जमीन की ग्रनेकानेक यात्रिक

धनव्स. प्रजाने गीतों की मधुरीली, किसी एकान्त क्लांत युवा साध्वो के हृदय को गूँज मे भूमता हुग्रा बुछ घच्छा सा देख रहा है। प्राममान को ज्यामिती की उदाम-नीली पुम्तक के गोलाकार फैले हुए पन्ते के

यत्रणाधीं के

मुदूर कोने पर, एक जेट घपनो दुम की घुँ घारी पेमिल मे एर लम्बा, किन्तु गीधी धुँए वी रेखा

योचना जा रहा है. उमके मायरी छोर पर बुछ सटक रहा है, इन का चौद है। 'हतदिया चौद-वेमे हो ?' मुन कर पह—चौकावहः।

त्रोने क्यो हवा की हत्की परन पर र्नेन-रेन दनराया वह !

हों, जी। तुम माजकल तो 'हलदिया' ही दीखते ! हालांकि देशे हैं तुम्हारे दो चित्र धौर-

ग्रववार में छो थे:

ग्रच्छे थेन बरेथे।

किन्तु, तूम ग्रव भी इतने बेसवर हो ? र्नेनिन का युग नही. न्यूनिक का युग है यह । परते जो उठ रही--उनको तुम उठने दो, नाच रही भौवरियां-उनको तुम ननने दो, उभरेगा चित्र तो—होगा ही रूप स्पष्ट, मुलेगा भेद फिर नेरे यथार्थ का.

निवात नग्न । नि पट। उप्नन विचारों को उद्धन निगाहों की

उठी ग्रीय उत्तर नी-कुछ नही

दिनीया का चाँद नहीं, बेट नहीं, बृद्धनहीः

घुँए की रेग्स वह बाजनी बनायण भी फैन चरी

दिब-दिव के दूर्गत छोगों तक,

ग्रथशार ! मोचता है—सबमुब पर भी चौद प्रफ्रह है। बीत भीर रीत युग के महती में सीया है! वर्तात चौर वार्गत सो बचकानी लोरियों ने उसे ये हबीया है। ऐसा एडडेन्बरम दह.

यह भी रमाने हैं।

मेरे हृदय ने मुझ से कहा~.....

• • • • • • • • • • • • • धी जनार्दन राम नापर

शक्षा मूर्त में ही में जात उठा बोर सेरे हृत्य ने मुम में कहा—"सोये हूर वर्षे धोर को हूर होते हैं हुए को बोर करते हुए कमी म करें हु" मेरे हृत्य ने मुफ से कहा—"को हूर धीरक कार्य हैं रि धीरत जारत महिमात्रत हो। मूर्च विराही के समाम जाया, इसी धोर धावात से दिवरें धीर है हुए को संघो के ममान दारा बढ़ें।

सैद्रीकी हुए वे प्रोज्य स्था मुहस्य पोडी से से जाय-पार पड़ा धीर शिर्मी के कश्य के एक राजा हुआ सेरा हुएय मुस्ते कह पड़ा—"जर्ने हुए प्रथिक जामें धीर प्रथिक जाया से प्रथिक कार्य र बारत के सम्प्रकार की नाम्य कर वे सारत के स्थानतर की तथा कार्ने गये।" जा की नवी से गरी की सुग्त होन्दी कर की हुएद से मुख्य से कशा—प्रिकाशित जाया होने जाने बातात्मा के तथा पार्ट है। क्यान स्थानकर कार्यक्ष पार्ट, नव्यत् निर्देश कर सामात करें, पर सीट प्रशि के या जा पूर्व के स्थान बारे की !"

हरत मंत्राने बंद ने मही नहीं हैं। दिए हुएए बुद्ध से बल्ला है—पानु मो रणा है। योगचात में इक्टन राजना है। जूने इस मारा देव नगा है भीगदलन की नहीं सब को रहे हैं। बग भीन अंप इक्टा के कुभा रस्त है भीग कारर भाग गिलान भीग हैं राष्ट्र वालन से बाद रहे हैं।

्रिक प्रकृति के बहें महीर ही करते हुए ये. जुट से करता है — यूच हुए हैं और हुनते हैं। की हैं। हैं। जुट त्याद के अग हुए हैं और हुनते हुए ते दिनय कर है। नहीं और बाह है। जुड़ा के अपी में हुए हैं। अपी त्याद के प्रशास है। तरी कार्यों कर है जुड़ा के समस्य कर असी अवकार (द्वार्ट) की करता कहीं अत्तर जुड़ा कर करना में वास्तर हुना कर हायार करना भी जारता है।

करर दुरवंबर में बर रागते । जिर पूर करत बागू बुद्दा रही है। उत्तर ब ब्राइवर मार्ग पूर्व के ब रहे में करवार पूर्व करियों पूर दुशा रागति है। जहार पूछ पुरस्त रहत है। के हर दुखा बूट में जर्र रहा है। पूर बार के राह बीर बहेर करते पूरात हरा है। दिश्य में बच्च पूछ बोर्ड रहा है। जहारी दूर के रहार की जात के। हो पर स्वार रही है।

⁻वह मेरी है भारत भाता

-श्री मेघराज 'मुहुल'

मधु में भरा जहां युग-योवन, ज्योति किरण में न्हाया जीवन, दिया-दिशा में उजला-उजला जिसका शतदल सा खिसता मन, पुलकित सस्मित चिकत विश्व यह, जिमकी गरिमा को है गाता, जिसकी गोदी में दिशि-दिशि को, संस्कृतियों का मन सहराता,

वह मेरी है भारत-माता।

जहीं सजन धाकार ले रहा, जहीं मनुजता मनुज पा रहा, जहां प्राम्य सुकुमार प्राएा-धन, नई फमल के गीत गा रहा, जो घरती जल-स्तावन पूरित, जो घरती निन शस्य स्यामला, जो घरती जल-स्तावन पूरित, जो घरती निन शस्य स्यामला, जो घरती जन्युक्त विजयिनी, श्रमिषिसता युग-युग की गाया.

वह मेरी है भारत-माता!

दोपिशक्षा सी सदा प्रज्वतित, स्वर-प्रक्षर में जो नित भंतित, प्राकर्परा के मध्यविन्दु सी, ध्रपवादो ने कभी न विचन, जहाँ सेंबुलन कभी न हिगता, जहाँ लोक मन कभी न विक्रता, जहाँ सलीना हृदय लहरता, जहाँ मुक्ति विदयाग विकमना,

वह मेरो है भारत माता।

जहीं घोस के कंपन से भी. रम जाती गरियों को पिरकन, जहीं प्यास के सुक्त होठ पर, पुतियों गरा भूमसर पाने, होठों पर ने ज्वार-सिन्धु का, जो घीम-शिक्ष मुक्ति-पय-ताना, प्राणीच्छवाम जहीं रस-रामा, सह-पम्लिक नहीं मुक्ताना,

वह मेरी है भारत-माता!

जहां सदा उन्मेष सजग हैं, युवा उमेंगे राह दिलातों, जहां चितना करे साधनां, सुब्ब-कानियां सुत्रकर सातें। जहां नया साहित्य कृषक मटहूरों का दर्शन सरसाता, जहां नया मानव प्रहृतों कन, कुण-दशां का भर उदाता,

वह मेरी है भारत-माता।

गीत

🕶 श्री युद्धिप्रकाश पारीक 🕶

माय मेन्यां पास को भरोड़ी कामिला भारे रै. धनक-प्रमन-धन बोहा बाजे. बमरघा मो बस मार्वे रै। मार्वे। पो फाट्यौ पैनी ऊप-मी उठ'र पोसै मोठ-जुवार. धोग-नरा बा-मा परेव सा मोर्ला में करने निर्लगार मुरज-रिरम्-मा हाप हंग बरा. जिर योने पुग जाते रे. नव्या हुया गुपरगा-नो धरा को रूप गरी निगरभावे रै। मोधे। ध्याना मोर-परेयाँ बा-मा उठै जिर टायरिया नाम ती बिजनी-की गरम बनायी विमहाबा में बरे न पुर भैम-बारपी बगार मुगापार दूप बरगारे रे. भर मनावनीट वैबता-गुंगरा गित-गित जाबे रे। मोधे। कामी काला पट भेग में हारघी-धीरते भूली गेट. बद्ध-गृहर्भ-भी बा धमके से बहा दिए ही रोज्या की बेटू । हो में बनी भूग ने पांचर निव-पैताद सवावे है. नका स्थल का क्षेत्र-स्थात गाला स्था हो जाते हैं। साथे क्षाँ में हो में मात्रों को बोरों को लगे परहार चान, राइन जरदा सराही के बरशह दाहै उत्तारी मार्चे रशम । राजन्यातन्त्री शाम बॉयश दुश्मान्मी दश्या है है, रीजे देलत रास्त्र बीत हार्ग बी तम सामारे देव गाउँ ह come and oak name are about for it are क्षत्री राष्ट्र जार् कात्रक के प्रशास लाग्ने प्रत्यात्रत कार कार कार करता पारता का दिल्लाहर है। mer was a real effect that the sect beautiful مرروس والإسافيدي بازر دواسه مدا المورود tion to be not made to be not not been been been as a second

बिरह गीत

• श्री चन्द्रकुमार 'सुक्रुमार'

टरणमरण बाजे टोकराजी, गए मरण गाडी जाय, कामरणगारी सौ सिरणगारी, बैठी भौला खाय।

> बेह्या भागे भावर भूमे नौगर बाग्यां जाय, पार्छे डडती मांटी, हाळी। सन्देशे पठवाय। की'जे बादळ सा बादीला परा सांवता घाय, सासरिये रो नीव निबोळो पीपळ नै पुजवाय।।

बायर बाजे, काजळ लाजे, रुत पाछी मुड जाय, क्यां ने देर करी परदेशी, ग्रासुडा पुछवाय।

> नेणा मा साविएयो बसायो, पतकां बमायो नीर, हिनडे बसगी ग्रगन हठोता, प्रघरो बसगी पीर। गुजब कर्यो घो रूप उपारो, ने बेटो तगदीर, स्वात बडे मुळके पादोगी, छतो लागे तीर॥

मैंदी राचे, कागद बाचे, सुपनों दिन ढळ जाय, रात्युं जागे हियो बावळो बैरी, घोळ्यूं घाय।

> तपता बीते तावधो त्रो, गळतां बीते रात, सांक्रसंबारे पतक बिद्याजे, निग्पट निग्पट बात । हिषक्या मूंभर बावे द्वातो में दित गारी रात, मोह्यांरी जामीर मुटावे नेएा से बरणात ॥

नाया नांपे हिवडो हांपे, हिचनीळां मुळ बाय. जोगला बलागी सेज नमुमल, झान्या नीद न बार । सब भी बेहोसी में हैं, महा निद्रा में हैं किन्तु जीवन के स्वामों के उतार-बागर में उत्तमन पड़ा है। भरवकार की जड़ता में हैं किन्तु मृत्यु को धार्मकामों में मुदर। में कात ते रहा है. मृत्यु को कानी निद्या में विवटा हुमा। में जीवन में है जिन्तु भनता कृत्यता में धारून। में जीवन चीर मृत्यु के मंत्रीमा में हैं। जड़ता भीर चेत्रा के संस्थ पर है। में मृत्यु की परदार्थ में हैं धीर जीवन की धानम प्रामी में भी। मैं जीवन की स्वामा में भी है धीर प्रवास। में भी है धीर प्रवास। में भी है धीर प्रवास। की धानम उत्तबासों में भी।

में हिम बोर है भीर हिम भीर नहीं ? हिमों की दुख्यर में है मा दुखर में है मा दुखर में है पा देखर में है पा की हु में । बत्तीता में है सबबा निराम में । हिमों के दिन में है पा पैरापन में ! में दिन दिता में है-में बबबे गत्ती शानता । में इम भीर है पा उन स्तेत । हिसी के पेम में है पावता अपना के पैनाय में । हिसी के पिम पीट स्वापता है पावता अपना में में दिन स्वापता में दिन स्वापता में है पीर हिमा दिता निराम के ब्रापता में है जी बहुत मांतरी अपना में ब्रापता में है जी बहुत मा नहीं अपना

में सहदाना से दिश्वाम सानना है। धीन सेहन्वना में जान मागवा है। भित्र रिश्वान मेंन जीवन ने कात ने सामन्य में हिन्दान गरा है। धीन महा विशास मार्थी में नार्गीय में नार्या हुए। है। दे साथि तान साम से आधारत है। देने नह साम के सान ने धीन तान सामने के सीमाना और पनियं में सीमान में विश्वान के तान भीता नार्या भीता मागल का सामन माना । हैने सामने सीमान ने विव्यन सीन नार्योग का सामान के में देवा।

रिश्त को ते बता है धीत जाता महीती आपवात का प्राप्त पाता ते धाराता है बार नहें द्वार न भागित धारात्म हुई प्रतिहराम के दिल्ला है धीर है स्पति तहीते करतार्थ, नहें तीत बता मंगी रे चाम बहुच समानन प्राप्त पर जिल्ला धार्मी

्रा नुवेश्व हर के राष्ट्र राज्य मात्र कराई ख्रावाद है है क्या ही सी री इंद्र कर्या का नाम वास्त्र होवर मात्र क्या गार्क का के ख्रावेश हुन के स्थापी का क्षा कि साम का राज्य के साम का सर्वा के स

"रूप छवि"

• श्री पुरुपोत्तम 'उत्तम'

वैने माप का चरम नदय मनोक्तक बाने तिरंगे की छत्र छावा प्राप्त करता ही है, भीर उसके निग् पाप जत दिन, समाज हिन तथा राष्ट्र हित की दुहाई देने मे नही बकते । उसेही धानको बना पैगे को प्यूक भीर बिना किराए का बहुदा मित्रा कि याथ का धनना हिन हो मर्वोचीर रह जाता है । जुनाों के समय रखे पार पपने दरावों पर हाथ पनारे कई बार देन तकते हैं पर बगा मजान कि बाद से इनके दर पर भनेत पढ़के नाने के उपरान्त भी धाय इनके टर्धन कर सकें।

भाग जन नेता, किसान नेता, सनदूर नेता, नोक नायक तथा जन नायक मादि उपाधियों के जनक है। पाप को जातियाद में सरन नकत्त है जीवन चुनाब के समय योट मौर केटी जाति बाते को हो देने के माग पूरे हिमायती, बन जाते है। देने भी घाप हर नाभ बाले काम के जिए परनी ही जाति वात्रों को प्राथमितना देने है।

पुराननना पयदा करीबाद को घाप बनाई पासद नहीं वरले, इस ही निण् धारमे सामानादाद की स्वीक जागीरदारी धीर जागीदारी को समाप्त कर दिया है। सब देश में बीर प्रसिद्धांन रहने वाना नहीं है। वह तक कि धारमें सपने नाजानिय सबके को भी भीकरों बीर्या जमीन दिननाति है जा कर नाजा नहीं की स्वास्त के स्वास के स्वास्त करने हैं से इस से स्वास के स्वास के

सदि बाद जनता द्वारा कुतायों से दुवना दिए जाते हैं, तो समाज बच्चारा बोर्ड, जातत तेवत मिता, त्वार विद्यास सकत, बाद ती: बोर बोर बोर्डिसी सरकता करना केन तिव्यातत का कार्य विद् वैदार हो रही है। ऐसे हो बितार्ट के सम्बद तेतु बाद जीवन दानी, दूसनी का बेरान कुलित करते है बौर बादे सबस में हमें बादण कर बादी जीवन सीता दाम निया सा गूर्वित तीना की तरह हुन कर

साँझ का रंग

- विस्थामर गुन -

मान की सीमा का रंग लीकी प्रकृति का विनेदा उदान या-भूत गया बहु नगतक मदय की रंगीन भागों का माहीत । मान जगती मृतिका के गितहरों की पूरि, बाते बात गुरुत होगए है.

नुष्य उत्तर गण है। यात उत्तरा ने नवात योग से स्टेब्ट बोट पट्टे हैं। यात उत्तरे यहनूत रेगों ने द्वार पुत्र पट्टे हैं। धात उत्तरे नोगत हाय

गरशहा को है।

कस्बे के बस स्टैण्ड पर

- मागीरव भार्वेद -

वों वों कोई उत्तरा कोई पर पता गर्मा। शिमी के उत्तरने पर कोई बेहरा नित्र उठा मृतियों भी भी गिरह एकदम गुलजार हो उडी यास में गदा तारे वाता जग्हाई से चंद्र भेडा बहुत पहन फिर जाग उही। विमी के जाने पर सदर पर बेतहास यन होश्ती हुई दर भाग जाती है अग धौर कभी-कभी दी बागे ग्रन्थ मे देवची पर जानी है।

रों है। बार्य ही कुछ बन को साम थे बाराबार ने स्थितन बोर तु जी व बाराय परी है। बार के ही पूर्ण मार्गा रा बार तक कवण की शेला केन्द्र हा कर रूप कर रही है। बार रूपन के पीती बरा कर बारी बाली की बमार पुत्र बाद में रहार दिशा है।

संपार हारायाच्या से ही हो जो को एपार जिलाई देगा है । इसके हिन ये लागे के आपना से नी बन केरान होना के घटा दम पान है। ये बनाशीन को बनाई सीन बुरतर को पुरार्ट से से नो सारी प्राथ्य के मोर्चिया किसी प्राप्त निकार ही जम है। इसके देखा हुए की करार से दम समाव हैं के तो नहका निनादिक से पूर्व की है। साथ साथ सर्वाच को मार्चिया सह नीएडा का दान कर से सी काम में दह से बने कमी है। साथ सानी पूर्ण करते होंगी नारी नारी सीन मुस्तुरी साथी से मुद्दि ही

कर्य कर्य के को के कहे कहे करते खड़े कर ने रहें हैं। क्षण करी हिंदूसा वर्गी के बीत र हो दूरा के कोत होते करते हैं जो को तरह जारत जारतों के नाम से क्षण जो तरह को बाते काल है दर्ज हैं को दी रहत के कर को तर्भ के करते हैं करते नार्ज हैं।

रतना का रूमाल

श्री मनोहर वर्मा

रतना मेरी नौकरानी है।

रतना ने बताया कि उसका पति क्वर्क है।

रतना भौर मेरी पत्नी मुवा हैं। हम उमर हैं, पर मेरी पत्नी के मुकाबले वह काफी दुबनी, गुध्क भौर उदासीन है।

रतना भावर्षक जहर है, पर मुख्य नहीं।

भीन्दर्य जिमे वहा जाये ऐसी कोई चीज उसमे नहीं है। रतनासीधी है, नेक है, गरीब है। मेरे झलावा

एक भीर पर का काम भी उसने भेज रखा है। मेरी पत्नी र्छार रतना

''बहूबी दुख पैसों की जरूरत है।'' भाव तो पांच तारीस ही है रतना ^चः…तेरे

पति को भी तो तनता मिनी होगी ?

कितनोक तो तनक्षा मिलती है बहुबी'''''' मरें! क्यों? तेरा पति कही नदातो नहीं ^{करता}, दूमा तो नहीं खेनता ''''''?

नहीं बहुवी। साय बीड़ी वा शौव है बसः या पिर प्रच्छे, वपडे पहनते का।

तो भी बया हो रतना, सवासी रपया भना चार ही दिन में वैसे पूज गया? धीर मेरी तो यह भी समभू में नहीं धाना रतना, कि नुम बुन दी

रींब हो, सवा सी एपये महीते की धामद है जिर भी यू दूसरों के भांदे-बरतन मांजती है, रोटिया वैक्ती है। मेरे उनकों भी तो सवा भी ने करीब ही मिनते है। पर बहुजी, मेरे वो तो हुन सतर मौर पांच ही नाने हैं। उसमें भी दम-पन्द्रह रपया महोना क्षतनर में नाय-पानी का खर्च हो जाता है बार दोस्तों में।

दस-पान की बीडी-सिगरेट जल जाती है। बीम-पच्चीस काहर महीने सुर के लिये क्पडा से धाने है। मैं दो घरो का काम नहीं कर्लबहुजी, तो फिर

महीने भर लावें क्या ? भई, तुबुछ भी वह रतना, मुभे तो बुछ दाव

में काचा नजर भाना है। यासी सेरायित जरूर कोई नशाकरता है या किर रपया क्वाकर जमा करताहोगा? '……कर्याहै क्या?

बात तो मेरी भी समझ में नहीं बाती बहुबी, पर हा, इतना जरूर है कि वे नमा तो नहीं करने स्रोर नहीं कहीं जमा करने हैं। पर यह करूर कहने है कि एक दोस्त को उनने स्थाह के निये पांच सान

सी रुपये दिलाये थे, उमकी किरत और स्यान देते है। और वह दोस्त सर भी गया बताते हैं बरूबी ""।

वहीं प्रजीव बात है । हिम दानार में हैं तेरा बादमी ? दानार का नाम तो मैं क्या जातू थहुबी, पर

हा, वे बता रहे में कि बहुत करा दलार है—गेमा करा, राजा के महत्र—मा । हजार ने ऊपर धारमी काम करते हैं भा≕ाधीर नार्किया भी काम करती हैं बहुओं। दिन भर पैसे करते हैं, पामी से सम २

नवती है। मरती में मंदीकिया। वर्द र वररानी है जो 'दनदो' कुस्ती पर वेटी वो ही वाप-पानी ना देते हैं, बहु प्टें दे बची गुट्टी में दिन मुद्रे दक्तर

देते हैं, बह स्टेबेबबी गुरी वे दिन तुने व दिनावर नार्जनारणारणा घरणाणाः दिनने हूं ?

देस, पॉच स्ट्रेजी ।

राता ने बराउन में गाँत कर रंगा एक सीटा गमात निकास भीट रंपने उनमें बॉपने गयी-

मरे तुक्यीस दिकात मेती है क्या, समात गरो—

सर तो सो हो नीन रही हूं बहुबी, सोवती सम्बोधिक नीन पूंती पोस सोव का कास ‴ क्या है बिलागी मैंते कमरेसे बोस करी ही •

हुत नहीं दर हो स्मन्न, रण्या का नमात है। में कहीस जिनाता सोक सी है। …

य चौर जनन—

्रु हु^{*} साजन्यसात्र मणग्या वर प्रत्सा, क्या भी सार्ग प्रमुख्य ।

देहे पूर्व बणारा नहीं गैं बाबीहर, बाली से एको नेटेर बणन चलने ने पतंत्र पर बेट नाहर ह इ.से.चार में देश्या हुन पतंत्र, बणा मेरे नायह एक महरो देश्यों है जारे का बाव चण्या

वारा कार्य में दिएक वह कार्य होते हुए जिल्ही के वहां की किरणाला है। जन्म के पिता के हैं जिल्हा का दिशा-पानी है। दिशा के हो जा हुआ का दिशा-पानी है। दिशा के बार कार्य के बार दिशा-पानी दिशाक के कार्य की बार दिशा-पानी दिशाक को कार्य के कहा है।

र पार्ची रहा नहार पेरेंग मुख्या के प्रीकृति के बेब के पार्च पार्च पेक्सर मुख्या करें कर राष्ट्र के के प्रोक्त प्रदेश के प्राप्त के स्थापन के स्थाप प्राप्त कर के स्थापन के स्थापन

ू तो सपनुष पदनी है से स्पत्त ।

मना, मुत्तो । एक बात पूर्व है तुन्हें वेरो मोगन्य है, मही-नहीं बताता ।

पूर्व न, एक स्वादन बार प्रमु ।

तुन्हें को कोर पन्धीत ताला किया है की किर तुम बुत कतर कोर योच ही बसी तारे हो ? नारी ताला साठी तो से बसी को बहु, बाला? ताला कि हैं वहाँ में में बस्त है कि तुन की नाम या प्रधाननाता.

तूनो सबद की घोती है से रणाः तुरे हैं है कणारा नरी बाबत सारी दोणा वाता आसा भी एक नस्त्री मीन सीवकर तूमक बास का सीवार या से रेगा पडेगा ही भागाः

रणा, यू बभी-कभी यह बीते बारे ने नैंगी है। यू एक बना बारा विश्वपद मेरे गण देशा गणा मह ना में यू में शिंगी हाश्याम में बार्ग मार्ग कुंड गणीर भी नवादर नरी गई भागी गणा कुंड गणार मां गणावाद बनते भीरें हैं।

नेत साई हु । देवाने बहुदी जाना साम देव जातात ज्रान बरादे तथे । दूर्वी जाताहरू ने वर्ग बर्मा वर्भा जराजनारे । वाच जाना वाच वर्म साम का अहा दिसाव देश हैं। जो वाच है नोत बहुद साराजनार कर वर्मा का कि हैं

र १ बन्दर है । स्थान हो बर न बार है हैं है कि का कार मेर स्वर्ध कर स्थान है दोस्त है, बरसो बाद मिला है, साथ साथ, सिनेमा देखेंगे री****** ।

कभी मुक्तेभी ***** ।

हाहां...... धवके जरूर...... । वसके खीर क्लर्क-

यह सामने जो मारहा है न।

मीन जगन ?

हा, इसका सनाम करने का स्टाइन देखना।

जगन ने दो उ'मती सलाट के सामने लाकर दूनियर प्रकाउन्टेंट को सलाम किया घोर नुद्ध कहा। घन यह 'धपलम-चपलम सिस्टम्' को तरफ देलेवा......

. जनन ने देला और दोनों सिस्टर्स मे से एक ने उने इसारे से बलाया।

भव देलना, यह हम लोगो की झोर कैसा गर्व

मे देवेगा।

जगन ने बुत से बैठे नीरस क्लर्वों की घोर उड़ती हुई गर्व मरी हिए फेंकी। सडकी ने एक फाइल जगन को पकडाडी।

धव यह कोई पतिका या किताब इनसे लेगा।

यह है वो हैर सम !

ही, हैडसम को है ही पर 'एक्टर' भी बहुत

ऊंचा है यह । मुबह जब मॉकिस माता है, सब देनो इसकी माता । सिस्कन सर्टे, चूनन पेंट, काना परमा भ्रोर पमनमाती साइकिन । बस यहां दक्तर भाकर भगने ने कपडे कोत्कर रल देगा भीर भगने मही हप से माजायेगा।

प्रच्छा, मैंने तो कभी ध्यान ही नहीं दिया,

यार ! बडा ऊंचा एवटर है।

तुम समझी हुँमेन देशों कमान है। एक से एक तमानतर । हमारी मुख्यों दनती हिम्मत नहीं जो बंदी एक भी हुँस बनवातीं । मारवाती नभीदें नो जुतियों से लेकर पेसावरी, लोकर, पर्म, निर्मात् पुरी चप्पन वर्षरह कई जोडे सो जूने हैं इसके पाग।

बन्डर ! तुमने सूब स्टेडी किया इने ।

स्टेडी करने की बात ही है मार, धाइवर्ष होना है कि इतने कम रुपयों में यह सब 'नवावी ठाठ' क्षेते 'मेस्टेन' करता होगा ?

बुख पार्ट टाइम ?

नहीं करता है, मैंने पूछाचा। घौर मजा यह है कि बाइफ भी है इसके।

81 K I

भौर तारीक यह कि विकास एक नहीं 'मिन' करता। उसमें भी एक भौर सना'''''' ?

को बया?

जिस हो में, जिस क्वास में सावस-कारस सिस्टर्स बाग्सी उसी हो में, उसी क्वास में, उसी के साम-वास हजरत मौडर हों।

मगर यह सब बार्ने तुम्हें कीने मातूम ? देसो से खरीडी है मैंने !

. . . .

बदा मनवद ?

बद बभी इसे एक्टम, निर्देश के लिए केंगरेड

ी है तो तक—दो स्पया सम्मे ने जाता है और र में मारी बार = ***

E 4"3" ***

प्रमाद १ " पाद मन दिये 'परर', देव पंटा ही स्क्री सीह सीहे

द्रम्या । द्रो = " है ।

त्तर धीर ज्यान--

यात्र हारे हार जरत हते मिल्ला गार्ट, बाल धीर बाया पहारत बनने को हमा हि, सहक क्षति ही एक सरक्षरकी ने जात की माराज । बदन टापी हुए बोगा। गरगानी क्य पुना, यभी ताः

कल हो ना जार हुए, द्वर हा ।

ं १६९९ हैं। चंदी ती सुद्रात के शाय, बराव सर-को के दान ना धीर सरदात्री के एक हार में रिका कल्पर १ रेच जार भेर बर्ग गवर विद्या इ.सरी भरता दारा च सह ... मैं तेत साथ प

करर ने बणारी हंती व अन्त बारत सुराते. reger en gung er fegt un fer eren f.

करोबल कुन्नाल दशे दोल को इद है। to enfang - bit in bigt de wiel ein \$

Sur fange urrefte bee bef

बुझती चिनगारी

भी भागीरप भागेंद्र •

नगर के एक कोने में ਰਿਸ਼ੀਰ सरक हरिय टिमटिमारे नेम पोग्ड के प्रशास मे तोत मेंडे गनारे को बाते है धम्पद्य को सना न पारे हैं।

बहुत कुछ एक सी बारे गुमस्ती है एक हो अग विवस हत एक मार्ट पर शायद वं ही युगरती रोगी बारर माने से परी ही वैग्रीत सर अधिरी चैंग कोई शाम में इसे विशासी राम में बारर धाना बारनी है er fer att-att का-का असे 🐉 1

A 400 MILL ar it frant ta fint !

une & Zanauer feriet bert t. b. mer merge git gefram ge mge it eine कार दर जरा करा रहित बहा है है है हा रा प्रा green er gent't were in der it's aven ta ter an gir graf a at ga an t in the section as teneral in parties

एक सफर

श्री जुगमिन्दर तायल

जिन्दगी !

बहुत बार सोचा कि भालिर यह जिन्दगी है क्या ? जब सांफ दल चली होती है और बाजारो में घहत-पहल बढ़ जाती है भीर धो केसो में बिजली की रोशनी में साढी, बनाउज, पेन्ट, बुशर्ट, जूते पहने निर्झीव मूर्तिया मुम्करा उठती हैं, जब रेडियो भीर लाउडस्पीकरो हारा वितने ही स्वरो से कान भर उठते हैं भौर राह तागा-रिवशा, मोटर, टैबसी से भर उठती हैं, जब क्रीम स्त्रो, सैवण्डर की कितनो ही तरह की गन्धों से नाक भर उठती है भौर कितने ही चमकोले सिल्दन या पारदर्शी नाइलोन के बपड़ों से मार्खें भर उठती हैं, तब तब धनायासही मन मे न जाने क्यो विषाद पुत्र जाता है. उस घोर-घरिट में, उस बहत-पहत में न जाने केसा धकेलापन मन की बाटने लगता है। न जाने मन में क्यों यह सवान उठ जाता है कि मासिर यह जिन्दगी है बया ?

ब्हुन सी ताबोर दिवान ने जमाती है। """ हैंची-जैसे हा तहने वाली विजयते, बाद, पोसी, हैंदी रोमांने में दिवते ही दिवान ""एकी, हुनार भीर रहें भी द्वारा ""देवता है विद्यानां में दिवते ही दिवान ""देवता में दिवान म

हुनानो से चिन्ताते रेडियो घीर लाउड्स्पीकरः मेला मैनों की यात्रिक मुस्तानं, "पाइये स क्या सेवा करें धायको ? धीर जाने के ब चने घाने हैं साले परेसान करने।""

एक भीर चित्र । होटन भीर रेस्तरो
हीनयां । चत्र । शान-दित्र । हन्नी मित्र परिन

..... हाउ हु पू हु ? चहुत से सरोसे मा
यह टाई चरेंगे क्षेत्र डु मीट पू चरेंगे मा
यह टाई चरेंगे क्षेत्र डु मीट पू चरेंगे
यार योर कम्पनीमेन्टम् बावेजुनेमतम् व
योर कम्पनीमेन्टम् बारेजुनेमतम् व
योर कम्पन चरेंगे स्त्र चीर सीट सेट से मा
योडे वो पू क्षुत्रमा बूरे, ऊ बी माधियां पार्ट मुद्र
योर क्षितिहरू में पुत्र में पुरे पार्ट मुद्र
परियमी पुत्र भीर बार से हाम दिने नावते जे
ही ... हो ... हो ... सीवयी है सी

या, 'हुड सीतिय सर । " सर, धार व गुड़ी दे शीकरे, मुखे साथ है " " सर धार यू तो देविय धारर स्ताम दुवे " मितरण स्ताम क " मार या साथ साथ ते । दुख्ती सा धर सीधन, तेथा सी समय सीत्रा किहारी क साथा कोळा । स्तानी दीते हैं ग्रीता, हेला सहस्ता, धर्मर ! " नारम-नारिया से " " साथ कीत्रा हिला समया, विद्याणा किता " " और दिर राल सम्या, विद्याणा होते हिला हो है है " " प्रति हिर होते सु नरा रहिया है " मापुर माहब बन बा समसार पता सारते ? सिनगानिह ने ऐतियन रिकार्ड कामन क्या है किए "" हुस्टर कर बा रिकार्ड काम हता है कर बातपुर और से बसेट्री पूर्व कीक्सी ? महु पटन ने बनाव कर रिसा "सा दिसन ! मुद्रागां किया है औरसार

" वत वत्रव में बहा मना मापा गर्मा । भैने पीठ एतक को नुसारित हुमारित स्था मा ग्या - जिल्लानी भारित हुमारित नाम है" भारित हुमारित हुमारामनामें, मीपवाल भीर पीए पिछारा।

गर भीर विष । गार-गार, भारत-भारा । राष्ट्रीया की घेटुरिया दिवाती की राजार में कर र्ता है। पारचे पर पार रें। साहब का बात-रेगो के बार : विगार गुना की बनायों रिक कुला, बर बाइब बार रेट बर से । करी बी । क्यो । क्यो नहीं की १ के नहीं नृत्रता कारता क्षा । अपूर्व द्वार्थ करो, करना बरना 🦠 🦠 दरर रहर हेराचार जो - हा दिलाव कार रहा है हा हो ही सारेश अबी बड़ी रराग है . = दि'सार कारद हा रहे हैं . ० entinter mit feine विश्वनको दर काकार, कररानेन्द्र; बो बोह सुक् dir ebrant er be let erer bet E F "et tr FErt; grer erest at नहा । मुख्यम् बरशः स्रोतितः वर्षे पर् कारपर रिक्क (एक र . पार्ट **प**ारत् बन्दोदो दिन - कन्दो दी चश्रहर

artete erert i apfalen bit egt e en giet freeraan alemakt een in her de dit toen de bit en ee ferinaan en bij geeld ate में निरंपका कर मेठ बाबा है। कमरे के नव दरबाबे कर कर मेजा है। नाइट भी मान नी करबा। माने बन्द कर नेता है कि महत्व मुमरो नहीं दीने। वेका मधिराण प्रकार वेका मधिराहो करणणणणा

पर सवान मेरा वीमा नहीं होतता। किमारी है जिल्लाी नवा है ? यह मस्तितान मोर करोर में दुनियां । में यम मोली किमार्गे । में द्वारी मुंठा, नेवत मुंठा। दिल मोर दिवान को मारी मुंठा ने नाता। शिमा यम तोहती प्रतारी किमारी भी तेनी हुई मुद्दी हो भी किमारामार्थिक समार में मीरे-मीरे मुक्तर निर्मीत मोर मार्थिक

या, मात को मान नहीं, महीमा मा नहीं।
नहीं, रा-नीम पहें नहीं केवत कुछ को हुएँ
एशा 'प्पाट हुनरे वह शिष्टापत ही तर केव के
हों, कुछ नहीं, नवर्षात ही केवत हों, नहीं नहीं
स्थार, कुछ एशा वह शिष्टामा को नार्षात के
हेरिय, प्राप्ता में तुर्वेष्णाः शहर की वर्षाप्रत्न नहीं हो, होटल को व्यवस्थाय नहीं है,
वर्षा का नाम्या परेट प्रतिवादन हो है है।
को हिस्स्पार, धीववार, भीत हो की की की
नद-पुरते को प्राप्ता है।, पूर्व-वह के नहां में
नहां कह प्रतिवाद प्राप्ता है।, पूर्व-वह के नहां में
नहां कह प्रतिवाद मात्र है।
हिस्सा का प्रतिवाद है।
हिस्सा कुछ है।
हिस

सन्दर्भ कार्य नहीं महा माना है इस है सन्दर्भ है हिन्द कहा के प्रत्यों सभ हे गई, वर्गी कर्मन है।

---- 3 Besteite & 41 946 .

जनवरी का एक दिन । विशेष दिन नहीं था। सीधा-गा सामान्य दिन । शिक्षिर की दोपहर मीर मन-मातो पुनी पुर । जयपुर की घहन-महत बरकत्यर थी। हाने से मरा हुमा एक मिन के साथ बन-स्टैंग्ड को भीर पुन्ता पन माग हा था। । पुन्ने का काररण ये एक मिन जो रात साथ चलने का बादा कर पुन्ह मोने ही चने गये थे। स्टैंग्ड पर पहुन कर मिन को दिया कर दिया तुम आमो भने ही। नवत स्तवार करता होमा 'चना जाऊंना थोडी देर थे'।

'नहीं। मैं फार्मेलिटी मे यदीन नहीं करता। जानते हो' 'मच्छा' मित्र चल'दिये मे । फिर मुडकर बोले 'मब बब मा रहे हो बिनु ? जल्दी लोटकर यह बिस्सा भी मंतिम रूप से तम कर सो डाक्टरेट मा।'

''वाहता सो मैं भी हूं पर सवान खुट्टी का है न। वोतिस वरू या इसी महिने माने की''

बत जाने में देर थी। टिक्ट लेकर सामान एक, बहुए पूर में था तहा हुया। दब सभी सानी थी एर धीरे-धीरे भरती रही। टाइस हुया। हर्ने हुगत के निट पर जाकर बैठ गया। देसा, पान ही एक नदबी साकर बैठ गयी है, ऊट के पुगट रंग के सेस्टर में हंथी हुई साधारण लड़की।

सह चर्ची भीर भारत के मुताबिक जुन बैटा ऐरा। पर्रेचरें जर्र से चलती रही। मुख इन्द्राने को मन बर उटा। नोट कुम निशाब इस वीकता निलवा रहा। रोटक भाषा। योच विदेद रक बर बस किर चल दी। मैं किर याने में इस गया। योचे ने हुनकुताता रहा ऐने विभाव संवर्ष में सह कुतुतार इसी रहे विमी वो मुने मही। इस ने एक पुनाव निवा हो में हुन्दे ने उसने टक्स प्रस्त निया हो सने दर्म

. पिरस्टेसन मागयाचा<u>।</u> इतस्तीः सहसा

उसने पूछा "भ्राप क्या मलदर जा रहे हैं ?"

"हां। भौर माप भी"

"मैं भी, हां"

बस फिर चल दी भीर में फिर घपनी ग्रुनगुना-हट में डूबा रहा। उसने पूछा ''धापको लियने का शीक है ?''

"हो । यो ही कुछ, घोडा सा"

बह फिर चुप हो गयी। मैंने वाँगी जेर में रखनी। ध्यान उचट गया था। पूछा "माप क्या मलवर ही रहती हैं?"

"हो । घाप ?"

"दिल्ली" कुछ कुक कर बननाया "जयपुर दोस्तों से मिनने माया था। भाषा ट्रेन में या मौर जाउना बस से। सोचा कुछ वैराइटी रहेगी।"

बाहर कुछ भौर रेत के टीने उच्छी दिया मे भागे जारहे ये भौर मुरत घोरे २ पहाड के पीछे उतरताजारहाया। यम नाने भौर पमात्र पार करती बड़ी जा रही थी। स्वाइयां मन से निकत गुईं वी और मन बीती बातो की दृतिया में की गया या। एक के बाद एक " " प्रिप्ती बार्ने मन के पटल पर उनरी भारती थी। जीवन ! एक मूचा योपल का पता, तीब हवा ने जिमे तोक्कर ग्रन्थ ब्राहास में निराधार भटवने को छोड़ दिया हो। प्रदेशा । प्रदेशारत !! बच्चत की परित्यो मार पार्ट 'बितता धरेता भाव में !" मन बार-बार रोहराना रहा-'दितना घरेना प्राव में ! दिनना घरेना प्राव में 21 बहने की नाते-रिस्ते सब है, दोस्त है, परिचय भी बहुत है पर बहने को हो तो हैं, मन की छनिनी के स्वर उनके स्वर से बुध धनन है। बग्हर के उन सम्बन्धो का प्रमाव मन तक नहीं भारा। मन उनने तिस्मेंग है। """एमडो ब्रोर देना । वह बाहर देव रही सी, पर वेदन इटिही बप्टर है ऐना समा।

नया कि मन बही भीर है बसीह आसे तुए अभीव इंग में गोर्ड में नगती है, होतों पर तुछ अभीव-मी घरात और मुगान है। बोही देर उनते और देगा। रंग किर बन की अन्य नगियों का स्वान कर तियार पूर्वा और करती !!!!!!!! देश वर्ग की गाहियों की और शती!!!!!!!!!!! भीर गहर की मिर्ज पूर्व हुंग समीता, गीर सामे मुंद पर मुख्या पार को और पेट भारी देशार का कोई बातू मा करते का सार । एक गगार का की नजा गुंद निर्मा मुझ्ली मी मिन्दी की नजी वसु । अनित की में गाही नहीं नहीं मी

बन महोत्यार की नहीं पार कर की थी। राज इन करों की जीद मार्थेत कवितास भीरे ने पार करा था। बहुत बाद जा है हि गीम का कर सीते बीतारी के बनाव में बाहता और उद्या है दर मान्या स्तर्भ महित करते हैं गया। यह सुनारितार केवल पर एक्सिक्टिंग हों। बीता सुनारितार केवल पर एक्सिक्टंग हों। बीता की

साम्मा सार्वस्य । स्वतंत्र-वस्तुत्ते वेच्यः व ततः वस्त तरेसः । वतः दलन्तरः स्मितः वस्ति देशाचन क्षेत्रपुर सीतुत्त्वनी सुदत्तरे तेव राम्यक्षेत्र प्रीति कर्षाः जीव वार्ते वतः याः है तते हात्री नाम्यक्तिका व्याप्तः वस्ति विद्याः क्षेत्रतः वस्तुत्राम्यक्तिका व्याप्तः, वस्त्र पीते, क्षेत्रतः तत्राम्यक्तिका व्याप्तः, वस्त्र पीते,

**** 3

पत्र वरण्यात प्रभवन बीट स्वीध स्वाय पीते से क्षण के क्षण पर्व केटेन्द्रण हे तक क्षण कर्तरी क्षण स्वयद्ध पर्व कर्णा स्वयूप्त राज्य क्षण स्वयूप्त कर्णा स्वयूप्त स्वाय स्वयूप्त कर्मा स्वयूप्त स् कहर ही यह पुर हो रही।

'हो, बहिये'

'तुना मुनाइने न । यही सही जो घना थेंगे देर रहते शिल रहे थे । मन होता है थो है ही मुनने------' जह किर घाषा पान वह वर ही हो गर्म।

जसर नही दिया। भीरे २ दुवद्रमते का कार दिया। दो हो पंतियां कोती पाया पा दि वर का हार्न पुमानी दिया। कार कर कहा 'करिने का बागी है ते'

हिन्द पर्य-गर्य-गर्याट्ट में बार भरते । पार मही मार बा बोनारा पर्व बुह महा था। पार की बहु दूद देश बी स्त्रवारी मही बहा की बोन ही प्रजात मी मन सबुधन बा रहा था। बाहर की चुट पुरर बा सीद बन की रोगा में हो में बेर की बोन का में भी हाइबर में सापी नुष्या के कि बाहर काल बार की बीन श्रे बावता मीर सामी

र देवला है साहबार ब्रेस्टर में उत्तर हैं। एउ

कत्र में उत्तर कर बाहर क्षा नहां वा ह

क देश लगरा हुए लगा ता है तहक के होता है? करण दुर तर पारतों कोड़ जराहों के कर लागे अहर जे रूप के पारत दिश्त जात कर तर तर तर के दूरण कर हमरे हम गड़े जो नहीं के अहे के हमरे कर हमरे हम जो हो हो जह जह जह जह के रूप हमरे हमरे हम जो हमें हम जा हो जो ना रूप हमरे कर हमरे का सहा जरा हमरे के हमरे नर प्रपने काम में मन्त्र थे | किसी ने किर पूछा "वितनीदेर लोगी मई ?"

'मापेक घंटा', उत्तर मिला।

कुछ समय बाद वहा ''बोडा घूम मार्वे''

कुछ न बोलकर उसने पैर मागे बढा दिये। यदते रहे। बल पोछे रह गयी दी। पास ही रोबियो पाएक ऊर्चासा देर पडा पा। प्रजान ही वहीं शहर देठ गया। यह भी पास मा बठों। पोडी देर

पार देठ गया। यह भा पास मा बठा। पाडा दर पुर रह बोली "भापने यह भाषूरी छोड दी घी" महा, 'सामोती मे भावाज गू'जेगी दो मच्छा

नहीं सपेना'
'भीरे से ही। नहीं तो रहने दें, माप न चाहें
तो'।

धीरै-धीर हुनहुनाता पुरू किया । किर धीरे में मुनावा "जब तुमने दर्द जिया है तो में ही धीर मुग्ता किर जब तुमने पट्ट ताना है तो तीर भी में हो पीर जब तुमने पट्ट ताना है तो तीर भी में हो हो तो तुम्हारा हान जिया है है है तो से में ही तो तुम्हारा हान जिया है है हो तो है के पाने में नीर परकर प्रतिक्ता है तो भीर है है तो है है भीर एह कमी पट्टी नहीं, भीर हुए एहने पर भी बाह रकती नहीं, भीर हुए एहने पर भी बाह रकती नहीं है तो सुर हो तहन हो केद देता है तो मुत हा हो हतता है सीर सहह एकती नहीं।"

 हत्का दबाव महसून करता था। बैठे रहे। बोई मही बोला। "" कोई नहीं बोला """। धीरे मे कहा 'स्रापका नाम नहीं पूंछूं या पर सम्बोधन ""

'रहने दें' धीमे स्वरं में उत्तर मिला। "हां, जरूरत नहीं हैं उसकी, वयोकि सम्बोन

"हां, जरूरत नहीं है उसकी, क्योंकि सम्बोध धन तो दूर रहने पर ही काम ब्राता है।"

जाना कि उसने कंधे पर सिर टिका दिया है। कहा, "तबियत होती है कि बापका बुध परि-

चय आहूं, पर नहीं, पूर्ण गा नहीं। पाना भी नहीं हूं गा भीर सामद मान जानता भी नहीं भारती । इस शाल का सम्बन्ध पूर्व में नहीं जोहंगा, यह भी कोशिता नहीं करूंगा कि पर में इनका हुई। यह प्रत्मे में पूर्ण है। यह विश्वास का शाल-बर क्षेत्र विश्वास विद्या है तुमने, यह पानतक का लाल-बर हमने धाना ही एक दूसरे का नेक्टर सामुक्त विस्ता है दिनों बाहरी कारल में नहीं, मन के सामें में।

यह दिस्ताम का क्षण घरने में पूर्ण है। पूर्व घीर

पर की इसे मावरयकता नही" कितनी ही देर शामोग रहे ।

वहा, 'जिल्ली से सरेलाल ही नहा नाय है। केल तिरामार जैसे मुखा नगा मुख्य से मत-कता। महर वो चहन-महत्व में होत्य से मत-कता। महर वो चहन-महत्व में होत्य में समित से मत ने दुछ समोत सी तिलहादला और सम्माद ही सनुस्व दिया है। जैने कि जम्मोत का वृक्ष तक्या हो को महर्सों को दश पर जिला दिला मते कह तक्या हो हुक्या-उत्तराग टक्कर नाता। यह पात्रक नती सारा कमी, मत वा मह देवे एता सन् हिस्सान मी मत्रेह में वोह सु. पुरत मार हु या ने हरहो नही गता। में इस हु प्रत मार हु या ने

हुँग ब्यायित प्रमीत होते हो । पुग्ते विधास की स्कत-वेता ا ﴿ لَدُ عَلَيْكِنَانِهِ ا करनी थीं, पुण में भीर मुक्ते द्वपरा । राज परिवर्तन । बरोबश-त्यास्य बार्च । बारशे ब्रविकारा---

(बारत के राज का स्वर)

विद्यारं-वर्गावरे, दही विद्यु है मृतु का

रिमरा क्षीर जीवन । एक की मुख्य दूसरे का जाल धाराम बरमी है। जीवन । मृतुः। मृतुः जीवन ।

विकासारी श्रमना । मुख्ये बहुराम ने मेरा मार्त महत्त्व कर दिया है, महीपता । टराज्या-पुरसार बदा कर रहे है। से लो

हैर के रुपाएन में हैं। मेरा जीवन की मारते हेरिन t f teining } }

िटार-पान्यहें। मेरे केनो वर को पानरान रता हुमा का कह एक बुका है, कुछ बसाव बाले कर-

माथ करते के निर्दे जाता होगा, जागीवाच की जा। ein Eye bill il bela [Ed] وسيديستورا فكا فللد ا

विद्वार्थ । हिल्लु की बद्धवा में देश बार्ट रोक्डे

का करान कर कार कर करते द्वाराति है. तुस्से Lad Million & 44 1

هدره دي (مده شايره) في عب حسامي هددن Bergen rimme at bim fer telet and as any \$1 85 min & lengther as

े प्राप्त । अरवन्त्री पूर्वः के बादर प्रद सावश्चान्त्र वृत्ति कर्त्ते क्षा । वात्र -वस्त्रीतः दुश्यानाम् कायः वे व्रां कर t man an forme grown a weet seef a

कित का ए तकानुका के नेताल के कुछ की नहीं का

Transfer by Cone TENERS OF THE SERVICE कत्य की सीच करनी है। जीवन की बबंबर में दूर रहना है। बन्नोपरा—देव. में एक प्रत्नव देत

मनोहर प्रामाद उम प्रवय में शंब होरद सं रहे हैं, धार्च । बातक बाधी हो टा है इपने व

कामना करें। निजार्य-नवस्य हो दर्गायस-दर्शायर घेपेड से दूर जाता चारता हु से, अीवर

मरता की पूरी में दूर मध्य मार्ग पर । यान थिया मा मेरा विस्ताम प्रवत् हो उठा है। साम-विगतित होने बारे जीवन से हत्कर निवास ब का सञ्चलक करता सार्थमा सीर तुम करि करोती ।

(मिदार्थ प्रत्यात करते हैं, बतका कार बंद होता है।) सम्बद्ध के शीर्षे क्योंन क्यायमा कीमी । संक्ल ने पाचार एक गालि जिनेती, गामक Lijal' 411, A\$

(राव वर्गावर्तन) धवातातु-मध देवाल बीवत धर रिया है पुरराहे महरात में मुख्य में । पराणु राजपुर के कार चय मध्य तेन भी है जो हवारे मनपूर्ण का देवत

हर मही सम्बद्धे । देश्यम-संबंधानु तह वै सन्तर कर से वता बाहता हुये मा बेरन्तु थी, प्रशा का रित SAL & LAS

granna-gata' att an 1 nud es नमस्त्र के दिए मूट के बर मून्त करें रहे गहें। are the meets of the are well are Angermenterer sier ein gere

4 44 AA 413 4-11 \$1

देवदतः—तो मेरा मंत्र है युवराज, तुम सम्राट पद ग्रहणुकरलो ।

भजातरातु---परस्तु यह विश्वासधात होगा। पितृभी से विमुख होकर विस नरक में स्थान बनाऊंगा, मही जानता राजकुमार।

देवरत-- वब छोड दो इस धरतो के मुल-मीरवं की धाया । महाराज विस्वसार गौतम मिदार्ष के प्रति धार्कीयत होते जाते हैं। हमें सिद्धार्थ की राजगृह प्रवेश ने रोजना होगा। उसने मेरे धार्येट का पानगृह एक इस्तिवस्तु के संधाराम में मुक्ते धरमानित विस्था था। मैं उसे धार्ति से न इहने हुंगा। मेरी प्रतिका कहोर है।

धनातपतु-परेष्ट, राजकुमार, इन कंटक को पणभूष्ट हरता है मभीष्ट है। मेनका ने विस्तामित्र का रह किया द्या और मण्य की सर्वश्रेष्ठ सुन्दरी धन्दानी रामा का कर धारण कर सिद्धार्थ को। देरता की बारणा को जिससे गुस्ति मिले बही कर्य मुद्रे भी प्रिष्ठ है।

रम्भा---निस्सन्देह राजकुमार, मेरा सौन्दर्य, मेरा मृत्य तपस्या भंग कर सकता है।

प मृत्य तपस्या भंग कर सकता है। देवदत्त--भित्र, उपकृत हुमा हूं

देवरत--वह देखो, मुक्ताब मजावसनु, यूध के गीव विद्यार्थ बसाबि तमाकर बैठा है। हमे यही ने दमका वा मानशोकन करता उचित है। मान पास विद्य-समुद्र है कही। विभी की हिंद्र न पर बाय से पर।

(हुद स्वियों का स्वर सुनाई देता है)

यज्ञातराष्ट्र-देवस्त, यह धप्मरा-मुंड वैसा । विशे टीव है। सिदार्यका भंडा-पोड धभी हुमा कहा है। तपस्यों भीर नारी ! धन्छा पालक्ड है।

एव:---पुनाता, तुम्हारा दाम्परव जीवन पत-

दावी हुमा है। पुत्र-ताभ मिना है, तुम्हें। मर्चना कर लें! सुजाता—(सिद्धार्थके निकट जाकर) मुफे

सुजाता⊶(।सद्धायक ।नवट जाकर) मुक्त सुकृतो काफन मिले।

सिद्धार्थ---कौन है, भनो | तुम्हारै धागमन का हेत्।

राधा—देवता, मेरी स्वामिनी को पुत्र-नाम हुमा है। कर्लस्य प्रेरणा से मार्कीयत होकर वती मार्के है।

मुजाता-देव, घापका प्रताप मुफलदायक हुमा है। यह है मेरी चिर वास्त्रित साधना। बानक को ग्रामीबीट प्रदान करें।

राधा—भीर सहला करें, देवता यह मुन्वादिष्ट शीर ।

सिद्धार्थ—देवो। यह बालक बेमा धौर यह सीरा । हा, जिस्सान रहकर भी धानन्द वी प्राप्ति न हुई। इस प्रकार इस देह को हो विगतित कर दूँगा तो मार्ग धपूरा रह जावेगा, सीरोर की स्था करती होगी। सभी यह समर्थ होगा धौर धारो कहेगा धरने भाग यह देशे। मण्डमय जीवन हो गुम्हारा, पुण दे तक कीति हो बावक की

मुजाता — देव-वार्गी ने उत्कृत किया है। शेषा सा पायम ।

निदार्य-देवी, उदर में विख्वान से कुछ पहुंचा नहीं है।

राधा—बहुना कीजिए देवता । सहीमान्य इसारे।

मिडार्थ-अन्ते, मै देवता नही हु एव नावान्त्र मनुष्य मे अग्र पुछ नही--(श्रीर-पान वर्षे) वितता मुख्यादु है यह पारन । तुम मारित प्रति हो हो । तुम्हें विश्राम की मारामहरा है।

। हम्म परिवर्तन ।

बतोषश-यपरिये बार्व । बारबी प्रतिकाराया---

(बातक के गान का स्वर)

निवार्थ—सारोपरे, गरी सिमु है मृतु का हुना पोर्ट जीवन । एक को मृतु हमरे का आग् पारम करते हैं। जीवन । मृतु ! मृतुमा जीवन । दिस्तरात्ती जीवन । नृत्याने सहस्या ने जेस मार्ग ध्वास कर दिसा है, स्रोतिस्था ।

सारिया--पुरशंत्र नया कर नरे हैं। मैं तो देव में मार्गाम में हूं। मेरा जीवन तो झारदे देशिय पर राज्यान है।

रिप्रार्थ-- मार्थित । मेरे मेरी यर जो माहरण वरा हुमा वा वह पार बुवा है, मुख्य मार्ग्य मार्ग्य प्रा-माय बरो के निदे जारा होगा, मार्ग्यवाद को जार, वाद मार्ग के रूप् व हुन्ति किये ।

Strattmert at test t

नियानें --रिम्यु की बकता से मेरा बार्स केवते का करान कर नात । यह नातु सुद्धारि है, सुद्धी इनका काम्यन नाते ।

दर्ग दर्गाम्य (ज्यास्त्र के क्षेत्र क्ष्मां के स्वरं के स्वरं क्षां के स्वरं के स्व

रिष्ट्राच्याच्यावश्चेत्रातः विल्वास्त स्थापः क्रमास्य कार्यः विषयः देशितः स्था । प्रति अवस्थाः क्षणीयः करनी बी, युग में झौर मुक्ते दूसरा मार्ग हुंकर गत्म की सीम करनी है। जीवन झौर मुखु के बर्यहर से दर रहना है।

मधीपरा—देर, में एक प्रतब देश रही हूं। मनीहर प्रामाय उस प्रवब में शंक होतर संदर्ध का गते हैं, धार्च। बातक ग्रामी होता है इसने औरगकी कालना करें।

निवार्य-स्वान हो बरोबरा- बरोबरा को संवेद से दूर जारा कारना हूं में, जीवन कोर महान की सुरी से दूर जारा कारना हूं में, जीवन कोर महान की सुरी से दूर साथ मार्ग वह । बात दिवान-मार्ग सेश दिखान कवा हो उठा है। सा-मार्ग विवानित कीने बारे जीवन से हरवब निवान मार्ग वा महानहान कहा। सार्जना बोर तुम कोशा कोरी।

(मिजार्च प्राचान करते हैं, जनका कर मंद हो गई है। सम्रक्तार के पीरी, ज्योनि जानमा जोगी । संगा के पाकाद एक बारिन स्थिती, सामर कार्तन, क्योणहोगा गा

(इत्रद्र वरिवर्तन)

स्वाराषु-सम्बदेशन बीशः भर रिशः है पुरुष्टे सहयोग से मुख्य में । यरणु राजगुर है भीत पुरुष्टे सहयोग से मुख्य में । यरणु राजगुर है भीत पुरुष्टि सम्बद्धि । सम्मार्ग सम्बद्धि ।

देशस्यक्राचारमञ्जू तक सै संगर वर्ग में मात्र कर्ग में मात्र प्रकार करें हैं। मात्र स्थापन क्षेत्र कर्ग में प्रकार मात्र स्थापन है।

स्वयानाम् व्यवस्थाः, वशायकः । प्रत्यं वी नवत्रकृत्यं देशाः मृद्धं प्रीयकृत्यं कृति कृति व्यवस्थितः हैना क्षेत्र इत्र सर्वाशकः प्रत्ये कृति कृतः चौत्यं कृति भीत्यं का गृक्यों कृति कृति वृत्यं कृति कृति कृति भीत्यं का गृक्यों कृति हत्यं देवरत--ती मेरा मंत्र है युवराज, तुम सम्राट पर प्रहण करली।

यजातरातु—परस्तु यह विश्वासमात होगा। पिरुभो मे विमुख होकर किस नरक मे स्थान क्ताऊंगा, नही जानता राजकुमार।

देवरत—तब छोड दो इन परती के मुख-तौर्या की पाया । महाराज बिम्बतार गौतम मिदार्थ के प्रति पार्वित होते जाते हैं। हमें सिद्धार्थ ते राजपुट प्रदेश में रोक्ना होगा । उसने मेरे प्रावेट का स्वाहरण कर करिनाक्त के संधाराम में मुफे प्राचीतत दिया था। मैं उसे शांति से न रहने हैंगा। मेरी प्रतिज्ञा कठोर है।

भजातपतु-मरेष्ट्र, राजनुजार, इस बंटक को पणसूट करना ही मभीष्ट है। मेनका ने विस्तामित्र रा तर नष्ट किया या भीर मनाथ की सर्वश्रेष्ठ सुन्दरी स्वत्यानी रमा का क्य धारण कर सिद्धार्थ हो। देरस की बारमा की जिससे मुन्ति मिने बही कर्म मृत्रे भी किट है।

उ० चाल्य हा रम्या---निस्सन्देह राजकुमार, मेरा सौन्दर्य, भेष दृत्य तपस्या भंग कर सकता है।

देवदत्त--मित्र, उपहृत हुमा हूं

देवरत--वह देखों, युवराज सजातराजु, कुछ के देवरत--वह देखों, युवराज सजातराजु, कुछ के स्थापित स्थापित हो। हिन यही से स्थापा वा सम्बद्धित करें है। होते यहां स्थापा वार्तिक है। हिन वहां स्थापा वार्तिक वार्तिक वार्तिक वहां स्थापा वार्तिक वार्ति

(बुद्ध स्वियों का स्वर सुनाई देता है)

यशात्रातु-देवदल, यह यप्परा-मुंड बँता । वेत्रो टेंड हैं (निदार्य वा भंडा-पोड सभी हुता बेता है । तरस्यी सौर नारी ! सच्दा पालस्ड है ।

एक:--पुत्राता, नुम्हाता दाम्पस्य जीवन कत-

दावी हुमा है। पुत्र-लाभ मिला है, तुम्हें। मर्चना कर लें!

सुनाता—(सिद्धार्थके निकट जाकर) मुफे सुकतो काफल मिले।

मिदार्य—कौन है, भन्ने । तुम्हारे द्वागमन का हेत्।

राधा—देवता, मेरी स्वामिनी को पुत-लाम हुमा है। कर्ताव्य प्रेरेखा मे प्राकृषित होकर बनी माई है।

मुजाता-देव, भारका प्रताप सुफलदायक हुमा है। यह है मेरी चिर वाधित साधना। बापक को भारोविंद प्रदान करें।

राधा--- भीर ग्रहना करें, देवता यह मुम्बादिष्ट शीर।

सिदार्थ—देवी। यह बानक हैसा धीर यह शीर। हा, निरान रहकर भी सानद की प्रास्ति क हुई। इस प्रकार इस देह को ही विगनित कर दूंगा तो मार्ग सपूरा रह जारेगा, सारोर की रशा करनी होगी। तभी वह समर्थ होगा सीर सारो बहेगा सप्ते मार्ग यर, देवी। संगत्नस्य जीवन हो गुष्टारा, सुन २ तक कीर्ति हो सावक की

सुबाता — देव-वाणी ने उपकृत किया है। सभा

निदार्थ—देवी, उदर में विख्वान में बुछ पहुंचा नहीं है।

राधा--- बहुगा कीजिए देवता । अहीमाध्य हमारे।

मिडार्थ—अले, मैं देवता नहीं हूं एवं नावारण मनुष्य में भिन्न दुख नहीं—(शीर-पान करके) वितता सरवाद है यह पारन । (कुछ हुरी पर मुनाई देता है)

मिद्यार्थं का एक शिष्यः। (भडक)—भडकः यह वया। पुरदेव का पत्रतः। कामदेव के कमनीय वास्त्रीं ये जिद्यः हो गर्वे।

२ शिष्य कोहिन्य-ऐने गुरु मीर तपस्ती के

साय रहने पर हम भी क्लंक्ति ही जायेंगे।
र तिया-पनी, पनें बांध्य । हमें महीं नहीं

एना ।

मुजारा-सामा दें देवता, स्वामी प्रगीक्षा कर को होते।

(रम इस वर)

देवरत-सम्भागात्रपात । तास्त्री समापि में भीत कारा चारता है।

रेराम-सामा मुन्तात बय, देवच, घर नंपर कोर केम-मानमा पुर्ने विरस्त और अपूर महोत विदारिक मध्य मा शिवन कर र, तेना कोण रिकारिक

(जर्गन वंपरीय धर्मन के जन्म जवज्यासम्बद्धाः यव

वाकर सहा केत्र करण है }

निवास्त्रानावृद्याचे और क्यां वृद्याने पूर्वत्य हैं। इसे हैं की इसे वर पूर्व के जूद अब सामे जार है कर जारण रिवायक वर्षा कर है व

Tetr -mer fitzer fener ger gut.

स्ति पर तुन्तरा नर्जन मापारित है उपने विमोह नहीं है तुन्हें।

रम्भा—राजनुपार ! में धुर नारी हूं माण रख से मनुष्य को बुस्ति परिवर्तित को जा सकती है माण किन्तु यह प्रकृति माणकोरमामा !

देवदरा---एक समय पुत्रसात निवार्ष को वधे-धरा नारी के सीन्दर्ध में दिस्मीर्ट्ड कर रिया का भीर धरा करनी तुर्दास घट्ट बनीडिक सी-वर्ष तमारे निवार्ष का सामन दिसा देसा------

(मंगीत धानि के मार धनी सने, शमा का वर्त

प्रारम्भ होता है)

मिद्धार्थं का स्वर्--

सारपात । बामरेव, में तुम्हारी भीता की गई बारात हूं तुम्हें किया मनोरत होता बरेता। दीं मोर मा रीत पर निवय ग्राप को है में।। बेरी ताल्या कोर है।

(संगोत बाँर सूच व्यक्ति तीव इंगी है)

यक चहुद्दास ध्यति— युद्दाल ह घोड को बन कहोर सत्या है हुन्तार जयन दुरायर मात्र है है

(क्योन वर्गर)

तिक्रणी-मण्डालक स्थान मुद्रे श्रापुत्त का

स्टूबल कार्य चार्य सर्ववात है र व्यक्ताता सर्व है ह

fagri -weete ge en lett \$ \$1 ' :

िमान संज्ञान कर्यन की कीन हरते हैं सारत्यान अवता गाँउदार्थी करते द्वारा थीं है केरडी नाभावत की देवनात करती हैं।

erecuterert

मिक्षार्य-हर, बौबन, धी, सम्पत्ति पूरप, नारी सब पंचल हैं स्थिर कुछ भी नहीं, केवल एक में महिग हूं " केवन मैं स्थिर है।

पट्टहास स्वर-धीर बान राहल का विमोह भी नहीं है तुम्हें ?

सिदार्य-नहीं है, यह सब पाधिव रूप है.... भाष्यात्मिक रूप मुक्ते ज्ञात हो चुका है !

(सहसा बीएग ध्वनि सुनाई देती है ।) मट्टहाम स्वर-मैं राग भंकत करू गा ।

(वीएग मंत्रत होती है ... पर उसका मन्तिम भोडपर तार ट्रट जाता है। ध्वनि मन्द से मन्दतर होती हुई सुप्त हो जाती है।)

सिद्धार्य-धन्य है, मैं समक्त गया इस रहस्य भी, न मति शिविल, न मति कठोर, मध्यम । केवल रेष्यम, मध्यम मार्गका झाश्रय लेना होगा मुक्ते । यही प्रवृत्ति भीर निवृत्ति के मध्यम एक समवृत्ति है। योग धौर भोग के बीच का साम्य मिता है 明 …

देवदस---उठो, रम्मा ! बलें । सिद्धार्थ पर बोई भिष्वार नहीं कर सकता वह भविजित है, भवेय है ····(म्वनि दूर जाते हुये) चलो, लौट चलें।····

देवदत्त--मित्र ब्रजातरात्रु, सिद्धार्थ एक धसाधा-रण तपस्वी है। उन्होंने बाम, क्रोध, मद, सोम, मोह, रसना, मृप्ला, रति-रचि, प्रवृत्ति पर विजय-साम्र विया है-----वे जयत का कत्याग् करेंगे। वनें — हम भी बनवर उनका माशीर्वाद प्राप्त वरें ।

निदार्थ --शोधिसत्व उठ, जन **** *** जन का मार्ग प्रदर्शन करः……

(संगीत)

विदार्थ--देवदत्त, बाबो बन्धु ।

देवदत्त — मुक्ते क्षमा कर देभगवन् । प्रतिहिंगा की भावना ने मुक्ते उन्तत पथ मे गिराकर पतित कर दिया या। मैंने ही भापके नगर-भ्रमण के समय बृद्ध, रोगी, मृतक भीर सन्यासी को भेजकर बाधा उपस्थित की थी बब मैं बाएकी शरण ह ***

सिद्धार्थ--उठो देवदत्त, तुम्हारी धर्म गति होवे निमित्त ही तो साधक हए मेरी साधना में । रम्भा-मेरा भपराध क्षमा हो देव !

सिदार्य-तुम कौन ! मैं नही पहचानता भन्ते ।

माजातरातु-यह मम्बपानी है-वैशानी की नगरवधु मापके तप में बाधा डानने भेजा या मैंने देव ! मुक्त सथम, नीच, पानी सजाउरापु को क्षमादान दें ।

रम्भा-देव, मुक्ते इस बीवन से पूर्णा हो बनी है *** वृद्ध की शरए माई है। धर्म की दीशा मिले मुके।

सिद्धार्य-निस्सन्देह समुचित परचानार ने हृदय मन्यन कर निया है तुमने तुम प्रशिका-रिली हो तुन्हें मिनेवा तुन्हारा भाव !

रामा-उपहुत हिया है देव ने ।

(भ्रपार जन समूह की स्वति सुनाई देती है जो निरन्तर बड़ती ही बाती है)

जन समूह---धनिताम की जय हो-----वौतन बुद्ध की जय

बद्धः चरलं गण्यामि । ब्रहमें दारानं गन्दामि ॥

मर्च दारलं बन्द्रामि ॥।

(बीरे-बीरे स्वर मन्द होता है) (हरद परिवर्गन)

प्रतिहारी—दानदस्य ! पुत्रस्य प्रभार रहे हैं। बनके मार मगर बन-ममूह भी हैं।

गुजीरन—पुरसान निजार्थ मा रहे हैं, मजाराती। मजाराती। पूरा दुसने, निजार्थ मा रहे हैं, बहां है बातर गहुन, मामी पुनार दुसने दिए-दर्धन वा साम नहारे। जामी मानी माहेरदरी ने नही उतका कहा हुएए महिट माना है।

(पार्च का कार बोरे-बोरे निकट माकर काट क्षेत्रा है)

१वर-बुद्धः धराने सम्पर्धि

वार्य रास्त्री ग्रह्मामि सर्वे शस्त्री ग्रह्मानि

पुरोहत-सामी मेरे पुरसक ! यह जानाहर पुरसार स्थापन कर रूप है । वहित्रसङ्ग के पुरसक को राम को सीच के उपनीहन होने पर क्यार्टिंग होने पर क्यार्टिंग होने पर

रियारी-अन्तरान्त्र तथान वर्ग शहन शीहर यद रियान्त वर्ग प्रविकारी है र

मुद्रापुर-प्रतिद्वार्थ, यह बदा गेनुष्ट्रे बूचबर्थाः कर बोदय स्वित् रेसलाहेड

िदार्च सम्बद्धित वृक्षा के विशास वह व्यक्ति है। वर्त देशका विश्वास है। यह ता बन्दब्या, वादवार बोद के देशका है। यह तम है। यह द विश्व का कह बाद वा दादल हैगा है।

स्ट्राप्तः जुलसकः । सुक्के कोश्यस्त् का क्षाः इत्राहेत

रिञ्चाप व्यासाम्बद्धम् । बेर्ग अपून्त रिग्न जातः मी. है. इर्ग अन्त्र करिल्सम् मर बन प्रविधितः है। हां, महाराव ! भिशा मिने। मार्च भी बंग मार्च भी भिशा न देंगी ?

प्रजावती—मेरे साप, मां में मारे बारत को कभी निरास विसाह हैं

प्रतिहारी-एन पारि मुगमित, गुगरिए प्रोजन गीम नामो ।

युक्तोरन-स्मृतः, यह रहे तुम्हारे दिना विक्रार्यः। स्मृत-निकृतो प्रसामः।

विद्यार्थ-राष्ट्रव, तुम भी कृप कोते।

सर्ग-में तो बारग पुत्र है। रिपूर्ण मुद्रे

निवारी-वरानु राष्ट्रवाणाव्याप्तरारे बाग वर्गा है ? योष्ट्रश्चायो राष्ट्रव जनगे, देवी शिक्षा को प्राध्यक्ष कुरहारे द्वार सामा है, बगोपमा

दरापरा-रेड मेरे बाव क्या शेव का है। मैं सब क्या मेंट कर बुकी हुई

विद्यार्थ-पुरुवस स्थाप बर्णविष है ! वै स्थापुर्वास ने बिसा बराबा हूं ! हेरी ! श्री बार ...

यशायश---राष्ट्रप तृष भी प्रणय करी का भारी रिकृती के सारश कात कात है तुम संविकाती की

पुनकेप्पः सामा राष्ट्रपः । राष्ट्रपः स्टार्ट्याः स्टेस्टरार्गः (वर्षे १)

रिक्रमें क्यानिया प्रस्तित वाच रिम्म है।

दणूष व्यक्तिक । दो नश्चेत्र पाप नाम ''' ।' दल्दा क्षण मन्द्रा दिन १

ga Lej-ma jan Mugeld r Mucha is

करारहरू जनसम्बद्धाः वर्षे वर्षे हो । सामा मृत्येक

्रत्यक्रम्पूर के क्षेत्रकों के क्षेत्र

की जग्रा

सिद्धार्थ—यथेष्ट राजन् । मरे कौन बाल्ध

नन्द-क्या कह देव। यह इश्य, यह स्यय

छन्दक---युवराज भव तो हमे छोड़कर न जायें

सिद्धार्थ---तुम दोनों माना मेरे पास, तुम्हे

सन्मार्थका, अपनी अमून्य निधिका दान हुंगा।

तथागत के मध्यम मार्ग पर भारु होकर जीवन का

समवेत स्वर मे-वृद्धं शरए गन्छामि ।

जनसमूह-तथायत की जय । भगवान बढरेव

थम्मं शरएो गच्छामि ॥

सर्व शरगं गच्छामि ॥।

मानन्द प्राप्त करना है तुम्हे ।

युदोधन--सिदार्घ, यह वया धनर्थ ** * राहुन बानक है उसके मिमावक तुम नहीं रहे । सिद्धार्थ--- मधेष्ट महाराज । भविष्य मे बिना मिभावक की इच्छा के, दीशा न दूंगा। देखी नही जाती " '**

यरोधरा—मुक्ते दोक्षा मिले ।

गुढोधन-यह नया देल रहा हूं! सर्वनाश का प्या

सिदार्य - ममता मीह का त्याग करें राजव । ^{इत्य}, धर्म कापात्रन ही जीवन का निर्दाह पद भदान करता है।

मिनि—तयागत की अथ । बुद्धं झरएां

पुढोषन-तब पुत्र, मुक्ते भी भपने संग में लें।

नन्द-छन्दक---जय हो देव ।

^{श्रामोद्योग} देश में ब्याप्त वेकारी, अद[्]वेकारी दूर करने में समर्थ हैं ग्रामोद्योगी वस्तुएँ ऋपनाकर ग्रामीण भारत को

सुदृढ़ बनाइये राजस्थान में तेल घाणी उद्योग व ऐसे ही अन्य हजारों परिवारों

को रोजी देकर शुद्ध वस्तुएँ उपलब्ध कराते हैं। प्रत्येक खादी एवं ग्रामोद्योग भण्डार पर उपलब्ध हैं

राजस्थान खादी तथा ग्रामोद्योग बोर्ड द्वारा प्रमारित

पिंजड़े का पंछी

भी दुर्गास्त सर्मा

क्षेत्रत तीत माण्डाकी है। दिवार के सभी प्रमाण करने हैं। बारात के ट्रंगरी के लिये सुप्रश बाराम १७ । उनके भोजनार्थ पट्टारी महिर्दा, रंगमरे मिळाल एवं होतल रेप पहार्य, हाता के रिये मन प्राप्त काहे व बाद मेंट। नहरी के रिये भी काइबारे ब देशर, हुम्म के रिना के रिवे नकर परमा। इत्याद का प्रशास की ही, बरा में हो, यही शह के विवाद शेव का रियम पा रहती पर यमका समितक एक है केटर की माहित की भारत कर करा दा किस्तु हिए भी मसादा वे हर बर्ड में नशदश कोई शकर वरी राज्य पा रण्ये । तुनी प्राप्ती होती रापने हाई । राष्ट्र में प्राप्ती बीची में बी इस सामान में दिवार दिवर्ष कर लेगा कारत । एउटे बाबाद का बादन तुरा को बरा । कारण बरी, याद धाई वि इ राष्ट्र के दिशार के सुपार कुए बुरह में एक ufeert urertein er bee ute en ein रापा र काइका इसा हो से, जब घं लो ही, mente bener fo eine ge fagute-बन्द कर होन्द्र र प्रति है है है है है है है कि है। जहां हुए ह कर । अहरता को है है हिंदा कोन पुत्रन जन्नु पर है # fang areame Rigerat abe migten n at a st grave exectanger et le se egm et semesa aleber tick digg tallet (fright pink dig et ing er ANTER STURBER PERPER GERREE

चडा बन्धों ने निष्मोती कार्वे थार्डि । यार्वे तीन सर्वत्यां रू सहराथा। सब में बर्ग नार्थे जिसका विद्याः या नाम्भा १४,१६ वर्ष की माहुकी थी।

राषु एक कारताते का चाराची था, पूरे एक मारुषरव बरार बर कर गोतरे बना धो के बार करी चारित कारे स्थित वाते में । एक मान, बारीन रावे कोट ६ बागी; ६ मार्गी, बारीन कारे और एक बार र सभी के लगे नी मी पत्ति को साराप्ताम न मन्द्रप्तिप^{्रीका} भारत वर सामा हुवर हिया बरण वा उत्ते बच्चा में लिक और राह है। बाँधा बां शा देशे हो न ये, बाबा ने क्या जा रेंग बीर लगा सत्वत की मारी का सारण विशानत ति बर्गत चीएन के बार्व देन चर है प्राता बड मनोर कर रण जाते । राष्ट्र देवनर करता वैध है - के सभी जागीरकों को एक सवाप दी सरी वेद-लाव क्रेनि मा सरकार है यह सपना न क्रेने रेक चु हेंदर सर्वता का सुर जार-सराबद पेर् बर्त बर्त दिन है। यह गाउँ । क्यों उत्तर बर्त है स_{ीर} की दानक कुछ। तो क्वी करने नाम रिंग्स् के सम्बद्ध क्षेत्र क्षेत्र कर्या नगर से संग्रह बर्ग द्वार रिसर दलदन्दी व स्थाप अर्थन वर Rear great the arms & district तम् हुउन्ने अर्रिष्ट चन्द्र विवस मार्थत्र प्र¹⁹ इंडम ब्रांडिया इस्ट्रीयाचरात कर चंद्री बरह । त्याब चलारह अब हेबार ६५ व रो

एक दिन मे चार बार खाता है तो ४० रुपये पाने वासा एक दिन मे क्रितना। किन्तु उससे हिसाब म बैठता वह पून: धपने दिमागी विटेमिनो में जोर समाता, मैनेजर साहब के परिवार में भी तो वही ६ प्राएति है उनकी झामद के भन्यजस्थि भी है फिर ? विन्तु फिर भी हिसाब न होता। एक बार उसने वहीं मलबार मे पढा या ''नई टेहनी के राजमहली भीर गरीब मजदूरी की भीविडयी में जो विषमता है वह स्वतंत्र भारत में एक दिन भी नही टिक सकती, राष्ट्रपिता गांधी।" ^दह बार-बार इन शब्दों को दोहराता, सोचता, उमका मन मस्तिष्क पर सवार हो जाता घोडे की तरह छुने मैदान में सरपट दौड लगाता, एक भाव माता दूमरा जाता । सगितात लहरें उसके गंभीर **इ**रेंग सागर में चठती, झापस में टकराती, चकना-पूर होती, उन्नति का लाभ वा कोई रास्ता ^{महीं}, बच्चो की सिक्षा के लिये कोई सहारा नहीं, ^{बह} भपने उन मासूम बच्चो का जीवन कैसे बनाये । वैना वरे? ग्रर्याभाव के वारण उसकी स्वयं की ही नहीं उसके बच्चों का भविष्य भी गहन भांधकार में परिपूर्ण या भवनी सतान के प्रति उसका मोह ^{मभता,} स्नेह साकार सड़े दिग्बाई देते। कभी सीचता उसने इन बच्चो की जन्म ही क्यो दिया। विन्तु वह तो परिवार नियोजन के साधनों से धन-मित्र पा झन: घट कर्मा वह उन्हें धपने पर बोक्स मीनता क्षो कभी समाज पर, तो कभी देश पर । कभी ष्टरे बरतान सममता, तो कभी ग्राभिनाव । उसने धनामात्र की पूर्ति के लिये भिन्न २ उपाय सांवे परन्तु ^{सरपना} नहीं मिली । सट्टेबाजी की, भाग्य ने ^{थोता} दिया, जन-तन विये उसके मन में भक्ति को मदाबिनी प्रदल लहरें भकारे लेती, नयनो ^{के} निर्मेर धनीम देग में उसके ईंग्ट देवना के वरही पर वहने मगने विन्तु फिर भी दिमागी

मासमान पर छाये रहते बाने भगवान ने उस गरीब रामू की एक नहीं मुनी। सायर उसका भगवान भी पूंजीपति हो गया था। दिन दिमान साथ साथ काम नहीं कर पा रहे थे। क्या करे, परेसान था। रामु की बीबो जब-सब भूतक की समस्या के उध

रूप धारण करने पर विसी सम्य पडौगी के यहां मजदूरी कर लेती, कभी घाटा पीस देती, तो कभी उनके यहां चौका-दर्तन कर भाती कभी उघार ही लाकर काम चला लेती। कभी ऐसा भी ग्रान्पर मा जाता कि जब घपने मनान में रहने वाले भाडयों को दिखाने के लिये चुन्हें में भाग मूलगा कर ही अपनी फक्तीरी हानन सुगने की मौर ग्रपनी मावरू को बजाने की कोशिय करती। रामूजद कभी कारलाने से लौटना, उसकी गौमती सदैव हंगते हुए उमका स्थापत करती, कभी कोई माग पेश करने का विचार नहीं, सीजने बा कोई प्रश्न नही, वह धरने पति की मजबूरियों से भनी-माति परिचित यो। वह भी सोचनी इस समाज में उसके परिवार बा क्या मून्य है ? समात्र क लिये इमना पश्चित्र मभिनात है मचना उसके जैसे ब्रतेक निर्धन परिवासी के निर्दे समाज स्त्रयं ही एत अभियात बना हमा है। समात्र को रोति घौर प्रकार्यों के नाम पर गरीयों का बलिदान हो तब बरदान ती वह मान नहीं सबतो । गरीब की मुन, चैंत झौर धानन्द बटा ? धानन्द के जिए संतान, संतान के निए विवाह, विवाह के नियं समात्र और समात्र के निये वैमा, सोग करते हैं, विकार एक मामादिक रोग को मनोदेशानिक धौर्याव है। विश्व दिशार के निदेवीमा। दैने के निदेसमाय। ब्रिन्ट याप देना नही उनको कोई सामानिक निवर्ति नही उनके निवेसमात्र में बोई स्थान तरी। श्रीवन की

प्रचेर समस्या का समापात देने में है। यही सब राष्ट्र मौर योगाँ। दोतो सोच रहे थे। इवारो ने एक एक पैथे को दाओं से पकड़ने की कीशिश की यो रिम्मु मना देना भीर रहे, तस्मी उनूत शन्ति यो है। मानिर तुस् न तुस् को बरना हो था। रामु के पान बाद का बौर कोई अरिया न या, सिवत की बास्त्रती नती, इस द्व में चपराधी की स्टिक्त की क्या इताम इक्सम के काम पर भी हुछ नहीं मिन पाता। बाज स्तितत की महरी नीकेंगे नहीं, उत्तर ही उत्तर किसी के तारों में जपनी है। गरीव शामुकी जान पर भावती भी। बोर्ड मरिस्ट बार्ट बसी के लिये रमय नरी। मातः इ. दवे ये साति के बाउनी बरे तर कोर्न के देव की तरह रिवा प्रशास किने मिर हे रहा , सारि वे सिमा बनाहा रूपे राष्ट्र की क्याच में बात बन्दू के दर्द । परान् रिक्ता सकता भी तो बीई हंगी संख नहीं। इमर प्रथमें बहर में हुन्ही क्रम्बर मारे, यूचर प्राची नरप्रात के दीना के काचन मही। प्रशास fitt trei pert a nife aft & feeir & fet at eine ale ar daren i ben भगरार देग्टा कात बीम झ र बाकि था दिन E feith at & give geet ab gefot wert, wert' att arter at der' far'er' age mein gen te Wifar me it uran e fer i bereit gereit. Jab gereit beret gietan eter Cregeret femt me bat koge me fige g genengt e erri b'i at me Rau berbe ber far till til er i til aller af fagtale til ere ger at a at a

र/दश्हेना का विद्याल्य क्वन को सहस्य करी का समान्य का स्थान

वमीन की सन्ह से ऊ'वा उड़ने के कारण मारे धार में हो सीत रहते हैं. इपे रूप म समझते हैं. परन् रिक्सा चनाता भी शो एक बना है मा: बासे बाज्याम कीर परिश्व के परवात रायु को लिया बताने से सरतता थिती । यह भी माता हिसाउँ का रिक्ता नेकर रात को बौराते पर महा ही प्राण कारा ने नवारा, मदारी की पुगवारे की कोलिए नरता किन् इस क्षेत्र में भी तो प्रतिगर्ध कोई कप न यो। एक हाता हो यहा, दिर भर काम अन्तर दलार में, सारी शत इलवार करता कीरो कर सरारी का इसमें की माजिए और पैना पेट की सार्वित इस्तर याता, तथित यसचा वे तता, उराधी में बाय करता । एक दिर तो प्रगडे शहनर धेनेबर ने चर्च बरो सारो बार दिला बी भीर की दिया बदि काम ठीक नहीं करेगा, तो नोक्सी ने निकान दिया जायगा ३ दियाग साम् के द्वार के दूर हे २ हो स्प । वह दफ़ार से घर सापा भीर सांव को दिशाल सेवर कह दिया । विभी सवादी की मान से इ. बण बन बन का का का सो एनकी दिस्ती करी बील कुट कई हो, कावना करता हुया कि की बरंबर कुर्नरता हो आये। विमया वह शिकार हार राज्य भर में सर कृष्य समान है। जाता अरोह इन्न इर्रान्तिक कर जाते कात्र अपाक में आणा मारको के बाद का गय परव तर हुए कर वर नार ! aufle fragerer ft. feid gebit bieft स्थाप हे राष्ट्र का कर देवर प्रतिक का अरी, gus ten ng & por ter et 41, 4 %

कर नेत्रा है कुर कार होत्र

6 4.3 4.4 4.3

1 5 1 4 11 7

ni ne f. ne directi i antagite na

रजन के इन्सान को तीन मील तक ले जाने की मजदूरी सिर्फ सीन ग्राने।

समू ने उस पुनारने वाने व्यक्ति के मुख को देवा, जो विज्ञती के समस्रे के नीचे तक सा पुना वा, यह तो उसना वही सारवाने वाता में नेजर सा । वह तिन हुए वह हुने मुने एक सम्र की सी सार्यंका से मपना रिस्सा तेकर रोह पड़ा। मैं नेजर सार्यंका से मपना रिस्सा तेकर रोह पड़ा। मैं नेजर सार्यंका समात्र तथाते ही एह गये। तभी एक दूसरा रिप्यो-वाना सा गया। यह रिस्सा यूनियन का मन्त्री था. तमस्य स्वाप्त स्

मोहन भी एक मध्यभवर्गीय माता पिता की मन्तान एवं उनकी समस्त माशा, मभिनायामी वा ^{केन्द्र} किन्दुया। बड़ाही क्ठोर परिश्रमी युवक या। उमने दी. ए. पास विया और फिर अपने पिता के रंथों से बुख बोक्त भार हल्लाकरने हेतुनौकरी की तनारा भी । बढी २ मनौतिया बोली, संकल्प किये । प्रायंनापत्र देते २ थक गयाकिन्तुसारे दक्तरों की साक छानने के परचात भी उमें कही जगह न मिल मधी। वह विचार किया, करता वह इस विकास के मृगमे भी धरिकसित एवं देकार या। उसके पास ^{मूनिवर्सिटी} का प्रमाए। पत्र तो चाकिन्तु इस युग मे ^{यही तो यपेष्ट नही, इसमे भी ऊपर चाहिये किसी} भीमनाय ना बरद हस्त, सिफारिश जो उसके पास मी नहीं। इसके सभाव में भूले मरी समाज चुप रहेगा, सरकार के कानो पर कू नहीं रॅगने की। ही, यदि भारम हत्या करने के प्रयास में विकल हुए दो सरकार का मोटा कातून उसके कोमल करो का रिपार करने में देर नहीं करेगा। कितनी मुन्दर ष्यस्या है। यहा साने और मरने का अधिकार रही, मधिबार बेबन तहपने बा है, घटपटाने बा है। कभी सोबता काता । यह युवक से युवती होता, कभी सोबता किती विद्याल भवन में उनकी गरि । वही सुनाराल होती, कभी सोबता गरि विद्यान गरिया । एक तेता होता । इसी प्रकार गर्दकी ना चक्कर । नगरी दिन. महीने भीर वर्ष निवन गरे । उनके । पिता परकोव निशार गरे, माता विष्यत्त हो गर्दे भीर । वह स्वय भनाप । मातिर नुस्त न दुस तो करता । ही या। सत: उनने घरने भावी वार्यक्रम पर विचार किया। भीर जैने तैते कई घंचे भगनाने के बाद मन्त से उनने दिख्या चयाना ही प्रास्त्र कर दिया। पदा निवा चा ही, होसियार या। मत: दिख्या प्रदानिया चा ही, होसियार या। मत:

कुछ ही दिनों में रामू झौर मोहन झक्छे मित्र बत गये। मोहन राष्ट्र को प्रपने रिक्ते की संवारियों दिनवा देता भौर इसी प्रकार उसकी धन्य सहायना भी करता रहता। विन्तु प्रधिक परिश्रम करने गे रामु बोर प्रधिक शस्वस्य हो गया, वह पहुन ही खासी मौर ज्वरसे पीड़ितया। कुछ दिनों मे ही खासी के साथ धून भी माने सगा। पहिने तो उसने इस गवकी परवाह न की। वह परवाह भी बया ग्रीर कैंसे करता। इतने पैसे कहाँ में जो ग्राप्ता उचित इनाव करा भक्ता, बाहर अनदायुपरि-वर्तन के हेतु जा सकता। यकायक उनकी दशा खराब हुई भीर भवनी नीशरी एवं मक्टूरी दोतो. ने ही प्रवतात सेना पड़ा । मोहन ने उनका परेष्ट्र गरा सुधुपा भी की, भौपपि भी दिनाई किन्तु करत देर हो चुनी थी, उमे टी, बी, ना प्रत्निय दौर जन रहा था। रामू ने प्रानी पुत्री के दिशह की निधि मायिक कारहो से पहिने ही टान दी थी। प्रव तो इन नवीन परिस्थितियों ने नहतीं बानी की भी हन मन्दन्थ मे पुत्रविचार करने पर मजबूर कर दिया भीर उन्होंने एवं दिन सम्बन्ध विष्युर को मुखना दे ही दी। रोप पुष्ट मैनानीम पर

नर् कीत की करों रहती थी में नहीं जातजा। ने जो देखा है भीद मेरा हुएय साशी देशा है कि एतनी बहुत भीवत परिवित हूँ। दिन सम्बन्ध में, हों भीद करों ! इन मानी का जनद में नहीं दें करा। देशा भी बहां में, मैंने केवत मान जो देखा करा।

निष्ठ ।
जित्त मृत्य साम को, में जीवत के विसी स्था । तही हुव तक्या । माने जिस के साथ उस मेरिट एर्जि को कोरे को मनदूर किया स्था । में व मानून का देखा में यम भीत निक्त सद्य । मेर करण एर्जिंग कोण मालह है निजींद प्राप्त भीता के लिए भागे जीवत के साम बयो कार्य कीता है है केर्यु पोर कारण देश स्था बहुरे जा तरे से !

प्राप्त में बुझा हुमा, दुर बिनारे बढ़ मिना बढ़, यह प्राप्ती की भागी का शबाने के हैं। यह प्रयुक्त में अपने कार्य कर प्राप्त के भी दिया बराब रहें की हुए प्रयुक्त रहें के हैं। इस कर के प्राप्त कर के हमाने के बिना बढ़े हैं। इस कर के बिना बढ़े हैं। इस कर के बढ़े हमाने हमाने के बढ़े हमाने हमाने के बढ़े हमाने के बढ़े हमाने ह

কী ৰাণ কালা কি আংগুলিক ৰংগোৱনটা। বিচাৰুগাই কি চা কাম গলুগিক চিত্ৰীৰ কৰা नहरियों ऐमी भी नरीं थीं इस शाहराय भीत सम्मान हे साहरत में रहनर भी हमी चोमान में मन्दिर में मान्या रही थीं, रही में बर भी बीते सबलबह बरवन मेरी हिंदू उस भीत साहरित ही समीत वह !!!

हिसोरी समुजित बंग ने मन्तित सारे वाणे को पुर्मान्य संभाग कर पत्री हुए, सीरिया कर गी सी। सारी सहत्या को साय नात्रियों में नर्मत्य दिस्मीन, चंतर गी, चंत्रत नया, दिम्मून पूर्व के का सारे गीरे भार्ति को सेया है जहते सारे नीत्र के सार जिल्हों मोर में क्या पत्र की जा की सी। नामी ने सारे एक मत्र की पहल ने पत्रक नाई, यह काल साथा गुज कर पत्रकी मार देगा भीत् पूर्मा ने मुझ नेट विशा पुरुष से देशा नात्र

बर्दिस के जाम सुरुष हर है है हरन दि में रहे हैं सामन के अभी का सारत के सारत तुमक को उर्गुद है कि मुल्लामों कारी महत्त कहे हमात्र है कि है है जान उन काच रहे के उपचर्ध । सार्व गण की सारत कर दें बाहर अभी एक के उर्गुद्ध के अभी र कहा के को काचना मात्र की हर की की जाति । किर यह पहरा किस पर १ यह पहरा है हमारी नैति-रतापर, मुभे वे नौजवान दीख पडे जो नीचे सडे पुरत कर रहे थे, और वे सहकियाँ जो प्रपते दुपट्टे को हटा भीर बार-बार डॅंक कर भ्रपने यौवन का वभारदिसा रही भी । यह पहरा थाउन पर । वैभी विष्ठम्बना है हमारी संस्कृति का पुनीत स्थान, वहा हमारे पूर्वज सारे दुख: मूल जाते थे जो गान्ति का केन्द्र था अहां इतना भ्रष्टाचार क्यो ? न्याहम इतने सिर चुके हैं ?

वह मंदिर मे प्रदेश पागई दूसरे द्वार से जो स्त्रियों के तिए या। मैं बिनादर्शन ही औट पड़ा। बाहर सीग मेरी ग्रीर देख रहे थे। किन्तुमेरी करणनाबी, क्लिके फुरसत यी कि "वह यह देले कि में दिना दर्शन क्यो लौट रहा हूँ। दया है यह भारतीय पर्दा प्रयाकी व पुरुष प्रधान समाजकी कि मैं किमी सहतिनि का हथ्टि बिन्दुन बना। मेरे जैमे भीर भी बहुत थे। हां, यदि भैं लड़की होता तो भवस्य लोगो को निगाई मुक्त पर पडती। दोरी देर बाद वह दर्शन वर लीट रही थी। हुम^{िन}न थामेराध्यान उसकी द्योर द्याकपित न होता किन्तु मैंने देखा कि वह सीडी पर बैठे भिवारियों को प्रसाद बाट रही सी स्वय उनके पास बारर। भोग, जब भिसारी मागता है तब भी प्रसार नहीं देते किन्तु इनमें वही एक ऐसी थी। शे स्न सबसे विदित्र सी ।

सीडी समाप्त हो गयी। मंदिर की पाच सौ रींदी भीर में फिर नीचे था; उसके भाई ने प्रसाद ^{कीया किन्}दु भद प्रसाद वहांदा बोली ^कन सुमने प्रताद साया न सेने ... प्रमाद ती खनम हो गया।" वित्रवाद्योटा- उत्तर था। विन्तु वितरी सरवता में घरा मोता उत्तर। वह चल दी बीर में देखता रा, बाबता रहा । बवा बन्तर है इसमें भीर उनमें । क्ता बारण है इस भेद का। अन्तर ने उत्तर दिया

नेवल बाताबररण का धमर। इनके घर मे जैपी बातें होती हैं, जैसा बाता रखा इनके पडीस का है, जो बात मित्रों व महेलियों में होती है, वहीं तो मीसती हैं ये। इन्ही बोफिन विचारों में चारों भोर हप्टि उठाई । सारा वातावरण फिर ज्यों कारवो था। उसके होने से यान होने से कोई इन्तर नहीं । केवल मैंने उने देखा, बम ******

0

पिजडे का पंछी

• शेथ पैतानीस का राम पर विपत्ति का दूमरा पहाड दूटा। वह बयाकरे। उसकी हालत भीर भी गिर गई। उसके मरने के बाद उसकी गृहस्यी का क्या बनेगा ? वह बाहता या, ग्रानी सदनी का हाय मोहन के हाथों में सीप दे। उमे मोहन पर भरोगा था, उमकी मृत्यु के बाइ मोहन उसकी गृहस्थी को भी संभार नेगा। इन प्रकार लडको देकर यदि ऐना सडका मिल सके तो वह शांति में मर संदेगा। दिल्तु इतना वहने का साहस नहीं या । एक दिन अब उमनी दता घायान ही गम्भीर हो गई, बदुलाहर, घडराहर, उनके मुल पर भलक रही बी, मोहन भी वहां भौपवि दे छा था, रामू के बोबी बर्स्व सभी वहा थे, रामू ने मोहन के बानों में धरने मन का बोफ उद्देश दिया। मोहन भीन नहीं कर सका। राष्ट्र के मुद्दे पर एक पल ने निये चत्वधिक गांति मीर संतीप को माना चमकी मौर दिचीन हो गई । जीवन में पायों की उसन झमरुनना, घरानि, तहरत, पर बदाबित सावस्मिक सरप्ता ने उसकी किर र्रान्द्रत बाद्या का पूर्ण कर उसके सर्देव २ के समात प्रत को किए सानि के सामी प मे मूला दियाचा।

बिराजी क्षेत्र है। वमहोती, भरहीती बार की। बात बार किस्सी हुई होती। 12 4 had 24 मान रकते हैं इस दिल्ली कार है, नार तती । वेदिन, दुनियों की गरक करों दाई, मीनेलेंड, करी करी की विशेष रेक्ट में, भार में बहार मही, महरा क पाम दिना पुनियों के दुनानी हुई। وعلا فالا والمساعلة ا तर दर्श की कर है, हेते की बरा बराब वर कर दिवारे की हुए भी हु बाह्य हो. का रिक्टनका है कर दीर मक्यों है बिन्दी । किन्दी बीन है।

कि हुन की बीट की कवारिया, Lamatia as atta . . त्रेष के कदार कार,

हरणा देव करते हर, हुम्म विक्री कर हर करते करते سعير في فاله إنفا أنه لله ******* *** ***

It would be from the ي يا شاهله خاراته منفاع ال tin bi bat de glatiet be a Et de born te di dien ' the endingering. en a perendia dite es as de à

د ما معيدته ۾ بيدو ته جاء ۽ Act sales a bid sales?

er a transport file to moth eran commercial

बनर पर प्लार किने, इंस्मी बरार मानों पुरार मिने, जीव उनराधी म जीन दनराधी का मनरी है। एन या दोता हैरोटर पुर मनते है।

बेंगे मुमानिक मही है बुग मोक्सर ह मेरिन पाँ० इस्पूर हो। द्वारिक पुण् योर कर्प पान का तुम् ब्यात रूपी। रत जायो, महर करो प्यार की गांत कि त्याने सराय र से ।

जीत के इंदिन को उंग का मेरे हो। बार रता नवीं भी रोत है। मन, धमरीहा, चीन, मीर कई मुक्ता का ا ﴿ تَرَادُ لِلَّهِ إِلَّهِ أَلَّهُ اللَّهِ إِلَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ

धेर हो यार मारा नीत समरीका ने बचाई की । उत्ता कर त्रीत धवरीकर है, विष्णुरे कर भी किन् nica uni di do une ne al i

उत्तम है संदित बहराया सप Maca to Me we dad of Line lines () PET 1 } ET ET ET Nº 87 21 Martin B. was & also famile

profes and 41 tiat K. feal D. St. &! *** ** * **** ** करण हा कम करर हा ज्

tions of safes are a new to be रह का बाला पर का बाद कर बाद कर के हैं। are an earner on source there is a a fi

चन्द्र द महर्त्त हार करें , er e austin sar b

* *** ** *** *;

अर्वाचीन-साहित्य

• एक समीक्षा

"वंत्री नाद कवित्त रम, मरम राग, रति-नंग। अनपृढ़े पृढ़े, तिरे, जे पृढ़े मद अंग "

' दिशरो '

रमा-महित्य	(t)
शं देशात्र प्रयासार	
मारतो हो घारतो (तविता) धा परमेरतर 'द्रिक'	(v)
रताती∹गाहित्य थी भारवस्य गोग्वामी 'प्रवर'	(x)
एकाकी-साहित्य दार समकरण 'महेळ'	(14)
धार्या को हुवैसो ही (कविका) भी कप्तास निर्माणकारक	(1:)
नीति-साहित्य भी नावेग्याम (समीन)	(11)
गमोश्य⊸गाँहरद घर त्रका हिर्माट ग्रही	(1.4)
प्रसारे विवासे दूरी पासी (विधिष्य) प्रान्त कार्यासम् जीवन	(**)
हैनदान्त्रकृतः सार्वानाम्बद्धाः	(52)
Agan (afam) Shakum Tapub	(1+)
क्षाणीर प्राचनक के हैं। भी को को क्षाक्रिकाल संगक्	1377
হুজন হ' হুলন প্ৰাক্তিন হ'লে হ'লে হ'	13.6
প্ৰায়ণ হ'ব ল'ল জন্মিন হৈছিল। জনবিনহুমাৰ ভৌৰোগ বান্দ বিধান	{15.

कथा साहित्य

हा॰ देवराज उपाध्याय, ७४०७३१, हिन्दी विभाग, महालाचा व र्याप, प्रप्रदर

मारित साद में महत्या पवता महित्या मात्र सने पर्य का भाव प्रवस्य वर्तमात है पीर एने हारा जनत के जीवो को रामास्मक मुत्र में संपेन ने महायता मिनती भी है, पर वास्तव में स्वतं का पित्र मात्र के सेन में सेन महायता मिनती भी है, पर वास्तव में स्वतं करी परितास है। स्वितं स्वतं करी महायता है। स्वतं करी करते हैं, वह जीवन के प्रवह में रचतों संगित देश नहीं पाता, सत्त नह प्रवह को ही स्वतं भी देश नहीं पाता, सत्त नह प्रवह को ही स्वतं भी सार्व के सार्व में देशा जाय तो एवं में स्वतं में स्वतं आपता सार्व से स्वतं भी स्वतं में स्वतं आपता तो एवं में स्वतं में स्वतं आपता करते ही स्वतं में स्वतं में स्वतं मात्र स्वतं में स्वतं में

्षण्युं वह भाग-अवस्थान या सारमाजियांक वं विद्या देतिक प्रवाह पर बहुते हुए मानद के साह पर बहुते हुए मानद के सा, एस्सन-अद्यान केमी जेदिक तथा महत्वजान दिसाओं के द्वारा, बाहुरी भागानी मा उदारा शिक्षित्वक के द्वारा काने सम्मन् एप से मध्यप्र नहीं गेर्गो दिनोंने को के द्वारा, कान्य के द्वारा भी नहीं गोर्ग केमी महित्य के द्वारा भी नहीं कार्य मार्गित्य के एफ भी उपन्याम के सा। ध्वनेत्रा की प्रवाह केमी के सा। ध्वनेत्रा की सार सर्वेत्रा की सार सर्वेत्रा की स्वाह स्वतिक केमी केमी स्वतिक की सा स्वतिक की स्वति

"राज्ये सारं बसुवा बसुवारामिय पुरं हुरे मांभव ।
मीचे नन्य नन्ये बसाहनानहुम्बन्य ॥"
धर्वात् साय से सार तरत हमती है, हम्बी से नगर, नवर से भी महत, महत्व से भी पत्रंग धरेप पत्र प्रस्त है।
भी महत्त महत्व सुन्दरी । उसी तरह कहा जो मतत्वता है कि जयन से सार बसाब जीवन, जोतन से सार्वाहिय हमानिस्पत्रित, धर्मास्पत्रित, धर्मास्पत्रित, साहत्वास्प्वित्ति से भी बन्ता-माहिर्द्य, माहिर्द्य से सीत जयवाम ।

यहा पर उपन्याम के संदर्भ में सार धर्ने कार कारुपक दाधा गया। इसका उद्देश इतनाही कहनाहै कि उपन्याम भाग शहानी मात्र नगी रह गया है, बुछ मनोरंजक घटनामा का तारतम्य उप-स्थित कर देना ही नहीं रह गया परन्तु वह सैनार के व्यक्तित्व, उमडी मालरिङ बेहना, हतनन. मंदन तदा धान्दोतन का सर्वधेष्ठ सापन है। बहुत दिनो तक बला के होत्र में घतुकृति काई का an imitation बाने विद्याल की नृती बोरती रही, लोग कला में बाद्य बस्तु की प्रधानना मोर्टन रहे, तिमी दिव्य तथा विशाव प्राकृतिक कृष्य-अवत के सफन विद्यासे ही इताहा साफन्द माना बेला रहा। परनु मात्र कता मे मेशियनि की प्रधानना स्वीहत हो बुड़ी है। बदा पतुरूति नहीं, प्रभिव्यक्ति है, expression है। इसमें बाद्य वस्तु प्रधान नहीं, प्रधानना है समिय्यक्ति भी। यदि यह गाउँ प्रानुबरे विविसकी मीभ्यांति नो मार्ट उत्तर है कवि के हदसन्य भागों की, मर्गाष्ट्र कवि की मारम-स्वस्य की, जो विसी भी बीज की धारने नापन के

रा में बता में मानी है। स्मीतिहे बहा मता है 'महिरानार महिरा में बचा है।' महिरान्द बार बोल है हि माहिरानार माहिरा में बचा है गो देशार गारी बचा प्रमान बचा माहिरा है। या बचि बचे दिवा का प्रबाद निर्देग है। या बचि बचा 'म महागर भें ध्यार ही दिविद्" मो सागर उसका का भार न या लो हम यहां कर गहे हैं वर देश बाता में हम महो बाता का समर्थत या कहा। न जाने बहि बचने महमान है। हुछ दिस्स माहिराम साह कर नहां हो हिम्मी कर implication का गार कर वहां की हम हो।

नरानाधर्मार शिध्यत्र पुरामे मात बाररी पाराघों में नहीं सेलर के शांतिपा में हैं, रत्नी केला में है। इस सब प्रत्यान में बर बात रेलरे को भागा मेरी काले हि उसने रिव्यारिय पात्रा का बारशा सराह करवाहा का क्या र दिन रण है या रहे, तत्तार व बार वे शिहे यान राधा का रह हु-स्रित ह्या है बच्चा असा सी देल कर कर कर कर है । फरकार क्यारे निर्देश विश्लेष मानव की महा है। हिनों न का हुन का हुनदा र १ बराबा रोप बर दक्त पर्श्वापक सम्ब र्मा ही बर्गिस्मीनमा हा रहे हैं। बच्चा बहु बहेन amer ? Tert miet gie ge eere griffe ter inder tal et en enditt ming a fesifice enciprenatificati fe to Met & ge fem den ben bergiet er tem timbs eft kantege ik ligt billistegt bi

Apprenting the state of the sta

राज अस्टर्गाद्वार हुद्दसम्पर्के ह

तो बर्म सम्बारी हि तर्म एत ही नदी हया। स्ट गया है केंग्र कर्मा । Flanbert ने करा कि मै रूप नरी about nothing पर एक एक निनना बारता है और बीगें में क्या सारित की तुरता music में बरता पारम्भ विया विषये परि की कुन्द भी प्रधानता तारी है। संतीत के सन्ते ने कुन्यु सर्वे भन्ने ही दिवार जार परंतु सर्वे एको कोई मर्चन भी तिको नो कार्दशाहित । एक परी दूसरी धानि से सिर कर एक हो गई है भी कर पा बर गामे रह, fusion बहुत ही bigh temper o रेवार पर पना हुया है । उपनाम) में भी हम रनी ल्ला का bigh temperature featon देवन मान्ते हैं हिमी सामगुरू है, दिसोप करो वा टे. प^ट कपूत बरनु, बर बरनु को संपर से बाल्या करते हैं। पुनको पत्र कर झारी प्रतिकाति साम से गरा बार, मीटरेंपूरक शरहरश में बाद कर गुरूर माह⁵र क्रसन कर देश कार्युति का यात्र करा के सरे स्टेस्ट दिवय है। संस्थार में कोई की दें की _{स्थि}त कर सरी, सब मुख्य बड़ी रह है। पर के पर कैपर है, देशा हम देखरे हैं। प्रमान दिए बार्ड के बीध मा का erge gret unf mitter aft ti greeten a f है देश करना । संदर्भी प्रना रा स्वार अपना है निगरा चार । दिर के ता चार है के क्राविता कांच की जीव इस प्रवास से जि

पर हम राजस्यान के ब्राप्टुनिक कथा साहित्य को देखें।

इपर दम पन्द्रह वर्षों के धन्दर राजस्थान मे जो क्याकार हमारे सामने भाये हैं उनमे दो तरह में उल्लेवनीय हैं—परिमाल की हिष्ट में तया ग्रुल नी हिं हो। वे हैं डा॰ रागेय राघव तया श्री गारवेन्द्र शर्मा चन्द्र । इधर के नवोदित कथाकारो मेचद्र ने प्रपूर्व लगन, साहस, पर्यवसाय तथा प्रतिभाक्त परिचय दिया है तया हर तरह के भ्योग में काम लिया है। उदाहरण के लिये एक रपत्याम में उन्होंने मात्म-कयानक धौली में काम निया है। दूसरे उपन्यास को डायरीनुमा बौनी से ितागया है। सर्व समर्थ होनी की प्रधानता तो दिन्द के सारे क्या-माहित्य मे ब्राज भी है। घटनी में भी उसकी बहुतायत हो ग्रीर वे ग्रामन-^{हे बु}र हो तो इमने भ्राइचर्य ही बगा? राजस्थान ^{के} निरासी होने के कारण यहा के लोगों के र्ल-महन के ढंग में, विचार-पद्धति में तथा भावनामा में इनका प्रगाढ़ परिचय है। विशेषनः ^{प्त} युग के राजा-महाराजामी के विलास तथा भैभगपूर्ण जीवन को इन्होंने बहुत समीप से देखा रै मौर उन्हें मपनी रचनामों का माधार स्ताम है।

दूमरी धोर पाठक में रसप्राहिता की सक्ति मबस्य होती हैं। दोनों में सस्ती भावुकता से मोह उत्पन्न होता है।

डा० रागेय राधव मे इस प्रवृत्ति से सर्वधा मिक्त ही हो गई हो यह बात नहीं। परला इतना **प्रवस्य है** कि उनके कथा-साहित्य में विकास के तत्व सौजद है। वे दनिया को भार्से सोन कर देखना चाहने हैं। यो तो ग्राने मुद कर देखने मे कम दिलताई नहीं पडना, बल्कि ज्यादा ही दील पडता है। परन्त बाल मुंद कर देना जाय या स्रोल कर इसमें देखने की क्रिया की ही प्रधानना है। प्रस्त यह है कि लेखक ने वहा तक देखा है. कहा तक subject ने object को मान्ममान् किया है। डा॰ समेय साधव की इधर की पुस्तको में 'कब तक पुकार'' उल्लेपनीय है। इसमें नड-मटिनियों के जीवन को भाषार वेरूप में प्रत्या किया गया है भीर उन पर महानुभूति को हर्ष्टि दी गई है। म्राज तक ने उपेक्षित व्यक्ति भी साहित्य में स्थान पाने जो है। यह प्रमाण हिन्दी क्या-साहित्य में बीसवी मदी के नृतीय दशर में स्पष्टतया प्रारम्भ हो गया है। उस प्रयोग में यह उपन्यास एक नयां कदम है। चुंकि यहां पर एक ब्रह्मे विषय को निया गया है बनः मेनककी ब्रात्मीयता, उसरे ब्राप्सनन्त्र की मात्रा भी उभरने लगी है। इसीलिये पुल्तर वा महत्र मेरी इंध्टिम

सीयक है।

सी विजयरात देवा की क्रांतियों का मैं
स्मित्त पातक हूं। दक्षी क्रांतियों से गढ़व की
सान के दिसे कुतार है मानो नवाद की
विज्ञान की की जा कर बाद कर की। में
सबसीयों की जा कर बाद की का में
सबसीयों की जा कर बाद की माने
देनों करी दिस्म कार्तियों की स्मित्त कर की
साम्यानकार की कार्या कर करा की
साम्यानकार की कार्या कर करा की देवें?

उपमुख्ये तीत समुद्या-भारवाद योगमानी, हुर्तामा मानी व विस्त मानी वे समिनिया प्रस्मा में तीन एक उपमान-नारव विस्ता-नी पापन-रित्ती हुने पहुँच को नियों थी। बायुन्ति सनी-नेगानित तथा चेन्या-प्रसूह पद्या का समस् बार ही योगमा बन्दाह पद्मा उपो नार का प्रमुख्या कर में आपन्त्र हुमा उपो नार का निर्मात है। मानेगा तो बाद बाने र यह ऐसा हो हुए बारा है। मानेगा, तामीकाला, सार मानामा मान बारा समादिकों कर्मान्या सा उपन्यामा भी पद्मा अस्मानित हुन है। कुमा बान्त्र की बार्गामा भी कार्य अस्मीत्र हुन है। कुमा बान्त्र की बार्गामा

हरे मार स्था बाजिए हिर राजादार जिल्ही रवानातिय की प्रमिन्दि में कोई प्रोक्तनीय तथा मरापार्वी मान मही देशका है। ऐतिराधिक तथा र्पार्टर्सर प्राप्त विकास के कारण असकी प्रतिमा का प्राप्त हारर मंत्रिय होते का बात्तर में हिना है। यात्र प्रव एमर बारामार के बार प्यूप्रमान का नद है मा प्रमान बीकाइ में बर परार्वे देश तथा है। त्रावर्ग वह होते हैं ली दिर को बह सरह सहरत का स्था है, जहहरी ह में अन्तर कोई जन्म जन्द अन्द्रश्चाहरू है प्र सारित का का का ब्रिंग को बीव राष्ट्र ब्राइन करिके अपना है । इसे द्वारती दश्री के अपन मेरी फरणा हरा नाचर देश देशों अराह इतन्त्र nere f miere me une diere der ber berf gen ann fine jen mille frieffeng un greier graften gin fil ern gu tiegrete graß gree Artes to be de de 19 a de 19 a de 19 a de को पण को ने कर्गक न हो अर ।

भारती की आरती

थी परभेश्वर "दिरेक "

नेरे प्रकास ने संत्रन में.
प्रद्यन-मान में भीत जो।
सम्रत के सुना उदीनों में.
निधेत मुधा ने नामा मरे.
भाराना सुना निगर्बों परसम्बन्धा मुंगों ने नाम परे।

तिने भोने सुप्तमा सूत पर.

सप्तितितः, सौ सौ सूर्व उपै ।

तेने जमाने में घरतां में

इत्याने सारवत् पत्त गिर्ने

ज बुसव शास्त्र सार्थाः हितात समीस सुराग रिदे सोचे समेला जलजात सिर्वे ।

क्यमेंदर का नात राजनेस जिसकी सर्वित सार भव भी।

तिसे बीगा के तास में, जोड़त-समीत सरात में बागों के प्रापृत सार्थ में, कवित्रा-कात्रत से देन हरे।

धार्म स्था व स्थाप व नीमाय स्थित है। विशाधन वर्षेत्र

तर पदलत को छू ४१ सकत् के लग्न देवार सूर ४४ - छान्यारकीय तत्र जें मुक्तारक्षापात्र त्राय दूर है

स्टर्ड प्रश्नेत स्थान स्थान स्थान है। स्थान स्य

कहानी साहित्य

श्री भावचन्द्र गोस्वामी प्रग्रर, राज्य्यात विवास सभा, प्रज्यूर

कहानीका नाम माने ही मुभमे एक मजीब मपनीनापन भर जाता है। ऐसा लयता है मानो दूर विसी विजन प्रदेश से मोटनी हुई गायो के गने में बंधी घटियों के स्वर रिग्ए- रिग्गाने हुए वायुमंडन पर तैरदे बने जारहे हैं। उस कुटिया के द्वार तक वहां कोई एक हल्के दीपक की टिमटिमाहट मे माने क्सीन माने वाले प्रेमी की प्रतीक्षा कर रहा है, उने मानूम है कि वह नहीं माएगा। फिर भी रतके प्रतृप्त मन का कोई कोना रह−रह कर कराह ^{हड़ता} है भीर इस ग्रमस्मद कल्पना में ही मुख प्राप्त ^{करता है} कि शायद मा जाए। इस दर्दका र्पतिविधित करने वाती पात्राएं है, सोनानी जो मरने बार दब्बां को छोड़ कर उस इनानदी शारेक्टर के साथ भाग गई, वह मिनविया जिसके ^{कारण} माद उनका यशस्त्री पनि जैन के सीक्त्रो में है, हुन्ए बल्बम दामा की वह ईमरी जिसकी शातो ही जनहा सभिनाप हो गई थी, स्रीर ऐमे नित्ते ही प्रक्रियन, प्रगण्य व्यक्तित्व जो काल के ^{माय में} ममा जाने हैं और रहजानी है उनकी ^हहानी । विस्तु इस दर्दना धमनी प्रतिनिधिन्द ^{काना} है एवं सम्पूर्ण काव्य विधा जिसे हम कहानी ^{दरो} है। करानी जिमे हम बार-बार गट्यों के घारार में बॉप कर रखना चाहने हैं, किन्तु जिसकी रता को मर्यादित नहीं विया जा सकता, वहानी विष् गरानी दर्शन के किनने ही लेखक तस्त्र, प्रकार र्घा के हेरे में परिमाधित करने की कोशिस करने िमां उनके मर्घको इतमित्वं नहीं कर सकते, ^{रेड़} होती जो केंद्रन कही जाने के लिए हैं। इस

वेडनामधीकी सभिव्यक्ति प्रमादकी कल्पना ने की जिसके मर जाने पर विसी ने भी उसका नाम सेने की प्रावश्यक्ता नहीं समभी । एलेरी की स्नेह-नरन होरों ने की । जिसने कभी कुछ कहा या किन्तु बाद मे वह भी चुप हो गई। प्रेमचन्द्र की धानन्दी ने की जो भाज भी यही सोवती रहती होगी कि जाने कब धाकान्त उस पर बरमा पडे और उमकी करी-कराई बङ्घन की घोषणा घुर में मिन जाये। शरकद की दीदियां, जेनेन्द्र की सुनीतामी, मरभूति की माधवियो चौर शेक्सविद्यर की प्राकिनियाची का धनवरत कम जो धाना है धीर चनाजाता है. ग्रीर टीपटी के कठित बत भीर सथस के ऊपर जब भागवतको धून जम जाती है भौर उसके एक पृष्ठ पर रखी हई बासुरी ने रुख जब भर जाने हैं भीर उसके स्वर निरुतने बन्द हो जाते है। भैसार की मर्श्येष्ठ बहानियों में १०० बहानियों में से वस से कम ६० वहानियों में इसी प्रकार का दर्र मिलेगा, पीडा मिलेगी जो मापनी नहीं है, भेषर है जो, गुनगुनानी है, जो मर्मरानी है मीर करनी है, भो मेरे स्वासियों, मुकेएक कोने में ही नहीं डान देना किन् निर्वामित मन करना । कोई भोत-विद्री जब बड़े सहक सपने नए बब्दे की घीमने की गरमाई में छोड़ कर रोटी-पानी के निण निकर जाती है, उस समय उसके छोटे बच्चे के मत मे क्षण भर के निल्बानी मा से बिल्हने का दर्द होता है, वही दर्द, हमारी बहाती का ग्राय्वन दर्द है। कामी मनने में पूर्व समिनुत की साजिती तमन्तापर जब ग्रंथिकार का नाता नना दिया

भारत है फीर का जिस पूर्ण चुटन के फारना देश सोट देखें है उस चुटन का नाम ही करानी है।

भीर पर एम रहाती की गोज में मैं निकरण हाँ तर एमें बाल-बाल स्टीम के दन भिद्रत की रिया का सामना करता परता है, जिसे माम रोर पर रुप रही जिल्ला कोर जिल्ले पान है वे भी हा बर देते हैं। सभी दर्द की शहिर से परिविध होते हुए भी हमारे बहाती लेवर उसने प्रभावित तरी हो पति का उपना भार करत नरी कर श्वति । बापनी की यह गीडा गर ऐसी अद्यास, कर-कर्रीकर्षा महत्त्व है जो प्रतिशत करिए कीर ताहित होति राजी है भीत जिले कोई भी हुए। ने संतिकार मार्ग बक्ता किन्तु की अस्तित करती करते हैं, बालिक मैं भी भारती है कहा ली। मुने की जन्म किनों, भी काभी है, यदि मेरी मद्रा feermui ≯ r.ी प्राम था भीर रिमी सहयरे *व हेरी* क्षांसद सरक्ष्य एके एक स्थापन संयोग र दिला हो एक बरेंच भूता की हाला करने का e'ovir kri oë f 1

केर्र नेते वर्ष प्राण्या है कि प्रवर्धी करारी का लावपन मूल प्राण्ये पर नायक पीरारणा है? के लाव को मान करारणा है? के लाव को का करारणा है? के लाव करारणा है करारणा है जाता करारणा करारणा है जाता करारणा है जाता करारणा है जाता करारणा है जाता करारणा करारणा है जाता करारणा करारणा करारणा है जाता है जाता हमारणा जर्म करारणा है जाता हमारणा जरारणा है जाता हमारणा करारणा है जाता हमारणा है जाता हमारणा है जाता हमारणा है जाता हमारणा ह

मुजाता, पुरस्तार, देवीन, मौर बीणियो (भी की नट्रानिया जो मन्त्री नट्टी जाती हैं।

मनी बहानो बहु नहीं है जिने का कर मां रिम्मन से अर जाये जैंगे हि बुँग ने बना है, या जिंगे का बहु न बार बहु करें। बनारी कोई मर्में या बारोगर बासेंग नरी है। मनी बारों बो का बहु मुल्यों-मुगों का मां मर्ग होंगे बोर कर मेगा बहानों ने मर्म की नरी ममक्त भारी बोर कर मेगा बहानों ने मर्म की मां में पारत को मर्गी बहानी बो को के बाद मी बंग का गाम है जो एक हात्री की कार मी पुण का जाम है जो एक हात्री आहे, एक बाद क्यान, एक नोरंग कार्या, एक नाम मुन, जीने हिसी में निजीसाहन कर दिया है।

राज्याम में हैंदे करारोकार निर्मा है वो एक जिल्लानिया को का से वार्थका है द वा मक है दि जय करा कुछ मीतार भी दशका को दोखा था मको है लिए दम कवा को बाय नार्थकार का उद्देव करायाद की बागारीय राज्या, नारार स्मीता परिका अपनी वालावा राज्या, नारार स्मीता परिका अपनी वालावा राज्या, नारार स्मीता परिका के स्थाना की राज्या को वारार दिन है द स्थाना की राज्या को वारार देशों के नेत कराया न मार सारार कहा कुछ हो हमा देशों में नेत कराया न मार सारार कहा कुछ हो हमा देशों मारार कराया का सारार कहा कुछ हो हमा देशों मारार कराया देश सारार का कुछ हो हमा देशों मारार वर्ग कराय का नर्गका का सारार करत जाया हो। सारार सारार हो दे जाया करता हो। सारार कराय है।

gen genen gine up ung nenn genen ng engenn un de Peng french gegen Gene 2 ermann genen de ungan g nen un jent um en giffen Fanen gib पान भी रिटी के प्रतिर पाठक के मन-पटन पर प्रचारत भार में विद्यमान है भीर भारा भारा के पिए रहेंगे। यह सही है कि उम भाष्य को परि-न्वित्तां में प्रमर होना, माज की मदेशा भाष्य सार था क्योंकि उन दिनों निरस्ते पारणे देशे नारी हानन थी जहां ऐरड भी अभाषित होना है। बिनु जहां दिनों पह क्यों बाद के लेक्का भे, विनके मजमेर के जलादीनक्ष्माद दीगन, संहानेर के राम्प्रदायन धानेना भीर मुरग्नेपर राम, उरवार के जजादेनाथ नानर भीर निरचन नाम प्रवाद के जजादेनाथ नानर भीर निरचन की राम प्रवाद करी के विष्णु प्रचाना जोगी है। विनो नेवतर ममर हुए। ये सभी महाराज पात

भी ररीव तीन दर्जन बहानिया बताई जाती हैं। जिसे में बहुत सी सरस्वती में निकजी हैं। ज्युद्धान समेना के मनाइसां, निक्वत, करनवार, इंग्रीता के पून, निजन-रेखा भादि कहानी संघह भीर दिखा प्रभावन ओगी बा भी 'बहु' नाम में गुर रहानी समह निक्ता है। पी हुनेसे सी के दार राजस्थान के धंयत से किसे ने हिसों भी में राहर निक्या है तो यह है

मी हमारे बीच मे हैं भौर इतमे से कुछ भाज भी ^{हुछ} कुछ लिख ही लेते हैं। इतमे मे नागरजी

क्ति ने हिन्दों को राहानित निया है तो यह है ए॰ एनेत रामद बरेद सह भी कोई दिवदुद सर्वात रो इस उन्हों कि इनकी मातृभूति या पितृभूति (?) यो रामस्थान के बाहर है सवस्ति पुरस्तों के उनमें रामस्थान के बाहर है सवस्ति पुरस्तों के उनमें राम को इस को मा महत्व नहीं देने। दम सुकक क्यारा के निर्मा के पहले हैं कि दिन्दानी के हैं। दे कि प्रमुख्य मुख्य स्वामी, मृत्युच्या, मेरी राम क्यारा के राम तो हुने भी मातृभ हैं। दनदाँ राम नाइ कारों ने हुन्द ही वर्ष हुन्य स्वित । भारतीय स्थाति प्राप्त की है। डा॰ संगेष संपय मुख्य कर में एन्योपोत्रोजिस्ट है यद्यपि इस्ट्रें प्रगति-वादी प्रथिक माना जाता है।

प्रस्तित्त संबत्ते की सापे वर्षों की जाय ने स्वयं नेवको से हमें बारवेन्द्र सामं क्या, मुनेरिमंद्र हरूसा, बंगीचात्र बारवा, सरनामित्त सम्या सारि सादि का नाम नेता होगा। बीकानेर नामी क्या का तिक्य हम सोम प्रमुखेक चन्दर कहते हैं, नेवात्रात्र नामक एक नहानी स्वयु निकत ही चुका है, धीर बरफ की समाधि नामक एक नहानी गढ़त के बारे में राजस्थान के एक चुख्य सानिक ने चुका ११९० में प्रकारित हो चुकते की घोगणा की भी सित्सा की तीन साच बाद दिवान्बर १६६० की सरिता के मतुषार वह सब पुन ध्यवकातिन हो स्वा है।

नेत्रदान में राजस्थान के लोकगीतों धोर लोक कबाम्रो पर माधारित कुछ कहानिया है मनः वया-नक के गीत के रूप में चन्दर को मिश्रिक परिश्रम करने की आवस्यवना नहीं पड़ी है, हा, नेपदान वहानी में नैवक इतिहास वं एक बजान पुष्ट को प्रकाश में लाया है जिसमें राल्ग कुम्मा ने मरदार राव नरवड ने रवा को पान नेव दिए थे। वरिमाण भीर भवक वरिश्रम कदर की माहिएर साधना की विशेषता है, जो कम ने पका में देशते वो मिनती है, हिन्तु उन पर वास्तरित बातापराण के विवरणों की दिना जाने केंद्रन कल्पना के माधार पर चित्रण करने का जो घाणेल नगारा जाता है वह मही है। भीर यह भी नहीं है कि परिमाण ग्रीर गुए। बहुत कम निवकों में एक माप देवने का मिन्ते हैं। दिल्तु यह भी मुठ नहीं है कि लिना वह चमक है जो रगड में पैदा होती हो है, जैसर कि चन्दर की नदीनतम प्रकाशित कराती 'मगता मार गहीं में देखते को मितनों है। ये दरि बरनी क्यो इसि में विस्तार कर महें तो उनके वा इसारे विस् एक विकार है।

मुमारिक दशा, जो बार के मारी है, का एक कहाती कहा हो मार्ट नाम में निक्ता का जिस्में दल्की मार्टिक ककाए गारी है। दत्तर ऐक फोलाइन सिन्दुक है और क्या में ईमान्सारी में नाम के सोमा ने सिन्दु माराव वर्षों है कि हुं क्या के सारजाद चीलाक की भी मार्च देन हमारी एक दससमा की है।

संगीतार सारा भी तुन तिनते हैं। विवाह रामण राजा जराती अगर १११० में नारा जा तिस्स करीड एड १४० करात्या है। तेतल क प्रमुग्त की संगीद प्रमुख्या और भीन, सार और रामा, मार्गिय और स्थानजा दर विश्ली भारत की स्थाह की स्थ

साहित्य की यांपिक भी हिंदि कर सहेते । संदा के साम सर कारावाय सार्थिक का सारी का साथ, को संग्रेग कुमार भीत का भी पूर्व करारी संवत्य प्रभोग कि या भी पूर्व करारी संवत्य मार्थित के स्वर्था कराये हुन दे प्रभा कि साथ कि साथ मार्थित से दुनांच्य को प्रकार कराया है तथा प्रमान्थ्य कियम के प्रकार कराया गया है। इपर बार सरवार्थ्य का कराय प्रभाग स्वा भी एक करारी श्वर कार कराय का भी प्रभाग साथ की स्वर्थ का सरवार्थ्य का की स्वर्था का भी एक करारी श्वर कार प्रभा की स्वर्था का भी एक करारी श्वर कार प्रभा की स्वर्था का भी स्वर्थ का सरवार्थ्य का स्वर्थ कार्य का भी एक करारी श्वर कार प्रभा की स्वर्था की स्वर्थ का साथ की स्वर्थ का स्वर्थ का स्वर्थ साहका साथक का साथ भीता का सिंग का स्वर्थ का स्वर्ध का स्वर्थ का स्वर्य का स्वर्थ का स्वर्य का स्वर्थ का स्वर्य का स्वर्य का स्वर्य का स्वर्थ का स्वर्य का

वाच कहारों तिज्ञहीको कहाशिक्ष का एक स्वरूप्याणारित जाव ना भी रिक्ता ना हैनाएँ कार्राकारण सम्बद्धी कथान चार करागीकारो की कहाशिक कर्माणा हुई है। इसी बकार का एक सहस्ता है कि स्वरूप ने रिक्ती बहार हैं।

स्पी हात हो से तथ महत (वंदर) नहां में तथ में देवरे का दिवार है है देद का प्रशास है है तीय का दो में स्थित का देवर ने हो तर देवरे देवरों का नाइ है दे कुत्री देवर गोत बतायां है अभी देवरें कार से देश हुई है देवर दिखालि तिला कारत का दिवरन कार्य कारत ही तिल कारती सी ह पार्ट्टा स्थापन देव नवस परी बतायें है देवर सी कार्य प्रशास कार्य कार्य है के वार्य स्वास्त्र करता है दे से बन्दर में हो बादर बनाय करता है दे से बन्दर में हो बादर

"rad" squire des med er her f

विन्तु पत्र-गतिकामों से ऋरपूर निकली हैं ऐसे लेखक मीमाग्यदरा राजस्थान मे दो दर्जन मे अधिक है। रतमे मुख्य रूप में उल्लेखनीय है जयसिह एस राडोड, इप्ए। बल्नम शर्मा, जगदीश मायुर कमन, माबार्थ सबै, गंगापर सुदृत भादि । राजस्थान के ^कहोनीवारों से से सभी कषाकार भागे को पंक्ति से ^{बैठते} हैं। जयसिंह एम. राठौड भपनी हान्य रस की इतियों के कारण इतने बदनाम हैं कि इनकी गम्भीर वहानियों की लोग मुला देते हैं। समय है कि इतका संबह कही से निक्ली। गंगाधर गुक्त की ^करानियो पर एक भोर रेडियो टैकनिक का प्रभाव है दूसरी मोर मो हेनरी की माकस्मिक मीर मप्रत्या-ित मल वानी पढ़ित का जो ब्राजकन इतना भगनोत्पादक नहीं रहा है। जगदीश मायुर कमन रे सन्दर एक मानुक हृदय है और उस भावुकता का स्दार पाठको को चलाने को से ग्रानुर रहते हैं। पारक को यह बहम होने लगता है कि इनकी क्होतियाँ का किम स्थल में इनके व्यक्तिगत जीवन को हुक्कोवित स्तेह संबनता में भिन्न किया जाय। ^{एहेंने} राजस्थान की बात परम्परा की नवीन रूप में प्रत्तुत निया है और इसी दौनों में निर्वा गई 'पर मभना घर कु'बा' इतकी भण्छी रचना मानी राता है। मानायें सदें मुख्य रूप से एवं काउम राता नषु क्यामों के पंडित हैं और बोड़े ही में करने देशम और मधिकार हीन मार्थ बाली मे नि धीर जान की बहुत सी बारों कह जाने हैं। त्यां वर्ष पूर्ण है विन्यु संयुक्तवाद्यों व केत निव के एक मंग्रह निवस मां स्वागत हें हैं। यात एक उद्दुद लेखक हैं और अपनी रिक्षं होत् प्रश्नेसन्त को भिन्न-भिन्न क्यानको के रण कारिय का स्वादी मून्य बनाना चाहते हैं। त्रिः क्षति रक्तायो में एक कही उसका मा स्रोवा े बर् हे के लग स्वरत रह कर दूसरों की

प्रमेन में निवर रानते का पायहों है। वह न्यां पर पाठकों में पारवा की कमी के कारण थे पादस्वाना में प्रविक्त गुद जाते हैं जब कि उन्हीं स्वयं पर ये क्या बन्द रहना चाहते हैं। पात्रस्वता इस बात वी है कि से महत्वता के गुद्ध प्रीयिक निकट धार्ग । दनकी रचना बीनी में गायास गुनन की हो तरह बुनुहत्व को पावस्वत्ता में प्रयिक्त महत्व दिया जाता है। वैसे उनका धिन्य तो स्थूमणीय है।

राजस्थान के प्रत्य कहानीकारों में पुराने में बे के देवनारायमा भागोपा, विजयक्षत देवा, राजेन्द्र मिह मोनड्डी, मोहनशत जिज्ञामु, श्री गोपात मावार्य, गणपतिचान प्रोहित मादि है। नई पीडी के बहुत में लेखक प्रपनी छाप तेजी में राजस्थान के माहित्विक जीवन पर स्थापित करते जा रहे हैं भीर उन सब की चर्चा करना न सम्भव है न मावस्पर । किन्तु राभ चरण महेन्द्र, रामबुमार मोका, मनोहर वर्मा, प्रकाशचन्द्र पाटती, रागजीत, जुगमन्दिर तायन, परमेश्वर म्हमिया परेश, मुधीन्द्र गैमास्त, भगवानदन गोस्वामी, मुत्री विभन वेद, अगरीस स्तक, डा॰ राजहुमारी कौत, ग्रेम बहाहर सबसेना, प्रवाश जैन, मनमोहिनी, गगा प्रमाध माथूर, हिमबर नेगी, शमनिवास साह, जान भारित्न, भंगन सक्येता, शानि वर्मा, गाण्डा वाप्लेंग, राजानन्द, एस. सात, सहमान 'मीमिय' मादि धारेक्षाहत नए वहानीवारी के नाम प्रशस्य निषेणा सकते हैं।

राजन्यान वे बुख यथे कराकार जैने नण, परदेशी, बर्ग्याचात योगा यदि राज्यवान वे निम् परदेशी हो गये हैं, प्रत्यवा दरका क्वांतिन्य क उन्हरूट बोटि वा है।

एकांकी साहित्य

हा॰ समनस्य महेन्द्र राम गा. थी. एक. थी., गोर्बमाँड लार्थण, वीडा

र्गे से से भारत में स्थित सिया जा गरता है। !-स एकाकी साहित्य यो साजन्यात के नात्यकारी ने राज्यानी माता में निमित्त हिया है। इस बर्ग में गर्ने थी गूर्वहरता पारीत, और मोरिय सात मापुर, रोभाषप्र जामर, बैजनाव दवार, नारायण रत भीमारी मारि राज्यहार की जानहीं है। रग को ने राज्यात प्राप्त की लाता गामाजिह, पारिवास्ति, राप्रनेतिर धीर दामील समस्यापी की विचित्र विद्या है। इतके मारित्य में राजस्वात की दर्भसार रिपरि, एमधी राज्य समन्दारी, प्रयो प्राप्त के सरपा और सुधार की बेहरा कार हुई है। ब्राप्^रतर राजावारी अन-बीहर त्या समाद **री टीकी बाक्षेत्रण की ≵।** सब्ध्यारी आसा स 'नारे के कारण दन दर्ग दिएए-करूर की हरिए में राजानार की चेतना को हमारित काना है। वीता प्राप्तक प्राचीत नहा ब्राष्ट्रीक बाजायात इस ي و پيره مسع ۾ لاءِ

हुन्स की करवाना के पुर नाम्प्यारों का है जा प्राथमित से उस कर निरा सामा से सार प्राथमित से उस नहें हैं। इसने विद्यास्त्री स्थान कर नहें हैं। इसने विद्यास्त्री कर निर्माण के प्राथमित की कार का अपना कर निर्माण के प्राथमित के से का स्थान कर निर्माण कर निर्माण के से का स्थान के से का स्थान के से का स्थान के से का स्थान के से का से

राठौर, प्रेमपन्द विजय वर्गीय, नशेय श्मार मारा-यत, इत्याबन्तम सर्मा, मनोटर प्रभार र, मे^{रलावि} मैंतर, भीर डा॰ गरनाम निरु शर्मा "भागा" इयादि नात्पहार सिरोप वालेनग्रेय है। हा नात्पनार पात्रविमा रेवियो मगार ने तिः विश्व क्य में देखियां एकंतियों को रचा कर है है और जिल पर्याल गण रता भी मिनी है। रे⁴रण गुरुविकारी में सर्वे भी गुरु मार वेंदर, मंगायगर मापुर, हामिर स्थीर, मगरीर विगय हुर्य हेमेज, थीमती याला पुता, बीर बतात बारत सोपसात दे रहे हैं। सीति सन्दों के शेव प थी सरारत प्रभावत, गुणुव भीत समवातर हे पार्थ करिया का कार्य शहनशेय है। इस्ते स्रोत्धान बार बरेर उमारी पुरस त्यार वार थारो रव मान समय समय पर प्रकृतिक या प्रभावन प्रकृत रुति है। इस वर्ष में इसम्पाट बाल के मांगाल सम्बद्धारत की समस्याद्य की सुप्तिकारण है धीर देण का समय अप स देला है। इन्हारी ब्राप्टम स्टेंब हॉडन्काल विव्युत्त है । कुछ नामानार्थ ने रेकरीक के बीर जार प्राप्ता दिला है। देन कर जरी के र्चारार्चन्याचे तरक्षात्रः तथा तर समाप्ताः अध्यक्त व विद्याल की बादा है। बाह्य पर्वा वी होत्ता स लक्ष्मा को क्षारित के यह प्रवाह तर है।

feeg graph produced measure and reserative anather away secand service renaminative englight subject on \$1.4 what he signs a he gived services yill feel signs and responding to \$1.5 or 10.

विशेष प्रिय रहे हैं। यहां संदोष से हम उनका उल्लेख-मात्र कर रहे हैं।

मामाजिक क्रांति, मानोचना, ब्यंध्य के दीय मे मर्वेत्री सम्बद्धान सक्तेना सया गोविन्दनात मायुर को प्रतिनिधि एवांविकार मानाजा सकता है। प्री॰ गोविन्दनान मायुर ने विषय तथा भाषा दोनो हो राजस्यानी चुने हैं। उनके साहित्य मे राजस्यान मने स्पार्व रूप में बना हुमा है । राजस्थान के बन-बीदन, मारवाडी समाज की समस्याएं रुदि-गरिता, प्रचितन जीर्सा-मीर्म परम्पराएं , राजम्यानी शरुरों ना जीवन, गाव बानों के साथ मनाचारपूर्ण ध्वत्तर, निर्स्यक झौक, दाराबस्त्रोरी, बोपस् चाहि नितान्त बास्तविक सत्यता से प्रकट किए है। यत जीवन में भाने वानी भड़चनों की सच्ची मती ही है। उनके "हरिजन" नाटक में ब्रामीशो भी कितादिता है. तो "बानविधवा" में नगर तिशक्तियों भीर जातीय पंचायतों के सडे-गले न्याय रा तमस्य उपस्थित किया गया है । धैनी हास्य भीर स्थेनपूर्ण है। इनके द्वारा हम राजस्थान की र्षेत्ताएं मोर विसमताएं स्पष्ट देल सकते हैं। भी सम्बद्ध्यान सबसेना ने सबसे प्रधिक सामाजिक लाकी निवे हैं। इनके "विजया ग्रीर वारुगी" ^{दे} मारह एकावियों में समाज के ऐसे लिए पर धोतेराक व्यक्तियों का व्यक्तिसक वित्रण है, जो ^{रत सुन्त} भीर ममुद्रात समाज में सब की ग्राखों में कृत रात्वर उच्च प्रीर मान्य न्यान पाये हुए हैं। रर जो बानुनः समाज के निए प्रभिक्षाप है।

र्षाम्ब मीर साम्बृतिक क्षेत्र में पुराने बादगी की बाजीय शक्ति का वित्रमा पर्याप्त रूप में हो गा है। स्प शेत्र में मध्येता जी ने प्रचुरता में निसा ी उन्हें १०६ मध्हें भाग्त की पौराणिक और रुरानान मन्द्रि वे विगुद्ध चित्र है।

िंशमिक सेत्र में श्री मोकारनाव दिनकर

की मेवाएं विरस्मरणीय रहेगी। उन्होंने इतिहास को जीने जागने रूप मे प्रस्तृत किया है। यत तत्र मायनिक राजनैतिक विभार धारामो मौर माज की समस्यामो का भी समावेश किया गया है। ऐतिहा-सिक तथ्यों की पूर्णरूप में रक्षा करते हुए सेलक ने भारतीय संस्कृति को धपने सब से प्राकृष्क रूप मे रता है। प्रो॰ रामप्रसाद विपाठी ने धपने एवाकिया के विषय राजस्थान के इतिहास के निए हैं प्रीर ऐसे चरित्रों को उभारा है जिन पर धभी तक किसी एकाकीकार ने कुछ नहीं निखा है। श्री नारायण दन थीमानी ने राजस्थानी भाषामा बानीदाम, भूमर, प्रशोक इत्यादि एकाकी लिखे है जो प्रतीत के उरवरन क्षणों की भंकार है, और साथ ही इस समाज के कार्य कलायों की जीति आगती तमवीरें भी हैं।

राजनैतिक क्षेत्र में कुछ कम कार्य हुमा है। इसमे सबमेना जी का कार्य उल्लेखनीय है। श्रीमानी जी के दो एकाकी "होड" स्रोर "धरती का देश्ता" भी उल्लेखनीय है। "धरनी के देवना" उन मिनिः स्टरो पर छीटा कशी है, जो बोट सेने समय जनना में बड़े-बड़े बायदे करते हैं, पर ठोम मेदा कुछ भी नहीं करते। इस एकाकी में स्वार्थी पत्पर हरप नेतामो पर व्यंग वित्र मीचकर उमनी दर्वननामो की भोरसंकेत किया गया है। मक्सेनाजी का एवाकी संग्रह "नेहरू के बाद" राजनीति के

वाह्याद्रम्बर का पर्शकाय करता है। ब्रामीश्व विषयों की लेक्ट कई एकाकीकाणे (जैसे श्री देवीचरुग, वैजनाप पंतार) ने धर्मः एवाकी निवे है। देवीबरल जी का "प्रव बन्दन", देकारी का इलाज, ''क्सिन के धासू'', ''प्रवास' में महयोग'' इत्यादि एवाकी काजन्यात क प्रामीत जगत् में हमारा परिचय कराते हैं। थीमत कुमार तया बैजनाव पंतार ने राजस्थात के दायांगा को वासी दी है। पैवार जो का 'भारान्त बाक

आयो तो हुवैलो री

भी कन्पाएनिंद्र राज्ञ

मीनी तो हुनेनी पत्त

माई तो हुवैनी हिचनी दोन्यों तो हवैसी मरनी

हिपदा रे भेड़े होरे, पायो तो हवैतो रो-होई न होई।

रीहा पर भीता गातां वार्राङ्करां मु बनद्वाना

गृहिया से स्थाय समाता रिरापड पास र मग्रहातां इनको तो हुवैसी मागर

मुनरी तो हुवैनी मादरा गरवरिया से मोरा मोरा, मांबरी सी हुवैसी से-बोर्ड न बोर्ड ।

नाम कुनाई राजा भवरा से भोजी बाता बब्धियो मुनेट दिग्सची

कोरण रे बाह्य गांची मार्ट को हुवैभी सार्व

राषी मी हुवेसी धानी

कार्या 'बाप की गाड़ीय काश्वासीर प्रत्या ही ر و ماديه ما

इ. १० व ते व त्रापुर व १० १० १० मालक करण महा भागाला मानुसाम प्राप्तकीय dam at to de at a amerat out tranca erem dice mines dan bei gi with them do with the mitter betamen t of alle gave, where it is not give listing e e en e graft expres teme by ever र करें उन्हें वाह संस्था है की है उन्हें कहिंद

क माना रै मारामां, पानो तो हुनैतो रो-नोई नं कोई।

मावरा रो भरिया मारो प्रति सि महिमा मही मार्थ री करिया काने मोर्चु से महिमा मारो

भीगते तो हुई तो बाब 'र मूनो मो मारी राता भाषी तो हुनै तो शे-तोई म कोई मांश मूं पना पुराण गोने में भरम रहाश

रियळ्डो हंगी उपान कुम कुम मधरा राराता गयों तो हुनेनी मैन्से घोती सी हरेगी होता दराणि । यमसा सुद्रमाना

प्रमानी की हरेती ही जोती स कोई। anur meret fent ? freit ut ierg bien कल्पर है। दिया संप्राधिक नवा होता सरा Erfer ba pier ube cier unem mit.

दर द्वार प्रजान है जिस बीवन के निर्दाय अनुवा wermen ab fer migut frag pe je genne ^{हे}त्रण है । यो धार्मक बरन्द ब्राप्त के में रव दूर ब्राप्त राम कर रह है। इसका होता स पूर ब्रुपार है।

Ex Sectionist & 44 & 44,4 & 41,1 ar ere gre geerra et ame

मार्थित महारे में क्षति कार्यकार के द्वार ने

गीति साहित्य

श्री राधेरमाम कौशिक 'ग्रघीर'

हिन्दी माहित्य के इतिहाम में राजस्थान के गींने शाल का स्थान गुरीहत है। माहिकान में गाल विश्वों ने वाल्यानीन दिगति में प्रेरित होकर में गर, मीक मौर बीरलापूर्ण तथा मीरों प्रमृति, मक बीरों ने मीत विश्वव गीत निवकर हिंदी ने भीने मकार को समुद्र किया है। मीरों की न्यस्ता थी दिन्दी के विश्वय कवियों को ही प्रान्त ही नी क्यनित्य है।

एससानी (किन्द) धौर विगत (बन्नभाषा) पेने मामाधों ने राज्यान के दिन काया—एकन रंगे ऐ। इसे संदर्भ ने इस इस तया का उल्लेख रंगे ऐ। इसे संदर्भ ने इस इस तया का उल्लेख रंगा भी भागन करी समयने कि वर्तभान प्रथान में प्रशिक्त दिनी राजस्थान ने प्रशिक्त दिनी राजस्थान ने प्रशिक्त दिनी राजस्थान ने प्रशिक्त दिनी राजस्थान ने प्रशिक्त दिनी प्रविक्त तथा मुख्यों कर प्रशिक्त पुर्टों में सम्भव नहीं, केवन की सीमी (वर्षभाम प्रकृति मारित्यक दिनी) हे ती ही हरायों वर्षण की विषय है।

भीन मंत्रकत, पत्र पतिकार्ये तथा भाकाश वासी, भीत है भीन है जितने हमें मीतकारों की रचनायें रेमता से मर्गा। रही के माधार पर उपरोक्त प्योभी हिट्यत स्वतं हुए प्रवेदसम्य के साथ ही स्वतंत्र सा मामा विया है।

सर-जन विनशे हुई शामधी का चयन धीय रिकोल एनता है। फिर भी हमने भरमक चेष्टा रेहे कि दर्भु का कवि विस्कृत नहीं विन्ये आये। उद्दर्शक में मुद्दुर्श कविया उपनस्थ न होने

के कारण उनका सर्वांनीस विस्तेरण प्रस्तृत करना सामर्प्य के बाहर है। तवाकवित वर्षवेक्षण ही मोशित है इससे प्रविक्त का दाना हम करने भी नहीं।

कानकम को हिट में प्रतान नारामण पुरोहित राजस्थान की मेरित परस्परा से प्रथम स्वान के मियरारी है। डिक्से कार्नान इतिवृत्तात्मक सेवी मे निल्ने मापके गीन ऐतिहामिक हिट्ट में महत्वपूर्ण है। 'रसमयी' नामक सबह के मितिरक भारती अन्य स्वनाव भी प्रकारित हुई है। इब्दिक्तत मनु-पृतियों की प्रमिष्णिक मे मध्यात्म का गहरा रात है। नही-नहीं राष्ट्रीयना भीर समाज-मृपार का दूर भी निव्तत होता है।

जेने-वैसे स्थि पाय नाथ भाग के का में प्रवन्ति होती गई राजसाती के निंड भी स्थिन गीतकारों की पीत से बा बेठे। यह सार्गावक प्रवाद के कारण नहीं बचितु गुण नेता ने होति होतर हो समस्त हो सारा व नदेवाता ने लिया बोर नेपरांज 'हुनु' उनके प्रवादीन हैं। उनकीय डाठ मुपीय, स्वर्णीय मेंठ परदेश, मुस्तेय मोती तावा गण्डेमाना 'जनात' राजस्वान के पढ़ने केरे के हिंदी गीतकार हो निह्या की परिस्कृत भागा, स्वाह बोर प्रवाद राजस्वान के निहरा की स्वाद की प्राय है। बारियांचीक नहीं कर्नुका लिया बीर बार प्रविचार की हिंदा गीत में हिंदा के क्षातालार राजस्वान में मन्य नहीं।

स्वर्गीय डो॰ सुधीन्द्र के गीठ परिमाधित धारा

ति में मानुष्य जानमा का मेरेस मंत्रारे हुन है।
योजानक गोज शावासरी दियान में बहुते जही
रह की शुक्तेस जीती मोद कारीमीतात 'जावाद शार्मुख जानमा के मीना के माम्यम में मान कार्य के हैं। स्वत्र मान्य कार्य में मी बार जव मान्या का जीतियात करते हैं। कार्यों की कार्यदेश संस्थान के पत्तमांत्र की हैं। कार्यों की रीती के प्रसादन के पत्तमात्र की कार्यामी बनाया। रमान, माने नित्त कोर साले मिन सामी होती में बारदेश के प्रमादन मोने सीनी का बाम करते हैं। भारत की संस्थाम क्ष्मांत्री कार्याम करते हैं।

मेपराज 'हुरूत' 'उम्मेद', के प्रकार के राबार हिंदी हो स्वाह में लिने जा सबते हैं। बेने शरायारी व वर्ष है। लिय वी हींग से 'सुर्द' क गीन नदे गी। बाहा बनाए ही सबी हुई है रिन्तु ६९४७) में बारहर है, *करिन्दी* बा बाह भी। प्रशासम्मानी "एम रू" की "जरह कुलान" क्रीर 'प्रशास काराविकात वा विश्वेताल करें का माना का प्रवास कि विव्योग मार्वे किया । बहा विक्रम sim feit em ?- ein ei & at ift mit nerg fin gibner bett fin Red gabe !. & ंत्र हरे हे पर स्वयं दिल्या क्लाई है। दिवेद होता को बारहूद कर हारहान्य प्रकारिया है। de hana minim mitribana m inne #4 र के जोत है जो चंक्ष निरम्पत को की जीवश का मार्गालकाल केरी कर कुद्रात कर रिजा। ter blem this & golde me mit & tan jag am fe metante je Anten wit algra war wer wer #1, fet; ate also and at also are grown a se an trade attribute de le ser e ent a fig 4 Amerik gy ect at k

पनी है। बर्गात गायह के का से 'सुन्त' (स्मागीय है। 'पीती का कार' जैसी रक्तायों में मार्गातक दिवसत्तायों के पति मत्रा हिंहतीग का भी सभार करी।

हर्गीय महुन में सिन्दर का करि हूं, मेरे शीन विकल्प ' और योगों के योगा है। पादण का जुद्देश उन्हें शिनेता है। कर नांध्य शोनकारी बारे हामगोंगों के लिए मदेव बाद दिये वार्षे । उन्होंने हैं। यशकारों में पीन भें पहित जो ने दिने हैं।

साम्पन्ति बाद भारतारी, डा॰ कार्रेगासार महरा, हा । महत्रप्रदिर सर्वा घरण नप बहुईरी मोर कमनातर 'कमर' ने गीत भी रेनी हैं। प्रशास में मारे । शार मनश के तो अवतन 'पूप प्रशास्त्रका किल्ला के काले प्रकालि हा है। इत्यानो प्रतेश के साथ और भी सर्वता है। सर्वित्य का बोर्डिक बरारव हान सरत है रूपं से की उपार पर बात है। जिस्सी बार् दुरना कर्षा के सम्बादी में अपनात प्राणि विष्य है। बार धरता के सीरा में बाला की हिरुपत्र बर्पर योग्ही बात हिरुपते हैं । अपना इत है need by a bungs and Balays declarations म दरम्भ नद हैं। 'नमरो' हैं। स महानत् के परवाई क्षी क्षण्यस्त्राच को कार्यक क्षणपुरूष पृथ्वी व्यक्ती कर्ण ह क्षण्या की सरप्रका पुरुषी क्षेत्र ही पर क्षारराण करी बाब क्यों । केनना ब्रूगुन्थ होन्या श्रे महीबा ह्याच है। देश नवना अवस्थान प्रदेश वर्गा हाका काशन्त्रालीय कुल है। तन कोली के diet Riebber Grinent unt Aretimal रण अन्त देश का बदार है। (empter# to dea the estern for him to ₹ c maxima max ignorert çaqıntını

शहूच चिये सहस्योद्देषाटन करने हैं। बाध्यान्ध्र की धोर मुक्ते हैं।

हिरी पीतिकात्म के मयान राजरवान के रैनाएरे को भी प्रमाधिन करने रहें हैं। छायाबादी गीरो ने परचार्यक्वन की सहनता, भेवन की करका तथा १८६६ के प्रमतिवारी मिणवान के सस्यान के कवियों को भी घरने रेंग में ऐंगे ही निया। यजनज इनका प्रभाव निश्तित शिक्षी

र्त पीती मे ज्ञान मारित्व, रामनाव प्रतार', मनोहर प्रमावर, जगरीम बहुँबँदी, धानोगत भारताव 'राकेश', तारा प्रकास जीधी, माद भानु, जर्बाह्न 'नीरज' और मूनवव्य धार है। ज्ञान मारित्व के दो मीन मंद्र 'ज्ञार' पेरे भागत पुत्र' करातित हुए हैं। 'बाहमात पूज के गैन व्यक्तित्रक हैं। 'जिंदगी से प्यार', दिवार गरं मार' मारि माता-निरासा के गीतों केष्म तारा 'वे 'क्षानिक मीत्रयं के करा सी धान है। वेते 'समुमाना में' के गीता गून्दर हैं फैरल है। वदे 'स्वना है वक्चन की 'मुम्याना' रंग हमती है। नवना है वक्चन की 'मुम्याना' स्वी सामा

्वारा है। माना है बच्चन की 'मधुनावा' जार्म रेखा है। मानतः यह तो कहा ही जा मारे हैं कि मान के नीठ नीत (Lyzio) हैं ले करें में ने के नीठ नीत (Lyzio) हैं ले करें में । उनमें मंत्री हुई माया, बोधगम्यता, रिजाना धीर प्रसाह है। कमनाकर के गीत जिस धीरों में हिंदी हों में प्रसानीय हैं। ज्युप्तेन मानता है। प्रसान में प्रसानीय हैं। ज्युप्तेन मानता म

पत्र हेम्दर कास्य से उपमा चुनने में माहिर हैं।

े विजय निर्बोध पपने हास्तगीतों के कारण स्मरणीय हैं। बैमे वजन तो है नहीं गीतों में। प्रयम किय मोर फिर पक्तार चुनिमत्री यवार्ष की भोर मुके हैं 'वामना में दूर जाउं तो जिंक कैसे ?'' इतके भीन रावस्थान में ही नहीं भारत वर्ष में मूं में हैं। जीवन के प्रति इतका एक विभिन्न हिंगी हैं। पपने मान भोर मुख्य हैं। 'सुसमा चिता'' तथा भन्य मुक्तक रचनायों के द्वारा कहेंनि चरने पान को सिद्धहरूत 'चैरोडी कार'' प्रमाणित हिया है।

दा० रागेष राधव वर्षनोधुकी प्रतिमा के धरी है। उनके गीतों के पर्ववेदाए घीर मृत्याकन के निर्मा ते प्रववेदार घीर मृत्याकन के निर्मा ते प्रवक्त निर्मा संग्रेशन हैं। डा० रामानत कि निर्मा ते प्रवक्त निर्मा के प्रवक्त निर्मा ते निर्मा त्रा निर्मा है। भी प्रवस्त निर्मा ते निर्मा ते निर्मा ते निर्मा त्रा निर्मा ते निर्मा तै निर्मा ते निर्मा ते निर्मा ते निर्मा ते निर्मा तै निर्म तै निर्मा तै निर्म तै निर्मा तै निर्म तै निर्मा तै निर्म तै निर्मा तै निर्मा तै निर्म तै निर्

प्रशासनाय है।

बार हरिया, परोन्डर द्विरेण, विशंसी व जोगी।
'तिरोब' स्मेर हरिया माचार्य सी दिशी में गीन
'तिरोब' सोर हरिया मोचार्य सी दिशी में गीन
के हर दब गये हैं। दिश्य के गीन जितारी हैं
के हर दब गये हैं। दिश्य के गीन जितारी में
'तिरासी' से यही तासर्य है कि जीवन ही पहुंदीतियों से प्रतिकार होएन यह दुक्तरों में मही तियों से प्रतिकार होएन है।
तियों से प्रतिकार होएन यह दुक्तरों में महितारी
का तो प्रन्त ही नहीं उद्धा । प्रमुत्त मामार्थ है रही
सोता मामार्थ है के गीन महुद है। रिन्तु क्ष्मण्या से
गीत । माचार्य के गीन महुद है। रिन्तु क्ष्मण्या से
रही है, हैसा हुय सम्लाह है।

प्रभर की पोरी ने गोलाकों में बाह्यसम् परिष्ठ' में, बच्चील, हामदि नाइन, बेनाम चिहेते, प्रवा ने मोले हुमार 'मुमार' कीर पोमां माते हैं। प्रवान ने मोले मिला देने बानी पोर हैं। देवता उन्हीं करिय-माले किया है। 'में हो माने बात नहीं किया कर्म है निम्न कीम प्रवाद माला ही भीता भीता पर्दा पर माले मालन सोम मंदी नाम प्रिणितित गोल माले प्रवान मुख्य पीत है। 'पर माले बात माला की' जाता नुस्कर पीत है। 'पर माले बात माला की' नाम जाता माला माला देने ब्राह्म माले का साला माला हो। में प्रवान के माले हुआ है। मार्चार का साला माला भी निर्माण होता है।

हित्रमार्ग के रोग्ने में पाना और मीमां का सम्मान गानवाम है। एक घोर जाते कर तह मा की है। एक घोर जाते कर तह मा की है। एक घोर जाते कर तह मा की है। एक घोर कर गोने मानू है। कि वह काम में मानू में प्रतिकृत कर काम में मानून कर कर हो। यह तह है। एक है। एक

क्षणी व गरी। मुख्याना को नामामुकी क्षेत्र रेग मिता वरे ही। या मार्ग प्रमान के हा नामामुक मुद्दार बारे कार में कामाम बाजान जुन्द करने हो न पर कार्य रेजन कुरु है।

. 44.. 5 (-4 \$ (

And fine and the temperature of species and the fine and

सारिवार 'धनावा' को 'बारो ने नाव'
धीर 'में बाजें से रहा, बीर गुद्द है। तथे
विश्वी में बार व्यवस्त, बीर महोगा, नामान मानुद 'जिसीय' ने नाब जिसारा बारो है। बीर ने दीन की नाव जिसारा बारो है। बीर कियार नहीं पानके। सिंग्य और नगर पर नों नहीं सम्मायदिक गीनवारों का यह है। कृत्य में धर्मेरि 'भारती,' पायाक्यार 'लाही' नवा मोद वे तोडण पुष्टिक नहीं। मानि हम पुष्टि है। बाल भी है। 'पामा' ने नीत नहीं मुद्द है। बाल में भी रिवा है।

करितिकों में साम्य बाग्गीर (यद कर्ता सारियों कोशी, तात्रुत्ता जिल्लों का अहा, राज्युसरी गिरपुरी (यद बर्ता) घोट बुद्ध बोहरीर

क्षान्तरः इत् तुम् रिन्हर्यं दरः वर्ष्ट्यते हैं कि राज्यत्वर के रोज्यार का राज्य सनुवंतरों हैं वित साम्बर्ट् देशांत्वर हैं कीत सारगांदरः उर्धा के नार राज्यत्व संभी केवार मेरे।

er of a group of the first of the decide of a territorial to go to the discussion of the first of the go to the discussion of the first of the first and growth as the state of

समीक्षा-साहित्य

श्री नवसिक्योर समी, हिन्दी कारुणता, महाराजा संस्कृत कार्लज, जयप्र

र् विश्वान की महमूचि मे मानवीय सीर्थ भीर क्तार्थन में निश्चन गंगा-अपूनी चारामी के प्रस्तृते माल की मान्द्रतिक निधि की समृद्ध क्ले में समूर्य गेन दिया है। मानतीय नाहित्य की स्तार मुद्दान स्वतिन है। मानुनित-माहित्य के सार्थ में उत्तरत मोगदान कम दहा है तो तिता कारत उत्तरी प्रधाना करायि नही, कारत्य है से पितृत्व करा मीमवाच और मृद्धियाभी का स्वार्थ। किनु किर भी सपनी महान परण्या में या उन्ते को है और सायुनिक साहित्य को में बात उन्ते को है और सायुनिक साहित्य को

हिरी-ममीक्षा मे राजस्थान का योगदान ^{मारिकान} में ही धारम्भ ही जाता है। रीति-कान महाराजा जनवन्त्रसिंह में साहित्य के विद्यार्थी ^{मरी-मीनि} परिचित हैं। माधुनिक हिन्दी-समीक्षा री इतिहास दुख दशाब्दियों तक ही मीमित है, विल्डाम बीच भी राजस्थान में ऐसे समीक्षक हुए ितिना व्यक्तित्व हिमानय-मा ऊँचा भौर हिन्द-कारमा महरा मन हो न हो, पर जिन्होंने प्रपनी ^{कारता} में नयी दिशामी का उद्घाटन या संकेत प्पार्विया है। उनके प्रयास महान् बाहे न हो, ^{ति महित्य} की प्रगति के लिए महत्वपूर्ण भवन्य ि है। प्रम्तुन सेव में प्रकाशित उपनम्ध ^{केल्पी के} प्राचार पर राजस्थान के समीक्षा कार्य रों क्षेत्रन कारेवा प्रस्तुत करते का प्रयास है, भार परि प्रमाद या प्रपर्तिकम से रिमी लब्ध रे^{क्ट्र} विदान् पत्रवा उदीयमान प्रतिभा ने महत्व-

पूर्ण या माधारण भी कार्य का उत्तेल करना द्वर बाग तो शत्त्वय है, क्योंकि वह मदा मदने को मुमारते को तत्वर भीर तयी जातकारी को उत्त्युक है। तेल में बस्तुपरक निरोध हिंहिण्यू के मदनाया गया है, भत. यह नेवल मुननारण के समीक्षारणक नहीं। मैंने मपने हिंहिरोण में किसी कृति का मूल्याहन नहीं किया है।

ऐतिहासिक गवेपएग:-डा॰ हजारी प्रमार द्विवेदी के प्रमुसार ऐतिहासिक कारणों में प्रादि-कान का हिन्दी-माहित्य सध्य देश में सुरक्षित न रह मका। राजस्थान ग्रीर गुजरान के गरेशाइत निरापद होने मे यही हमे कुछ प्रधिक प्रामालिक कृतियाँ मिलतो है। इस प्रमय मे जैन-भण्डारो भे संबित मामग्री उन्लेखनीय है। इसमें दो मत नहीं हो सकते कि इस कार्य को यहाँ के विद्वाद जितने मधिकारपूर्ण दंग में कर सकते हैं, मन्य प्रान्तों के नहीं। यहां के पश्टिनों ने घरने इन मस्भीर उत्तरदायित्व का निर्वाह धरयन्त सफरता ने विमा है। इन विद्वानों ने मही उपवास मामसी की छानबीन कर हिन्दी-साहित्य के ग्रन्थशारपूर्ण मारम्म पर बहुत प्रकाश हाता है, जिसहा महत्त माया-विज्ञान, इतिहास, बाध्य-क्यो वे दिशास एव परम्परा सभी हरियों से हैं। इनहीं सीमी वे कारण धव यह मान निया गया है कि हिन्दी की इतिहास राजस्यानी भागा के उर्भर और दिशान में गुरू होता है।

स्वर्गीय मौरीशंकर हीराचन्द्र सीमा.

न्वर्गीय परस्याती, स्वर्गीय स्थामततान जी, तो र स्वारम धर्मा (भाव कह दिन्ती दिस्स रिकारम में), संगासान मोता, कारूर सम्बन्धि, संस्थान मालिया, करिसाब मोरामित, मुनि-दिन-विद्यस, मगरस्यद गाउटा, न्यामी नरोसम साम, सा नांभी बाद मेनारिया, पर म्यादसान सम्बन्धित से कर्नुमा बाद गहुत, शो पैनतुन्यसम मार्गि विद्याल के कार्य में लियो संसास प्रशिक्तीत

'राज्यमानी मापा घीर गाहिएत .--पात सामात्र परिदार्ग है कि मनिनार में जो मागर पत्र योग यस्पी का है, विते याधिकार से राशकारी माता का है। एसका कारिक दरेक tini fi bengat ?, un feift fi fent बार पूरे मनाराण से एएटा बान्यवर कर रूप है। इंग बालात के पुरस्कारी शतकारी विद्याल का को " Afertifen मान्य कारण है, बदा'य पुनरे धराप्रभावत गर बगर् होस्यूए" प्रत्यात है दर्भ रामा दरमा। इस रिमा य सर्वे अपन कार शरकारिया का नाम क्यान ता है। ही errie tit agen fegre en entre e greiten कारती कार्ते । पूर्वावद्वत्र स्वतान स्वतान स्वतान स्वतान ६ त मार्जनमा है रिस्तर दिया, बाब हर रार वेर को घार करेंग्रेट पुरु हुए छार ir centiten e s m es minfar fert grit killigen bien kiel bie biel after 15 to the new and greater an NATIONAL COMPLETES CONTRACTOR erri Tracit bacerer #1 िराम को प्रशास हम प्रशास संग्रह Potencial territory for the line of Br. F. & St. Section assessed

Per 114 # / 2017 1 1 9 9 1

मीर पुराने पारों का कात की प्रापनगुण उजार है। स्थामी मरीसम दाग वे राजाना वे प्राचीत-माहित्व के ब्रह्मदाद के क्षत्रदाव में हो नार्व निया है। पुरसीरात रामी की भारत सम्बन्ध में मात्र उनहां मत्त ही मान्त संबन्ध प्रान है (गहारिया रचया है)। बनुतेरे अनुविक्युष ने जनते विरोधना से कार्य किया है सौर सब भी कर पहें है। सारमास के शास्त्रीली करास मारि पर नगमोत्री की रमगाने मारे पकार की पत्ती पीते यो । इपर बन्त संयम ने उत्तान है। दल दरान में नदी माता है (व्यक्तिराणी सर-वयका योजकर)। जाश्मोतीया व मे संरा के कारों ने लिया के बार्य लगा की बता के वृत्तिवा को गुरुवाता है, बीलतरें व रायो, नुपार शांधादियर प्रति सामाप को जी पारा एक बारा जाल है। प्राप्त परता कर रातातान के दिवा दिवार स्वारित के द्रीरतान की स्वीत्वार बार बर्टन बारा में बार्ट करते का प्रशास किया है, बच्ची इंग्ली बहुत का बत्तारामा सबत तिस् क्रा बुद्दी हैं अलहर कुदाररव राजा की दिएत रवरा सारम् । बर्ग केनेपुर सुर स्ट्रीर रहा ग्रह वन कार्य कर बचन रेजार है यह दशका व अवस्थ राज्यक्तार करन्त्रस्य पर प्रस्ति राज्य प्रस्ति है। दूर बहुत्वत्तारी । कराहती कह है। इस काल करा कार क क्षूत्र कर इंग्लंड प्रत्ये तुरस्य स क्षारण करत सम्बद्धी एमणी कहा हुए। का प्रवास क्रांट क्षण के युक्त मुक्त हकारण का नाम मार्ग है। हेरफो र र⊖ के नियम ने जीक लो शर का मांध्र दर्भ कर है 😘 प्रथम प्राप्ता सर र है र १७६७ र क्षेत्रक स्टब्स । अस्तर के प्रार्ट के an en mes M. M. en. de maños so Post क्ट हर दरनर कर खण्ड दम जुल कर न के पे पे पे

निमरा हुमा है।"³ झात कर ये राजस्यानी तोतोतियों के मूत अभिप्रायों पर कार्य कर रहे हैं,* रम सम्बन्ध में उनके प्रतेक नेता 'राष्ट्र-भारती' मारिपत्रिकामो मे प्रकाशित हो चुके हैं। हाः मोतीलाल गुप्त ने 'मत्स्य वी हिन्दी-मेदा' गोर्पत मे राजम्यान के पूर्वी-मंचन की साहित्य-माइना पर भ्रच्या प्रकाश होता है। इस ग्रन्थ के प्रतापन से मनेक मजात कवियों भीर काव्यों का ^{एता चने}गा। इस प्रकार के सम्प्रयन एक सहन दे सनरे को भी हमारे मामने रखते हैं, जिसकी मोरमाब हिन्दी विद्वानी का ध्यान नहीं जाती भौरिक्सवी डा॰ नगेन्द्र ने एक बार चर्चाभी की रों। हम माहित्यिक स्तर की सोज—बीन के बिना भी प्राचीन कृतियों ने पीछे दीवाने हैं, माम्प्रदायिक भ्यों **के पोधे भी बा**वले हैं, जबकि धाजको ^{ब्ह्न}पूर्ण हतियों को भी प्रमाहित्यिक कहने से नहीं ष्ट्रितं। राजस्यानी विद्वानी को भूठी यद्यनिप्सा लाग कर वास्तविक महत्व के पुराने ग्रन्थों काही पादन करता पाहिए, जिनकी साहित्य के इतिहास दे एक का सके ।

पत्रचान में भाषा-वैज्ञानिक प्रध्ययन बहुत निह्मा है। डा॰ सरनाम सिंह दार्मा 'प्रस्प' प्रध्यानी भाषा पर एक घंष तैयार कर रहे हैं भी जैतिसम लालस ने राजस्यानी भाषा पर नमें दिया है।

कमित भीर परम्परा के जीवन्त परिक्षान के भिन्नीर काहित्य का अध्ययन अध्ययन अनिवार्य है कि 'कम की नियावट मददों के विराग में पर्पर रोसोंक्नी फिरनी है, बाग़ी का उच्चारण घरने माहर्पण में स्वार्थ को स्वयं सोच लेता है। "प्र नरोत्तम स्वार्थी और राती लस्मीकुमारी पुरावत की बोह राती पर रमनाएँ उरावय है। बोहारायांने पर डाट महर की इतियाँ है। पर इन दिया में महरवपूर्ण योगावन जोपपुर की 'परम्परा' और उरापुर के सोध-मध्यान के प्रकारता का है। पर हर समय नोच-माहिल की रट भी कम सतानाह नहीं है, जममे घरने वर्तमान के प्रति हम उदान वनते हैं।

प्राचीन हिन्दी साहित्य .- उदयपुर शोप-सस्यान ने कुछ समय पहले पृथ्वीरात रासी पर भिन्न-भिन्न समय पर भिन्न-भिन्न विद्वानी द्वारा निले हुए तेवो का संकचन निकाना है। जिसमें रामो पर ग्रव तक हुए कार्य को जिकासमान गति पर ऐति-हासिक प्रकाश पडता है। डा० रागेय राधव ने पुर गोरखनात्र पर मधिनिवन्ध निला है। यद्यपि मह ग्रंथ ग्रभी प्रकाश में नहीं ग्राया है , किन्तु ले उठ के ग्रन्य ग्रंथों में गोरलनाय की चर्ता नो पड़ार इसके महत्वपूर्ण होने का धनुमान होता है भीर डा॰ रागेय राघव जैसी समर्थ प्रतिभा में इमने विपरीन सम्भावना हो भी नहीं सदती। हा० सरनामः सिह शर्मी अरुए। के 'संस्कृत साहित्य का ट्रिटी पर प्रभाव' विषय को लेकर लिखे गए ग्राविनिकय के महत्वका उल्लेख एक स्थान पर डा० धीरेन्द्र वर्माने किया या, यह ग्रंच प्रकाशित भी हुपा या, विन्तु भाजकत दुष्याच्य है। 'दिशिष्टाई विक मिन दर्शन' नाम वे डा॰ घरगा ने येथ ने एर ग्रप्याय में हिन्दी के भक्ति-माहित का विशिष्टा-है तिक मिक्त की प्रक्रभूमि में मुन्दर विवेचन है।

[ि] है है है है देवराज उपाध्याप का धजनेर सिम्मीजियम में पिठा नेस-प्राध्यावर्षीय सन्दर्भागी समालीचना ।' ४ डा॰ सहल के लेखक के नाम एक पत्र के धनुमार । रे होनर बोठारी के एक लेख से उद्धृत । इ. हिल्दी के स्वीहत सौध-प्रवंध के मनुमार ।

'नवीराम्' विवेशन' सिहते दिनो ही प्रकारित हमा है, जिल्ही विद्वारों ने मुस्सिद्धि प्रांमा की है। नदीर साहित्य के विविध पत्नी पर विविध रिप्राणों ने ममीर भीर मौतिक कार्य किया है, पर एक गाय करोर के मिदाना, माचना, योग, मन्ति भीर राम्य पर दिवार बरने बानी यह पहनी महान-पूर्णकृति है। बार बन्ता वदीर की सामाजिक भेगरा को ही प्रमुख मानों है और उनकी भन्दि को बर्गी से भारत स्वीराप्त है। श॰ धरूप ने रबीर र्गाग्य के मानस्त्रासाधी पहलू पर सिरगर मे विचार विद्या है। उनहीं स्वातनायों पर हम विदाद बर रावते हैं हीतियारी धायह भी। उपये हैं, पर यह बार्ग है कि "रिहार् नेपर में इस इंद का दिनाने स भागि थम दिया है भीर उनने सौ भारती नयुद होति । याचा ते कि लिया यात्राचना नाजिय मे रण पुरुष का कामान होता को ह जिलापुर्या लगा मुचिए। बार्टि महत्ता बाहर इत पुरुष का बिरेग्य । " रा॰ रा॰ रार वे शादा में हम वह राव है है हि बर रचना लिये की बर्ज़ड़ में बन्त देरे बारी बीर रेजन को एलची प्रदानकरने नार्ग है। "

मानुद्द सारिन्यु-विद्योग्नास्ता के सामनेव स्थान के उर्दां के इस्तिय प्राप्तान प्रकृतन सुक्त के प्रणात की मान्य-मान्य पर उपने प्रणात कार्त कर की मान्य की दिलाइ सहज सामन्य प्रकान के बात के दिलाइ के स्वीवार दिसा कार्त कार पुत्र सामनात्री दिसाई कार्त करा के स्थान साम करत कार पुत्र सामनात्री दिसाई कार्त कार्य करत कार पुत्र सामनात्री करता मान्य के सामान्य कुल है जिल्हा ने नेता करता मान्य के सामान्य की सुम्मी देशी करता मान्य करता ने स्थान की, बार दुना ने बानों संनवस्त से कोस पुष्रा भी विद्या । विश्व इस बांग का सम्मानकी ने साता नहीं विद्या है जिए से मान का निर्माण के लिए सावाद बातुत विद्या । पूर्व-मारोन्द दुन्ध भारोनुः दुन्ध बोर शासी दंगमं कर दनने कुन का नामाणि सावाद स्वात कि पूर्व भारोनुः का नामाणि स्वात विद्या सामाण्य है हि पूर्व भारोनु अस्त काराव सामाण्य है है होता है। बार इन को हासी भारोनु के हो होता है। बार इन को दूरायी माने वृत्य दुर्ग-मारोनु दुन्ध है। बार इन कुन के बार भारोनु के दुर्ग-मारोनु दुन्ध है। बार इन कुन के बार भारोनु के दुर्ग-मारोनु दुन्ध है। बार इन कुन के बार भारोनु हुन्ध काराव को वृत्य दुन्ध वृत्य है। बार इन के बार भारोनु हुन्ध वाराव को वृत्य दुन्ध वृत्य है।

कां रामधरण प्रशेष का विधे लगे रिमा के प्रथम धीर विशाल का धीरीनाथ प्रशीपत हो चुना है। रागते शिथाल का है विशास सामायात के एक्फोड़ाओं को बी लगेर रिमा गाम है। या बीच एक रोज गामवाती है।

क्या-वार्तिया । क्याँचि द्रामाणां मुद्दे में एवं दिए कर्या ने प्रेमणां प्राथमित से प्राथमित क्या-वार्तिया कर्या क्या-वार्तिया क

e Might er fan glande ge

५ हो इस के प्रस्तृत के इंबर कड़ीता जन विश्वत कर दिए

रते वाती परम्परा में भिन्न जीविन धौर महिय प्रतिमा द्वारा प्रशीत प्रत्यो पर मनीवैज्ञानिक प्रभाव भी मूक्त औव करने वानी एक विशिष्ट घीसिम यी भीर इसने एक मई बाध्ययन दिशा या प्रवर्तन विषा। डा॰ लक्ष्मीसागर वाच्गोंब के धन्दों मे 'हिदी प्रातीवको सचा विद्वानी ने हिन्दी उपन्याम में फीमचक दाह्य जीवन की मीमांमा तो की मी, नितृप्तर्गन का स्वरूप दर्शन धनी तक मञ्जूरा है पड़ा बा। इन्तर प्रबंध में हा॰ देवराज उपाध्याय ने की कार में प्रदेश करने का सफल एवं साधना-र्णिभान दिया है।" 'कबा के सत्व' भी एक भार में इसी प्रन्त की पूरक पूरतक है, जिसमें शोगीय उपन्यामां के मूतन प्रयोगी, चेतनाप्रवाही घरा, मनोदैज्ञानिक उपन्यामी की विशेषतामी भौर हिंदी हे प्रदानतम प्रमिद्ध उपन्यासी का प्रध्ययन निगम्बाहै। 'विचारों के प्रवाह' में भी कुछ ष्पान गया-साहित्य से सम्बन्धित है। 'साहित्य पीर माहित्यकार' उनकी नवीनतम हति है, जिस १रमाने वर्ता होनी। ऐतिहासिक उपन्यास पर ^{एते (ह} बहुत महत्वपूर्ण प्रध्याय है, जिसमे िराम भीर उपन्यास की परम्पर-निर्भरता का ^{क्यान} मर्देशानए घराततो पर किया गया है। रिण केन की मूर्मिकामी का 'उपन्यास-कला' के ^{राम के} उन्होंने पतुवाद किया है, जी ग्रेस में भेजे ^{रोते} में देवार है। डा॰ उपाध्याय के ब्रानीयक टेरे शिद मुबमें बड़ा प्रभियोग यह लगाते हैं कि ^{देते} ने ने वर्ग जो मनुष्य के सभी प्रयत्नों ग्रीर ^{रण्यां} रा मनित्र सात्रा है, प्रस्तीकृत कर मनी-वित्रों ही साध्य मात निया है। 'दर मसन र शाधाय ने माधुनिक मनोविज्ञान के साहित्य ^{१९ क्षेत्र}स्थान्य विस्तेत्रम् का कार्य मागे माने ी ^{क्षील}में पर छोड़ दिया है, उनका प्रयत्न हरू हो है कि वे यह बतावें कि विस सीमा तक

मनोदेशानिक प्रवृतियों से प्रापृतिक बया-माहित्य प्राण्ठानत है, इसमें धरिक का दारा वे नहीं करते। वे तो पगडण्डी बनाने चाले हैं, बाकी बाम पाने बाले लोगों के लिए हैं। फिर मी यह निकित हैं हि मनोबेशानिक धनिवाद कुन पर हांबी हैं।

सिद्धान्त ग्रीर समीक्षा'—हिन्दी प्रातंत्रना की विविध प्रवृत्तियों के प्रतिनिधि समीक्षक हमारे यहाँ बहुत कम हैं। यह बात एक तरह में भक्ती भी है और बुरीभी। प्रव्यी इमलिए कि मर हमारे पक्षधर नहीं होने का प्रमाण है मौर बुरी इसलिए कि यह मध्ययन की उन दिशाणों में हमारी ग्रक्षमता का प्रतीक भी हो सक्ती है। पर यहां ग्रक्षमता की बात नहीं है, ऐवे समीक्षक वम हैं जी हैं वे बहुत समर्थ भीर प्रभारशानी हैं। प्रगति-बीन मानोबना के हड-पुरंप डा. रागेय राघा हमारे बीच मे हैं। इस प्रयम घेरी के सप्ता-साहित्यवार की भावयित्री प्रतिभा भी प्रथम थें गी को है, जिसका निदर्शन 'प्रयतिशीत साहिय के मानदण्ड', 'समीक्षा मौर मादर्ग', 'यदार्व मौर युग', 'वाय्य-वना मोर शास्त्र' मारि इतियो करती हैं। प्रगतिगीवना ही डा॰ रागेर के अनुवार साहित्य की भ्रेष्टता की कमीडी है, "प्रमुख्यात

गहित्य ही महामारी ज्यापारी शीररवाती गामा है, जिसमें जीवन का क्या हो। एक्टे कमन मीटर्च का मापार होता है।" बाक संगेद समय गाहिया की कार्यक्रमणा के हामी है, माहित्य पर पार्री का मांकुम उन्हें में जुर नहीं । क्रिक समाब-राम्बीयता की जराने गरीव स्थित की है। पर दुवर्गाराम पर दवसा हथ्यिकोग भी कम र्गरीर्मी नरी है। ये दाग्यीशम को उमीतिए सगर देते हैं कि मूत्रणी ने मुस्तिय नामान्यताह का रिराय किया, प्रणाता वह प्रतिक्रियासारी वे भीर शामनी भारती की पुरुष्यांता की कामग करो दे। के रेगा करते गमय प्रमाधनतिशेष का नेबर्द्राप्ट कर देत हैं, को सभी भवतन्त्रिया की रतरायी में बमादेश है बीट हिट बढ़ीट का वेदन प्रशिवासना तो तुम्मी में बद्ध वादि नहीं बहा या क्ला कि बड़ीत में बाहराबाद का रिराव दिया है बा दुरुध को श्री कागत के बा नी बाग का नवा हि बढीर को ब्रोश कान्य के इसकामार पर प्रश्वा ब्राविकार बर्दिक है। बरन कार के प्रावामा पर व्यवहर की बान है मो बिहारी प्रणात बढ़ कवि बान । मुन्ती grid errie bitet & utem feinite क्रार्टिनोत्तर मार्टेड ही हैं। इत्या कारण कामह द्वितान ब प्रमात परित्र है। एस्पी बुनिश की राज्य रीनाम झार अपरूप आचार हैना है। प्राचीन क्रमानामक का की प्रश्निक संदेश कराइन tembek ming er gu kengraf kir मारत कि मार बदावी होता है। एवर्ड मालाना Efr art erra a friet 4 seferørt हैं। दिस पुन के देख बारत में दोर बाद बा राज हारा है कच पूर्व के एवं ने अंबल बाह a war a wenge gir etekilene र भट्टे प्रस्ति को साल को साल का साहित

रिवारत है, पर अक्षिपादी नहीं, मार्थ पीर एंतिया के कपन उनके लिए प्रांत घीर मानिष सही है। भी इताबाद जोती के शन्दों में मंगे-वैज्ञानिह बाबोबना के प्रतीक-तृत्य बाक प्राप्त्यान है। बार जगानाय के बार्थ का प्राप्त करा-माहित्य के बनार्वत हो बहा है। बारी शिक्षी रिक्ते की अवस्थित मीर वार्तियकार का मनतान ह्या है । मरोतिनात का बादर पूर्वत बता ह्या है। इस इति में शार जालार ने सार्थ के सामाय में ब्रीक मीतिक परत प्रधार है, बिन गरको चर्च गर्म सध्यत महीति ने मारी है कि सारित्य से हम बृति की नरी इक्ते। वृति दोयार्ग हो सबनी है, बता शहन दिवारी में हम मालमात हो नाते हैं। होतार की हैंसी है दिश्वीत दक्षेत्र करकारित का मोती है. बलेग की सगह प्रतिशास सतार कार्या 41771

राज्योतिक सावादिक परिविधाना के ना पर सा सारित्य का कार्याय की सारित्य के सा पर सा इव वाह्य परिविधानी का मानवाद की सा बारित्य प्रस्ता का मानवाद की सा सारित्य का कार्याय दिस्मी करता को नहीं कार्याय की तित्रहार कार्याय की प्रतिकृत रूपात स्थाय के राज्याय कार्याय की प्रतिकृत रूपात स्थाय के मानवाद कार्याय का है कार नहीं की कार्याय के साम्याय का मानवाद कार्याय कार्याय कार्याय का मानवाद कार्याय की तिवास कार्याय कार्याय कार्याय कार्याय की तिवास कार्याय कार्याय कार्याय कार्याय की वाल्य कार्याय कार्याय कार्याय कार्याय कार्याय की वाल्य कार्याय कार्याय कार्याय कार्याय कार्याय की वाल्य कार्याय कार्याय कार्याय कार्याय कार्याय ग है, यद्यपि उसके बहुत में मंद्रा प्रतिष्ठित स्पतिरामो में निवल चुकेहैं। डा० तिबारी महिलाकी मास्ताबता वा मून 'समास्त्रमात' ो माना है। ग्रंथ के प्रकासनान्तर ही उनकी र स्थापना मे पूरी तरह परिचित होना सम्भव । हा॰ तिवारी बहुत विद्वान हैं, पर उनती ाग बहुत जटिन, दुर्वोध भीर भक्षम है। डा० ^{न्दैरानार} सहर का 'विवेचन' दुष्प्राप्य है । मानोबना के पद पर' उल्लेश्य कृति है। डा० लामिन्ह परुग की भागरा में 'सिद्धान्त भौर ^{भीश} नाम में महत्वपूर्ण पुस्तक **ब**भी-बभी ^{नाहित} हुई है। थी नन्द चनुर्वेदी एक मध्ययन-ी माहित्यकार है, उनकी पुस्तकें भी मुद्रशान्तर्गत । विभिन्न मेमिनारो भौर उपनिषदो मे उनके भागानो व्यक्तित्व का परिचय मिला है, इतित्व पी जाद सभी बाकी है।

तं, मुत्रस्य पर ग्रीवनिबन्ध ग्रभी प्रकाशित नहीं

गेष्पुर में दो नयी पीटी के प्रतिभाशीन भीर मनम्बी समोक्षको की कृतियो का प्रकाशन भिहै। थी विजयदान देवा की 'साहित्य भीर ^{हनाव'} श्रो कोमल कोठारी की साहित्य संगीत भी का सर्वत्र भादर हुमा है। श्री देवा श सहित्य-मेता का भादर्श बहुत ऊंचाहै, वे माने मगढ़ को पेट की खुराक किसी भी की मत ^{ए ह}ैं। बनाना चाहने। उन पर बॉडवैन का मा है, पर भपने स्वतंत्र विचार भी है। भे कोतन कोठारी ने हजारीप्रमादजी पर प्या निवा है। हिन्दी की माज की प्रशस्तिपरक रा इन्तरतामी पद्धति में मुक्त होकर। पर अनवी िरोमद जिल्ला न केवल भान्त हैं, मणित िन्_{री} भी हैं। 'बागुमट्ट की धात्मकया' रा नेर गरें गर्द एक बात मुक्ते बडी पसन्द र्भृहिहम यह तो गर्व से कहते हैं कि हमारे उपान्यानकारों पर अभुक-अपुक विदेशी कनाकारों का प्रभाव है पर यह विन्ता नहीं करते कि बानिसाम, रण्डों, बाएउ आदि का भी पुख प्रभाव हो। दोनों लेक्हों ने तोर-भीतों का मन्त्रा प्रध्यसन किया है। पर दनका राजण्यानी प्रम माम्प्रदायिक्ता की मीमा तक पहुँचा हुमा है। रावत सार-वत का भी इस मन्दर्भ में नाम निया जा सकता है।

हिन्दों के शोध-प्रवंधों का स्तर आज इस करर गिर गया है कि पी० एक डी० में विज्ञा और अध्ययन का दूर का भी नगाव नहीं रहन गया है। इसी मिनवा है वेजन संकत, वर्गीकरण और उद्धरण या वेदों में तेकर आज तक दिमी विजय पर जो तिला गया उसकी परिगणना। तो भी, इस कारण सभी प्रथिनिवयों के प्रति जेशा ठीक नहीं है। राजन्यान के शोधनतींथों ने यहां या बाहर

के विस्वविद्यालयों से मनेक विषयों पर उपाधि ली है, सबका उल्लेख यहासम्भव नही है, बुख नाम गिनाना ही पर्याप्त होगा, डा॰ राजेन्द्र त्रोगी, डा० जगदीश जोशी, डा० प्रस्वासकर नागर, डा॰ यतीन्द्र, डा॰ शिवपुरी, डा॰ माधुरी, डा॰ हरीयंकर शर्मा हरीश, डा॰ प्रभुनारायण महूरय, डा० गायत्री, डा० भवर भीर मूत्री लम्बी है। मध्यापकीय मानोचना ग्रंबा की नक्स बहुत है। इस दिशा में रामनान सावन का नाम उल्लेख है। प्राध्यापनों के प्रतिस्तिन थी फूनकर पाण्डे की भी परिवयात्मक समीक्षा-कृतिया है। इस प्रकार की धानोबना एक सीमा से प्राप्त होने पर स्वतंत्र भीर स्वस्य-समीक्षा की प्रपति के लिए घातक बन जाती है। खात्रोगबोनी बाती-चना वी प्रधिकता हमारी विन्तन प्रश्लमता का की भी परिवादक है। साधारण या महत्वपूर्ण

प्रवर्शनिकामें में दिन्हें सेव नियन हो है उनमें गार , नाइमीं , नीर , मानार , बीपा, नाइमें हो , सबसे, नीर पड़ोंगें, पारीस मारि है नाम पा नम्य पार मा हो है, बहुत में नाम गारा मार्थ हुई ता है। मेंद्री वर भी हमा-गार किया है जाने हैं। भी नावेदान दिगारी, भी दिग्तान मानापत नामी, शिल्हान नाइमें मारि ही भी एन्टें हैं। यह नाद मिनाहर हमा भी देशी हा नाइमें हैं। यह नाद मिनाहर हमा

धार्यनर नवि घीर राध्य -रगाला में रा राज्याच कार्य क्ष्मुच क्षम हुया है । 'कामान्ये दर हार कराहिए हा इस दर्भत स्थापित है। के रूप्तार अपना के विद्यात है और सारिय के रपटा साराहर जाता । र विकास गा धारा कर हा सामग्रेप हैं से स्वाप्तिया स्या है (१४) रह स्थाप्त के स्था काराया स्थाप हावर श्राच्या रहा की हाय है, सिन्दे पात्र मार्थे का क्षांना दोनबुद्ध रच है। बाक मार्व पर एन्ट्र स्टाप्टरणाहरू सारा एक के कहे हैं कुछा हो घेरेक mign minten miligt mit bat fremit Jege fem eren garmu fantet. tit fe tie ban eines in and laming The contract of the same decisions to will no improved a well and excess ence to come erect es to see erica i destrata della secono e in conse A CONSTRUCTOR OF A TRACE \$ 561 - 1 E - 14 "E ++ " + - 18 E E Annamatical terms e coe aces o engineers

पर कोई मण्डामूर्त कर तह प्रशासिकी मापाई है।

श्रभाव :--राजायात ने संयोगा-संगीत्व हे सही मुख्यत्त के लिए मा जनरी है कि तम मार्ग समारी को पैर री गरीतार का रें। या से द्वा है कि बाच रिसी बालों की गुरूत में हमाम रूप बीचा है रदी चार नामों का दग का ने में नी होता है ? हमारे बच लिंद बच्चत है का मानारातीय वर्रात्वराती बाग्रेका-का का, बंदलारे स्वरण का कोण्ड है। पूर्णांत गोरो का का कारे हें पंता हम इस सर है है है। इर इप शहर कारों के भी कर लगी को से में ते ते ते ते ते ते ते ती रबता दिसंदें, जिसे विशेष हव भार गांग है रकाया या भागाभाषा का मार्गापाली सह लहर कर सह हो सह ३ १९ वर्ग है। वर्गात पर दिकार करता एकृतिक सर्वाहर्ति । का तारकारक हो सरका है। वादि हर देव देश सकार (बारारामा को त्य द्वाधारत द्वारी व क्या सः सर्गात्य कर्यार्ग कत्यातिहरी स्थितः काम्युद्धः त पर्व कत दर्भ दा के प्रियंत्रम हुए सबी सहे तरि

्राप्तान नवा व द्रा के नावत अवदे करा वर्गान कार्यु प्रकार कर के अवदेश करवार की द्रारात वर्गाय त्रावत की अर्था अर्था अर्था अर्था वर्गाय अर्थाय की विकार के अर्थाय कर अर्थाय वर्गाय अर्थाय कार्यों के वर्गाय करवार की वर्गाय कार्यु के बाद करवार अर्थाय की वर्गाय की वर्गाय की वर्गाय किसा की बाद की है। वर्गाय करवार की वर्गाय किसा की बाद की है। वर्गाय की वर्णाय की वर्गाय की वर्गाय की वर्णाय की वर्गाय की वर्णाय की

है। नेवडों में चन्दा नेकर सहकारी बाधार पर पर निहातने की प्रया इसर हिन्दी में लूब पतप वही रै, पर व्यमें पुरबन्दी, माम्प्रदायिकता और मस्ती मानिमातवा बुख बड़े नामों की वजह में बड़ा श्वार बाम बात है । यदि यह कार्य ईमानदारी मे में में बहुत स्तुत्व है, पर इस व्यावसायिक युग मे प्तातियों के पत्रों की प्रतिस्पर्धी से इतका संधिक ^{ममर तक चनना संभव नहीं। 'लहर' उल्लेखनीय} ^{प्रिका} है, पर राजस्यानी प्रतिमा के विकास की भेर पान देना उनका नदय मही है। शाजस्वानी रीमा का पल्यबन सभी संभव है जबकि ऐसे पत्री ग प्रमापत हो, जिनमे प्रादेशिकता भीर मलाई-िल्लाका मामजस्य किया जाए। पत्र प्रादेशिक ि पर्व में हो कि पाने प्रदेश के माहित्यकारी की रो भृत स्रात हैं, भौर धलारेंगीय इस भर्ष मे ि तमें गम मात्रा में देशालारों का धें छ साहित्य भी भात पाते । इसी से गति धीर भंधम, चेतना ^१र एत्तार, प्रगति भौर संस्कृति का वह समन्वय हें भाग है जो सम्पूर्ण जीवन है।" श्री मंगल ^{मनंता के प्रदल}ों में मजमेर में निकता 'न्याय' शितानी घर, १६६०) इस दिया में पहला मगहनीय प्रवास है।

िय निम बर्गों में रजकर राजस्थान के ममीक्षा
में रह में में मज्जन निमा गया है, वह मधिक
दे हों महारा देने की मुदिया की हिट्ट में । ऐमा
केश में है हमा महिया के मध्येता की काव्य
दे हमें नहीं मा नाहिया के मध्येता की काव्य
दे हमें नहीं मा नाहिया के सम्मित्त कहाती का
दे हमें नहीं मा नाहिया निमान के सम्मित्त
कर महें । माम हमाई हमनी ही है कि मध्य
दे हमें मोता निमा निमाय कर की मोत
कर हमें मा मा निमाय निमाय के सम्मित्त
हमा की सिमेद गिन मिन में ने में के कारण
हमा में नाहीं है, उम दिशा में रिमोदम्बत के

माने उमकी देव विभिष्ट हो भी सकती है। किना बोई समीक्षक भनेक दिसाणों में समान रूप से भी भविकार रण सकता है। एक ही ग्रंथ में साहित्य के विविध रूपों का विभिन्न इंध्डियों से भी द्रध्ययन होता है। इत पक्तियों के लेखक का प्रयत्न भिधक में भिधक सूचना के सग्रह का है। यसपि कोरा मुक्ता धेप्रह निर्द्यक है, पर सार्यक की छाट क निए सार्थक~निरर्थक जैमी भी हो, सामग्रीका सचय जरूरी है। इस संचय में उच्चरतर के कार्य को प्रदेग करना ग्रीर महत्व देना विद्वानो का कार्य है। मेरा प्रयास यदि उनके सामने कुछ विचारस्रीय मामग्री रव सके तो यही मेरी सकनता है। इस लेख में जिन भारोचकों की चर्चा ग्राई है, उनके सभावात्मक पक्ष (निगेटिव साइड) पर मैंने मौन ही धारण करना उचित समका है। मेरी हप्टि मे मनी तो राजन्यान के साहित्यकारों के सामने मही स्थिति है कि वे धपने को महसूस करें, प्रसर्टन करें, मारमानोयन की चर्वाका प्रथमर माए इस योग्य बनें। या मैंने हमारे प्रभादी की घोर संवेत घरत्य किया है, उन इतियो पर एक-दो तहते में प्रविक का व्यय नहीं हुमा है, जिनका महत्व साधाररा है। भाज नये ममीक्षकों की प्राचीन साहित्य के प्रति भवजा और उदामीनना की हरिट एवं बहुत बहै मतरे के बिन्दु पर पहुंच गई है। ग्रामी परम्परा मी देल बिना माने बढाना रूमी भी समय नहीं है, प्राचीन कृतियाँ हमारे प्रतुभव को विशाव करती है जीवन के बीध को बढ़ानों है और करान्यत संस्कारों का संवर्धन करती है। बनः मैंने प्राचीन साहित्य पर हुए कार्य का साहर में उच्चेव किया है , इसके मर्दया दिपरीत धाराणा दुख प्राक्षेत्रा की है, जो हिन्दी माहित्य को छापाराद के माप समाम

प्रवेश के भारमने पद से उद्धृत

कर देते हैं। मैंने समीरत ने जमे पायामां घीर नहीं प्रीप्ताप्त का कारण किया है। कियु दी-कार मेगों ने पायात पर ही जमोजीत कर देना गक्त कार होगी कार्यीत वार्याहरू मुख्यात ने नित्तुप्त प्रणात वोरित है।

समीक्ष के प्रति तक भ्रामक हरिएकोगा गिरारे बार् धरों से लियी सालिए में ने ताता जा रहा है। पुरुषे रचापुरस्य कारा को तहास सहस्ये की बर्गन बतारी मानिवरको में भी घर कर गई है। बाप्तात की बारायर का रह ने पील के पीले रेतना बन्धा की प्रथम निष्ट भूत की ही बात है। बुद्ध बारोबरों की महीर्त्तिन पर बाबोरा प्रवित्त है. यह बा राज्या व हिन्ताएर यह की बारी हुनि में जब धीर मंदिया के स्वयं धीर धाली हर्वे रणाया की ब्रापुण बारने के प्राप्तात के ब्रान्टिंग कांगु सर्ग है। शामित का रिकाम अर्थ रत का कर देना है और करोत्त का विकास क्यांत्य को करिश क्याधान दी शर्ति एकारा का चारतु या कालक में प्रसान मेरि जिल्लीरे करा करिये र ज्ञा द्विर एउन्हें सर्जि करी कारूकी क्योपन बीव आहिला होते की क्षाप्तरहराहर अनेगानक प्रतिशास रिकास से रेना क्षेत्ररा है है। मात्राचान का अद्येशा मारिता बरून बहुए है। यह हाथ ब्राप्त है। हैर दर्श बहुर्योग रू प्रभवत कुर्योचन कड्ड प्रमाप जनना । सनदर्शाची प्रशिद्ध Managhan dinda & the May Some Style

उसड़े विखे हटे पते अवन्त भाग, कार

उत्तरे विर्वे दुरै पामनो पर्ग स्टर रहे हैं हम **27777: 1** माम्याम् हिल् माहे है मार्ग में ही भरत कर. नदी सारे परते हैं दीवारों में दबना कर ' देश में दरेजन बीलरे है विकार है है भाग कोलो 🗸 🛭 रवरपार है, बगार है धना है शोहां में ghaphlack? urgerit. erte- rit 1 fales 2, 10 cat 2 property to be and we भूर्र हुई हुई हुई राज्य में बार्ड है

निवन्धकार

प्रोः नरेन्द्र भानावन् राम.रा., ना. राम, रिकर्च स्कॉलर हिन्दी-विभाग मवर्नमेंट कालेख, बुंदी (राज.)

(शिवात की रत्यामां माठी में गूर बोर मंत्र क का ततकार धोर मंत्रकी गमान धाने को है। यो की कमा-कमा मूमि बिर मगानहुकों की सिंधे के माव पूर्वनी हैतों माहित्य, संगीत धोर निर्म के साव्यक्ष में बी है। राज्यमान-किंद के बरा पत्र के साव्यक में बीरों में मर-किंद के किए। मते हैं वहाँ गम्म के माध्यम में काद का, किल, पोडी, जुलावनी, क्यावनी, भंजा बादि के का में जनके गीरण की रखा के में। तेर्ली सामाकी में राज्यमान-गण की काण व्यक्तिकृत कर से पत्र तक बनी धा पढ़ी देशों हमा व्यक्ति विषया गण्य की विभा किंदी की काम की विषया गण्य की विभा किंदी की काम किंदी विषया गण्य की विभा किंदी की काम की काम की विभा

पहुनानार में राजस्थान का साहित्यकार

भग देव में यागे बढ़ा है। जी में प्राचा तो

का बजी प्रिक्तिका माध्यम हिन्दी बनाया

रेशे में बाधा तो राजस्वागी। इस हर्षि के

से नार के निकपकार मिनते हैं— (१)

अल्डो क्या में दिनने बाने भीर (२) हिन्दी में

किरों।

िल्लन दर्नी रस्यः-

गाम्या शा प्रदुष्ट निकासकार वर्तमार्ग-राष्ट्रीते देवनित एवं बाँचत सभी विषयो गाम्या करता रहा है। मतः विषय-विधि-के हे हिंद के हम राजस्थान के समस्त रिकार्त हो जिस वर्गों में विभाजित कर

- (१) द्वेषगात्मक निवन्ध ।
 - (२) द्वारोचनात्मक निदन्धः।
 - (३) मात्रात्मक निवन्धः।
 - (४) हाम्य-व्यंग्यात्मक निबन्ध ।
 - (५) जीवनी-सम्बन्धी सस्मर्गात्मक निबन्ध ।
 - (६) यात्रा पादि स्पुट विषय ।
- भव हम प्रत्येक वर्गका क्रमता. वर्शन करेंगे ह
- (१) गवेपागारमक निवस्य :
 राजस्वान में कुण भीर परिमार्ग की दृष्टि में
 निजयकारों का यही सबने मगत को है। राजस्थान को भारित्य-रस्पार शनादियों से बदी का
 रही है। केवड़ों महात क्या सम्मारित होकर प्रकाम
 में भावे हैं। हजारों हम्तनितित या पत्र भी
 भवारों में बची पढ़े हमारा रहे हैं भीर नार्याः
 ग्राव्य दीमरों के उपजीव्य वन कुके हैं। भार नार्यित
 स्वकारों का ध्यान दस भीर नाय भीर उन्होंने
 स्पानी सोय का नवलीन निकसों के क्य में सारित्यजनात के सामने रखा। इन निजयों को हम निज्य

उत्तर्गी में बोट सनते हैं—

१. लोक-माहित्य सम्बन्धी निकवः-राजस्वादी
लोक-साहित्य विवान और निक्दः है।
उसमें क्या, गीत, राज सादि वा स्वतन अग्राद है। भी समरक्षन नाहरा, नरोत्तदान हमले, और सुर्वकरण वारिक ने राजस्वानी-मीनो पर स्वती निकय निले हैं। बार्रेयाना महत्र ने 'राजस्वानी-कहावतां' और 'नोर-नवामी में पूर मीनगर, नरीहर समी ने 'नीर-करायी में यात्रा, नार सार', रोनातात घोमा घीर गारीर मापूर 'कमत' ने 'राजन्तान की जीविता बर्किमिनी, रावत गारम्बत घोर प्रपुराम्याः मरवार ने 'राज्यानी सौरिक मैपारशत', सौन्द भागार ने 'राजन्याती वेतिनाम्म', दीद्यास क्षमी भीर महेन्द्र भारतात ने 'सात्राचारी दत-गोगाः। पर मध्ये मध्यानुत्रं निरूप ति रे । विश्वति चीवर में सीपमुच से सुन्दर विवय बन्नाया वर प्रकार शता है। पुरत्तेनम नार मगरिया में पामपानी नारियक्ता घोट शस्त्री पर निवाध रिवे हैं हो माराज्यां हर भारी ने 'शमपन' ने शिरेपांको की मुदिकायों के द्वारा राज्यसभी लागित की बाजा का की दर्व नियाग है। ब्राप्टबंद्र बार्य बोर बंद्रशार बारण ने 'नजना^ररण' को साहत हिया है ता बहरीयग्रह रात्रीया कीत सुरुरियर स्थाप नाप बार्यका के क्षण कर है। कारत्यात जी-'बाबानात धारते, 'ex-aterit, 'erti', 'err-yferi', 'tterti' रा'र राज जरेरराष्ट्री द्वारा दर्जाग्यन्दरार'का **** ******** ** *** *** *** * * * *

is a first with way provide form when the man entering it withing allowing the man entering it will be a set of the man and th

(२) धानीननात्मन निबन्धः -

स्म कोर्ट के जियाबार प्रविकार कर्ष ने स्थानक रहे हैं। जो कभी कायाक विद्यार्थ का कार्रेष करना प्रमान है तो कभी जा जियागी के स्मान्य पर कायान सदीना का विवेका। कभी-कभी परीजीयोगी विकार निकार जियावियो का कार्य नाम भी काराय प्रकार है। इस कीर्य में का कर्य ने के तीन विभाग किरो सा नाम के के

१. मारिया-शिक्षाच सम्बची विकास-

यम करित के विस्था नारण बारों को परिषेत्र ना मार्ग करते हैं। सामधार में ऐसे विश्वपदार स्ट्रा नाम हुए हैं। सो नुष्य पत्त विश्वपद में दिना गया है जर मारिया मार्थीता के सामार्थित हैं। मोस गांव भून कर विश्वपद्म मोर्ग प्रवास पर्देश कर पिति नामें मोर्ग परिकार मार्थित हैं। मार्ग पर्देश कर पिति नामें मोर्ग परिकार मार्ग कर मार्ग हैं हारत हैं। साथ विश्वपद्म मार्ग के नाम विश्वपद्म मार्ग है कर पर विश्वपद्म मार्ग हैं कर मार्ग विश्वपद्म मार्ग हैं कर मार्ग विश्वपद्म मार्ग हैं हारत प्राप्तापत्र मार्ग मार्ग मार्ग मार्ग कर मार्ग विश्वपद्म मार्ग हैं हो मार्ग विश्वपद्म मार्ग हैं हो मार्ग विश्वपद्म मार्ग हैं हो मार्ग हैं हो मार्ग हैं हो मार्ग हैं हैं।

२ - अर्थन च-स है। तम्म स्वरंश के ने भ्रमण च

्षा ६। भवत् वा 'ममोता' के जन्नीरत लगों को मोलाहन दिया पर धारिकन्तावर्धा हेल्ला पोंद तोह दिया । माहित्यक प्रतिकार्धा वेषद्रात चारण, मधुरा प्रमाद ध्ययात , कुण निरत्तावर, नरेफ मातावत, जादीश 'बनक', स्पिह 'नीरम,' नवन विसोद, दा० महेन्द्र धार्दि विस्थाप्रसातित होने रहते हैं।

रे. परीसीपयोगी निबन्धः---

प्लेगामक वर्ग के निकायकारों की भाषा १११-गर होनी है भीर उससे पार-टिप्पिएयों की १११-गर होनी है भीर उससे पार-टिप्पिएयों की १८ के भीर्मित निकाय का सारा कलेकर मूल-पाठ की निप्पादन है। स्वारकर नाहरा भीर प्राप्त के स्वारकार नाहरा भीर है। पारितासक वर्ग के निकायकारों से भाषा ११९९८ विकेश की पारिस स्वाधिक की स्वार्थिक दिन्म है। परीक्षोययोगी निकायों है स्वार्थिक का दिन्म परिवास मान

(३) मानारमक निबन्ध लिखने वाला वर्ग-र निक्षों के मलगंत हृदय की प्रधानता क हे कारण हम गयकाव्य को भी सम्मिनित करते। इस काशः का तकस्यकार म अनावतराव मुख्य है। दर्शने नगभग एक हजार पणकांच्या निये है जो दिभिन्न साहित्यंक-पतिकायों में प्रमाशित हुए हैं। रामकृष्या नित्तीमुल ने दो दर्जन पाककाय्य नियकर इस परम्पराको पाने बदाया। क्लियनरित्नी के 'याक्यम', 'युक्ताकन', 'पुष्टिप्या के कुल', विष्णु प्रस्वात्त्व जोगी का 'सीधी रेकाएँ' यहुन्तना रेणु कर्ष गायकाय्य निखे हैं।

(४) हास्य-व्यंग्यात्मक निबन्धं

हिन्दी-साहित्य में हास्य सन्वयों रचनामों की बढ़ी कभी है। यह में तो किर मी हास्य-त्य की कितवारों कदि-सामेतनों में बाजों मारे के निवें तिक्षों जाती पूरी है पर गण में ऐसे प्रयोग बहुत कम हुए हैं। अन्वर के चित्रुक्त चतुर्वेरी में ऐसे निक्यों में अधिक सकता प्राप्त की है। 'बड़े भैया' उनका ऐसा ही निक्या है। प्रत्य निक्यकारों में राष्ट्रावीत, विजय दिनींथ, मंगन सस्मेना मार्टि के नाम निवें जा सकते हैं।

(५) जीवनी सहबन्धी संस्मरणास्मक निवच्य हिन्दी-माहित्य में महान नियों को जीवनी के बारे से मज भी जामणिताल कर दाता नीर्र नहीं कर सरता। ऐसी स्थिति से रम पोर दिगेंगे प्रस्तरांति होता धारप्यक है। जीवरात पार्थिता ने 'लनकार' में दिन्यसिंहती 'पब्लि' साबन्धी निवच्य क्रस्तित करावे हैं। यान सार्यन्त पार्थ हांग हरेगा के 'तराज' से ना गर्थेक में प्रस्त तान नेट्र महित्स पार्थित पार्थित पार्थित पार्थित सामर', 'पब्लिश मोहर्मिस प्रदेश ने स्थानित स्थानी प्रदेश के स्थानित स्थित स्थानित स्थित स्थानित स् C < 3 - 11

धनित वेदना है, मुभे सौर यो तुम, मुनोदरं ना भाग तुम को नहीं है।

जनमं में मरग् में मुझे गूब परिचय, हुइर की नई घीर कोई गान दी।

मुने गई गाँव उमानी गराते,

यवाची नहीं घोर बोई इतन दो।।

बहुर माप हुउ यहूत मी पुरा है. मही एक या जो कि सब तक पता है।

इने होड में नुम, इने होनना मत्र, यशे हिम विषय है, जो घर नर मंत्रा है।।

र्णान्त रापना है. सुने सीर दो सुन,

दुसदराय ना द्वात तुमरी मही है।।

बमादीय जो था. उमे बना बुम्ममा. बनानी मधी प्रतियों को नियत्तरह

धमर ज्योति मे हैं, कुमारी कमारी।

न देशे स्थित हा हुद्य भर गया है,

नवन बाह का अवान तुमको नहीं है।

र्था बैनान 'सिरोदी'

हमा देश को मोद डापातों क्या है?

उड़ाही मही दल गोरे स विषी.

रियो सीर को बोट घारा बी गाँटे

सबच इक्ति बट जी जसा कर सुधने.

प्रमिद्ध में भिद्रासी भिदासी ।

साहित्यकार ??

श्री रामनिवास 'शाह'

सिरार ममाव का मजनक है। मनाव के सिरार ममाव का मिलाइनार के माद-नारोगर थे जो राज को की मादिवार के माद-नारोगर थे जो राज को की की है वह उन्हें बुद्धि के हुनों में मंदान वार, इस के यह पर प्रक्रित कर का है। वह यूग के मानव को बराने मार में प्रारा-ग्रार चेना, सन्वेदना भीर करनेना वे सहयोग है धींच, तीरण मनेतिन भीर सावर्धक तथा कर कर के तहा हुमा क्यान, भीरत भीर सीधिन जनका के तहा हुमा क्यान, भीरत भीर सीधिन जनका के तहा हुमा क्यान, भीरत मीर सीधिन जनका के तहा हुमा क्यान, भीरत भीर सीधिन जनका सीधन भीर सीधन भीरण सीधन भीर सीधन भीर

की मे बहु प्रान भी उपस्थित होता है कि

का किंदिनार यही करता है, या इसमें कुछ

कि की क्या दारिक है? भे मेर बाज के युग में

कि की क्या वारिक है? भे मेर बाज के युग में

किंदितार के बनात सामान्जन में इनद प्राणी

किंदितार में बर्ज करना सनेक व्याधियों को

किंदा है कि बा जिस भी प्रमाज के मानस का

किंदिता है कि बचा जमें ममाज के मानस का

किंदिता है कि बचा जमें समाज के मानस का

किंदिता है कि बचा जमें समाज के मानस का

किंदिता के कि बच्चे को सम्माजनाय दिल्ली

किंदिता के किंदित के प्रमाज के कि वा जन

क्या को किंदी

क्या किंदित के प्रमाज के समाज को देलता

किंदित के प्रमाज की है।

किंदी के प्रमाज की है।

किंदी के प्रमाज की है।

धार श वाहित्यकार चर्चा के क्षातों से व्यक्ति र अपर धोर क्या के नाम पर सत्य की अभिव्यक्ति देश हुँदर धानार से अतिथ्यित करने का सायह भिर्मादेशा, दसके सागे कुछ नहीं। आने का अस्तिकार के नियं जहीं है, ऐसा यह कहना है,

बहुता हो है, करता नहीं । उसके जाने या परवाने में नमम उपयुक्त सभी प्रश्न उसके हतितर में परि-निश्च होने है, चाहे वहाँ व्यक्ति हो प्रवच समुराव । भेरी प्रपत्ती माज्यता है कि वह गूरम इट्टा भी है और स्वज इट्टा भी । मुस्मादनामा को एक पुत्रन के सार मंदिन करता हुआ जल को प्रपत्ते स्वज इट्टा के हच तक ने जाता है और जरही प्ररेश प्रप्णों में उसे प्रात्न ने जाता है और जरही प्ररेश प्रप्णों में उसे प्रात्न ने जाता है और जरही प्ररेश प्रप्णों में उसे प्रात्न ने जाता है और जरही प्ररेश प्रप्णों में उसे प्रात्न ने जाता है और जरही प्ररेश प्रप्णों में

साहित्यकार इसे स्वीकार नहीं करता है कि उसका कोई दायित्व है । वह इसमे विद्यता है । यह स्वाभाविक भी हैं। सुजन मे रत रहते हुये दायित्व का निर्माह करते रहने पर भी उसमें जो मागदी जाती रही है, स्मरण दिलाते रहने की जो परिपाधी चत पडी है उससे वह बीज गया है। उमे धोप्र होता है उस इपए मनोवृति पर जो निरंन्तर प्रान करने रहने पर भी यह नहीं कहती कि हमें शुजन में बुद्ध प्राप्त हुमा है। बल्कि बराबर उसमें माने मीर मान करती रहती है। घातिर साहित्यनार भी तो प्राणी है मुं भला हो जाता है इस इतम्तरा पर धोर तव बर देता है कि भेरा कोई दायित नहीं है। मही प्रति-क्रिया उसकी चर्चा से पूर्ण उभार के माथ संशिक्षण होती है, किन्तु सुबत के क्षणी में सुध्या के मानम में बैठा शिव सभी विवास की बीधे बनेप उमर भाता है धौर तब स्वतः ही माहियकार के इति व में ''मंगव'' माविराजना है। प्रज्युत्र बन से जैन सुमत मे गंप। इसीरिये साहित्यकार मभित्यकीय है। बायुनिक काल के उत्तरार्व से माहित्य जना गरियसरका प्रीपत विसेष कर्ण कारिया ा है। यर प्रति तिस्तर साता स्ताहे कि रिमानार का स्मीतनर स्रोट कृतिना एक प्रार्ट के ल्प है सा समिल ? स्मृति सीर सुबर रो सरह

त्तर क्यों में करियाकार को देवते का घारर मुत्र के पुरुषे एवं मानपूरी विवाहे। कृति की परणी, कृष्यार के स्मीतन्त् जीवत में जी क्रमा मात बर ही। जाना कृप्यानत सिद्धुक ही इ शा दीबाद होता ।

क्यों घोर केंग्रे ३ दे प्रार तकातृह इस बाता के शामने मा उर्दालन होते हैं। बरा स्टीटरसीर के वर्णनाम प्रोप्त का, बाह्यप्रिक घोष्ट्र वर्णना है नावापां मोर प्रजाश का, नवाज के साथ घोट म्पूर के मार में सारे हुए हा। स्पीरण प्रमुखीया कृति है, कर्मनाय क्रीपर में जा दशीला का क्षार सामा है और रहिया की बात और पूर्णारे परिनाम्य वरकार जी बर्गानिक प्रविद्यारि वाली है पूर्ण पूर्ण किया और प्रारोक्स्या के प्रकार I That are not also and \$ 3 th f and that er Rif ment eine etter fie fe en ure bie ernet on one er to be oriented and والمج القرابية الأهر ومنهكة والأكامة المعاملين क्ष बार्गाटन करना है। परना है। यह दूसरे बार है to all this time to the desire and to ब्रेटल्ड बर्ट्स्ट्रिस क्रिक्ट होत्र बर्ट्स male die fe taat fi f taan die fee

131 Ett & C. La de nein wir f.

end to the de profession that to the total gant gan an gant to shipte by the it lyang to any higher a name at 18 th Ad the do then whitely \$1

म् रूप है दि सापत की द्वारा सप्ट की उमार में नहीं बाने देगी। उपने बाहार को नगर हर्त होते देती । कस की मर्दद्रत महत्त्व से सुरक्त का मालिएक पीरत रम जाना है थोर तर का घरत क्षे मरी शेवता । जो सदर सदर वो क्यों से देवता तो जो बुल्हीचे वा झ्य दे देता है।

दर्शकारे कार एक कार होता है कि साज्यार भी मनुष्य है और सवान मान्तीय हमार्थि बीट ना स्मार्थ अपने मान है। मन्त है नव बमलीयों जो दि महुत्त में होने हैं, स्वायाधिक ही है कि जाने भी हो। बर्ग भेर देवर बने है कि वर मारे मारही मामाच प्रव है। सत्ता बात है। है सीर नव गावित है हि वर उपने बोरन है कृत् संस्था को सोशा को। यह यह से संस्था है हि मामाण पर प्लान बार को, प्रो वील्या है। एतना सन्त (दण्ड) कार के बर्गत के समान नाहे त्तराविक्षप्रवास्त्राप्तः है। नव वर आसी जीत दोर बाबार की बहुपूर्त करता है। अले ा । रिवरिक में समाज्ञ भी पुण्यों, इसके बल्याकल से सूर्य स्रोतन्त्र की सन्द करे, सर्व भी न्दामां हर ही है। लह क्ष्म करो बार्ग्य है जिल्हा है। कर्त कृति हैं। की कार्त कार्रित कर्त हैंगा

कर मार्ग्य का संदित कराना है। स्ति के देश लक्षर की कुल्ये की पन्ते भी सन कु साह संयुर्ग की स्तारत स्तानुत से न के ६ के हुन हैं भी तो है बर्ग मा है को देलका नेत्र क्रानाजण (बारम्पर है इ प्रत्ये है महा बारपह है। Crema & a wert minger . War er Mite. Grant सरे कुराक हो। तथा है वा बंद गय के नव है रह बार प्रा^{ति} है । अंगली प्रमुख्या वर्ण है । सं रेग्या क्षांत्रकर अवस्थित को को को को निर्माण के प्रतिहरू है क्षेत्र देवतं विकास स्थापनं स्थापनं स्थापनं स and the sample and and also a सना हूँ हि, यह युप की (माहित्यन) प्रवृत्ति ही हो तो है जिममे साहित्यन र मन्ते पायने न्वन हो ने साहित्यन र मायने न्वन हो ने साहित्यन र मायने ने वन हो ने साहित्य यह भी स्मरण रवने में बता है कि यह प्रवृत्ति प्रमुचन युवक परा बनी है, प्रवृत्ति को नहीं, मंच पर हमी सिम्प्यानि नो हो तो ने पर मायन मानना रहा है से रही हमें सामान मानना रहा है से रही हमें साहित्य का नहीं ने मायन सामान मानना रहा है से रही एके साहित्य ना नारण भी है। यह हो से सिप्य हमें बतावेगा कि स्मान परिणाम कैमा हैंग, सिन्दु है स्वावह !

र्गनान हुए बो हुए प्रमुख विद्योगनायें घोर में है श्वाप प्रस्तेन, हुएडम मोर हुप्तच्छे । जीवन में हु श्वाप प्रकारिन में प्राप्त हुपा है बेने बदनाम देनेगर है, बेर को भी हो, साहित्य भी हफ़्ते भागात है कुछ नहीं हैं। यदि यह कहे तो भीन ज्युक होगा कि चाहित्य का प्रमाण तो सिर्द्रान्त की प्रमुख होडास्वनी है।

वाहिष्यक शिरोह इस पुण में काफी "बदकाम" ऐते रा बाइव वो मनी मुख्य में नहीं है, प्रसिद्ध है। रादेखा कि प्रश्वस और आरोद की संग्रा देना रंफ कंत होगा, इत गिरोहों का प्रधान और रंग हैं जो बाहिल्य के सत्य का अंग अंग रंगे के बंदित समर्थ और सफत रहे हैं। इसी सस्य के इसी सामर्थ और सफत रहे हैं। इसी सस्य रिनेश्न है।

हर तोर पत्र, जिन पर निश्चित ही गुरूवम भी किरोहों के हेंबकरमें का मामिपस्य है, सहते भी किरोहों के हेंबकरमें का मामिपस्य है, सहते भी किरोह को किरोह से साहित्य के पत्र का माहित्य के सहय को पहचान ने में काफी भिग हो रहें हैं। इस मानदरण में वह पहचान ही नहीं पाता कि वह किसे देवता सानकर माराधन करें । विसे सरस्वती का यरदपुत्र माने भौर उर्ग भगद ग्रहण करें ।

स्वार्यकी भीड भाड भीर प्रचारकी धुका~ पेन से उद्दो हुई गर्दसमग्र तथ मण्डल को माच्छा~ दित कर लेती है। कला की काल्ति गई के भावरण में मोक्तन हो जाती है। जिस प्रकार कोहरा मूर्य की प्रकास विरुशी को रुपष्ट नहीं होने देता अभी प्रकार यह गई साहित्य के मन्य स्वरूप के प्रागे धा उसकी कान्ति से जन के परिचय से दाधा उपस्तित करती है। सुजक और पाठक के बीच का यह बादरण उस भ्रम के समान है जिसे दर्शन के क्षेत्र में माया का मात्मज माना गया है । घाडम्बरियो की यह मातिश~ कापिनिकों की भाति साधारण जनको भारवर्ष चिति भी कर देती है और भयभीत भी। किन् माडम्बर सत्य का भासन ग्रहण नहीं कर सरता, वह स्वाई नहीं होता, समय के साथ अपर को उडी हुई गर्द उसी सन पर मागिरती है जहा से वह उठी र्था, भौर तब साहित्य का प्रजीभन सत्य धपनी पूर्ण कान्ति के साथ स्पष्ट हो सभग्र जनमानम की मानोक्ति कर देता है, जन उस मानोक में माने ग्रापको पहचान. भारम विभोर हो जाता है भौर तद वह इनज्ञ भाव से प्रकाश के जनक का स्नापन करता हमा उसके दर्शन के निये नारायित हो उठता है विन्तु सब तक साहित्यकार साधक में साध्यकारुप प्राप्त कर लेना है सभी साधारण मानाक्षामो से निनित उनका ध्यतिहर यह घरेशा नहीं करता कि समाज उसे क्य दे। मेरी धानी हिंछ में साहित्यशार का यही स्वरूप है और मैं उमी की प्राराधना करता हूँ।

मुफ्त की वात

श्री पन्द्रपुरा गान्नीय

मुर्दार में सुन मान्यां स्वार के बार बार बार पान में कि इसार स्थाप किस में हैं को मार्च हैं। शिंदर हसार स्थाप कोई प्रति इस स्वारों है स्थाप कर मूर्त हैं। एवं में बार मार्ग कर स्वार के बार के स्वार कर है। बार मार्ग कर है। यह मोद है सह अपन हैं। बार मार्ग कर है। यह मोद का मार्ग कर हैं। बार मार्ग कर है। यह भी स्थाप कर है। बार मार्ग कर मार्ग कर है।

an ex the test are all and the test are test are

तमे न रिरुप्ती पंत योगा । कोर हो, कार पा नेहरनाता के बार हवारी वर पी पुर किसा है हो दिह होने के पुनता ।

तेर-संसार देश वर हुगा भीर श्रम्थार है जो शारी मृत्य जात में बिना दिसी बेट बार है वारा जाना है। शुन्त के किसी भी पुनरे जीव से यर् पुना बोर शकार तहा नाना नाना। हर बारमी, बन्न वन दिली भी जानिया हैए का मी. कोई भी माना बोरना हो, काना हो या होता, बर्दे हो या कोरण, बुरा हो या जनार संगर हो सा तरेक पृथिति हो वा नांगत शहराती वालुनै अन को वा दिल्लान मार्ग्य अवा सन्दर, परित्य हो तर मुख्ता सन्तर हो या करराती क्षेत्रेंगी हर वर्ष कार्यं पर वर वर्ष मिल्कुसर को जब मन्नी वो बाज व वा मन्त्रीती कुमानो को सदरण के प्रध्यत में उत्तर अर तरी कृत्यान्य है । ब्रामित्य कृत्यारे कराव अ शासक " marrett and dark and at the free at क्षामक भीत्र कार्यक कृष्णक एक प्रवेशनी पर dang ta man g r und da Hezind as १४११ र अन्यार भे बता अरुवर है। युन युर में स्टिक स्टब्स्ट स्टब्स्ट स्टब्स्ट स्टब्स्ट्रिय Securedad Sign Land St. Sec. St. Sec. Sec. S. 1 सार्वाद कर पूर्व हर्मात रेक्ट सुर्व कर्ड अन्त्र आर्थन है? give der grad er en phara en en en an a erge e tend give gover give go सगर यह गोर्ड दिशान की बान नहीं है। नव गेन एन दूनरे की मनाइ देने उटमे-इन सनाहों की नाम मन में मक्की पूरी इन्टरन्यना और पूर्ण परिकार होगा। साम-जन भी तो नीरर भी। सनाइ देने फिरने हैं-बाहे कोई भाने यह सहे।

बिन तरह रिमी पार्टी या दन में नुछ दक्षिण-रंगे, बुब बय-पंची नुछ मध्यम मार्गी धीर नुछ रेगेंगे ने नोट हुण बरने हैं उसी तरह मशाना हो रेगेंगे में गोर प्रेणियां रंगी जा मरानी हैं। दुखींगान ने पतिबता रिवर्णों के बार भेर जिनाये रैन्जम, मध्यम, नीच, सपु। इसी माशार पर स्वार श्रीयों के भी बार मेर किये जा सनने हैं।

^{देनम} मनाह्वारो की श्रेणी में उनको रखा ग स्ताहै जो वैचारै धाराम-वृत्तियो पर बैठ ^{इर, दांते} पूर कर भीर कान बन्द कर, भाषरणी, प्रकों, क्लब्यों मादि के द्वारा मद को नेक-^{5ताह बॉटने} फिरने हैं। इनकी कपनी और करनी में टोता ही मनार होता है जितना माकास मौर ^{गारा में}। मनतन, में जनता को मलाह देते हैं हि रेत-दमेरों में गुजारा करो मगर खुद बानीयान ^{हेती} में रहते हैं। कम-तनस्वाह बानों को पेट पर ही बाबने का उपदेश देते हैं पर खुद श्रदी-सडी रामाहं धौर मन वसूत करने हैं। तीसरे दर्ज के हर्ण को चौबी या पांचवी मोजना तक लगर रते की मनाह देते हैं, पर खुद हवाई कारों में, मोटरों में मौर रैल के सैलूनों में सफर रितं है। बाहर मध-निर्देश का प्रचार करते हैं, ^{रा इत्} देठ कर जाम के जाम आानी कर देते हैं हेर्न हिर भी पारमा बने रहने हैं। क्योकि---

र्क्त है पीतर मुकरना पारसाई के निए कर वर्ष बाबार पीता है वही बदनाम है। दोज प्रचा के विनाक नेवनर माजते हैं, पर माने नेटे के दिवाह में प्राचीप रहेज की सम्बी रसमे हमार जाने हैं। रिस्ततारोगों को गानियों मुनाने हैं, निर्मान प्रताम वा परोग्न कर में रिस्तत देने वानों की धाव-अपन और हिमायत करते हैं। धन्न की कमी बीर भुलमरी पर धाठ-धाठ धामू बहु। कर दावले पौर पाटिया उड़ाने हैं। धन्न-वनन कम प्रोरेशेण्डा करके दोरों व मानिहों में सालों रप्या पुन में डानने हैं। बुद के धाद कब में नटके हुए होने पर भी धन और सता ना मोह नहीं धोडते मगर दूसरों की जीन की धारामंग्रस्था भीर स्थान कर उपरेशे देते हैं। इक तरह तुम्बीहान मेन कम नवन नवार की परिभाषा की पूरी तरह सार्थक करते हैं।

मध्यम दर्जे के सत्राहकारों की चैंपियत यह है कि ये सनाहकार बनाये या नियुक्त किये जाने हैं। वह भी ठोक पीट कर नहीं, बर्ति बडी एउन के साथ । ऐसे सलाहकार उन मोगों में से छाटे जाते है जो या तो विशेषत्र माने जाने हैं या जिन्हें किन्ही कारणों से होने में लगाना जरूरी होता है ताकि वे शोर न मवायें। इन मनाहनारी के निए तरह-तरह के मनाहकार मण्डन या समितियों या जाव-कमीशन कायम किये जाते हैं। समजत *पैये* वानों की तोद क्यों फून जानी है धीर इन दोनों में क्या भन्योन्याश्रय सम्बन्ध है। या लोग गनियों में कूड़ा बयो फेंबते है, या तीर्यामन मामदादर है भयवा हानिकारक या बटेरवाजी पतंगवाजी मारि का राष्ट्रीय जीवन में क्या महत्त है इतका पता लगाने के लिए जाच कमीशन दिशाये जा सकते है, और इतकी विकारियों पर धमन किम तरह किया जाय इस पर राघ देते के चिए सनाहरार मण्डन बनाये जा मनत है। इन मनाहकारों ने ब्रासा की जाती है कि देश भर के दौरे करें बीर

इन बहुते बली बन्दों के प्रशास होई पाताचे का हुम जान करें या कांत्रीय क्यांनों की धेर कर मार्ड। जाए जाये कर मारितकारी जो स्वाह में निकारी करते हैं।

मुद्रभंगी में इस मजारगाठी की राग का राज्या है जिल्हा त्रविद्या कलाम। होगा है-ज्यते त्रो राजे में बगाया। इब बहा दाया किये बराबा, को र बोर्ने प्राप्त है और स दे बगारे हैं । बगारत बगर कोई बगरमी बीमा कराने वे बुल ही जिल कार मर बाद की बल करेंदे हमने री पारे के राज्य का किसीमा क्या गुरा रहत र्गाहै। सौरण्य सक्ते शक्ते दीलाको बीय की काणी नागी रहया यात जात ही। नह देते हर्फेटी पर्ने ही तरा चानि दीया क्सालेन कारित कर्ने कारोग देव हो बाद हो दे दहते बारे बारे निरंदर बढ़ बारे हैं। बान्य बार्गक हर कर्या दा दुरी करत के दे सीप क्यों करते का भीव प्रान करने काने हैं। बहु हरेगा करनी मा राम कीना चाराचा मा पुर्वतनामा राम हो क्षीतम पानी है कर कि प्रतिगत के बारे के नर मा महा ही नहीं जानवना है। दूवने बल्टे ही

सरते नीच वर्षेत्रे क्रमान्त्राह के अने जा बचन हैं जो बान न बान के तेना बाहरत की

त्राह्य बारो नगा वद्यतिने बीते दर् क्षेत्र राज्य है। दुन्या का कोई मानता ऐसा जारे हिन्छे करे में देगर्र मू संगृहार संगान है करें। हा मेर्ने पर बनाग देते के लिए बाते बाग क्षेत्र करे है। महत्र विभी की तरकी का विराण हो ने दे मीर सुरू में मारावर बार्विट तक बादे इत्वताक के बारे में गराएं देरे बारे जादेरे ह मतारह ऐसी होती पारिष्य करात की सार्विष्ट इस नरत की जन्मी कारिए प्रदेश में क्यान्त्या की वे होते कारिक-इंग्री पूरी मूची बारको बना देते। बन्द बार पानी संग्राणे पर समन करते की हैंगाना करी रायों तो या बारता तुपूर है। कोई बीजान पर जाय तो ये सदान्देरे वाते बहुर अल्लाबा वैद्याया ह्यीम की निराशित करने वा रेंग्बर मुग्ने बारको बना हैते। अते ही हनती बन्ते की गुलकर सरीय केवारा जार साते वर मानादा हो जार या प्रपट्ट चरवर्ष इस मन्त्रीत में पट मान हि रिगारे क्षेत्र क्या इताह कराया जाय ।

कुने कावर से एकारा । सहा बारी ने कुने कारों में विकास के देश नुपान ने सबसे कारों का अवादे के हुए। ने सूरत सबसे कारों के बहु पुरस्तक अराहिनाहर ने

- As Systa Ridit

जनसामान्य, साहित्यकार और हिन्दी साहित्य

दयाकृष्ण विजय

अनीति, धर्यदास्य, समाज दास्त्र धादि पर निये धनेको मोटे-मोटे ग्रंथ माहित्य की कोटि मे मही भाते । श्राहित्य मानव जीवन की समग्रता की व्याख्या है। साहित्यबार शब्दमुमनो का मानी भौर जीवन के रगो ना चितेरा है। वह एक सर्वेदनशीन प्रारगी है। उसकी मान्यानमति उसकी मिन्यति मे बिस्तार पाती है। यही भ्रात्मातमृति चाहे संवेदन हो भववा सहजानुमृति, धावेग स्वेग हो भववा पारागा. रुप सुष्टिके माध्यम ने माहित्य की सज्ञा प्राप्त बरती है। माहित्य के सुजन में जहां माहित्यकार की प्रतिभा प्रमुख है, वहां हम उसके ध्यक्तित्व, देश काव. वानावश्ग से प्राप्त सरकार उसके सामाजिक सहक्रम तया तात्वाचीन ऐतिहासिक परिपेध्य को सही अना सकते । साहित्यकार इसी प्रतिभा सम्प्रमता के कारण मन्य जन की सुकता से कुछ विशिष्ट गुण सम्प्रकार्यान है। इस बारस इस पर समाज-दादित्व भी विशेष हो जाता है। इत्तरा होते हुए भी माहित्यकार धाने मामाजिक परियेश के संबंध मानव सम्बन्धों को घोटता नहीं है। वह समाज वा एक घटत ही है। सरुमूरि की शमना कुछ कम अधिक नदमें ही होती है, लेकिन ब्रीसब्यति सामर्थ्य, बहु एक ब्राप्ते में विशिष्ट पूरा है, ईव्बरीय देन हैं। यही सर्जन

साहित्य रचना के ये ही नीन दश होते हैं। उदम भाव पत्र (ब्रुप्टी), दितीय कमत्या दश (दिन्धा) तथा नूरीय कमा दश (दिन्धा)। साहित्यक्षा की कमत्य के उच्च कामत्रदश सदैव भाव करा की कमत्य के उच्च कामत्रदश सदैव भाव करा की निवस्य सामान्त्रद परियो चर पुरस् हार्

ध्यति सामध्ये पवि का धपनायन है।

ववते हुए अपने मंगवमय पद-वाप प्रोटने पाने हैं। यही पद बात समेदन को मवाई, निरान की गहराई तथा अभिव्यक्ति की गहराना न कारण जन-कर के कष्ट-चर हो जो हैं। इसी महत्वादुष्ट्री को आधारगीकरण कर साने हैं।

इस बढ़ी भूमिता ने बाद दूसरा प्रान, जो धात नभी मानावीं की बृद्धि बनोडी बना हमा है, यह है साहित्यकार बता निये, किसके निये निये गया वयो निये । माहित्यकार 'बगा निये' का उत्तर के पन मधर साव नहीं है उसे एक प्रक्रिया की भी भी भी है, जिसमें 'हिंगह' तिये' तथा 'तथा' के जार भी ुपे हैं। बदन यह उपनिश्त होता है कि माहित्यकार ममात्र की मान पर निश्ता≯ घरता मालियकार घरन साहित्य के साध्यम से समाज में मान उपनिक्त कराता है। मैं यह ममनता है हि इत दोता ही प्रता में सन्दार्ग है। कभी समार प्रार्शिस दत्ता माने बद्र जाना है कि बह माहित्य व करा का माद्र करने के निये दिक्स कर देता है। और कभी समाज कटिएत मनकारों की कुटायों में बगते की इतता क्सरा ह्या इन हैं है तम दिख्यत सा प्रत्मा करते बरुमा है हि उने बारु म रे हिरी प्रबंध बरिमारम की बोड़ कर उसके में है बान का स्थित हाना नरना है। ब्ही ब्लाइ प्रतिसारम, राज पर्वता स्वामी व्यक्तिप्रकार है। दल बेबा, यापय प्रतांश है।

प्रदेश हुए की झारी तह मान हाति है बहु हर बार तह नदा गरेत नेवर माना है। उसा बारस साल्यकार बजी भी तह भी बारा में



निसे, निर्धारित करती है। साहित्य मे भार, वस्पना नैतिकतावादी बहेगा जन्म में सभी समान हैं 'जन्मने सथा कना के बदनते हुए रूपो में हमें समाज के जायते धदा'। सबको उन्तर्तिका समान घवसर मिलना चाहिये। विशिष्ट वहीं है जो वृद्धि से श्रेष्ठ परिवर्तनों के ही कारण इष्टिगत होने हैं। है. ग्रस सम्पन्न है । हिन्दी साहित्य के भादि कात्र से लेकर भाज मैं यह मानता हैं कि साहित्यकार को इप्टि तक यदि हम देखें तो लगेगा, कभी भी तिमी कवि राजनीति, समाज एवं दर्शन की धारणामी की ने युग वाएं। से भिन्न स्वर नही गाया। बन्दिनी नही होनी चाहिये । साहित्यकार एक सामा-हिन्दी साहित्य के भाविभाव कान को ही लीजिये, जिक प्राणी भी है, राजनैतिक भी है, दार्शनिक जिये साहित्य मे बीरगाया बात वहा जाता है, भी है तथा नैतिकताबादी भी । हाँ, ही सकता है, ऐसा समय बा, जब विदेशी धाक्रमण बहा तेजी राजनीतिज्ञ उसकी भावूनतावम उसे भपनी श्रेणी मे उत्तरी भारत पर हो रहे थे। भारत मे नुपारमक मे नही रखना हो, दार्शनिक उसकी सामारिकता से राज्य व्यवस्था ही थी। समात्र रशा का सम्पूर्ण उद्दिग्त हो नवा नैतिबताबादी उसके सौन्दर्य तथा दावित्व उन्हीं पर वा, इमनिये देश रशा ने निये नाम चित्रणों में ध्ययित हो नाक भौ निकोडता ऐसे न्यतियों को ही घोषाहित करना समाज धर्म हो, तो भी वृदि की घपनी घारमा के साधारकार या । दागता नहीं थीं । स्वतिः का वयोगान न होकर नी भनुमूर्ति भी उच्चावस्या मे निन्ता माहित्य ममात्र मन्द्रार्ण समाज के गौरव की विकशावित थी। बह को दिया स्वेत देता ही है। इतना मैं घत्रय तिमन्देह युग धर्म का न्दर या। मात्र के अतत्तातिक स्वीनार वर्ष्टगा निभाहित्यवार ने इसी समाब का धानन में, हो नकता है, तत्कारीन एक्तंत्रायक एक भंग होने से उसकी भनिष्यतिः भी समाज के राज स्वरूपा, हमे घटपटी लगती हो, परन्तु समाज स्तर में भिन्न नहीं हो महती। बल्कियह पहा जाए कि रूप में मर्थिष्टित तूप की बंध गांचा, क्या शेव गर्मार्ग साहित्य नत्वानीन समाज स्थिति ना प्रतिबिम्ब होता मनात्र की धमनियों में उदान, चेतना तथा गर्युन है सो बुटिन होगी। इसनिये हर समय यह बहना कार्मकार नहीं करती रिक्ति को धात हम धेष्ट वि साहित्यवार कातिदर्शी है, यग निर्माता है, पव व्यक्तियों की जीवतियों निवते हैं, क्यों उनके क्वि प्रदर्शन है, सही नहीं होगा । हाँ, नभी साहित्यकार भारते डाइग कमो में लगाते हैं। इस्तिये ही ता, वांतिइसी है तो कभी यग निर्माता, कभी पर प्रद-क्षित्रम्ब्यक्तिका परिवासमाजकी निवेसाराँ र्शन है तो कभी मात्र मनोरजनकारी। स्त्रस्य है। इसीनिये गीर्थ बर्णन का बह बाध्य, देन साहित्यकार सामान्य कर से एक ही दात से पर बादे हुए सबट बी बार मानान्य जनरीय जानून विशिष्ट है कि यह प्रकृति से प्रतिभा समस्य तथा करने के नियं बातरयक का । इसी प्रकार मन्त्रिकात षाकृपुत्र है। लेखतो उसकी नक्ष्मी है। सन्दर्श का माहित्य, बारने कार में जर्द दिया का रिपर्यं क समाज में पूर्यक साहित्यकार का कोई बरित्य नहीं बा, परबीद धर्मांव लासन में समाज लंब संस्कृति पर प्रशास हो रहा दा । स्थिती सी लाब, त्या देशान्या रै। सामाजिक कारणों से ही साहित्यकार में हमें

सबको मात्माश मानते हुए भी जीवन मुक्तो को

श्रीष्ठ तथा सांसारिकों की सामान्य समझेवा भौर

साहिय के मूत्र तथ्य भार, क्लपना तथा करा की

घट-बढ़ देखने को मिनती है । ये परिस्थितियाँ ही,

साहित्यकार क्या निले, किसके निये लिखे तथा क्यो

की बन्ति मुद्दी या गुर्दी हो। महत्त्व शासन में समय



निने, निर्धारित करती है। साहित्य मे भाव, कल्पना नैतिवतावादी वहेगा जन्म में सभी समान है 'जन्मने तया कला के बदलते हुए रूपों में हमें समाज के जायने शुद्धा'। सबको उन्तति का समान भवसर मिलता चाहिये। विशिष्ट वही है जो वृद्धि से श्रेष्ठ परिवर्तनों के ही कारण दृष्टिगत होते हैं। है, गुगा सम्पन्न है । हिन्दी साहित्य के बादि कान से लेकर बाज मैं यह मानता हुँ कि साहित्यकार की दृष्टि तक यदि हम देखें तो लगेगा, कभी भी किमी कवि राजनीति, समाज एवं दर्शन की धारएगमी की ने युग वासी में भिन्न स्वर नहीं गाया। बन्दिनी नही होनी चाहिये। साहित्यकार एक सामा-हिन्दी साहित्य के मातिमाँत कान को ही लीजिये, जिक प्राणी भी है, राजनैनिक भी है, दार्शनिक जिमे साहित्य मे वीरपाया कात कहा जाता है, भी है तथा नैतिकसावादी भी । हाँ, हो सकता है, ऐसा समय था, जब विदेशी भाक्रमण बहुत तेजी राजनीतिज्ञ उसकी भावुकतावश उमे भागनी थे सी में उत्तरी भारत पर हो रहे थे। भारत में नुगारमक में नहीं रखना हो, दार्शनिक उसकी मासारिकता में राज्य व्यवस्था ही थी। समात्र रक्षा का सस्पूर्ण उद्भिन हो तथा नैतिवताबादी उसके मौन्दर्य तथा दायित उन्ही पर या, इमनिये देश रशा ने निये बाम चित्रणों से व्यक्ति हो नात भी नित्रोहता ऐसे न्पतियों को ही प्रोत्माहित करता समात्र धर्म हो, तो भी वृदि वी भएनी भारमा वे साक्षात्वार या । दामता नहीं यी । स्पन्ति का मंगोगात न होकर बी भनुभृति बी उच्चावस्या में नित्वा साहित्य समात्र सन्पूर्ण समाज के गौरव की विकशावति बी। वह नो दिया स्वेत देता ही है। इतना मैं सदस्य निसन्देह यम धर्म का स्वर था। बाज के जनपातिक रवीवार वरू गा वि साहित्यवार वे दर्श समाज वा धासन में, हो। सरना है, नव्यातीन ध्वनंत्रायक एक झाग होने से उसकी झिभिष्यति भी समाज के शत स्परम्या, हमें घटपडी नगती हो, परन्तु नमात्र स्तर में भिन्न नहीं हो सबती। इस्ति यह पहा जाए वि रूप में भविध्वित तुप की यस गाना, क्या शेव शर्मार्ग साहित्य तत्त्वातीन समाज रियति ना प्रतिबिम्ब होता शमाज की धमनियों में उवाद, चेत्रता सवा शहदूरित है सो चुटिन होगी। इमलिये हर समय यह बहना बासबार नहीं करती? किरे क्यों बाज क्रम भीष्ट वि साहित्यवार कातिदर्शी है, युग निर्माता है, पद ब्यानियों की बीवरियों निवते हैं, क्यों उनके बिच प्रदर्शन है, सही नही होगा । हा, नभी साहित्यनार धापने बादय समी में नगाते हैं। इसनिये ही ता, कांतिदर्शी है तो कभी युग निर्माता, कभी पर प्रदन् क्टिम स्पन्ति का करिय समाज के स्थि बार्सी र्धन है तो बभी सात्र मनोरंजनवारी। रक्ता है। धर्मानिये गोर्थ वर्णन का बह बाध्य, देश पर बादे हम सबंद की बीर सामान्य अनुरक्षि आतुन साहित्यकार सामान्य जन से एक ही दान में विशिष्ट है कि यह प्रकृति में प्रतिभा सम्पन्न तथा करने के निर्दे बारस्यक को । इसी प्रकार अनिकार षाकृपुत्र है। लेलनो उसकी नक्ष्मी है। सन्दर्भा का साहित्र, धरते कात में नई दिला का सिटा^रक समाज से पूपकु साहित्यकार का कोई बस्तित्व नहीं बा, परवीय भ्रमीय शासन में समाज एवं सम्बूरियार है। सामाजिक कारलों से ही साहित्यकार में हमे इतर हो रत दा । स्वित दी लाव, तदा देशागा साहित्य के मूत्र तत्व भार, कल्पना नदा करा की की मन्ति नहीं का रही की । नवत गामन के समय

(38)

सबको मात्मांस मानते हुए भी जीवन मुक्तों की

श्रेष्ठ तथा सांसारिकों को सामान्य समभेगा भौर

घट-बद देलने को मिलती है । ये परिस्थितियाँ ही,

साहित्यकार नया निश्ते, किसके निये निश्ते तथा नयी

निर्धेत नारी में तत्रवार एटाना सम्बद्ध सा नहीं। इस समय जीत ही सवाज और संस्कृति की रशहें बन सबतों थीं। इस इति को देतिये—

'हारिये न हिम्मा, विमारिये न हरि मान, जारि विधि सात्रे सम्म, सारि विधि स्टिये हे

मात्र के बहिसारी प्राणितित हो। भागरसारी न्यार कह कर हुन्छ देते, मेहित इत दिने धुने राश में रिप्ती सीत है, भीरण का विकास बारत विकास सुरा है, हो बाब सारद ही की दलपाये। 'राविद न शिम्मच निराणागरी था मानाराही का काका हो। ती। सक्ता । या उति बर पर सरकार है। किंग अलिए का सिराम है। 'बिगा'विये में क्षिताम' स्थाना सबै प मंत्रु स बारी के बार । बाद शबाद की बाप मीत है। (क्या के ब्राचार विद्या तथा दित के कार में क्या है। लोपलोक्षणां को करी दो हो। चाहि विवि का है राया गरा राम शीराचे म लाना हो र सानव की कार का प्राप्ता र र र है, हिंदी र जा प्रदार की अवीध बाहरूब मुर्गाते बाद बहरताब बंद पर हो हो। सन्तर्गः त्रनात रेतीद प्रतिदा सराजु आहारा **अ**पी 🗯 शहरहा त वै बन्च विकास दि प्रतिमान ने नेप्तता तक क्षात प्रति at Kie aren beger were. gi fang fee bie a) & cid to the dealers & ?

कियार की के काइनी चुनी कर के बाद एक बाहुबर कर एक कहर कार्य राज है

देण , जाने करन क्षांचारी से कारण्डांचा देशा हर्दे बारण क्षा देशके देवाला है देश संदर्भ का जारेन जारण नक्षण का नार्या का वर्षों का जारेन वा राज्य नेता का देश कर जाने का लाग का का नेता का नेता का जा जाने का लाग का का जारेन का नेता का जारेन सर्वा कर का का जारेन कर का जारेन का निर्माण निये सामान्य करण करण को बारे, क्रिक्टिंग महत्त्रामः में निया भागरी तथा नाम ने भी जीतित राते कार्य मन्तर तथा केंग्रे की नामोनिता नित्त कृति का प्रशासन देवर किस्मा का प्रधाना तिसा है। तथा मनतात का्मे का नीता है नित्ते के ने नित्त करण निया कारों कीता है नित्ते के नित्त करण

हम कृषिताल में देखते हैं कि कर महात. शक्ताता स्थापिता की भार्त संग्राह समान होते. के बारण गर बाका खंका दराहर कर, इंगरे सामा पादसरेगी की पुनाय का गर्देश सीत हुउ समय के विकेता जैसे समाव का माँ गाँवर नागुर शास्त्र भी इस अलग्यास्ता में सूत्र ही गरा ह धन्ति के बार्याय में अधात को निवर्गति माण करिभो त्राप्त हो गया। कार्रभागा निरण रा लग तुर्ग और । प्रथरिकेश एक की अपार हुई। क्षीर प्रतासा समापारणी सरव इतिगाः। काम का ध पार रेपर, प्राना मन्त्रिका के मार्विक मार्व कुरू प्रस्तिक के भागांत्र का है जिस सामाना की सान अन्तरात्र अन कर्र करते । सन्दर्भ जनते । हरी mene urcress were est tel til flat प्रताचा का कामानी प्रकास स्वयं विकास द्वारत ना व प्र करतक मुख्यान तुर १४८ में मानूब रबा । वृत्र anter anteres & Case Charle Will & at the चारित्रं की कार करते. इसरे अंतरे वे तस दे ते स कार रंग रेंद्र प्रमुक्त करात्र है तथा स्वतः सर्ग रंग है ते स green at the set a versa atra . By क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र करा व्यवण कर खाइन इन्छा क्रोरिक इन एन्ट्री प्राप्त प्रता है कुचर देवा (अमान केवन हिस्सू मन का मार्टिंग प्र द नवर्तेत्र हु क्षेत्र रण इ. स. अन्तव नक सूरण्य वर BOR SHALL BUT AND A SUBSTITUTE e is gracing from Administration

साहित्य से माज कोई प्रेरणा नहीं ले मकता ग्रापि ऐतिहासिक परम्पराकी इस कडी मे इस युग बंगान का बहा समाज, ऋषि दयानन्द्र का मार्थ समाज, विवेकानन्द का मा भारत के प्रति राष्टीयता ाभी भपना एक विशिष्ट ऐतिहासिक महत्व है। का ग्रह तवाद तथा गाधी का राजनीति में ग्रवतरण इन तीनो कानो मे साहित्यनार ने सामान्य सब मिलाकर जन काति के सुचक थै। उस समय त को ही पर्माप राजनैतिक सकटो, विपदापो से को जनवासी हिंदी साहित्य में 'भारत भारती' के गया है। राजा-महाराजामी को दवा निया तो वंठो मे ग्रंजी। भारतेन्द्र युग हमारे सामाजिक, रो प्रजा को बचा निया, एकतंत्रात्मक राज-मॉन्ड्रतिक, राजनैतिक तथा साहित्यक जागरण का वस्थामे हमे यह मानवर चवना ही पडेगा। यूग है। इमीनिए इसे हिंदी के माधुनिक बान की कि लिये सत्कानीन युग हुप्टाकवियो ने क्राति के संज्ञा मिनी। इस भाषतिक कान की नागी केवन ीक ऐमे महापूरुप[ँ]दनाथे, जिनमे सिहासन के पद्य मे ही नहीं गद्य में भी उसी सबचता में मुपरित ये सहज धर्म च्यूत होने वाले राजवश ही प्रमा-हुई। इसके बाद का द्यापाताती तथा रहम्यदाती त न हो; मामान्य जन भी सहत घाडूच्ट हो घौर स्वर निस्तदेह निरामा तथा ग्रन्तर कास्वर है। र्मभ्यत न हो । राम धौर कृष्णुको दैव रूप मे परन्त उनके पीछे भी बहुत सबन ऐतिहासिक पूष्ठ-त्यापित करना भी इस ऐतिहासिक सन्दर्भ में मुके भूमि है। स्मातंत्र्य संदाम का नेतृत्व गोधी जी गधर्म ही दिलाई देता है। जैने महिमात्रादियों में हापा में भागवा भीर भंगे जी शासन बाद में भारत को कुछ मिशा काति का गरजा स्वर उसमे माना माश्रय पा यान मिनाहो, परन्तु इतना घरस्य मिनाहि नहीं सदा। बन्ता दिया होतर उसे बन्तर्मुं सी र्लंड की धौदांगिक बाति ने भारतदासिया का हा जाता पटा इसका कोई सामाजिक मृत्य न भी होती साहित्य, बिदेशी भागाजिसता तथा विदेशी हा तो भी वैतिहासिक सुन्य है धक्य । सेकिन यह गति से बीघ्र ही परिचित करा दिया घौर इसी का भी नहीं कर सकते कि इस कात में सादरासी मनरिक रिगाम पाहि हममे जो एक निरासाभर गई दी हुई ही नहीं, प्रसाद के एतिहासिक नाटका के बाक्य ह भीरे–भीरे समाप्त होते लगी। हमे बाहर भी कियान नवा गीन भरण यह मधुमय देश हमारा. पने सहयोगी दिखाई देने लगे। इसी क परिस्थाम 'हिमादि तुर्व शून पर' भादि भादि दुनर उदा-रुप, परतंत्रता से मन्ति का बोध कुछ एक ही को हा. हरता है । सान होकर प्राम-प्राम में स्वतंत्रता की वित्यारी ट निक्ती । परम्परा दस्त सामाजिक दार्वमे इमी ममय मारतीय राष्ट्रीय बारदीतत की (दिशेष बर ब्रान्स्टिश को) जिस विद्यारमा ने वर्षक ामून परिवर्तन की मान बदने लगी । एकतका भव या पूर्णीवादी समाज ध्यतस्या के दर्दशा दिलाई दरस्दत दिश दर दी मार्चेशरी दिशारथारा। कस में जारूपारी के दिख्य हुई महातू जन-कार्ति ने लगे। जनतात्रिक सामाजिक चेनदाका स्वर त्रामहीराम का माधिता ल्या मार्थिता स्पृटित ह्या। साहित्य ने भी करदट बद्दी। दी क्रीर उसका प्रभाव पहला भी सरेज ही बा। हिस्य के ऐतिहासिक विकास को इस परस्परी से इसक कारता माश्रिय में प्रा^{तिकी}रण के नाम মিৰ্ব ই ধ্যাৰ ঘা আৰু নহাৰ্থন হী নাং बर महीता व दब दर्द का रूप बताये हरा । राष्ट्रीय स्वर हूं जा । ब्राह्मणुदादी धोष्टना के (Y!)

विरोध मे जनमामान्य की श्रेष्ठनाका स्वर प्राट हथा

राति में मुम्बिर हमा । यह राव वाची प्राचित की मन्त्रिकोरी हुए भी चरण रहा कात्रपण के कार तर।

रायनायां में बाद बहार हम राह के बहने की भूग प्रधित होत्राहम की करना हम ब्राह्मीसी देश में उपकी नग बगाई की कीम्रणण, मध्या मन बारी देए में प्राची पूर्व मीरिक्चा, जनमाना को प्राचित्र प्राहरण करने भे प्रकार करते । साहरीय रेगायो में निर्माण की ब्रोड कर मोको का दल निया और इस इसार की बोर नवर निया औ। दरम् प्रारी प्राण्यात वेशाविका में यह लाह-रिता के निर्दे मार करित का । क्लेकि सामीरिक ररणकार दर्शनक ररणकार के दिशा करती है। इस बारत बाब महित्यमार शिक्ष के बीशहे पर महा lernfen feng gi ber fe fe fen mir बार पर विदेशी मार्गित के प्रवास ने तर नर

प्रयोग करने के स्थान है। जिसमें कभी प्राप्ति का न्दर है तो कभी कार कुलायों का कार (कभी सामाजिक दुर्वेतना पर क्यंग है तो कभी राजनी 'नक बमजोरी पर बरारी बोट्रा घर भी गेलिंगोल परिष्टेर का एक कर है।

इय गारे विशेषात का क्षत्रियात का रिलाग ही दा कि दियों सारित्य करें है में ही सामान्य पर को बदश बहाएय बनाहर का है तथा उनमें क्रम्प्रेत्र सन्तित्र रूप है। प्राप्त भी प्रमु महार्गप्त श्वाचित्र धेनचा र यूर सं-चर्या सवाच हे मान्य हुए बड़ी हैं में में बहरते हा रहे रै-लवाह की स्टार के रक्तर में बारियाहार मानिय भूतर की की करना है। मारित्यकार द्यारे द्या पा की धाराता-प्रीत कारणकार के बार के क्यू रियम है. वर मदांग्यन बारता है पराचे हेर् ही रेटाना है बार बह स्थान तनात ही बता मंत्री ।

B. R. HERMAN & MOHATTA (India) PRIVATE Ltd.

JAIPUR

1 1 1715

.... ETP445ICA

HE INCRAPTION AS

19:47 12

Parry & Co. Limited 5-37 248/5482 B 488 1

A CE COMPATE 179

राष्ट्र यलशाली हो-बोढिक व बारीरिक रूप से-इसके लिए 'युवकों' का सर्वोद्गीण विकास-उत्यान जरुरी है। इसी उद्देश्य को हृष्टिगत कर हुमारे राजस्वान में जहां विकास की धनेक महान्य योजनाए धारफ हुई हैं, स्कुल व कालेज सोने जा रहे हैं वही—
युवकों के धारीरिक विकास व उत्यान के लिए भी प्रयत्न किये जा रहे हैं—
राजस्थान क्रीड़ा प्रिषद्
RAJASTHAN SPORTS COUNCIL
शारीरिक उत्थान की दिशा में सतत् प्रयत्नशील है
अध्यकः—उनमयन्ट विश्लोई (उद्यासमा)

किसी भी राष्ट्र की प्रगति, उत्यान व विकास उसकी भावी संतानों पर निर्भर है।

्राय वहादुर राम प्रसाद राजगढ़िया सबस्थान मिनरत एस्ट को॰, हिन्द मास्च ति॰ सनस्ताना कीसोरेजन ति॰

साज्यतमा कारपारचन तिः

माइका माइनर्स चा एक्सपोर्टर्स

वाप.

प्राप्तिकार्याः

इंग्रंप . हैं प्रयोगित : जयपुर C २२ कृष्णीराज रोड़ १३ हैस्ट्रिटन स्ट्रीट, कलक्ष्मा कोत ते॰ ४४-२१९४

तार का क्या:--RAJGARHIA

ध्रेत है। १३

कोइरमा (दिहार)

सहयोगियों के प्रति दो शब्द दर वर्ष राज्यात मान्य सनाध्ये ने हुनीय

बार्रिक रेमिनार व समकी स्मृति में प्रकारित सूपन वैना के घरगर पर दिन महानुमार्ग का कहाने हमें प्रान्त हुमा है, हम उनते बाउना बामारी है बीत

इनके रहतीय की हम कभी भी मुख मरी रह है है। भी हंगरात पाउंचात, भीफ इसपीशत पेंशीत

राह बीदर्गा, राज्यवान, भी नगुर मन द्यान, भीगमंदी मार्च बार. भी दिख्यम जैन, प्रलाहर नगरपतिका करपुर, की बारकृष्ण गर्मा, बार-टी.

मी जबपूर, भी नासकात जोगी, पर निसंधीत केंकरी, भी मुझारात बार्ड सररात क्रिकार दिहे-पित पोर्ग जयपुर, थी बराइर निर 'नगारा' एम

बार्ट बाप्तेन, बार्ट रतानुसारा ने गरश का मारिक राज्योग मात्र हमा है र थीं सर्पर्यंतर सेरपा, प्राकृत्यपि कारायात

विषयं विद्यालया, भी राष्ट्रवात राष्ट्री, प्राण्यातक सरग्दार दिया विकास बस्तुर, धीमनी सि बापरी, प्रयानाप्तारिका बनानारी सर्वेत शार्थ क्षु रू चीमते दिसमा सर्ज, प्रशास्त्रातिका महासम

क्षी एवित राप्तरता कर नदी बालवात देते हैं। हाति हारत नेवेच्ये बद्दत बद्दार, की सोबार राजस्थान वित्त-निगम

बैनाबा कियोंने मेथियार के सवातत के विदेक्तार देशर मंत्रमा की बगुण बडी समाधा की दूर शिया है। सी विदेश विद्यारी सर्था, भी अन्तरणाता

ची होतीचार कोणिया घोर भी भेंगरणा

मन भी धीमान, प्रशासमाहरः पुराधिकाणी होहर

धेरेन्द्ररी स्ट्रूर करपुर, भी मानुष्टर मानुर, प्रशास-

कारत परवार तथर मेनेनारी तून जगार मारि

करानुभारों से संस्था को उद्यादन समारीत के मन-

सर पर रशा, पु^{र्}ग्या व मन्य मारागर सामात रा

मन्दीय पान ह्या।

बपुर्देश, की पुरादिनारी सार्थ, की राष्ट्रमार रिप क्रीर भी गरराम वर्ध का गा^राप गराव^{ने} के गंधी बाबोरणे में रागीय बाल होता तरा है। इन पर्ने भी कार्यतः की स्तरम्या प्रथाः सभी कार्यं स

इनका पूर्ण सर्गार करा है। शिक्ष कर भी यहा बिरासी रूपी काशुक्त देश के कार्यि मधिक सर्गोत रहा है। हम सन्त्य की बल्ल्सान जाना, की देश्व प्रताम पारीक, की मापुरात है हर माधार, दिनक शर्माय गर्ना स्रोत स्रोतन्त्र्य में सन्तर्भ भोतन स्रोत सामान

द्वारा उद्योगों की स्थापना व विकास के लिये हीती वह संस्थानी की बाल की आप गुरियाप

रें हे होतार बर्जर की रेड साम्य कर्जर महाचे चाम चेत्रत्र अर्था क्या चार है रहते थी रेप, बरे पूर्व इ.सर क्या के सी बर पारीका है के रहे सह पेहरी के ब.च के काणी पर पाटू री है है

बाहु हुई हुएन प्रदेशी है जिये

ब्राह्म इया व बना त कार्ने पर धर ब्रूल को स्थारत

सन्तरक राजस्थान निस्तिनगर कुर्दर देखन रिक्से इ.स.रिकार १००७ म्यू देव देव स्थाप



METER

the falpur house service meter is completely dust-proof, light and durable. We also manufacture copper conductors, rods and stript, cadmium copper conductors & rods, arealical copper rods, brass rods and wires.

manufactured by:

THE JAIPUR METALS & ELECTRICALS LTD.

📕 JAIFUR - RAJASTHAN (INDIA) 🎘

दी जयपुर मिनरल डवलपमेंट सिएडीकेट (प्राइवेट) लिमिटेड



विश्व विष्याः—

'त्रिकोगा' मार्का साप पाउडर

:

निर्माता एवं उत्पादक

मोतीसिंह भीमिया का सस्ता

रतेशी पातम, तपम्

art-MAHALAXMI

फोन-धिल्ध-३२ सिटी श्रॉफिस-४२, ४२ A

सुन्दुर और टिकाऊ धोती, लट्टा, खादी, परमटा, टल आदि के लिये प्रतिष्ठित कपड़ा मिल ।

दी महालुद्दमी मिल्स, कम्पनी लिमिटेड व्यावर (राजस्थान)

मेनेजिंग हाइरेक्टर

सेंठ पन्नालाल कोतारी

For Quality G. I. Barbed

Wire, Tin Containers & Agricultural Implements

KINDLY CONTACT.

METAL UDYOG (P) Ltd.,

Office **CULAB MIWAS** M I Road laiper Phone, 5465

INCUSTRIAL ESTATE.

Japan Scarb JAIPUP.



mourpility radio

Delights the home I

CHILD AND

AUTHORISED DEALERS No. 130

I. M/s. Ramkumar Suraj Baksh Tripolya Bazar, JAPUR

2. M/s. Ghiya's
M t Red, Japun

PT-925

ant-fra to sitt At

गजन्यान की मयमें भाषीन धीर प्रतिष्टित कपड़ा मिल

दी कृप्ण मिल्स लिमिटेड

ट या व र

गत ७२ वर्षी में गजन्यान के और्थांगिक विकास में मंत्रम

22.14.43.44

भेट टाहरटाम सीवगत मा:पंट जिल, स्पान

गडन्यान में महकारिता का व्यापक प्रतार मभी के लिए अवसर

र्र प्राप्त प्राप्त कॉरिये । र्र ट्या प्राप्त के ठियों ने प्रयुग कवार कीरिये ।

मार बारे कृति, उदाेव देवा मन्त्र मारिक हिंद के कार्मों को तहकारी माबार कर बनावर बार दार कृति दे मन्द्र मन्द्रार-मारियों के साथ समान कर में मानीदार करेंथे।

ितात और बाद को मेदा महकारी भाषाति के सदस्य बनकर प्रथमी उन्मति कर सकी है। यह प्रतिति इनके निये ये कार्य करेगी :---

श्री सन के अभी पहने बाने दिनाता, नारीमर, मजदूर, ताहूबार व हरिजन दाम सेवा महारी मिनिट के महस्य बन सकते हैं।
श्री में के साल भीर दूसरे तारे बन्धी को सब प्रवार के उपायों से बहाबा देगी।

श्री करों करों मीर देशवार दहाने के निष् कर्जे को उचित व्यवस्था करेगी।
 श्री करों करों मीर देशवार दहाने के निष् कर्जे को उचित व्यवस्था करेगी।
 श्री करात में तो में वो पैशावार होगी उसका पूरा-पूरा मोव क्लिमान को दिवाने का

यल करेगी। मेडी की उक्की बोर्ज, जीने मुचरे बीज, साथ मीर उजरह, प्रक्षो मेडी के घोत्रार मीट मर्जीन, दिलाने का प्रकण करेगी।

प्यान भिन्न व प्रवश्य करता।
यही वर्षी, स्वर साथी में सहवारी प्रावना बडी स्नोर कोल-बागी ने सहवारी वान करी
यही वर्षी, स्वर साथी में सहवारी प्रावना बडी स्नोर कोल स्वयह वे कानी की भी
के दर्मित नेवार कर वारोबार करने में सफलता दिखाई तो सब बदह वे कानी की भी
व्हतारी तीवार के विस्ता जाने लगेगा।
वह समय भी इस शाम नेवा सहवारी समिति के काल-धान के बड़ते दे सा सहता है बढ़

मह गांव के अनारों, अमाहिनों, निरामिकों, रेगियों, विश्वसामें, बुडो, बानिशामें, वर्ष-भट सोगों सादि तब सी साद-सम्भान का औं पूरा बान बपने हाथ ये और । भट सोगों सादि तब सी साद-सम्भान का औं पूरा बान बपने हाथ ये और । गैनमारी सी जकरण की बोजें जैसे !- नैस, साबुन, दिशासलाई साहि बीकों से साने साबों ये हामिस दिया जा महेता।

्रापण राथा जा सकता । वह प्रामीण समुदाय की मार्थिक उन्नति के सारे बार्यों वे पददकार होगी । सबकी भनाई — माएकी भनाई

राजस्थान सरकार द्वारा प्रमारित

With best compliments from :-

Man Industrial Corporation Limited,

JAIPUR

- The first and only Re-Rollers in India for Special Profile Sections for Steel Doors, Windows and Sashes;
 - · Also Fabricators of Steel Doors, Windows and Sashes;
 - · Also Rollers of M. S. Bars, Rods and Light Tees; .
 - · Galvanizing and Forging Work our speciality:

राजस्थान हस्तकता का केन्द्र है स्थानी कला के न मूने खरीद कर ऋपने घरों को सुशोभित की जिए गृह उद्योगों को पोत्साहन दीजिए थी दांत के खिलोंने 🍪 नीले व सफेद पाटरी के सामान ताल व नगीनों के कंगन 💮 🍪 आकर्षक नमृने की दरियां वेथाई व छपाई के स्कार्फ 🐵 सांगानेरी रंगाई व छपाई के जोधपुर की बनी शीतल जल वस्त्र इत्यादि
 की मारियां क उदयपुर के मुन्दर लकड़ी के मिलोंने ® चन्दन की लकड़ी के खिलोंने 😵 जयपुर की कशीदा की हुई ^{® रंगीन} एवं वंधेज की साड़ियां ज्तियां व ज़्ते 🤀 लेकड़ी एवं खस की बनी बस्तुऐं व चुड़ 🏶 क्लापूर्ण सामान ⊛ कोटा के सुन्दर डोरिये भत्येक सरकारी विक्रय-केन्द्र पर प्राप्त

राजस्थानी हस्तकला के नमूने अन्तरीप्ट्रीय ^{भद्रां}नियों में भी रूपाति गाप्त कर नुके हें राजम्यान हेंडीकाम्ट्म एम्पीरीयम जयपुर, जीधगुर व उदयपुर हैंडी . एम्पोरीयम

दिल्ली। जादन जाजा ग्रेगरित